YouTube

हमारे YouTube चैनल से जुड़ें और Subscribe करें

सम्पर्क करें - संस्कृतगङ्गा 7800138404, 9839852033

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद

मो. 9839852033, 7800138404

वितरक

युनिवर्सल बुक्स

1519, अल्लापुर, इलाहाबाद

☎: 0532-2503638, मो. 9453460552

₹ 250/-

प्रवक्ता सर्वज्ञभूषण

प्रवक्ता संस्कृत

सर्वज्ञभूषण

स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा - 2017

लक्ष्य झारखण्ड

प्रवक्ता (PGT)

संस्कृत

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
मनीष शर्मा
योगेश मिश्र 'राधे राधे'



प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा
59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद
मो. 9839852033
7800138404

प्रकाशन-सहयोग
युनिवर्सल बुक्स
1519, अल्लापुर, इलाहाबाद
☎: 0532-2503638
मो. 9453460552

* **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com

* **प्रकाशन-सहयोग**

युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
☎ : 0532-2503638

* मुख्यवितरक

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
Mob. : 7800138404
9839852033

* **अक्षर संयोजक- पवन सिंह, मिथिलेश, केदारनाथ**

* **पृष्ठ विन्यास- कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान,** मोरी, दारागंज

* प्रथम संस्करण – फरवरी - 2018

* **मूल्य – 250/-** (दो सौ पचास रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644

दो शब्द

प्रिय संस्कृतबन्धो !

नमः संस्कृताय!

- मित्रों! ''**स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा-2017**'' झारखण्ड प्रवक्ता के संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर ''**लक्ष्य झारखण्ड**'' नामक पुस्तक को तैयार किया गया है।
- मुझे विश्वास है कि इसमें प्रदत्त पाठ्यसामग्री आप सभी प्रतियोगियों के लिए वरदान साबित होगी, साथ ही झारखण्ड प्रवक्ता (PGT) के लिए **ONLINE SANSKRIT CLASS** भी संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयाग की ओर से आपको निःशुल्क प्रदान की जा रही है। कृपया शीघ्र सम्पर्क करके लाभ उठायें। **सम्पर्क करें - 7800138404, 9839852033**
- इस पुस्तक को तैयार करने में जिन मित्रों का सहयोग मिला उन्हें हार्दिक धन्यवाद। विशेष रूप से **शफीना बेगम, गायत्री पाण्डेय, अमित मिश्र (बस्ती), देवमूरत, अम्बिकेश प्रताप सिंह, रामबिहारी दुबे, सत्यप्रकाश, योगेश मिश्र (मुनिजी), सुमन सिंह, कविता सिंह, केदारनाथ तिवारी, अमित सिंह (बाराबंकी), श्रीकृष्ण शुक्ल** (प्रवक्ता, बुण्डू, राँची) जी के प्रति संस्कृतजगत् कृतज्ञ है।
- इस पुस्तक को सँवारने तथा पृष्ठविन्यास हेतु स्नेही मित्र **ब्रह्मानन्द मिश्र** जी को सादर नमन। साथ ही मुद्रण कार्य में अथक परिश्रम करने वाले **पवन सिंह, मिथिलेश** एवं **केदारनाथ** जी को साधुवाद।

दिनाङ्क - 08.02.2018

आपका सखा
सर्वज्ञभूषण

विषय-क्रम

पाठ्यक्रम

प्रवक्ता झारखण्ड (संस्कृत)

विषय- संस्कृत भाषा और साहित्य

1. **संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास** [भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा]।
2. **संस्कृत साहित्य के इतिहास का साधारण ज्ञान,** साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त। महाकाव्य, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य और संग्रह-ग्रन्थ आदि साहित्यिक विधाओं का उद्भव और विकास।
3. **प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन** जिसमें वर्णाश्रम-व्यवस्था,संस्कार और प्रमुख दार्शनिक प्रवृत्तियों पर विशेष बल दिया जाय।
4. **निम्नलिखित कृतियों का सामान्य अध्ययन-**
   - क. कठोपनिषद्
   - ख. श्रीमद्भगवद्गीता
   - ग. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)
   - घ. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)
   - ङ. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)
   - च. मेघदूतम् (कालिदास)
   - छ. रघुवंशम् (कालिदास)
   - ज. कुमारसम्भवम् (कालिदास)
   - झ. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)
   - ञ. किरातार्जुनीयम् (भारवि)
   - ट. शिशुपालवधम् (माघ)
   - ठ. उत्तररामचरितम् (भवभूति)
   - ड. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)
   - ढ. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)
   - ण. राजतरङ्गिणी (कल्हण)
   - त. नीतिशतकम् (भर्तृहरि)
   - थ. कादम्बरी (बाणभट्ट)
   - द. हर्षचरितम् (बाणभट्ट)
   - ध. दशकुमारचरितम् (दण्डी)
   - न. प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र)
5. **चुनी हुई निम्नलिखित पाठ्यसामग्री के मौलिक अध्ययन हेतु प्रामणिक पाठ्यग्रन्थ-** केवल इन्हीं ग्रन्थों से प्रश्न पूछे जायेंगे।
   1. कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय-तृतीय वल्ली, श्लोक- 10 से 15 तक)
   2. श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीय अध्याय,श्लोक- 13 से 25 तक)
   3. बुद्धचरितम् (तृतीय सर्ग,श्लोक- 1 से 10 तक)
   4. स्वप्नवासवदत्तम् (षष्ठ अङ्क)
   5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)
   6. मेघदूतम् (पूर्वमेघ, श्लोक-1 से 10 तक)
   7. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)
   8. उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)
   9. नीतिशतकम् (श्लोक-1 से 10 तक)
   10. कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
   11. कौटिल्य अर्थशास्त्र (प्रथम अधिकरण-प्रथम प्रकरण- द्वितीय अध्याय, शीर्षक- '**विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षिकीस्थापना**' सप्तम प्रकरण- 11वाँ अध्याय, शीर्षक- '**गूढपुरुषोत्पत्तिः**')

1. संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास

भाषा की उत्पत्ति

- 'भाषा की उत्पत्ति' यह विषय अत्यन्त उलझा हुआ है। इस विषय पर विद्वानों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे अपूर्ण और अनिर्णयात्मक हैं।
- भाषा उत्पत्ति के लिए दो बातें अनिवार्य हैं-

1. वाग्यन्त्र से ध्वनन या वर्णोच्चारण की क्षमता प्राप्त करना।
2. उच्चरित ध्वनि का, अर्थ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रारम्भ।

- प्रथम बात प्रायः सभी पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों में प्राप्त होती है।
- पशु- पक्षियों में स्पष्ट उच्चारण या व्यक्त वाक् का अभाव है, अतः वे स्पष्ट रूप से बोलनें में असमर्थ हैं।
- मनुष्य को बोलने की क्षमता जन्म से प्राप्त है, अतः वह जन्म से वाग्यन्त्र या वागिन्द्रिय का प्रयोग करता है।
- दूसरी बात में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध जानने की जिज्ञासा ही मुख्य विषय है।
- भाषा-उत्पत्ति विषयक समस्त सिद्धान्त अनुमान पर आश्रित हैं एवं विज्ञान अनुमान पर आश्रित न होकर तथ्यों पर निर्भर होता है।
- यह दर्शन, मानव-विज्ञान या समाज-विज्ञान का विषय होने के कारण भाषा-विज्ञान इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।
- सामान्य लोकप्रियता का विषय होने से इसके प्रस्तावित सिद्धान्तों का वर्णन किया जा रहा है-

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त

- यह सबसे प्राचीन मत है। इसके अनुसार- जिस प्रकार परमात्मा ने मानव- सृष्टि की, उसी प्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा भी दी।
- दैवीय शक्ति ही इस सिद्धान्त का मूल है। उसी दैवी शक्ति ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मानव अपना क्रिया-कलाप चला सका।
- वेदों, उपनिषदों तथा अनेक दर्शन ग्रन्थों में यह बात प्रमाणित है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई।

समीक्षा- इस सिद्धान्त पर निम्न आपत्तियाँ की गयी हैं।

1. यह सिद्धान्त तर्क या विज्ञान संगत नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।
2. यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो सृष्टि में भाषा भेद नहीं होता।
3. जर्मन् विद्वान् **हेर्डर** ने लिखा है कि ''यदि भाषा ईश्वरकृत होती तो यह अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत हागी, अधिकांश भाषाएं अव्यवस्थित और त्रुटिपूर्ण हैं।''

2. सङ्केत-सिद्धान्त

- इसे **निर्णयवाद**, **निर्णयसिद्धान्त** तथा **स्वीकारवाद** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 18वीं शताब्दी के फ्रेंच विद्वान् **'रूसो'** हैं।
- इनके अनुसार 'व्यक्ति प्रारम्भ में सङ्केतों के माध्यम से अपना अभिप्राय व्यक्त करता था तथा बाद में सामूहिक रूप से वस्तुओं की संज्ञा दी गयी।'
- इसे **'सामाजिक-समझौता'** कहा जा सकता है।

समीक्षा- इस सिद्धान्त की कुछ न्यूनताएं हैं-

1. बिना भाषा के सभा का आयोजन और विचार-विनिमय कैसे हुआ?
2. सङ्केत शब्दों के निर्माण के लिए क्या आधार था? किसी व्यक्ति का सुझाव मान लिया गया या फिर सबके अलग-अलग मत थे?
3. यदि भाषा के बिना सभा का आयोजन, सङ्केत निर्माण एवं सङ्केतों की सामाजिक सम्पुष्टि हो सकती है, तो भाषा की क्या आवश्यकता रह जाती है।

अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

3. रणन-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **धातु-सिद्धान्त, अनुकरण-सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक-अनुकरण, डिंग-डांगवाद** आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है।
- इस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक **'प्लेटो'** थे तथा इसको **'हेस'** और **'मैक्समूलर'** ने व्यवस्थित किया।
- इस मत के अनुसार 'प्रकृति में एक सामान्य नियम है किसी वस्तु पर चोट मारने पर एक विशेष ध्वनि होती है। यह ध्वनि ही उसकी विशेषता है। इसी ध्वनि को रणन कहा जाता है।

समीक्षा-

1. इस सिद्धान्त में इतने दोष थे कि बाद में मैक्समूलर ने इसे छोड़ दिया।
2. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किस वस्तु से मस्तिष्क में कौन-सी ध्वनि झंकृत हुई।

3. यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में रहस्यात्मक स्वाभाविक सम्बन्ध मानता है। शब्द और अर्थ का सांङ्केतिक सम्बन्ध है न कि स्वाभाविक यह मत अस्वीकृत होने पर भी रोचकता के लिए प्रचलित है।

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अन्य नाम भी हैं, जैसे- **अनुकरण-सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण-सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों-वाद** आदि।
- कुत्ते की ध्वनि को अंग्रेजी में BOW – WOW कहते हैं, अतः हिन्दी में यह **भों-भों-वाद** हुआ।
- इस सिद्धान्त का अभिमत है कि प्राकृतिक वस्तुओं,पशु-पक्षियों आदि की ध्वनि के अनुकरण पर विभिन्न वस्तुओं के नाम रखे जाते हैं। जो वस्तु जैसी ध्वनि करती है, उसका वैसा ही नाम पड़ता है। जैसे-काँव-काँव से काक या कौआ, कू-कू से कोयल, झर-झर से झरना आदि।

समीक्षा-

1. विश्व की भाषाओं में ध्वन्यनुकरण वाले शब्दों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः यह भाषोत्पत्ति सम्बन्धी उचित समाधान नहीं है।
2. **प्रो० रेनन** की आपत्ति है, यदि मनुष्य पक्षियों जैसे तुच्छ जीवों के शब्दों का अनुकरण करके भाषा बना सकता है, तो वह पशु-पक्षियों से निकृष्ट सिद्ध होता है।
3. कुछ भाषाओं में ध्वन्यनुकरण-शब्द हैं ही नहीं। जैसे- उत्तरी अमेरिका की **'अथवस्कन'** भाषा।

   आंशिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी यह मत सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं हैं।

5. आवेग-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि-व्यञ्जकतावाद** आदि के नाम से जाना जाता है।
- इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसन्नता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।
2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।
3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता।

   यह भी समस्या को समाप्त करनें में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

- इसे **यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद** भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक **'न्वायर' (न्वारे)** नामक भाषाशास्त्री हैं।
- इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने,साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियाँ उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।
- उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।
2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।
3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ. **'राये'** को है। **डार्विन** भी इसके समर्थक हैं।
- **प्रो. रिचर्ड** इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।
- इस मत के अनुसार 'प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई, अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द-रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।
2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द- रचना की कल्पना निर्मूल है।
3. इंगित- सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

- इस मत के प्रतिपादक **जी. रेवेज़ हैं,** जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।

- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियाँ निकली वे धीरे-धीरे भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो0 रेवेज़ का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।
2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पत्ति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको **प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी,** WOO-WOO थियरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं येस्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।'

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पत्ति होना केवल अनुमान पर आश्रित है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है।

   अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।'
- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, बाबा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।
2. यह स्थूल शब्दों की उत्पत्ति बता सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री **'हेनरी स्वीट'** हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त - संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।
2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

12. प्रतिभा-सिद्धान्त

- प्रतिभा- सिद्धान्त के संस्थापक आचार्य **भर्तृहरि** हैं।
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि नें प्रतिभा को विश्व की आत्मा माना है और उसे सर्वशक्ति- सम्पन्न बताया है।
- इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति मनुष्य के प्रतिभाओं से हुई है।
- भर्तृहरि, पूर्व-जन्म के संस्कारों को भी भाषोत्पत्ति का कारण मानते हैं।

समीक्षा

1. मनुष्यों में कोई मौलिक उद्भावना या शक्ति नहीं थी। अतः भाषोत्पत्ति सम्बन्धी 'समन्वय-सिद्धान्त'ही सर्वथा उत्कृष्ट है।

संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास

- संस्कृत भाषा भारत- यूरोपीय अथवा भारत- जर्मनीय परिवार की प्रमुख भाषाओं में है।
- संस्कृत के मूल स्रोत के सम्बन्ध में चाहे जो भी कल्पनाएं की जायें, किन्तु इसके भाषायी इतिहास का प्रारम्भ इसके प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' से ही मानना होगा।
- 'अवेस्ता' और 'हित्ती', भाषाओं के दो ऐसे रूप हैं जो कि ऋग्वेद से काफी बाद के होने पर भी वैदिक भाषा के प्राग्वैदिक रूपों की झाँकी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- संस्कृत आर्यों की भाषा थी और आर्य का मूल निवास भारत ही है। इस बात को पश्चिमी देश नहीं मानते हैं क्योंकि पूरे विश्व को सभ्य और शिक्षित करने के ठेकेदार सिर्फ मिस्र, यूनान आदि देश ही हो सकते हैं।
- भारोपीय भाषाविज्ञानी संस्कृत के उस मूल रूप की स्थिति एशिया या यूरोप में चाहे जहाँ मानने की बात कहें, किन्तु संस्कृत से भाषा के जिस रूप का बोध होता है उसका जन्म एवं पोषण भारत की इसी भूमि पर हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं।
- सौभाग्य की बात है कि संस्कृत विश्व की एक ऐसी पुरातन भाषा है, जिसके साहित्य भण्डार में विश्व की प्राचीनतम लिखित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिसकी साहित्यिक भागीरथी का प्रवाह कई हजार वर्षों से निरवच्छिन्न रूप में प्रवाहमान रहा है यद्यपि उसके भाषिक विकास की प्रक्रिया

अवश्य ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक बिन्दु पर आकर स्थिर-सी हो गयी थी।

- ऋग्वैदिक काल के उपरान्त हमें इसके विकास के विभिन्न स्तरों के रूप अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
- ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों की भाषा संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा, ब्राह्मणों तथा सूत्रों एवं उपनिषदों की भाषा, उपनिषदों तथा महाकाव्यों की भाषा की पारस्परिक तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में, एक जीवित भाषा में कालक्रम से होने वाले परिवर्तनों के समान, उल्लेख्य परिवर्तन घटित हो रहे थे।
- संस्कृत भाषा के विकास स्तर को तीन-स्तरों पर देखा जा सकता है।

  1. वैदिक 2. उत्तरवैदिक 3. लौकिक
- वैदिक के अन्तर्गत संहिताओं तथा ब्राह्मण- ग्रन्थों की भाषा को,उत्तरवैदिक में आरण्यकों, उपनिषदों एवं सूत्र साहित्यों की भाषा को रखा जा सकता है।
- इसके बाद की साहित्यिक एवं शास्त्रीय भाषा को लौकिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- लौकिक साहित्य ग्रन्थ 'रामायण' है। रामायण काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत का विकास हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा रूपी गङ्गा को वैदिक काल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुँचने में अनेक मार्गों का अनुसरण करना पड़ा है।

1.3 भारोपीय परिवार

भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं! इन 18 भाषाओं को चार भूखण्डों में बाँटा गया है।

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)
(ख) अफ्रीका
(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड
(घ) अमेरिका भूखण्ड

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही भारोपीय परिवार की गणना की जाती है।

विश्व के भाषा परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्त्व। इसके मुख्य कारण निम्न हैं -

- **प्रयोगाधिक्य -** इस परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।
- **भौगोलिक व्यापकता -** प्रायः सारे विश्व में इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष -** इस परिवार के लोग सभ्यता और संस्कृति में विश्व में सबसे अग्रणी हैं।
- **भाषावैज्ञानिक उत्कर्ष -** भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र के अभ्युदय का सर्वाधिक श्रेय इसी परिवार को है। संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में सर्वाधिक भाषाशास्त्रीय चिन्तन हुआ।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्मदाता -** भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ है।
- **भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम**

  भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम समय-समय पर सुझाए गए हैं। जिनमें प्रमुख चार नाम है-

  1 इण्डो जर्मनिक या भारत जार्मनिक परिवार
  2 आर्य परिवार
  3 भारोपीय परिवार - यह नाम अत्यन्त प्रचलित हुआ, अतः इसे ही अपनाया गया। यह नाम सर्वप्रथम फ्रेंच विद्वानों ने दिया।

4 भारत हित्ती परिवार-

- **भारोपीय परिवार की शाखाएँ -**
- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का मूल रूप है।
- यह Indo-European अनुवाद है।
- इस परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- इस परिवार में दस शाखाएँ हैं -

1. भारत-ईरानी (आर्य) (Aryan, Indo- Iranian)
2. बाल्टो स्लाविक (Balto-Slavic,Letto-Slavic)
3. आर्मीनी (Armenian)
4. अल्बानी (Albanian, Illyraian)
5. ग्रीक (Greek, Hellenic)
6. केल्टिक (Keltic)
7. जर्मनिक (ट्यूटानिक) (Germanic, Teutonic)
8. इटालिक (Italic)
9. हिटाइट (Hiltite)
10. तोखारी (To khorian)

- **केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग**
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. केन्टुम् 2. शतम्

- इस विभाजन का श्रेय **प्रो. अस्कोली** को है।

- सभी भारोपीय भाषाओं को दो भागों में विभक्त किया गया है
- प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में आते हैं और शेष छः परिवार 'केन्टुम्' वर्ग में
- 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द क्मतोम् (Kmtom) माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द - Kmtom **(क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रुसी - स्तो (Sto)	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - (स्जिम्तास)	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं
	इटालियन - केन्तो

- **भारोपीय परिवार-विभाजन**

भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जार्मनिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

भारोपीय परिवार की विशेषताएँ -

- रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार शिलष्ट योगात्मक है।
- इस परिवार की मूल भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि संयोगात्मक थीं, परन्तु इनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई।
- भारोपीय भाषाओं की धातुएँ प्रायः एकाक्षर थीं।
- इन भाषाओं में (संस्कृत में) प्रत्यय दो प्रकार के थे-

1. **कृत् -** जो सीधे धातु से जोड़े जाते थे। इन्हें Primary Suffixes कहते हैं। जैस - भू + त = भूत
2. **तद्धित -** ये शब्दो से जुड़ते हैं। जैसे - भूत + इक = भौतिक इन्हें Secondary Suffixes कहते हैं।

- शब्द या धातु से पद बनाने के लिए दो प्रकार से प्रत्यय लगते थे -

(क) सुप् - (Case-imdicating Suffixes)(शब्दों से)

(ख) तिङ्- (Verbal Suffixes) (धातुओं से)

- पदों का ही वाक्य में प्रयोग होता था।
- पदों को समस्त कर बृहत् पद बनाने की प्रवृत्ति मूल भारोपीय भाषा में थी। वह भारोपीय परिवार में भी रही।
- मूल भारोपीय भाषा में उदात्त स्वर के कारण स्वर भेद (गुण, वृद्धि, दीर्घ) होता था।
- भारोपीय भाषाओं में मूल प्रत्ययों का लोप हो गया और स्वर परिवर्तन से ही अर्थ-परिवर्तन का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी धातुओं में - Drink - Drank - Drunk, संस्कृत में देव > दैव, विधि > वैध, कुमार > कौमार
- भारोपीय भाषा में प्रत्ययों की अधिकता है। मूल भाषा से पृथक् होकर अनेक भाषाएँ विकसित हुईं।
- विश्व भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है। भारोपीय परिवार में भी आर्य परिवार या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है।

शतम् वर्ग

1.भारत ईरानी (आर्य) 2.बाल्टो स्लाविक 3.आर्मीनी 4. अल्बानी

1 आर्य या भारत ईरानी शाखा

- **प्राचीनतम साहित्य -** विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध और प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है।
- समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्त है।
- पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता इसी शाखा में प्राप्त है।
- **प्राचीन वर्णमाला एवं ध्वनियाँ -** मूल भारोपीय भाषा की प्राचीन ध्वनियों के निर्धारण में संस्कृत और अवेस्ता का असाधारण योगदान है।
- **प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता -** विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य से प्राप्त होता है।
- **भाषाशास्त्रीय देन -** भाषाशास्त्र को ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान (व्याकरण), अर्थविज्ञान का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त होता है।

भारतीय आर्यभाषाएँ

कालविभाजन

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 2500ई. पू. से 500ई. पू. तक
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 500ई.पू. से 1000ई. तक

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ - 1000 ई. से वर्तमान समय तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ विकास क्रम के अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत -

➤ वैदिक संस्कृत को ही 'वैदिक', 'वैदिकी', 'छन्दस्' तथा 'छान्दस' आदि नामों से भी जाना जाता है।
➤ प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है।
➤ अन्य वेदों का समय इसके बाद ही माना जाता है।
➤ समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है
➤ वैदिक भाषा की पद रचना श्लिष्ट योगात्मक थी।
➤ धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था।
➤ वेद में संगीतात्मक स्वर की प्रधानता थी।

लौकिक संस्कृत

➤ संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण 500 ई.पू. का है।
➤ महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई.पू. से आज तक अविच्छिन्न एवं अविहत गति से अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं।
➤ यास्क, पतञ्जलि, कात्यायन, भास, कालिदास आदि के लेखों से यह स्वतः सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक व्यवहार की भाषा थी।
➤ संस्कृत में ही समस्त प्राचीनज्ञान, विज्ञान, कला, पुराण, काव्य, नाटक आदि है।
➤ संस्कृत ने न केवल भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित किया अपितु विश्व भाषाओं मुख्यतया भारोपीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा गया है -

1.प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई. पू. से 100 ई. तक)
2.मध्यकालीन प्राकृत (100 ई. से 500 ई. तक)
3.परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई. तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -

1. पश्चिमी हिन्दी - इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं-
1. खड़ी बोली 2. ब्रजभाषा 3. बाँगरु 4. कन्नौजी 5. बुन्देली

2. राजस्थानी -

➤ इसका विकास शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है।
➤ पिंगल के अनुकरण पर राजस्थानी में **डिंगल** काव्य की रचना हुई। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं - मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती।

3. गुजराती -

4. मराठी - 4 बोलियाँ मुख्य है- देशी, कोंकणी नागपुरी, बरारी

5. बिहारी - 3 प्रमुख भाषाएँ हैं- भोजपुरी, मैथिली, मगही

6. बंगाली **7. उड़िया** **8. असमी**

9. पूर्वी हिन्दी -इसकी तीन बोलियाँ हैं।अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

10. लहँदा (लहँदी) - लहँदा का अर्थ है पश्चिमी। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं-

➤ केन्द्रीय बोली, दक्षिणी (मुलतानी), उत्तरपूर्वी (पोठवारी), उत्तरपश्चिमी (धन्नी)

11. सिन्धी -

➤ इसकी पाँच बोलियाँ हैं- विचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, कच्छी

12. पंजाबी

13. पहाड़ी - इसके तीन भाषा वर्ग हैं-

➤ पश्चिमी (30 बोलियाँ)
➤ मध्य (दो 1. गढ़वाली 2. कुमायूँनी)
➤ पूर्वी (नेपाली) यह नेपाल की राजभाषा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई.पू. से 100 ई. तक)

प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम प्राकृत)

➤ तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख इसके अन्तर्गत आते हैं।
➤ पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि कथाएँ, प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा, प्रारम्भिक नाटकों की भाषा प्राकृत रही है।
➤ प्राचीन प्राकृत को प्रथम प्राकृत भी कहते हैं।

प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से - प्रकृति का अर्थ है-मूलभाषा संस्कृत, उससे उत्पन्न भाषा प्राकृत है।

➤ प्राकृत भाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से मानी है।
➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् (हेमचन्द्र)
➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतसर्वस्व)
➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृत चन्द्रिका)
➤ प्राकृतस्य तु स्वयमेव संस्कृतं योनिः (प्राकृत संजीवनी)
➤ नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने यह कहा है कि संस्कृत भाषा के शब्दों का ही विकृत एवं परिवर्तित रूप प्राकृत भाषा है।

पालि की व्युत्पत्ति -

- डा. मैक्स वेलेसन ने पाटलि (पाटलिपुत्र) से पालि की उत्पत्ति मानी है। पाटलि > पाडलि > पालि
- भिक्षु जगदीश काश्यप ने परियाय (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति मानी है।
  परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
- अमरकोश के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पालरक्षणे' से पालि शब्द माना है। पाल् + इ = पालि
- आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्मपाल ने छठी शती ई. ने पालि शब्द का प्रयोग बुद्धवचन या मूल त्रिपिटक के लिये किया है। उससे यह शब्द 'पालि' भाषा के लिए आया है।
- अभिधानप्पदीपिका ने पा धातु से पालि शब्द माना है पा - पालेति रक्खतीति पालि, जो रक्षा करती है या पालन करती है।

पालि की प्रमुख विशेषताएँ

- पालि में वैदिक संस्कृत की 5 स्वर ध्वनियाँ लुप्त हो गई - ऋ , ॠ , ऌ , ऐ, औ।
- पालि में वैदिक संस्कृत के 5 व्यंजन लुप्त हो गए- श, ष, (:) विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
- पालि मे दो नए स्वर आयें - ह्रस्व एँ, ह्रस्व ओ।
- संस्कृत के ऐ > ए, औ > ओ हो गए।
- ड, ढ को ळ, ळह्।
- संधियों में केवल तीन संधियाँ हैं-

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. निग्गहीत (अनुस्वार) सन्धि

- पालि में हलन्त शब्द नही हैं। केवल अजन्त ही हैं।
- पालि में द्विवचन नहीं होता है।
- शब्दरूपों में चतुर्थी और षष्ठी के रूप समान होते हैं।
- स्त्री प्रत्यय सात हैं - आ, ई, इनी, नी, आनी, ऊ, ति।
- पालि में 500 से अधिक धातुएँ हैं, 9 गण हैं। अदादिगण और जुहोत्यादि गण नहीं है।
- पालि में लेट् लकार के रूप भी मिलते हैं - हनासि, दहासि
- आत्मनेपद का प्रयोग प्रायः लुप्त हो गया। परस्मैपद शेष रहा
- पालि में तद्भव शब्दों का आधिक्य है। तत्सम और देशज शब्द कम है।

शिलालेखी प्राकृत

- प्राचीन प्राकृत में अशोक के शिलालेखों की प्राकृत भी आती है, अतः इसे **शिलालेखी प्राकृत** भी कहते है।
- शिलालेखी प्राकृत को ही अशोकन प्राकृत, लाट प्राकृत भी कहते हैं।

मध्यकालीन प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)

- मध्यकालीन प्राकृत को '**साहित्यिक प्राकृत**' भी कहते हैं।
- सर्वप्रथम भरतमुनि ने प्राकृत भाषाओं के विषय में विचार किया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण
- **मुख्य प्राकृत** - मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)
- **गौण प्राकृत** - शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ी, उद्स्ता, वनेचरी
- प्राचीन प्राकृत वैयाकरण वररुचि ने चार प्राकृत मानी हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची। मागधी के दो रूप हो गये (1) मागधी (2) अर्धमागधी

1- शौरसेनी

- इसका क्षेत्र शूरसेन (मथुरा के आस-पास) प्रदेश था।
- इसका विकास पालि कालीन स्थानीय भाषा से हुआ।
- मध्यदेश की भाषा थी।
- नाटकों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ।
- स्त्रियों आदि का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में ही होता था।
- शौरसेनी से वर्तमान **हिन्दी का विकास** हुआ
- राजशेखर कृत **कर्पूरमंजरी का समस्त गद्य भाग शौरसेनी प्राकृत** में है।
- भास, कालिदास आदि के **नाटकों में गद्य शौरसेनी** में ही है।

2 - महाराष्ट्री

- मूलस्थान महाराष्ट्र है। इससे ही **मराठी भाषा का विकास** हुआ।
- प्राकृत में सर्वाधिक साहित्य महाराष्ट्री में है।
- दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री को सर्वश्रेष्ठ प्राकृत माना है।
- प्राकृत नाटकों में **पद्यरचना महाराष्ट्री** में है।
- महाराष्ट्री प्राकृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं - राजा हाल कृत गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती), प्रवरसेन कृत रावणवहो (सेतुबन्धः), वाक्पति कृत गउडवहो (गौडवधः), जयवल्लभ कृत - वज्जालग्ग, हेमचन्द्राचार्य कृत 'कुमारपालचरित'
- कर्पूरमञ्जरी के पद्य महाराष्ट्री में है।
- भरतमुनि ने दाक्षिणात्य प्राकृत से महाराष्ट्री का निर्देश किया है।

3- मागधी

- यह मगध की भाषा थी।
- प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।
- लंका में पालि को मागधी कहते हैं।
- कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटिक में मागधी का प्रयोग मिलता है।

- भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार अन्तपुरः के नौकर, अश्वपालक आदि की भाषा मागधी थी।
- इसके तीन प्रकार मिलते हैं -

1. शकारी 2. चाण्डाली 3. शाबरी

- मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई।

4- अर्धमागधी

- अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य में है।
- यह कोसल के समीपवर्ती क्षेत्र की भाषा थी।
- इसमें मागधी के गुण अधिक है और साथ ही शौरसेनी के भी, अतः इसे अर्धमागधी कहा जाता है।
- मागधी को **ऋषिभाषा** या **आर्यभाषा** भी कहते हैं।
- भगवान् महावीर के सभी धर्मोपदेश इसी भाषा में हैं।
- अधिकांश **जैन साहित्य** इसी भाषा में है।
- इसमें गद्य और पद्य दोनो प्रकार का साहित्य है।
- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसे चेट, राजपुत्र एवं सेठों की भाषा बताया है।
- इसका प्राचीनतम प्रयोग **अश्वघोष के नाटको में** मिलता है।
- **मुद्राराक्षस और प्रबोधचन्द्रोदय में** अर्धमागधी का प्रयोग हुआ है।
- इससे **पूर्वी हिन्दी का विकास** हुआ है।

5 - पैशाची

- इसका क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान का क्षेत्र था।
- पैशाची को **पैशाचिकी, भूतभाषा, भूतभाषित** आदि भी कहते हैं।
- गुणाढ्य की प्रसिद्ध रचना 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में ही है।
- वर्तमान समय में इसका साहित्य **'नगण्य'** है।
- इसका विकसित रूप **'लहँदा' भाषा** है।
- हेमचन्द्र कृत-कुमारपालित और काव्यानुशासन में तथा हम्मीरमदमर्दन नाटक में इसका प्रयोग मिलता है।
- राक्षस, पिशाच, निम्नकोटि के पात्र लोहार आदि इसी भाषा का प्रयोग करते थे। (रक्षः पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएं -

- प्राकृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।
- शब्दरूपों और धातुरूपों की संख्या प्राकृत में कम हो गई।
- शब्दरूप केवल तीन या चार प्रकार के रह गए।
- धातु के रूप भी प्रायः एक या दो प्रकार से चलने लगे।
- प्राकृत भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक की ओर अग्रसर हुई।
- प्राकृत भाषा में आत्मनेपद का अभा2व हो गया।
- तद्भव शब्दों की संख्या प्राकृत में अधिक है। तत्सम शब्दों की कम।

अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत, तृतीय प्राकृत)

- अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि और पतञ्जलि ने किया है। भर्तृहरि, भामह, दण्डी आदि ने भी अपभ्रंश का उल्लेख किया है।
- अपभ्रंश के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में मिलते हैं।
- दण्डी के समय से इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था।
- अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-

  हरिषेण कृत - पउमचरिउ
  पुष्पदन्त कृत - महापुराण और जसहर चरिउ
  विद्यापति कृत - कीर्तिलता
  अद्दहमाण कृत - सन्देश-रासक

- अपभ्रंश को देशीभाषा, देसी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते हैं।
- मार्कण्डेय ने प्राकृत सर्वस्व में तीन अपभ्रंश माने हैं- नागर, उपनागर, ब्राचड।
- नागर गुजरात की अपभ्रंश, ब्राचड सिन्धु की, उपनागर दोनों के मध्य की मानी जाती है।
- सामान्यतया सभी भाषाशास्त्री विद्वानों का मत है कि पाँच प्राकृतों से ही अपभ्रंश का विकास हुआ है।

❑❑

2. संस्कृत- साहित्य के इतिहास का साधारण ज्ञान

2.1 साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त

- काव्यशास्त्र का ही एक नाम **'साहित्यशास्त्र'** है आधुनिक युग में अन्य सब नामों की अपेक्षा यह नाम अधिक प्रचलित है।
- राजशेखर ने तो इसे 'साहित्यविद्या' नाम से अभिहित किया है।
- साहित्यशास्त्र का प्रमुख तत्त्व 'आत्मतत्त्व' है। प्राचीन आचार्य इसी आत्मतत्त्व के चिन्तन में सक्रिय रहे हैं और अपने-अपनें चिन्तन के आधार पर अलग-अलग रूपों में अवलोकन करते रहे। इसप्रकार विभिन्न आचार्यों द्वारा काव्य के विभिन्न तत्त्वों का काव्यात्म रूप में दर्शन के कारण छः सम्प्रदायों अथवा सिद्धान्तों का जन्म हुआ। इसप्रकार साहित्यशास्त्र के मुख्यतः छः सिद्धान्त/ सम्प्रदाय बन गये-

1. रस सम्प्रदाय	2. अलङ्कार सम्प्रदाय
3. रीति सम्प्रदाय	4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
5. ध्वनि सम्प्रदाय	6. औचित्य सम्प्रदाय

1. रस-सम्प्रदाय - आचार्य भरत

- इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य **'भरत'** माने जाते हैं।
- राजशेखर, **नन्दिकेश्वर** को रस का मूल व्याख्याता मानते हैं। किन्तु उनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।
- आचार्य भरत की दृष्टि में साहित्य रचना के लिए रस इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई अर्थ ही नहीं प्रवृत्त होता।
- विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव ही रस के निष्पादक होते हैं-

  नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।
  विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥

  यह रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।
- भरत के रस-सिद्धान्त के इस सूत्र में 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्दों की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक सिद्धान्तों का जन्म हुआ।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ही भरत के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार हैं।
- भट्टलोल्लट का मत **'उत्पत्तिवाद'** है।
- श्रीशङ्कुक का मत **'अनुमितिवाद'** है।
- भट्टनायक का मत **'भुक्तिवाद'** है।
- अभिनवगुप्त का मत **'अभिव्यक्तिवाद'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- आचार्य मम्मट भी अभिनवगुप्त के 'अभिव्यक्तिवाद' का समर्थन करते हैं।
- काव्याश्रित रस के सम्बन्ध में प्रथम बार व्याख्या 'अग्निपुराण' में हुई।
- आचार्य भरत आठ रसों को ही स्वीकार करते हैं।

  'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।'
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस तथा सातवें अध्याय में स्थायीभावों का विस्तार से वर्णन किया है, वही रस सिद्धान्त का आधार है।

  प्रवर्तक- आचार्य भरत

  समर्थक- शारदातनय, शिङ्गभूपाल, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, भोजराज, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र आदि।

2. अलङ्कार-सम्प्रदाय - आचार्य भामह

- रस सम्प्रदाय के बाद दूसरा स्थान अलङ्कार सम्प्रदाय का आता है।
- आचार्य **'भामह'** इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते।
- उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है।

  'रसवद्दर्शितस्पष्टशृङ्गारादिरसं यथा।'-

  भामह (काव्यालङ्कार 3/6)
- अलङ्कार सम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत् प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित, चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।
- भामह के अतिरिक्त दण्डी भी इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही रस का अन्तर्भाव करते हैं।

  'मधुरे रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।' दण्डी (काव्यादर्श 1/51)
- इस सिद्धान्त की भी व्याख्या अग्निपुराण में मिलती है।
- जयदेव के अनुसार, अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे 'उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।'
- सर्वप्रथम भरत ने चार अलङ्कारों (उपमा, रूपक,दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।
- अग्निपुराणकार ने 23 अलङ्कारों को स्वीकर किया है।
- भामह ने 38 अलङ्कारों का विवेचन किया है।
- उद्भट 41 अलङ्कार मानते हैं।
- रुद्रट ने 68 अलङ्कारों का निरूपण किया है।
- भोज ने 72 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।

- मम्मट 67 अलङ्कारों का उल्लेख करते हैं। 6 शब्दालङ्कार और 61 अर्थालङ्कार।
- रुय्यक और विश्वनाथ ने 78 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- जयदेव अपने चन्द्रालोक में 100 अलङ्कार मानते हैं।
- अप्पयदीक्षित ने 'कुवलयानन्द' में 120 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

समर्थक- इस सम्प्रदाय के समर्थकों में दण्डी, उद्भट, रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, तथा विश्वेश्वर पाण्डेय आदि प्रमुख हैं।

3. रीति सम्प्रदाय '- आचार्य वामन

- कालक्रम में अलङ्कार- सम्प्रदाय के बाद रीति-सम्प्रदाय का स्थान आता है।
- रीति सम्प्रदाय के संस्थापक **आचार्य वामन हैं।**
- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'**
- यह आचार्य वामन का सिद्धान्त है, इसीलिए उन्हें रीति-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।
- इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- **'विशिष्टपदरचना रीतिः।'** अर्थात् विशिष्ट पद रचना का नाम 'रीति' है।
- वाक्य में आये 'विशिष्ट' शब्द की व्याख्या- **'विशेषो गुणात्मा'** है।
- इस प्रकार काव्य में माधुर्यादि गुणों का समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशेषता ही 'रीति' है।
- इस सिद्धान्त में 'गुण' और 'रीति' का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए 'रीति- सम्प्रदाय' को **'गुण-सम्प्रदाय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- वामन ने निम्न दो सूत्रों के माध्यम से गुण और अलङ्कार का भेद स्पष्ट किया है, तथा अलङ्कार की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया है।

सूत्र-1 **'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र - 3.2.1)

2. **'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.2)

- गुण काव्यशोभा के उत्पादक होते हैं तथा अलङ्कार केवल उस शोभा के अभिवर्धक होते हैं।
- अतः काव्य में अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- राजशेखर ने रीति का सर्वप्रथम अधिकारी **'सुवर्णनाभ'** को बताया है, किन्तु 'सुवर्णनाभ' कौन थे? उनकी रचना कौन सी है? इसके बारे में कुछ पता नहीं है।
- 'रीति' का व्यापक अर्थ लेने पर वेदों में भी रीति की झलक दिखलाई देती है।
- रीति का शास्त्रीय विवेचन भरत के 'नाट्यशास्त्र' से प्रारम्भ होता है।
- रीति के चार भेद स्वीकार किये गये हैं- वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी।
- रीति एक रचना शैली है जिसके अन्तर्गत रस, गुण, अलङ्कार आदि समाविष्ट हैं।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय - आचार्य कुन्तक

- कालक्रमानुसार रीति के बाद वक्रोक्ति- सम्प्रदाय आता है।
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के संस्थापक वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य **'कुन्तक'** माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर 'वक्रोक्ति' की प्रधानता को स्थापित किया।
- यद्यपि काव्य में 'वक्रोक्ति' की महत्ता भामह ने भी स्वीकार किया है-

सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥
(भामह- काव्यालङ्कार- 2/85)

- दण्डी ने काव्य में 'वक्रोक्ति' का महत्त्व इस प्रकार वर्णित किया है-

'भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्'
(काव्यादर्श- 2/363)

- आचार्य वामन ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का स्थान माना है- **'सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** (काव्यालङ्कार सूत्र- 4.3.8)
- तथापि इन आचार्यों के मत से 'वक्रोक्ति' सामान्य अलङ्कार आदिरूप ही है।
- आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है, वह गौरव इन आचार्यों ने नहीं दिया है।
- इसलिए 'कुन्तक' ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने इस सिद्धान्त के ऊपर भी 'वक्रोक्तिजीवित' नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है।
- आचार्य कुन्तक ने 'रीति-सम्प्रदाय' को भी परिमार्जित करके अपने यहाँ स्थान दिया है।
- वामन की वैदर्भी आदि रीतियाँ देश भेद के आधार पर मानी जाती थीं, किन्तु कुन्तक ने उनका आधार देश को न मानकर रचनाशैली को माना है और उनके 'रीति' के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया है।
- आचार्य कुन्तक, वामन की 'वैदर्भी' रीति को 'सुकुमारमार्ग', गौडी रीति को 'विचित्रमार्ग' तथा पाञ्चाली रीति को 'मध्यम मार्ग' कहते हैं।
- कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति छः प्रकार के हैं-

1. वर्ण- विन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता
3. पदोत्तरार्द्ध वक्रता 4. वाक्य वक्रता
5. प्रकरण वक्रता 6. प्रबन्ध वक्रता

➢ अतः उक्ति वैचित्र्य के आधार पर कुन्तक का यह 'वक्रोक्ति सिद्धान्त', अलङ्कार सिद्धान्त की ही एक शाखा है।

5. ध्वनि- सम्प्रदाय - आचार्य आनन्दवर्धन

➢ वक्रोक्ति सम्प्रदाय के बाद ध्वनि- सम्प्रदाय का उदय हुआ।

➢ इस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य '**आनन्दवर्धन**' माने जाते हैं।

➢ आनन्दवर्धन के मत में 'काव्य की आत्मा ध्वनि है'-

'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'

➢ सभी सम्प्रदायों में ध्वनि- सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।

➢ विद्वानों के अत्यन्त विरोध पर भी ध्वनि- सिद्धान्त वैसे ही प्रफुल्लित रहा है।

➢ **ध्वनि-** सिद्धान्त के विरोधी समूह में वैयाकरण, साहित्यक, वेदान्ती, मीमांसक आदि प्रमुख हैं।

➢ आचार्य मम्मट ने विरोधियों का खण्डन करके ध्वनि- सिद्धान्त की पुनः स्थापना की, इसीलिए मम्मट को '**ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य**' कहा जाता है।

➢ आनन्दवर्धन ने आत्मा का अर्थ, 'तत्त्व' किया है और तत्त्व का अर्थ है, 'जिसके स्वरूप का कभी बाध न हो'

➢ काव्य का वह आत्म स्थानीय अर्थ 'प्रतीयमान' कहलाता है। यही प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।

➢ इनके अनुसार प्रतीयमान अर्थ वह है जो अङ्गना के प्रसिद्ध अवयवों से भिन्न लावण्य के समान महाकवियों की वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न भाषित होता है। सहृदयी जनों को यही अर्थ आनन्दित करता है-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥

(ध्वन्यालोक-1/4)

➢ यही प्रतीयमान अर्थ ध्वन्यर्थ या व्यङ्ग्यार्थ है जो तीन प्रकार से होता है-

1. रसादि रूप में 2. अलङ्कार रूप में 3. वस्तु रूप में

'एवं वस्त्वलङ्काररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः'

➢ इसमें वस्तुध्वनि और अलङ्कारध्वनि की अपेक्षा रसध्वनि श्रेष्ठ है और यही काव्य की आत्मा है।

➢ आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त भी रसध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। '**सर्वत्र रसध्वनेरेवात्मभावः।**'

समर्थक- इस सिद्धान्त के समर्थक रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त और पण्डितराज जगन्नाथ हैं।

6. औचित्य- सम्प्रदाय - आचार्य क्षेमेन्द्र

➢ औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य **क्षेमेन्द्र** माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का **जीवितत्त्व** कहा है-

'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

➢ इसी आधार पर क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु उनके पहले भी इस पर विचार हो चुका था।

➢ सर्वप्रथम भरत के ' नाट्यशास्त्र' में औचित्य की चर्चा की गयी है।

➢ भरत के पश्चात् भामह ने औचित्य को काव्य का सबसे बड़ा गुण बताया है।

➢ दण्डी ने भी गुण, दोष के विधान में औचित्य और अनौचित्य को कारण स्वीकार किया है।

➢ रुद्रट ने अनौचित्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार रस का उन्मेष, परमरहस्य औचित्य है और अनौचित्य ही रसभङ्ग का प्रधान कारण है।

'अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।'

➢ महिमभट्ट ने काव्य में औचित्य को अनिवार्य तत्त्व बताया है।

➢ आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, "जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है"-

उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥

(औचित्यविचारचर्चा, 7)

➢ यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व हैं।

'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

(औचित्यविचारचर्चा)

➢ क्षेमेन्द्र के अनुसार - अलङ्कारों में अलङ्कारत्व तभी होता है जबकि उनका विन्यास उचित स्थान पर होता है और गुणों में गुणत्व तभी होता है जबकि औचित्य से च्युत नहीं होते हैं-

उचितस्थानविन्यासादलङ्कृतिरलङ्कृतिः।
औचित्यादच्युता नित्यं भवन्त्येव गुणा गुणाः॥

(औचित्यविचारचर्चा)

➢ क्षेमेन्द्र ने- 'औचित्यविचारचर्चा' में औचित्य के सत्ताइस (27) भेदों का निरूपण किया है, किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्गों में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं।

2.2 काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता हैं-
  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवासूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं। इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।**
  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था। जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।
  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**
  काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य - 1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि

(2) चम्पू - नलचम्पू आदि

(3) कथा - कादम्बरी आदि

(4) आख्यायिका - हर्षचरितम् आदि

दृश्य

रूपक - 10

1. नाटक - अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण - मृच्छकटिकम्
3. भाण - लीलामधुकरम्
4. प्रहसन - धूर्तचरितम्
5. डिम - त्रिपुरदाह
6. व्यायोग - सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार - समुद्रमन्थन
8. वीथी - मालविका
9. अङ्क - शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग - कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

2.3 महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।
  सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
  सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

2.4 नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई

व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

  'काव्येषु नाटकं रम्यम, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

3.भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति

वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।

- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।
- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने '**त्रिपुरदाह**' नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का '**मध्यमव्यायोग**' इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में '**समुद्रमन्थन**' नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त काङ्क्षी रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ '**उत्सृष्टिकाङ्क**' भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने '**प्रियदर्शिका**' और '**रत्नावली**' नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की '**कर्पूरमञ्जरी**' सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।

- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ0 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्युडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया -नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

(ना.शा. 1/114)

- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।

- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।
- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

2.5 गद्य साहित्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।
  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।

- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक
2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय
4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

2.6 गीतिकाव्य

- गीतिकाव्य का उद्गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-

तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्।। (ऋ0 1.7.7)
(अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)

- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ0 -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है जैसे-

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)

- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसाप्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।
- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11 वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः कालिदास **संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक** हैं।
- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।

- इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

2. मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।

- यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
- टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के 121 पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर 115 श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
- इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

- यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
- इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

- **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अन्तर्गत वर्णित हैं-

1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

- इसके रचयिता **'अमरुक'** हैं। यह मुक्तक काव्य है।
- इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लट शतक

- यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
- यह कश्मीरी कवि **'भल्लट'** की रचना है।

7. गीतगोविन्द

- **'गीतगोविन्द'** संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
- इसके रचनाकार **'जयदेव'** हैं।
- इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

- यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
- यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

2. स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

- स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
- कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न स्तोत्र

- मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

- स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
- 100 पद्यों में सूर्य महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

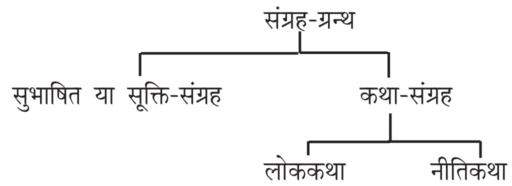
- इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
- इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ

आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

2.7 संग्रह-ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-



उद्भव और विकास

- कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
- पुरुरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
- 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएं हैं।
- उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएं कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
- महाभारत तथा पुराण- साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
- बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
- जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
- हरिषेण का **'बृहत्कथाकोश'** जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
- इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

लोक कथाएँ

- संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित **'गुणाढ्य'** की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।'

बृहत्कथा

- लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
- बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
- वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
- महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।

- बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**

- नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
- बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
- इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. **बृहत्कथामञ्जरी**

- यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।
- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. **कथासरित्सागर**

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्भकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. **वेतालपञ्चविंशति**

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।
- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. **सिंहासनद्वात्रिंशिका**

- इसे '**द्वात्रिंशत्पुत्तलिका**' या '**विक्रमचरित**' भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे '**विक्रमार्कचरित**' के नाम से जानते हैं।

6. **शुकसप्तति**

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)
विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)
श्रीवीर- **कथा-कौतुक**
बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएं हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. **पञ्चतन्त्र**

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।
- यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. **हितोपदेश**

- पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
- इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
- हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएं हैं।
- प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
- इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ

बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएं संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-
आर्यशूर - **जातकमाला** (34जातक कथाएँ)
सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**
हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

2. **सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह**

- चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
- इन संग्रहों में मुक्तक पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
- कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चय**

- यह कवि '**विद्याकर**' की कृति है। इसे '**सुभाषितरत्नकोष**' भी कहा जाता है।
- यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
- इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. **सदुक्तिकर्णामृत**

- यह '**श्रीधरदास**' की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
- पुनः '**प्रवाह**' वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
- पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. **सूक्तिमुक्तावली**

- यह '**जल्हण**' द्वारा सङ्कलित है। इसे '**सुभाषितमुक्तावली**' भी कहते हैं।

➢ इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर पद्धति

➢ यह '**शार्ङ्गधर**' कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।

➢ इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

➢ इसके सङ्कलनकर्ता '**वल्लभदेव**' हैं।

➢ इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।

6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)

7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य

8. सुभाषित-नीवी- वेदान्त देशिक

9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति

10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य

➢ सूक्ति ग्रन्थों में '**सुभाषितरत्नभाण्डागार**' सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काल
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

1. कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 (अन्यमत 8)
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ

7. **नैषधीयचरितम्**	22	श्रीहर्ष
8. **भट्टिकाव्य (रावणवधम्)**	22	भट्टि
9. **जानकीहरणम्**	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. **हरविजयम्**	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. **धर्मशर्माभ्युदय**	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. **राघवपाण्डवीयम्**	13 सर्ग (माधवभट्ट)	कविराज

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. **जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)**	पाणिनि
2. **स्वर्गारोहणम्**	कात्यायन (वररुचि)
3. **महानन्दकाव्य**	पतञ्जलि
4. **प्रयागप्रशस्ति**	हरिषेण
5. **सेतुबन्ध**	प्रवरसेन
6. **हयग्रीववध**	भर्तृमेण्ठ
7. **गउडवहो**	वाक्पति
8. **रामचरित**	अभिनन्द
9. **नवसाहसाङ्कचरित**	पद्मगुप्त
10. **पारिजातहरणम्**	कविकर्णपूर
11. **नरनारायणानन्द**	वस्तुपाल
12. **रघुनाथचरित**	वामनभट्टबाण
13. **सेतुकाव्य**	मातृगुप्त
14. **कादम्बरीसार**	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. **रामायणमञ्जरी**	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. **भारतमञ्जरी**	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. **विक्रमाङ्कदेवचरित**	बिल्हण (काश्मीरी)
18. **श्रीकण्ठचरितम्**	मंखक (काश्मीरी)
19. **राजतरङ्गिणी**	कल्हण (काश्मीरी)
20. **जातकमाला**	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. **गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्**	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. **सीताचरितम्**	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. **जानकीजीवनम्**	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण**	4	भास
2. **स्वप्नवासवदत्तम्**	6	भास
3. **ऊरुभङ्गम्**	एकाङ्की	भास
4. **दूतवाक्यम्**	एकाङ्की	भास
5. **पञ्चरात्रम्**	3	भास
6. **बालचरितम्**	5	भास
7. **दूतघटोत्कचम्**	एकाङ्की	भास
8. **कर्णभारम्**	एकाङ्की	भास
9. **मध्यमव्यायोगः**	एकाङ्की	भास
10. **प्रतिमानाटकम्**	7	भास
11. **अभिषेकनाटकम्**	6	भास
12. **अविमारकम्**	6	भास
13. **चारुदत्तम्**	4	भास
14. **मृच्छकटिकम्** (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. **मालविकाग्निमित्रम्**	5	कालिदास
16. **विक्रमोर्वशीयम्** (त्रोटक)	5	कालिदास
17. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	7	कालिदास
18. **मुद्राराक्षसम्**	7	विशाखदत्त
19. **प्रियदर्शिका** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. **रत्नावली** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. **नागानन्द**	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. **वेणीसंहारम्**	6	भट्टनारायण
23. **मालतीमाधवम्** (प्रकरण)	10	भवभूति
24. **महावीरचरितम्**	7	भवभूति
25. **उत्तररामचरितम्**	7	भवभूति
26. **शारिपुत्रप्रकरण्** (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. **अनर्घराघवम्**	7	मुरारि
28. **बालरामायणम्** (महानाटक)	10	राजशेखर
29. **बालभारत** (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. **विद्धशालभञ्जिका** (नाटिका)	4	राजशेखर
31. **कर्पूरमञ्जरी** (सट्टक)	4	राजशेखर
32. **कुन्दमाला**	6	दिङ्नाग
33. **प्रबोधचन्द्रोदय**	6	कृष्णमिश्र
34. **प्रसन्नराघवम्**	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. **आश्चर्यचूडामणि**	शक्तिभद्र
2. **रामाभ्युदय**	यशोवर्मा

3. महानाटक — हनुमान्
4. हनुमन्नाटक — दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम् — वत्सराज
6. त्रिपुरदाह — वत्सराज
7. समुद्रमन्थन — वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम् — विश्वनाथ
9. सामवतम् — अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक) — सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक) — व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय — बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरीकथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मुकुटताडितक	बाणभट्ट
7. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
8. शिवराजविजयम् (ऐतिहासिक उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
9. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
10. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
11. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
13. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
14. तिलकमञ्जरी	धनपाल
15. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
16. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
17. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
18. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
19. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
20. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. शिवताण्डवस्तोत्रम् — रावण
2. सौन्दर्यलहरी — शङ्कराचार्य

3. **चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्** शङ्कराचार्य
4. **श्रीकृष्णाष्टकम्** शङ्कराचार्य
5. **आनन्दलहरी** शङ्कराचार्य
6. **शिवमहिम्नस्तोत्रम्** पुष्पदन्त
7. **आलबन्दारस्तोत्रम्** यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. **गङ्गास्तव** जयदेव
9. **कृष्णकर्णामृतम्** बिल्वमङ्गल (कृष्णालीलाशुक)
10. **वरदराजस्तव** अप्पयदीक्षित
11. **नारायणीयम्** नारायणभट्ट
12. **आनन्दमन्दाकिनी** मधुसूदन सरस्वती
13. **गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्** रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चयः**	विद्याकरपण्डितः
2. **सदुक्तिकर्णामृतम्** (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. **सूक्तिमुक्तावली** (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. **सूक्तिरत्नाकरः**	सिद्धचन्द्रमणि
5. **सुभाषित सुधानिधि**	सायण
6. **शार्ङ्गधरपद्धति**	शार्ङ्गधर
7. **सुभाषितरत्नभाण्डागार**	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. **सूक्तिमुक्तावली**	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. **संस्कृतसूक्तिरत्नाकर**	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. **बुद्धचरितम्**	अश्वघोष
2. **हर्षचरितम्**	बाणभट्ट
3. **गउडवहो** (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. **नवसाहसाङ्कचरितम्**	पद्मगुप्त (परिमल)
5. **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	बिल्हण
6. **राजतरङ्गिणी**	महाकवि कल्हण
7. **सोमपालविजयम्**	जल्हण
8. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
9. **वेमभूपालचरितम्**	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. **पञ्चतन्त्रम्**	विष्णुशर्मा
2. **हितोपदेश**	नारायणपण्डित
3. **बृहत्कथा**	गुणाढ्य
4. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**	बुधस्वामी
5. **बृहत्कथामञ्जरी**	क्षेमेन्द्र
6. **कथासरित्सागर**	सोमदेव
7. **वेतालपञ्चविंशतिका**	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. **सिंहासनद्वात्रिंशिका** **द्वात्रिंशत्पुत्तलिका** **विक्रमचरित** **विक्रमार्कचरित**	लेखक का नाम अज्ञात
9. **शुकसप्ततिः**	अज्ञात
10. **पुरुषपरीक्षा**	विद्यापति
11. **भोजप्रबन्ध**	बल्लालसेन
12. **जातकमाला**	आर्यशूर
13. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
14. **उदयसुन्दरीकथा**	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. **नलचम्पू** (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. **मदालसाचम्पू**	त्रिविक्रमभट्ट
3. **जीवन्धरचम्पू**	हरिश्चन्द्र
4. **यशस्तिलकचम्पू**	सोमदेवसूरि
5. **रामायणचम्पू**	राजाभोज (भोजराज)
6. **भागवतचम्पू**	अभिनवकालिदास
7. **भारतचम्पू**	अनन्तभट्ट
8. **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू**	रानी तिरुमलाम्बा
9. **भरतेश्वराभ्युदयचम्पू**	पं. आशाधरसूरि
10. **रुक्मिणीपरिणयचम्पू**	अमलाचार्य (अम्मल)

11. आनन्दवृन्दावनचम्पू कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- **भवितव्यम्** (नागपुर)
- **संस्कृतम्** (अयोध्या)
- **गाण्डीवम्** (वाराणसी)
- **पण्डितपत्रिका** (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- **भारतवाणी** (पूना)
- **शारदा** (पूना)
- **संस्कृतसाकेत** (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- **संस्कृतमञ्जूषा** (कलकत्ता)
- **सूर्योदय** (काशी)
- **आनन्दकल्पतरु** (कोयम्बटूर)
- **गुरुकुलपत्रिका** (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- **जयतु संस्कृतम्** (काठमाण्डू)
- **दिव्यज्योतिः** (शिमला)
- **बालसंस्कृतम्** (मुम्बई)
- **भारती** (जयपुर)
- **भारतीयविद्या** (मुम्बई)
- **मालवमयूर** (मन्दसौर)
- **संस्कृतरत्नाकर** (दिल्ली)
- **सरस्वतीसौरभम्** (बड़ौदा)
- **संस्कृतसञ्जीवनम्** (पटना)
- **साहित्यवाटिका** (दिल्ली)
- **भारतोदयः** (हरिद्वार)
- **सम्भाषणसन्देशः** (बङ्गलोर)
- **चन्दमामा** (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- **सङ्गमनी** (प्रयाग)
- **सरस्वतीसुषमा** (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- **सागरिका** (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- **विश्वसंस्कृतम्** (होशियारपुर)
- **उशती** (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- **महाराजसंस्कृतपत्रिका** (मैसूर)

5. षाण्मासिक-पत्रिका

- **पुराणम्** (वाराणसी)
- **संस्कृत प्रतिभा** (नई दिल्ली)
- **विद्वत्कला** (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- **अमृतवाणी** (बङ्गलोर)
- **संस्कृतगङ्गा** (प्रयाग)

संस्कृत कवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. बाणभट्ट	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. भवभूति	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. भारवि	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. माघ	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. श्रीहर्ष	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. विशाखदत्त	पृथु (भास्करदत्त)	(पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन**, बहन – **राज्यश्री**)
8. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	

12. कल्हण	चम्पक	
13. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. पाणिनि	पणिन्–दाक्षी	
15. कात्यायन (वररुचि)	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. मम्मट	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. पतञ्जलि	गोणिका (माता)	
21. कालिदास	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	
24. वरदराज	दुर्गातनय	
25. रत्नाकर	अमृतभानु	
26. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव–सुमित्रा	
27. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. वेदव्यास	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	**वाल्मीकि**	आदिकवि
2.	**कृष्णद्वैपायन**	व्यास या वेदव्यास
3.	**कालिदास**	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	**अम्बिकादत्तव्यास**	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	**बाणभट्ट**	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणःकवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	**जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)**	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	**मल्लिनाथ**	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	**त्रिविक्रमभट्ट**	यमुनात्रिविक्रम
9.	**विश्वनाथ**	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
		रत्नाकर
10.	जगन्नाथ	पण्डितराज
11.	भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	माघ	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	महिमभट्ट	'राजानक'
19.	रुय्यक	'राजानक'
20.	क्षेमेन्द्र	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद
30.	दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31.	भट्टि	
32.	मातृचेट	बौद्धकवि
33.	यामुनाचार्य	आलवन्दार
34.	राजशेखर	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36.	वात्स्यायन	मल्लनाग
37.	विद्यापति	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य
39.	क्षमाराव	पण्डिता
40.	पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	प्रभाकर मिश्र	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज

45.	श्रीहर्ष	कविताकामिनी का हर्ष
46.	आनन्दराय मखी	वेदकवि
47.	रत्नाकर	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
48.	शेषाचलपति	आन्ध्रपाणिनि
49.	आर्यभट्ट	अश्मकाचार्य
50.	मङ्ख	कर्णिकार
51.	शाकटायन	आदिशाब्दिक
52.	पद्मगुप्त	परिमल कालिदास
53.	द्वादशाविद्यापति	वदिराज सूरि
54.	प्रसन्नराघवकार जयदेव	पीयूषवर्ष
55.	दिंगनागाचार्य	तर्कपुंगव
56.	मुकुलभट्ट	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
57.	ब्रह्मगुप्त	गणकचक्रचूडामणि
58.	श्रीनिवासदीक्षित	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर
59.	सोमदेव सूरि	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
60.	धनपाल	सरस्वती
61.	वस्तुपाल	लघुभोजराज
62.	शान्तिसूरि	वादिवेताल
63.	हृषिकेशभट्टाचार्य	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)

17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
कवि	**निवासस्थान (जन्मस्थान)**
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	8. कल्हण	शैव
2. भवभूति	शैव	9. अभिनवगुप्त	शैव
3. भारवि	शैव	10. भट्टनारायण	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
कवि	**सम्प्रदाय**	**कवि**	**सम्प्रदाय**
4. माघ	वैष्णव	11. रूपगोस्वामी	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	12. विश्वनाथकविराज	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	13. राजशेखर	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि	प्रिय अलङ्कार
1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक

7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति

2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. विज्जिका	स्फुटपद्य	850 ई.
2. गङ्गादेवी	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. अवन्ति सुन्दरी (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. तिरुमलाम्बा (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. रामभद्राम्बा	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890-1954
7. पुष्पा दीक्षित	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. मधुरवाणी	रामकथा	1590 ई.
9. सुभद्रा	स्फुटपद्य	–
10. विकटनितम्बा	स्फुटपद्य	–
11. शीला भट्टारिका	स्फुटपद्य	–
12. देवकुमारिका	स्फुटपद्य	–
अन्य स्त्री लेखिकायें राजम्मा, सुन्दरावली, ज्ञानसुन्दरी आदि।		

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	**वेदाङ्गज्योतिष**	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	**निरुक्त**	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	**छन्दःसूत्रम्**	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	**सांख्यसूत्र**	700 ई.पू.
5. जैमिनि	**मीमांसासूत्र**	600 ई.पू.
6. कणाद	**वैशेषिकसूत्र**	500 ई.पू.
7. चरक	**चरकसंहिता**	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	**सुश्रुतसंहिता**	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	**वाल्मीकीयरामायणम्**	500 ई.पू.
10. पाणिनि	**अष्टाध्यायी**	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	**महाभारत एवं 18 पुराण**	400 ई.पू.

12. कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	400 ई.पू.
13. बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	अष्टाध्यायी पर वार्तिक	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	महाभाष्य, योगसूत्र	185 ई.पू.
लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास

48. भट्टनारायण	**वेणीसंहारम्**	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	**कुट्टनीमतम्**	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	**अनर्घराघवम्**	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	**काव्यालङ्कारसूत्र**	आठवीं शताब्दी

लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
52. आनन्दवर्धन	**ध्वन्यालोक**	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	**भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)**	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	**हनुमन्नाटक**	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	**हरविजयम्**	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	**काव्यमीमांसा**	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	**न्यायमञ्जरी**	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	**तिलकमञ्जरी**	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	**नलचम्पू, मदालसाचम्पू**	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	**वक्रोक्तिजीवितम्**	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	**व्यक्तिविवेक**	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	**औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी**	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमित्र	**प्रबोधचन्द्रोदय**	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	**कथासरित्सागर**	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	**श्रीभाष्य**	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	**विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
67. भोज	**रामायणचम्पू**	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	**तर्कभाषा**	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	**लीलावती, बीजगणित**	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	**काव्यप्रकाश**	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	**राजतरङ्गिणी**	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	**श्रीकण्ठचरितम्**	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	**नैषधीयचरितम्**	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
74. गोवर्धनाचार्य	**आर्यासप्तशती**	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	**गीतगोविन्दम्**	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	**सांख्यप्रवचनभाष्यम्**	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	**तत्त्वचिन्तामणि**	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	**पूर्णप्रज्ञभाष्यम्**	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	**शार्ङ्गधरसंहिता**	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	**छन्दोमञ्जरी**	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य

81. विद्यापति	**पुरुषपरीक्षा**	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	**हितोपदेश**	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	**साहित्यदर्पण**	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	**भारतचम्पू**	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	**अणुभाष्यम्**	1479 ई. 1544 ई.
लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
86. बल्लालसेन	**भोजप्रबन्धम्**	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	**वरदम्बिकापरिणयचम्पू**	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	**सिद्धान्तकौमुदी**	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	**तर्कसंग्रह**	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	**वैयाकरणभूषणसार**	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	**वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा**	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	**वेदान्तसार**	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	**रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी**	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	**शिवराजविजयम्**	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	**कथामुक्तावली**	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	**अग्निशिखा**	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	**सीताचरितम्**	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	**जानकीजीवनम्**	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	**लाहरीदशावकम्,**	
गीतवीवरम्	इक्कीसवीं शताब्दी	
100. ललितकुमार त्रिपाठी	**गाङ्गालाहरी**	
(सम्पादनम्)	इक्कीसवीं शताब्दी	

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	**पत्नी/प्रेमिका**	**पुत्र/पुत्री**
पति/प्रेमी	**पत्नी/प्रेमिका**	**पुत्र/पुत्री**
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा	
2. वशिष्ठ	अरुन्धती	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका, वसुमती	भरत (सर्वदमन)
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका)	
	(ii) भामिनी (पत्नी)	
14. राम	सीता	कुश-लव
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति	
18. नल	दमयन्ती	
19. पुरूरवा	उर्वशी	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन
21. नन्द	सुन्दरी	
22. अविमारक	कुरङ्गी	
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव

28. कृष्ण	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
29. शर्विलक	मदनिका	
30. अग्निमित्र	मालविका	
31. उदयन	रत्नावली (सागरिका)	
32. उदयन	वासवदत्ता	
33. माधव	मालती	
34. मकरन्द	मदयन्तिका	
35. तारापीड	विलासवती	चन्द्रापीड
36. चन्द्रापीड	कादम्बरी	
37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
38. हंस	गौरी	महाश्वेता
39. चित्ररथ	मदिरा	कादम्बरी
40. श्वेतकेतु	लक्ष्मी	पुण्डरीक

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
41. हेममाली (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
42. कवि जयदेव (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती	
43. राजा दिलीप	सुदक्षिणा	रघु
44. अज	इन्दुमती	दशरथ
45. कामदेव	रति	
46. शिव	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय
47. विष्णु	लक्ष्मी	
48. अभिमन्यु	उत्तरा	परीक्षित
49. हिमालय	मैना	पार्वती
50. शुकनास	मनोरमा	वैशम्पायन
51. राजशेखर	अवन्तिसुन्दरी	
52. दुर्योधन	भानुमती	
53. गौतम	अहल्या	शतानन्द
54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु
शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)
3. भवभूति	ज्ञाननिधि
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य
10. देवताओं के	बृहस्पति
11. असुरों के	शुक्राचार्य
12. लव, कुश, सौधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)
15. मंखक	रुय्यक
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)
17. बाणभट्ट	भर्वु
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव
19. कनिष्क	अश्वघोष
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गौडपाद
23. महेन्द्रपाल	राजशेखर
24. अभिनवगुप्त	भट्टतौत
25. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट
26. एकलव्य	द्रोणाचार्य
27. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व
28. गालव	मारीच
29. कर्ण	परशुराम
30. भीष्मपितामह	परशुराम
31. दुर्योधनादि (कौरवों के)	द्रोणाचार्य
32. चन्द्रापीड	शुकनाश (उपदेष्टा)
33. जैमिनि	पराशर
34. पराशर	व्यास

35. मण्डनमिश्र	कुमारिलभट्ट
36. उम्बेक (भवभूति)	कुमारिलभट्ट
37. प्रभाकरमिश्र	कुमारिलभट्ट
38. शालिकनाथ	प्रभाकरमिश्र
39. आसुरि	कपिलमुनि
40. पञ्चशिख	आसुरि
41. हस्तामलक	शङ्कराचार्य
42. योगीन्द्र सदानन्द	अद्वयानन्द
43. अरस्तू	प्लेटो
44. प्लेटो	सुकरात
45. सिकन्दर	अरस्तू
46. नागेशभट्ट	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**2. तारापीड**	उज्जयिनी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**4. राम**	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**6. नल**	निषधदेश
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**8. शिवाजी**	सतारा/रायगढ़
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**10. युधिष्ठिर**	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11. पुरु	हस्तिनापुर	**12. प्रद्योत**	उज्जयिनी
13. कुबेर	अलकापुरी	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15. भर्तृहरि	धारानगरी	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
17. दुर्विनीत	कोंकण	**18. राजाभोज**	धारानगरी
19. हर्षवर्धन	थाणेश्वर	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
21. पृथ्वीराज	दिल्ली	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
23. मुहम्मद गोरी	गोरदेश	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
25. रन्तिदेव	दशपुर		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	या सृष्टिः स्रष्टुराद्या.....। (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम् (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...। (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	निपीय यस्य (वंशस्थ)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजयम्	विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....। (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....। (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46)
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण

2. **मेघदूतम्** (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. **किरातार्जुनीयम्** (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. **नैषधीयचरितम्** (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. **उत्तररामचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. **वेणीसंहारम्** (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. **मृच्छकटिकम्** (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. **कादम्बरी** (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. **शिवराजविजयम्** (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. **बुद्धचरितम्** (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
13. **कुमारसम्भवम्** (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. **सौन्दरानन्द** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. **स्वप्नवासवदत्तम्** (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. **प्रतिमानाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. **अभिषेकनाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. **पञ्चरात्रम्** (भास)	महाभारतम्
19. **मध्यमव्यायोग** (भास)	महाभारतम्
20. **कर्णभारम्** (भास)	महाभारतम्
21. **दूतघटोत्कचम्** (भास)	महाभारतम्
22. **बालचरितम्** (भास)	महाभारतम्
23. **उरुभङ्ग** (भास)	महाभारतम्
24. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** (भास)	उदयनकथाश्रित
25. **मालविकाग्निमित्रम्** (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. **विक्रमोर्वशीयम्** (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. **रत्नावली** (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. **महावीरचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. **प्रसन्नराघवम्** (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. **नलचम्पू** (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. **मुद्राराक्षस** (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. **प्रियदर्शिका** (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. **मालतीमाधवम्** (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. **अनर्घराघवम्** (मुरारि)	वाल्मीकिरामायणम्
35. **प्रबोधचन्द्रोदय** (कृष्णमिश्र)	कविकल्पनाप्रसूत
36. **हर्षचरितम्** (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. **ऋतुसंहारम्** (कालिदास)	कविकल्पित
38. **भट्टिकाव्य/रावणवध** (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. **जानकीहरणम्** (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. **हरविजयम्** (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. **शारिपुत्रप्रकरणम्** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
5. उत्तररामचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. मेघदूतम्	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी

रचना	नायक	नायिका
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त) वैशम्पायन (सहनायक)	कादम्बरी महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार) राजवाहन	विलासवती अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	**2. मेघदूतम्**	विप्रलम्भशृङ्गार
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	**4. किरातार्जुनीयम्**	वीररस

5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	**6. शिशुपालवधम्**	वीरस
7. रघुवंशम्	वीररस	**8. बुद्धचरितम्**	शान्तरस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	**10. कुमारसम्भवम्**	शृङ्गाररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	**12. स्वप्नवासवदत्तम्**	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	**14. महावीरचरितम् (नाटक)**	वीररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	**16. विक्रमोर्वशीयम्**	शृङ्गाररस
17. मुद्राराक्षसम्	वीररस	**18. प्रियदर्शिका**	शृङ्गाररस
19. रत्नावली	शृङ्गाररस	**20. नागानन्द**	शान्तरस/वीररस
21. वेणीसंहारम्	वीररस	**22. कुन्दमाला**	करुणरस
23. प्रबोधचन्द्रोदय	शान्तरस	**24. शृङ्गारशतकम्**	शृङ्गाररस
25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस	**26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)**	वीररस
27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस	**28. कर्पूरमञ्जरी**	शृङ्गाररस
29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस	**30. अनर्घराघवम्**	शृङ्गाररस
31. रामायणम्	करुणरस	**32. महाभारतम्**	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	**ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द**
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप् शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेक छन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38) शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद

3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्को में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकि)	7 काण्ड, 600 सर्ग, 24,000 श्लोक
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	18 पर्व, 1 लाख श्लोक
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	12 स्कन्ध, 18000 श्लोक
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन विमर्श
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा

2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् (‘श्री’ पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी

कवि	ग्रन्थ
1. सुबन्धु	वासवदत्ता
2. बाणभट्ट	कादम्बरी
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्

4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी

ग्रन्थः	कविः
1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम

6. पाषाणत्रयी

1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग
2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग
3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग

7. गुणत्रयी

1. सत्त्वगुणः
2. रजोगुणः
3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी

मुनिः	व्याकरणग्रन्थः	साहित्यिकग्रन्थः
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्

9. प्रस्थानत्रयी

1. ब्रह्मसूत्र
2. उपनिषद्
3. गीता

10. वेदत्रयी

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद

यज्ञ	यज्ञकर्ता
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)
राजसूय	युधिष्ठिर
पुत्रेष्टि	दशरथ
अश्वमेध	राम
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव

वीणा	स्वामी	ग्रन्थ
महती	नारद	शिशुपालवधम्
कच्छपी	सरस्वती	–
घोषवती	वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)

चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	व्यास	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार		
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार +	08 अर्थालङ्कार +	06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार		
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार		
5. काव्यादर्श–दण्डी	37 अलङ्कार		
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार		
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	68 अलङ्कार		
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार +	24 अर्थालङ्कार +	24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार +	61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार	
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार		
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार		
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार		
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार		

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. वीररस	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. वीभत्सरस	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4. रौद्ररस रुद्र	क्रोध		रक्त
5. हास्यरस	हास	शुक्ल	प्रमथ
6. अद्भुतरस	विस्मय	पीत	गन्धर्व
7. भयानक रस	भय	कृष्ण	महाकाल
8. करुणरस	शोक	कपोत	यम
9. शान्तरस	निर्वेद/शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**"अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः"–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **"शान्तोऽपि नवमो रसः"**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्‌भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं–**"एको रसः करुण एव"**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– **"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय
मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी
उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी
अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी
भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी
अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।
धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।
धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।
धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी
स्वकीया मध्या – यक्षिणी
स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्

2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
● नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
● सट्टक	4 अङ्क	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	**विदूषक**	**नाटक**	**विदूषक**
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य		
6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	वसन्तक		
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक		
7. मालतीमाधवम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव		
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम		
8. महावीरचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव		
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय		
9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव		
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक		
10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)	विदूषक का अभाव		

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	**कञ्चुकी का नाम**
नाटक	**कञ्चुकी का नाम**
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण
5. उत्तररामचरितम्	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण
6. रत्नावली	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण
7. वेणीसंहारम्	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन
विनयन्धर (दुर्योधन का)	

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	**पञ्च कार्यावस्थायें**	**पञ्चा**
सन्धियाँ	**पञ्च अर्थोपक्षेपक**	
पञ्चनाटककार		
1. बीज	1. आरम्भ	1 .
मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2 .
प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2 .
कालिदास		
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3 .
गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3 .
शूद्रक		
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4 .
अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4 .
विशाखदत्त		
5. कार्य	5. फलागम	5 .
उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5 .
भवभूति		

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	**अङ्क का नाम**	**श्लोकसंख्या**
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31

षष्ठ	**पश्चात्ताप**	32
सप्तम	**पुनर्मिलन**	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**चित्रदर्शन**	51
द्वितीय	**पञ्चवटीप्रवेश**	30
तृतीय	**छाया**	48
चतुर्थ	**कौशल्याजनकयोग**	29
पञ्चम	**कुमारविक्रम**	35
षष्ठ	**कुमारप्रत्यभिज्ञान**	42
सप्तम	**सम्मेलन**	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	**अलङ्कारन्यास**	58
द्वितीय	**द्यूतकरसंवाहक**	20
तृतीय	**सन्धिच्छेद**	30
चतुर्थ	**मदनिकाशर्विलक**	33
पञ्चम	**दुर्दिन**	52
षष्ठ	**प्रवहणविपर्यय**	27
सप्तम	**आर्यकापहरण**	09
अष्टम	**वसन्तसेनामोटन**	47
नवम	**व्यवहार** (न्यायालय)	43
दशम	**संहार** (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	**मदनमहोत्सव**	26
द्वितीय अङ्क	**कदलीगृहम्**	21
तृतीय अङ्क	**सङ्केतक**	19
चतुर्थ अङ्क	**ऐन्द्रजालिक**	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	08 × 4 = 32
इन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44
उपेन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44
उपजाति	11 × 4 = 44
रथोद्धता	11 × 4 = 44
शालिनी	11 × 4 = 44
स्वागता	11 × 4 = 44
वंशस्थ	12 × 4 = 48
द्रुतविलम्बित	12 × 4 = 48
छन्द	**वर्णों की संख्या**
तोटक (त्रोटक)	12 × 4 = 48
भुजङ्गप्रयात	12 × 4 = 48
प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	13 × 4 = 52
वसन्ततिलका	14 × 4 = 56
मालिनी	15 × 4 = 60
पञ्चचामर	16 × 4 = 64
शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	17 × 4 = 68
शार्दूलविक्रीडित	19 × 4 = 76

स्रग्धरा $21 \times 4 = 84$

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

रामायण - रम्या रामायणी कथा

श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा

काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे, टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1.कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।

2. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

उत्तररामचरितम् - उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते

मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

किरातार्जुनीयम्

"वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।"

नैषधीयचरितम्

1. " नैषधं विद्वदौषधम् "

2. "तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।"

3. "नैषधे पदलालित्यम् "

रावणवध (भट्टिकाव्य)

1. "अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्चत्रयीयं सुखदास्तु वः।।"

2. व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

जानकीहरणम्

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

हरविजयम्

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

सेतुबन्धमहाकाव्यम्

"महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम्।।"

गाथासप्तशती

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

अमरुकशतक

"अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।"

वासवदत्ता

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्।।

कादम्बरी

1. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'

2. कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।

3. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।'

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता
सामवेद	उद्गातृ-वेद
अथर्ववेद	ब्रह्मवेद
ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविश, प्रौढ़
छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण
छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्
केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्
शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक
आरण्यक	रहस्यग्रन्थ
ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)
निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र
ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र
हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र
कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण
व्याकरण	शब्दशास्त्र
लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप
काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र
बृहत्संहिता	वाराही संहिता
वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी
मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी
ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
अग्निपुराण	विश्वकोष
नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
वायुपुराण	शिवपुराण
रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य आर्यभट्टाकाव्य
भुशुण्डिरामायण	महारामायण
योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
महाभारत	शतसाहस्रीसंहिता
सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
जाम्बवतीजय	पातालविजय
रावणवध	भट्टिकाव्य
काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
नाट्यशास्त्र	षट्साहस्री संहिता
कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्रयंक
प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
हनुमन्नाटक	महानाटक
गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद
प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण
स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति
प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध
आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत
लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा
शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य
भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त
मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि
वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र
अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव
सर्वश्रेष्ठ कर्म	यज्ञ
सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण
सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्
शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति
संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना	कादम्बरी
ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
सर्वप्रथम नाटककार	भास
मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
चम्पू ग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
सुभाषित संग्रह का प्रथम ग्रन्थ	गाथासप्तशती
प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरित
समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
कलापक्ष के प्रथम आचार्य	भारवि
उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध

भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस
काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र
व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
चम्पू काव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
अर्वाचीनतम ब्राह्मण ग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
आदिकाव्य	रामायण
ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

श्रीमद्भगवद्गीता - **महाभारत**
(भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)

हरिवंशपुराण - **महाभारत**
(महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)

रासपञ्चाध्यायी - **भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)

दुर्गासप्तशती - **मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)

हंसगीता - **विष्णुधर्मोत्तरपुराण**

		(तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)
अध्यात्म-रामायण	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)
पराशर-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)
विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
शिवसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
हंस-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
शकुन्तलोपाख्यान	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
नलोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
रामोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
सावित्र्युपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
शङ्करगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी**
ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र के बृहत्त्रयी**

तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक - **महानारायणोपनिषद्**
शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय - **बृहदारण्यकोपनिषद्**
आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल- **अध्यात्मपटल**
गीता का 18वाँ अध्याय - **एकाध्यायीगीता**
किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग - **चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयोक्त गर्वोक्तियाँ

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध - **सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)

लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु - **माघ अपने काव्य के विषय में** (सातवीं शताब्दी ई०)

शृङ्गारामृतशीतगुः - **श्रीहर्ष नैषधीयचरित के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)

कविकुलादृष्टाध्वपान्थः - **श्रीहर्ष ने अपने काव्य शिशुपालवध को माना** (12 वी. शताब्दी ई०)

चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु - **रत्नाकर अपने काव्य को** (बारहवीं शताब्दी ई०)

सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव - **जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।** (बारहवीं शताब्दी ई०)

आनन्दवर्धन - आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः। (राजशेखर)

कालिदास - 1. कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
2. न कालिदासादपरस्य वाणी। (श्रीकृष्णकवेः)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः। (घटखर्परस्य)

गुणाढ्य - शश्वद् बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। (त्रिविक्रमभट्टस्य)

दण्डी - दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। (राजशेखरस्य)

पाणिनिः - नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।
आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्।। (राजशेखरस्य)

बाणभट्ट - 1. वाणी बाणो बभूवेति। (गोवर्धनस्य)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (तत्रैव)
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदासस्य)
4. बाणस्तु पञ्चाननः। (श्रीचन्द्रदेवस्य)
5. यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे च तादृशः। (भोजराजस्य)
6. भट्टबाणस्य भारतीम्। (कस्यापि)

❑❑

3.
प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन

3.1 भारतीय संस्कृति

- **अर्थ-** संस्कृत में संस्कृति शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है- सँवारना, सजाना, परिष्कृत करना, अलङ्कृत करना, शुद्ध अथवा परिमार्जित करना।
- विशेष सन्दर्भ में इसका अन्य अर्थ भी है, जैसे- मन्त्रोच्चारण द्वारा परिमार्जित, प्रबोधित अथवा शिक्षित करना, सञ्चित अथवा इकट्ठा करना, सुन्दर एवं सम्पूर्ण सृजन।
- संस्कृति को किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता। उसकी अनुभूति कृति से प्रदर्शन से और उदाहरणों से होती है।
- हिन्दी भाषा में संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति अंग्रेजी के 'Culture' शब्द अथवा लैटिन के 'Culture' शब्द से हुई है,जिसका अर्थ है 'कर्षण' अथवा कृषि कर्म करना। इसी से Agriculture (कृषि), Fishiculture (मत्स्यकर्म), Horticulture (बागवानी) जैसे शब्दों का निर्माण हुआ है।
- उपर्युक्त अर्थों से एक बात स्पष्ट है कि परिमार्जन मनुष्य का अपना प्रयत्न है, एक आभ्यन्तर प्रयास है जो हमें प्रकृति द्वारा सहज प्राप्त नहीं हुआ है। वस्तुतः ये अर्थ हम लोगों में सौष्ठव एवं सत्कार के द्योतक हैं।

संस्कृति की परिभाषा

- **1. सत्यकेतु विद्यालङ्कार-** "मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है, उसको संस्कृति कहते है।"
- **2. श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचार्य-** "किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट पुरुषों में विचार, वाणी एवं क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता है, उसी का नाम संस्कृति है।"
- **3. उपाध्याय विद्यानन्दमुनि-** "संस्कृति, संस्कारों के पुञ्ज का नामान्तर है।"

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

- डॉ. रामजी उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति में सार्वजनिकता, सर्वांगणीयता, देवपरायणता, धर्मपरता, आश्रम-व्यवस्था, आध्यात्मिकता, कर्मफल, सर्वे सुखिनः सन्तु, निःसीमता, सनातनता, समृद्धिशालिता, श्रेष्ठों का आदर्श एवं तप प्रधानता जैसी तेरह विशेषताएं बतायी हैं।
- डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को इंगित करते हुए कहा है कि भारतीय संस्कृति किसी व्यक्ति या किसी एक ग्रन्थ पर आधारित न होकर चिरंतन विकास का परिणाम है।
- डॉ. सत्यकेतु विद्यालङ्कार का कहना है कि भारतीय संस्कृति भौतिकवादी न होकर अध्यात्म पर आधारित है।
- विश्ववन्द्य एवं सर्वग्राह्य भारतीय संस्कृति की इन विशेषताओं के बीच हिन्दू संस्कृति पर यदि दृष्टि डालें तो यह भी न्यूनाधिक परिवर्तन के बाद भी अपने मौलिक रूप में विद्यमान है।
- हिन्दू संस्कृति, मन्त्र, उपनिषद्, गीता-दर्शन आदि हिन्दू सम्प्रदाय के जीवन दर्शन का आधार है। इसमें वर्णित सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का उपदेश आज भी भारतवासियों को कर्णप्रिय है।
- सभी दर्शन आध्यात्मिकता पर बल देते हैं। हिन्दुओं के प्रत्येक कार्य आत्मा एवं परमात्मा से सम्बद्ध दिखते हैं।
- आत्मा को अजर, अमर, शाश्वत एवं अविनाशी कहकर हमें आशावान् बनाया गया है-

  न जायते म्रियते वा कदाचित्
  नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
  अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
  न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥
- ईश्वर के प्रति आस्था हिन्दुओं को धर्म-परायण बनाती है। पुरुषार्थ-चतुष्टय में भी मोक्ष के अतिरिक्त धर्म को प्रमुख स्थान प्राप्त है।

  'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।'
- धर्म की स्थापना एवं अत्याचार दूर करने के लिए अवतारों की कल्पना की गयी है-

  यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
  अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ (गीता 4.7)
- समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन चार वर्णों में सुनियोजित करने के लिए विभाजित किया गया था-

  ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहूः राजन्यः कृतः।

ऊरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥
(ऋ० 10.90.12)

- हिन्दुओं ने 'जीवेम शरदः शतम्,पश्येम शरदः शतम् ......' की इच्छा प्रारम्भ से ही की थी।
- आर्यों ने मानसिक एवं शारीरिक उन्नति के लिए मानव जीवन को संस्कारों से बाँध रखा था तथा माँ के गर्भ से लेकर शरीर के छोड़ने तक सोलह संस्कारों द्वारा शरीर एवं मन को सुसंस्कृत करने की व्यवस्था की गयी थी।
- आर्य परिवार संयुक्त परिवार के पक्षधर थे। यहाँ अतिथियों, गुरुओं तथा अन्य प्राणियों के प्रति आदर भावना थी।
- '**अतिथि देवो भव**' की उक्ति आर्यों के आतिथ्य सत्कार की भावना प्रदर्शित करता है।
- आर्यों ने सम्पूर्ण जगत् को परिवार के रूप में देखा था- (वसुधैव कुटुम्बकम्)

  '**संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**' अथवा '**सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।**' '**तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।**' जैसी पंक्तियाँ आर्यों के सहयोग की भावना प्रदर्शित करती हैं।
- विश्वकल्याण की भावना आर्यों में चरमोत्कर्ष पर थी-

  सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
  सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥
- हिन्दुओं ने मानव शरीर को परोपकार का साधन माना है- '**परोपकाराय सतां विभूतयः।**'
- हिन्दुओं की दृष्टि में शरीर के साथ प्रकृति भी हमारे लिए परोपकार हेतु ही है-

  परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
  परोपकाराय विभाति सूर्यः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥
- आर्यों की आध्यात्मिक प्रवृत्ति निष्कामभाव की प्रेरणा देती है-

  ईशा वास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
  तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
- आर्य सदाचार के द्योतक थे। सदाचार भारतीयों की जीवन शैली है- '**आचारः परमो धर्मः।**'
- आर्यों के मर्यादित जीवन के लिए उपनिषदों में वर्णित है- '**सत्यं वद, धर्मं चर।**'

  इसप्रकार हमें भौतिक उन्नति के बीच आध्यात्मिक उत्कर्ष का समन्वय भारतीय संस्कृति में प्राप्त होता है।

निष्कर्ष-

- भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय संस्कृति के विकासक्रम का इतिहास सहस्रों वर्षों का है, जिसमें अनेक सामाजिक तत्त्वों का योग रहा है।
- वैदिक काल से भारतीय संस्कृति उन्नतशील रही है। अनेकानेक भारतीय सामाजिक संस्थाओं का विकास वैदिक युग में हो गया था।
- वर्णाश्रम, विवाह, सोलह संस्कार आदि ऐसी अनेक सामाजिक संस्थाओं का उद्भव ही नहीं विकास भी वैदिकोत्तर युग में हो गया था।

  अतः सामाजिक संस्थाओं में संस्कृति की प्राचीनता भी भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है।

3.2 वर्ण व्यवस्था

- प्राचीन भारतीय चिन्तन में व्यक्ति को समुन्नत बनाने के लिए आश्रम व्यवस्था को स्वीकार किया गया।
- धर्मशास्त्रों और स्मृतियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों का उनके उद्गम (मुख, बाहु आदि) एवं धार्मिक (सत्व, रजस् एवं तमस् पर आश्रित) प्रवृत्तियों के आधार पर, जो स्पष्ट विभाजन किया गया है-

  ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्मः कृतः।
  ऊरू तदस्य यद वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो ऽजायत॥
  (ऋ० 10.90.12)
- तदनुसार चारों वर्णों के कर्तव्य इस प्रकार हैं-

(1) **ब्राह्मण-** ब्राह्मण शब्द का प्रयोग वेदाध्ययनकर्त्ता, ब्रह्मज्ञानी तथा ब्रह्मपुत्र के लिए होता है। 'ब्रह्म' शब्द का सामान्य अर्थ है मन्त्र या प्रार्थना। इस प्रकार यज्ञ कार्यसंलग्न, सोमपायी, मनीषी को ब्राह्मण माना गया है। इसकी उत्पत्ति विराट् पुरुष के मुख से मानी गयी है। फलतः यह वर्णव्यवस्था में सर्वप्रथम परिगणित है।

ब्राह्मण के छः प्रधान कर्म- (मनुस्मृति के अनुसार)
अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥

1 अध्ययन 2 अध्यापन
3 यज्ञ करना 4 यज्ञ कराना
5 दान लेना 6 दान देना

- गीता में ब्राह्मण के 8 स्वाभाविक कर्म कहे गये हैं-

  शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
  ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥ (18.42)

  1 शम 2 दम 3 तप 4 शौच (शुद्धि) 5 क्षमाभाव 6 आर्जव (सरलता) 7 ज्ञान-विज्ञान 8 आस्तिकता
- ब्राह्मण को '**भूसुर**' कहा जाता था।

(2) क्षत्रिय- क्षत्रिय का शाब्दिक अर्थ है- रक्षा करने वाला। ऋग्वेद में 'क्षत्रिय' के अतिरिक्त 'क्षत्र', 'राजा' और 'राजन्य' शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

- **क्षत्रिय कर्त्तव्य-** 1 प्रजा की रक्षा करना, 2 दान देना 3 यज्ञ करना 4 वेदाध्ययन करना 5 विषयों में आसक्त न होना

प्रजानां रक्षणं दानमेज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ (मनु0 1.8)

- **गीता में क्षत्रिय कर्त्तव्य-**

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥ (18.43)

1 शौर्य 2 तेज 3 धैर्य 4 चातुर्य 5 युद्ध क्षेत्र से पलायन न करना 6 दान 7 ईश्वरभाव (स्वामिभाव)

(3) वैश्य- ऋग्वेद में 'विश्' शब्द का प्रयोग सामान्य तथा समूह अर्थ (जैसे- दैवीनां विशम् , मानुषीणां विशम्, दासीविशम्) में देखा जाता है।

केवल पुरुषसूक्त के वर्णव्यवस्था सूचक मन्त्र में 'वैश्य' का प्रयोग हुआ है। सम्भवतः व्यापारी वर्ग (वैश्य) समूह में रहता है, इसलिए 'विश्' शब्द से 'ष्यञ्' प्रत्यय के योग से वैश्य निष्पन्न हुआ।

- **वैश्य कर्त्तव्य-**

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥

1 पशुओं की रक्षा करना 2 दान देना 3 यज्ञ करना 4 वेदाध्ययन करना 5 व्यापार करना 6 ब्याज लेना 7 कृषि करना

- **गीता में वैश्य कर्म-**

''**कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।**
(गीता-18/44)

1. कृषि 2. गोरक्षा 3. वाणिज्य

- वैश्य को व्यापार से प्राप्त धन का एक निश्चित भाग राजा को 'कर' के रूप देना पड़ता था। मदिरा, मांस, लोहा और चमड़ा जैसी वस्तुओं का विक्रय निषिद्ध था परन्तु इनके बेंचने पर छठाँ भाग कर रूप में देना पड़ता था।
- समाज में व्यापारियों में मुख्यतः पाँच वर्ग थे-

1. स्थानीय वणिक् 2. कारवाँ 3. सामुद्रिक व्यापारी 4. उद्योग संलग्न 5. साधारण व्यापारी

- हेमचन्द्र ने आठ प्रकार के वैश्यों का उल्लेख किया है।

सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजो वणिक्।
क्रयविक्रयिकः पण्याजीवाऽपाणिक् नैगमाः॥

(4) शूद्र- 'शूद्र' शब्द का अर्थ है- शोक करने वाला।

- ऋग्वेद में केवल एक बार यह शब्द प्रयुक्त हुआ है और वह भी वर्णव्यवस्था के विषय में।

शूद्र कर्त्तव्य- मनुस्मृति में शूद्र का एक मात्र कर्तव्य द्विज सेवा बताया गया। गीता में भी परिचर्या ही उसका स्वाभाविक कर्म उपदिष्ट है।

''**एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।**
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषानसूयया॥'' (मनु0 1/61)
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्॥ (गीता 18.44)

3.3 संस्कार

- व्यक्ति के पूर्वजन्म एवं वंशानुक्रम से प्राप्त दुर्गुणों को निकालकर उसमें सद्गुण स्थापन के प्रयत्न को वैदिक विचार धारा में संस्कार कहा गया है। **आचार्य चरक** के शब्दों में- ''**संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते**'' अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों का आधान करना ही संस्कार है।
- प्रत्येक व्यक्ति समाज का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है, समाज को उच्चतर अथवा निकृष्टतर बनाने में उसका विशिष्ट योगदान होता है। यही नहीं, कोई भी व्यक्ति कभी पूर्ण नहीं हो सकता, मानव जीवन निरन्तर प्रवाहमान है जिसमें ऊपर उठने तथा नीचे गिरने का अवसर सुलभ है। अतएव वैदिक मनीषियों ने मनुष्य को उसके जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक संस्कृत करते रहने की योजना बनायी ताकि उसके स्खलन की सम्भावना कम से कम रहे। प्रत्यक्ष में तो यह योजना व्यक्ति परक ही दृष्टगोचर होती है परन्तु इसका प्रमुख उद्देश्य है व्यक्ति के माध्यम से समाज और राष्ट्र को उन्नत बनाना।
- उपलब्ध साहित्य में संस्कारों की संख्या 10 से 40 तक देखी जा सकती है। हिरण्यकेशि तथा कौशिक गृह्यसूत्रों में संस्कारों की संख्या 10 मानी गयी है, खादिर, एवं जैमिनि में 11, कौषीतकि (शाङ्खायन), आपस्तम्ब और गोभिल गृह्यसूत्र में 12, आश्वलायन तथा मानव गृह्यसूत्रों में 13, पारस्कर गृह्यसूत्र एवं मनुस्मृति में 14। गौतम ने संस्कारों की संख्या 40 दी है। प्रायः सभी धर्मशास्त्रकार संस्कारों की संख्या 16 मानते हैं।

ग्रन्थ	संस्कारों की संख्या
हिरण्यकेशि तथा कौशिकग्रह्यसूत्र	10 (दस)
खादिर एवं जैमिनि गृह्यसूत्र	11 (ग्यारह)

कौषीतकि, आपस्तम्भ, गोभिल गृह्यसूत्र 12 (बारह)
आश्वलायन तथा मानवगृहयसूत्र 13 (तेरह)
पारस्कर एवं मनुस्मृति 14 (चौदह)
गौतम के अनुसार 40 (चालीस)

(1) गर्भाधान संस्कार- गर्भाधान का अर्थ- गर्भ का आधान, गर्भ स्थापित करना। जिस कर्म द्वारा गर्भ धारण किया जाय उसे गर्भाधान कहा जाता है- **''गर्भः सन्धार्यते येन कर्मणा तद् गर्भाधानमित्यनुगतार्थकर्मनामधेयम्।''** गर्भलम्भन ऋतुगमन तथा चतुर्थी कर्म इसके पर्याय हैं। याज्ञवल्क्यस्मृति में ऋतुस्नान के बाद चौथी रात्रि से 16वीं रात्रि तक गर्भधारण के लिए उपयुक्त अवधि मानी गयी है।

(2) पुंसवन संस्कार-

- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र के अनुसार- गर्भ धारणोपरान्त पुत्र प्राप्ति हेतु यह संस्कार किया जाता था।
- गर्भ के तीसरे माह में 'पुंसवन संस्कार' मनाया जाता है।
- गृह्यसूत्र में इस संस्कार के लिए द्वितीय एवं तृतीय मास को उपयुक्त बताया गया है।

(पुरास्यन्दतइतिमासे द्वितीय तृतीय वा)

- पुत्र प्राप्ति के लिए चन्द्रमा का पुष्य देखें है नक्षत्र में रहना शुभ माना जाता है।
- वैदिक समाज की पुत्र-पुत्री विषयक भेदरहित मान्यताओं तथा वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ निर्धारण की दृष्टियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि ''पुंसवन'' संस्कार गर्भस्थ शिशु के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए किया जाता था, न कि पुत्रलाभ के लिये।

(3) सीमन्तोन्नयन संस्कार- (तृतीय संस्कार)

- सीमन्तोन्नयन वह संस्कार है जिसमें माता-पिता का ध्यान गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास पर केन्द्रित हो।
- **''चतुर्थे गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्''** इसका समय चौथा महीना माना गया है।
- बौद्धायन गृह्यसूत्र में उल्लेख है कि यह संस्कार गर्भिणी स्त्री को सम्मान एवं सत्कार देने के लिए सम्पन्न होता है।
- इस संस्कार का प्रयोजन माता के लिए ऐश्वर्य एवं गर्भस्थ शिशु के लिए दीर्घायुष्य की कामना है।
- 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' में इसका समय छठें अथवा आठवें मास होता है।

(4) जातकर्म संस्कार

- गहड़वाल नरेश जयचन्द्र द्वारा 'जातकर्म' के सम्पन्न कराये जाने का संकेत मिलता है।
- मनु के अनुसार नाभि छेदन के पहले जातकर्म संस्कार सम्पन्न कराया जाता था।
- सोना, घी, मधु का मन्त्रों से बच्चे का प्राशन कराया जाता था।
- शिशु का जन्मकाल ही इस संस्कार का समय है।
- सन्तान के जन्म के समय किये जाने वाले प्रमुख कर्म हैं-
  1 गर्भावरण जरायु को हटाकर बच्चे के मुख, नासिका आदि की सफाई।
  2 सिर पर घी का फाया (पिचु) रखना
  3 नाभिछेदन।

(5) नामकरण संस्कार-

- व्यक्तिगत, नाम से ही मनुष्य की ख्याति होती है।
- सायण 'तुरीय' शब्द की व्याख्या में कहते है कि नक्षत्रनाम, गुप्तनाम, व्यावहारिक नाम तथा यज्ञ करने के लिए रखा जाने वाला नाम (यथा-सोमयाजी) ऐसे चार नामों का प्रचलन था।
- मनु के अनुसार यह संस्कार जन्म से दशवें या बारहवें दिन करना चाहिये।
- विश्वरूप और कुल्लूक के अनुसार 11वें दिन।
- मेधातिथि के अनुसार 10वें दिन।
- बृहस्पति के अनुसार 10वें, 12वें, 13वें, 16वें, 19वें एवं 32वें दिन सम्पन्न करना चाहिए।
- मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मणों को मंगलसूचक, क्षत्रियों को बलसूचक, वैश्यों को धनसूचक एवं शूद्रों को निन्दा सूचक नाम से युक्त होना चाहिये।
- बौधायन गृह्यसूत्र में उल्लिखित है- **शर्मान्तं ब्राह्मणस्य, वर्मान्तं क्षत्रियस्य, गुप्तान्तं वैश्यस्य शूद्रस्य दासन्तमेव वा।**

(6) निष्क्रमण संस्कार- निष्क्रमण शब्द का अर्थ है- बाहर निकलना।

- जन्म से निश्चित अवधि के बाद जब सन्तान को पहली बार घर के बाहर निकाला जाता था तो वह निष्क्रमण कहलाता था।
- मनु के अनुसार यह संस्कार चौथे महीने में होना चाहिए। **''चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोनिष्क्रमणं गृहात्।''**

(7) अन्नप्राशन संस्कार-

- जीवन में सर्वप्रथम अन्न का अशन (भोजन) करना अन्नप्राशन कहलाता है।
- इसका समय छठवाँ महीना माना गया है। **(षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मंगलं कुले॥)**

- शिशु के दांत निकलने पर प्रथम बार अन्न खिलाने को **'प्राशित्र'** कहा जाता था।
- दूध, दही, घी एवं पका हुआ चावल बच्चे के मुख से स्पर्श कराया जाता था।
- अन्नप्राशन में दूध में पकाया हुआ खीर खिलाया जाता है।

(8) चूड़ाकर्म-

- चूड़ाकरण, मुण्डन, केशवपन, क्षौर आदि इसके पर्याय हैं।
- इसमें शिखा को छोड़कर गर्भकाल से प्राप्त सारे केश मुड़वा दिये जाते हैं।
- मनु ने इस संस्कार को पहले या तीसरे वर्ष में करने को बताया-

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।
प्रथमोऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुतिचोदनात्॥ मनु0 2.35

- चरक संहिता में मुण्डन को पुष्टि, वृष्यता, आयु, स्वच्छता एवं सौन्दर्य का वर्धक माना गया है-

पौष्टिकं वृष्यमायुष्यं शुचिरूपं विराजनम्।
केशश्मश्रुनखादीनां कर्तनं सम्प्रसाधनम्॥

(9) कर्णवेध संस्कार-

- हिन्दू संस्कार में यह व्यवस्था वैदिक कालीन है।
- यह संस्कार सौन्दर्य एवं अलङ्करण हेतु सम्पन्न होता था।
- बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार जन्म के 10वें, 12वें या 16वें मास में होता है।
- गर्ग ऋषि के अनुसार यह संस्कार 6वें, 7वें, 8वें या 12वें मास में होता है।
- सुश्रुत ने छठा या सातवाँ वर्ष इसके लिए श्रेयस्कर माना है।
- क्षत्रियों का कान स्वर्ण की सुई से, ब्राह्मण एवं वैश्य बालक का कान चाँदी की सूई तथा शूद्र बालक का कान लौह सूई से छेदा जाता था।

(10) विद्यारम्भ संस्कार-

- बालक जब शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता था तब विद्यारम्भ संस्कार कराया जाता था।
- संतान के जन्म के पाँचवे वर्ष एवं उपनयन से पूर्व यह संस्कार सम्पादित होता था।
- शुभ मुहूर्त में शिक्षक द्वारा पट्टी पर 'ओउम्' और 'स्वास्तिक' के साथ वर्णमाला लिखकर अक्षरारम्भ कराया जाता था।
- इसमें गणपति, सरस्वती तथा गृह देवता को पूजा जाता था।

(11) उपनयन संस्कार-

- उपनयन शब्द 'उप' उपसर्गक 'नी' धातु एवं 'ल्युट् प्रत्यय' से मिलकर बना है।
- उपनयन का अभिप्राय स्वाध्याय अथवा वेद के अध्ययन से है।
- गौतम एवं मनु के अनुसार ब्राह्मण बालक का गर्भ से 8वें वर्ष, क्षत्रिय का गर्भ से 11वें वर्ष में, वैश्य बालक का गर्भ से 12वें वर्ष में यज्ञोपवीत करना चाहिए।
- पतञ्जलि तथा पारस्कर के अनुसार बालक का उपनयन आठवें वर्ष में किया जाता है।
- मनु के अनुसार ब्राह्मण 'कपास' का, क्षत्रिय 'सन' का तथा वैश्य 'ऊन' का उपनयन धारण करता था।
- यदि निर्धारित उम्र सीमा में उपनयन नहीं होता है तो ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य का क्रमशः 16वें, 22वें एवं 24वें वर्ष के भीतर हो जाना चाहिए।
- उपनयन के अवसर पर निर्धारित वस्त्र आदि-

	अधोवस्त्र	**उत्तरीय**	**मेखला**	**दण्ड**	**सावित्रि का उपदेश**
ब्राह्मण	सन	मृगचर्म	मूंज/कुश	ढाक	गायत्री
क्षत्रिय	क्षोम	रुरुचर्म	धनुष की प्रत्यञ्चा।अश्मन्तक	बिल्व	त्रिष्टुप्
वैश्य	ऊन	बकरी/गाय	मूर्वा/बल्व की मेखला	गूलर	जगती

- भिक्षा सर्वप्रथम माता से माँगनी चाहिए।
- जनेऊ के तीन सूत्र सत् , रज एवं तम तीनों गुणों के प्रतीक थे।
- ये धागे पितृऋण, ऋषि-ऋण एवं देव-ऋण का भी स्मरण कराते थे।
- दण्ड आत्म-रक्षार्थ था।
- उपनयन संस्कार से निर्लिप्त एवं निस्पृह जीवन के साथ शीक्षणिक दिशा निर्धारित होती थी।

12. वेदारम्भ संस्कार-

- उपनयन के बाद वैदिक अध्ययन-अध्ययन का प्रारम्भ करने के लिए वेदारम्भ संस्कार किया जाता था।
- वेदाध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी के शास्त्रोक्त विधि संस्कार किया जाता था। बाँधकर हल्के वस्त्र को धारण जितेन्द्रिय होना चाहिए ।
- इस संस्कार काह उल्लेख मात्र व्यासस्मृति में है।

(13) केशान्त संस्कार-

- गृह्यसूत्र में इस संस्कार की गणना चूड़ाकरण संस्कार के साथ ही वर्णित है, क्योंकि इसका सम्बन्ध भी केशों से है।
- इस संस्कार में आचार्य को गौ दान में दिया जाता था, इसलिए इसे **गोदान-संस्कार** भी कहते हैं।

- गौतम एवं आश्वलायन ने चार वेदव्रतों का उल्लेख किया है- 1 महानाम्नी 2 महाव्रत 3 उपनिषद् 4 गोदान

इनमें प्रथम तीन विलुप्त हो गये है।

- ब्रह्मचारी के 16 वें वर्ष में यह संस्कार सम्पन्न होता था।
- **मनु के अनुसार-**

वर्ण	केशान्त समय
ब्राह्मण	गर्भ के 16वें वर्ष
क्षत्रिय	गर्भ के 22वें वर्ष
वैश्य	गर्भ के 24वें वर्ष
शूद्र	

(14) समावर्तन संस्कार-

- समावर्तन का अर्थ- ''तत्र समावर्तनं नाम वेदाध्ययनान्तरे गुरुकुलाद् स्वगृहागमनम्'' अर्थात् वेदाध्ययनोपरांत गुरुकुल से अपने घर को प्रत्यावर्तन का नाम समावर्तन है।
- इसे **स्नान संस्कार** भी कहते हैं।
- आठ कलशों के जल से स्नान करके तथा पवित्रता, यश, ऐश्वर्यादि के लिए देवताओं से प्रार्थना करता था।
- इसके बाद ब्रह्मचर्य के प्रतीक दण्ड, मेखला, मृगचर्म आदि का त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता था।
- इस संस्कार में गुरु शिष्य को दर्पण, जल पुष्पादि प्रदान करता था।
- यह संस्कार शैक्षणिक जीवन से व्यावहारिक जीवन में लौटने का प्रतीक था।
- यह संस्कार उपनयन का पूरक था।

(15) विवाह संस्कार-

- विवाह गृहस्थ जीवन की आधार शिला है।
- सभी संस्कारों में विवाह नामक संस्कार का सबसे अधिक महत्त्व है।
- गृहस्थ आश्रम में प्रवेश विवाह संस्कार से ही होता है।
- मनु इसे '**नित्यलोक यात्रा**' कहते हैं। **(एषोदिता लोकयात्रा नित्य स्त्रीपुंसयोः शुभाः)**
- तैत्तिरीय संहिता कहती है तीन ऋणों में दो पितृऋण एवं देवऋण को चुकाने के लिए विवाह आवश्यक है।
- पाणिनि ने पत्नी को साहचर्य करने वाला कहा है **(पत्युर्नो यज्ञसंयोगं)।**
- धर्म-सूत्रों एवं स्मृतियों में विवाह की आठ विधियों एवं गृह्यसूत्र में इनके विधि विधानों की विस्तृत चर्चा है।

विवाह के प्रकार-

- हिन्दू धर्मशास्त्रों में विवाह के आठ प्रकारों का उल्लेख मिलता है-

(i) ब्राह्म विवाह- यह विवाह सर्वोत्तम विवाह माना गया है।

- इसमें पिता कुलीन एवं सच्चरित्र वर को अपने घर स्वयं आमन्त्रित करता था तथा उसका स्वागत-सत्कार कर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कन्या को प्रदान करता था।
- यह विवाह बिना किसी दबाव के होता था।
- सोम और सूर्या का विवाह इसी कोटि में आता है।

(ii) दैव विवाह-

- इसमें कन्या का पिता पुरोहितों से यज्ञ करवाता था तथा जो पुरोहित विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न करता था उसी के साथ विवाह सम्पन्न होता था।

(i) आर्ष विवाह-

- इसमें कन्या का पिता वर पक्ष से यज्ञादि क्रियाओं के लिए एक या दो जोड़ी गाय या बैल प्राप्त करता था।
- कुछ पाश्चात्य विचारकों ने इसे आसुर-विवाह का परिष्कृत रूप माना है।

(iv) प्राजापत्य विवाह-

- इस विवाह के अन्तर्गत वर कन्या के पिता के घर प्रार्थी रूप में जाता था और कन्या का पिता उसकी विधिपूर्वक पूजा करके 'तुम दोनों साथ-साथ धर्म का आचरण करो' इस आदेश के साथ वर को कन्या प्रदान कर देता था।
- हिन्दू समाज में प्रायः यह प्रथा अधिक प्रचलित हुयी।

(v) आसुर विवाह-

- जब कन्या पक्ष वर से धन ग्रहण कर अपनी कन्या प्रदान करे, तो इस को आसुर विवाह कहते हैं।
- महाभारत में स्वयं भीष्म ने इस विवाह प्रथा की निन्दा की है।
- धर्मशास्त्रों में इसे घृणित और निन्दनीय कहा गया है।

(vi) गान्धर्व विवाह-

- यह प्रणय विवाह था।
- कन्या माता-पिता की इच्छा के न होने पर भी परस्पर एक दूसरे के गुणों पर अनुरक्त होकर अपना विवाह कर लेते थे।
- संस्कृत महाकाव्यों में जैसे दुष्यन्त और शकुन्तला, उदयन-वासवदत्ता, पुरुरवा-उर्वशी, चन्द्रापीड-कादम्बरी तथा पुण्डरीक और महाश्वेता का प्रणय विख्यात है, जो गान्धर्व-विवाह के अन्तर्गत आता है।

(vii) राक्षस विवाह-

- बलप्रयोग द्वारा युद्ध के माध्यम से किसी कन्या का अपहरण कर विवाह करना राक्षस विवाह कहा गया है।
- महाभारत में इसे क्षात्र-धर्म कहा गया है।
- मनु ने भी 'राक्षसं क्षत्रियस्यैकम्' कहकर इसे क्षत्रियों के लिए प्रशंसनीय बताया।
- श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का विवाह, पृथ्वीराज और संयोगिता

का विवाह इसी आधार पर हुआ था।

(viii) पैशाच विवाह-

- विवाह का निकृष्टतम प्रकार पैशाच विवाह है।
- **मनु के अनुसार-**
  सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति।
  सा पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥ 3.34
- सोती हुई, अचेत, पागल या मदिरापान की हुयी कन्या के साथ जब कामातुर होकर कोई बलात् विवाह करता है तो इसे पैशाच विवाह कहा जाता है।
- स्मृतियों ने इस विवाह की घोर भर्त्सना की है।

(16) अन्त्येष्टि संस्कार-

- यह संस्कार मृत व्यक्ति के परलोक में शांति की कामना के लिए सम्पन्न किया जाता था।
- इसके अर्न्तगत पार्थिव शारीर का दाह संस्कार होता था।
- स्त्रियों एवं बच्चों का श्मशान जाना वर्जित था।
- शवदाह के बाद अशौच की स्थिति होती थी, जो तेरहवें दिन पीपल में जल देने के बाद समाप्त होती थी।

3.4 आश्रम-व्यवस्था

मानव जीवन का सुव्यवस्थित विभाजन

- **'आङ्' पूर्वक 'श्रमु'** धातु में **घञ्** प्रत्यय के योग से **'आश्रम'** शब्द का उत्पत्ति हुआ है।
  भूमिका- पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति, जीवन की समग्रता, जीवन का व्यवस्थित रूप एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष की स्थापना आश्रम-व्यवस्था के बिना कठिन थी। अतएव वैदिक संस्था के रूप में आश्रम व्यवस्था की नियोजना जीवन चिंतन, तत्त्वों की गवेषणा, कर्त्तव्य-अकर्तव्य विवेचन के आधार को तैयार करने के लिए हुई।
- जीवन को सुनियोजित ढंग से परम उद्देश्य (मोक्ष) तक पहुँचा देना आश्रम व्यवस्था का प्रमुख कार्य था।
- सात्त्विकतापूर्ण जीवन के साथ कर्म में निष्ठा आती थी।
- चारों आश्रम का बँटवारा दीर्घायु होने का द्योतक है।
- प्रत्येक आश्रम के लिए 25 वर्षों के कार्यकाल का निर्धारण हुआ था।
- शास्त्रकारों ने चार आश्रमों का स्पष्ट उल्लेख किया है-

(1) ब्रह्मचर्य-आश्रम- इसका अर्थ- **''महानता में विचरण''** अर्थात् महान् होना।

- इस शब्द का व्यवहारिक अर्थ है,- उपस्थसंयम अर्थात् वीर्यरक्षा।
  ''ब्रह्मचर्यं गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः'' (योगसूत्र 2-30)
- शतपथ ब्राह्मण के शब्दों में वीर्य ब्रह्मतेज है।
- आयुर्वेद की दृष्टि में भोजन का अन्तिम सारतत्त्व वीर्य होता है।
- आधुनिक वैज्ञानिकों के मत में साठ गुने खून के बराबर वीर्य होता है।
- यह आश्रम वेदाध्ययनकाल है।
- उपनयन संस्कार के माध्यम से ब्रह्मचर्याश्रम प्रारम्भ होता है।

ब्रह्मचारी का कर्तव्य-

- वेदाध्ययन, अग्नि का अभिषेक, शिक्षावृत्ति।
- मनु का कथन है कि अपनी कामनाओं को वश में रखना तथा अपनी क्रियाओं को धर्म समन्वित करना ब्रह्मचारी का श्रेष्ठ आचरण था।
- जो व्यक्ति बह्मचर्याश्रम समाप्त होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे उन्हें **'उपकुर्वाण'** कहा जाता था।

(2) गृहस्थ-आश्रम- गृहस्थ शब्द का अर्थ है- पत्नी को प्राप्त करने वाला।

- ऋग्वेद में गृहस्थाश्रम स्वीकार करने का आदेश दिया गया है-
  इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्व मायुर्व्यश्नुतम्।
  क्रीडन्तो पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानो स्वे गृहे॥
  अर्थात् किसी से विरोध न करो, गृहस्थाश्रम में रहो, पूर्ण आयु प्राप्त करो, पुत्र-पौत्रों के साथ खेलते हुए आनन्दपूर्वक अपने घर में रहो और घर को आदर्श रूप बनाओ।
- गृहस्थाश्रम मानवजीवन की पूर्णता का आश्रम है।
- इस आश्रम में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों को गेहानुप्रवेशनीय कहा जाता था।
- इस आश्रम की महत्ता अन्य आश्रमों से ज्यादा बतायी गयी है।
- विवाह गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत विहित प्रथम संस्कार था।
- गृहस्थाश्रम का त्याग कर संन्यास आश्रम में अनुगमन निन्दित था। ऐसे संन्यास को **'पापिष्ठा'** कहा गया है।
- गृहस्थों के लिए मनु ने दस धर्मों को बताया है- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध-त्याग।
  धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
  धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ (मनु0 6.92)
  - मनु के चार प्रकार के गृहस्थ बताए हैं-
  1 ज्ञाननिष्ठ 2 तपोनिष्ठ 3 स्वाध्यायनिष्ठ 4 कर्मनिष्ठ
- ज्ञाननिष्ठ गृहस्थ को मनु ने सर्वोच्च बताया है।
- प्रत्येक गृहपति के लिए पञ्चमहायज्ञ अनिवार्य था जो इस प्रकार है-

1 ब्रह्मयज्ञ 2 पितृयज्ञ 3 देवयज्ञ 4 भूतयज्ञ 5 नृयज्ञ

(3) वानप्रस्थ-आश्रम-

- वन में प्रस्थान **(वनमेव प्रस्थो, वनस्य वा प्रस्थ प्रदेशः। वन प्रदेश भवः)** अर्थात् पूर्व की स्थितियों को त्यागकर वन की ओर जाना वानप्रस्थ था।
- वानप्रस्थ के लिए तीन बातें अनिवार्य थीं-

1. वृद्धावस्था के आगमनोपरांत वन को प्रस्थान करें।
2. सांसारिक भोगों के प्रति वितृष्णा और धन सम्पत्ति के प्रति उदासीनता आ जाने पर वन को प्रस्थान करें।
3. गृहस्थी का दायित्व पुत्र या पौत्रद्वारा सम्भाल लिए जाने पर ही वन को प्रस्थान करें।

- महाभारत में उल्लेख है कि इस गृहस्थाश्रम के पश्चात् तीसरा उससे श्रेष्ठ आश्रम वानप्रस्थ है।
- दिन के छठें भाग अर्थात् तीसरे प्रहर में एक बार अन्न ग्रहण करे।
- वानप्रस्थी **'वैखानस'** या **'परिव्राजक'** भी कहलाते थे।

(4) संन्यास-आश्रम-

- वानप्रस्थ के बाद चौथा एवं अन्तिम आश्रम संन्यास था।
- मनुस्मृति के अनुसार-

  वनेषु विहृत्यैव तृतीयं भागमायुषः।
  चतुर्थमायुषो भाग त्यक्त्वा संगान्परिव्रजेत्॥
  अर्थात् अपनी आयु के तीसरे भाग को वन में अर्थात् वानप्रस्थाश्रम में व्यतीत करने के बाद संन्यासी बनना चाहिए।
- मोक्ष की प्राप्ति संन्यास आश्रम से ही मानी गयी है।
- शूद्र संन्यास आश्रम में प्रवेश नहीं ले सकते थे क्योंकि उनके लिए मात्र गृहस्थ आश्रम ही विहित था। विदुर अपवाद मात्र हैं।

3.5 पुरुषार्थ

पुरुष शब्द की व्युत्पत्ति है- पुरुष + अर्थ, **पूः = पुरं, शरीरं च। पुरि शेते इति पुरुषः।** अर्थात् जो इस पुर में (शरीर में) सोया हो, प्रवेश किया हो, शरीर में स्थापित हो, उस चैतन्यांश को 'पुरुष' कहते हैं। यहाँ पुरुष शब्द का अर्थ 'मनुष्य' अर्थात् नर-नारी है। **'अर्थ्यते प्राथ्र्यते सर्वैः इति अर्थः'** इस व्युत्पत्ति के अनुसार अभिलषित अर्थ को अर्थ कहते है। इस प्रकार **'पुरुषाणाम् अर्थः पुरुषार्थः'** अथवा **'पुरुषैः अर्थ्यते इति पुरुषार्थः'।**

-धर्म, अर्थ, काम- तीन करणीय (क्रिया द्वारा सम्पाद्य) हैं परन्तु मोक्ष में क्रिया का अभाव माना गया है। इसलिए मोक्ष छोड़कर विशेष रूप से समानधर्मी होने से त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) की मान्यता है।

- **पुरुषार्थ के चार मेरुदण्ड हैं-**

  1. धर्म 2. अर्थ 3. काम 4. मोक्ष

(1) धर्म-

- **'धृञ्'** धारणे धातु में **मयु्** प्रत्यय के योग से **धर्म** शब्द बना है।
- पुरुषार्थ चतुष्टय के रूप में धर्म वह तत्त्व है जो 'अर्थ' और 'काम' को मर्यादित करके लोक सुख (अभ्युदय) तथा मोक्षपरक परलोक सुख (निःश्रेयस्) की सिद्धि में सहायक हो।

धर्म का लक्षण-

- **''यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।''**

  \- महर्षि कणाद

  अर्थात् - यहाँ 'अभ्युदय' का तात्पर्य उतने ही 'अर्थ' तथा 'काम' के सेवन से है जितने के ग्रहण से शरीर यात्रा एवं मनस्तुष्टि का निर्वाह हो जाय परन्तु अर्थ-काम में आसक्ति न उत्पन्न हो।
- **''चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।''**- (मीमांसासूत्र - जैमिनि) अर्थात् धर्म के प्रमाण और फल दोनों पर विचार करते हुए कहा गया है वेद लक्षण वाला अर्थ धर्म है।
- **मनु के अनुसार धर्म के चार आधार हैं-**

1. श्रुति (वेद) 2. स्मृति (धर्मशास्त्र) 3. सदाचार (शिष्टाचार)
4. आत्मतुष्टि, यही धर्म के लक्षण हैं-

   ''वेदोऽखिलो धर्ममूलं''

- **मनुस्मृति में धर्म के तीन भेद माने गये हैं-**

1 सामान्य धर्म 2 विशिष्ट धर्म 3 आपद् धर्म

- **सामान्य धर्म के दस भेद-** धृति, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य, अक्रोध।
- विशिष्ट धर्म के अन्तर्गत वर्णधर्म, आश्रम धर्म, वर्णाश्रम धर्म, गुणधर्म, नैमित्तिक धर्म है।
- आपत्कालीन परिस्थितियों में स्वीकार किये जा सकने वाले कर्म आपद् धर्म के अन्तर्गत आते हैं।

अर्थ- द्वितीय पुरुषार्थ का नाम अर्थ है।

- 'अर्थ्यन्ते प्रार्थ्यन्ते इत्यर्थाः, इस व्युत्पत्ति के अनुसार चक्षुरादि इन्द्रियों के विषयभूत रूप, रस, गन्ध शब्द, स्पर्श ही उनके अर्थ- काम्य पदार्थ हैं।
- न्यायभाष्यकार वात्स्यायन 'सुख-सुखहेतु' दुःख तथा दुःख हेतु को अर्थ स्वीकार करते हैं।
- **मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः।** - अर्थशास्त्र

  अर्थात् जो भी विचार और क्रियायें भौतिक जीवन से सम्बद्ध

हैं उन्हें अर्थ की संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है।

- **अर्थ एव प्रधान इति कौटिल्यः। अर्थमूलौ हि धर्मकामौ॥** - अर्थशास्त्र अर्थात् कौटिल्य ने अर्थ को धर्म और काम का मूल माना है।
- **''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः''** - (कठोपनिषद्)
  अर्थात् व्यक्ति को ऐश्वर्य से सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता।
- **अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसञ्चयम्।**
  सर्वान् परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः॥

मनु0 3.17

अर्थात् अर्थोपार्जन के पाँच नियम है-

1. अर्थोपार्जन करते समय किसी प्राणी को कष्ट न देना।
2. अपने शरीर को कष्ट न देना।
3. अपने ही श्रम से प्राप्त करना।
4. किसी गर्हित साधन से न प्राप्त करना
5. उसका स्वाध्याय-पठन-पाठन में विघ्नोत्पादक न होना।

काम-

- तीसरे पुरुषार्थ का नाम काम है।
- 'काम' शब्द सामान्यतया हेयकृत्य के रूप में प्रयुक्त होता है।
- काम की व्युत्पत्ति- **''काम्यते इति कामः''** अर्थात् विषय एवं इन्द्रियों के सम्पर्क से उत्पन्न होने वाला मानसिक आनन्द ही मुख्यतया 'काम' कहलाता है। (कमु इच्छायाम् + घञ्)
- शास्त्र में काम के दो भाव बताये गये हैं- **''कामस्य द्वे भावे- रतिश्च प्रीतिश्च।''**
- कौटिल्य ने काम को अन्तिम श्रेणी में रखा है तथा धर्म एवं अर्थ को बाधा पहुँचाए बिना इसका पालन करने के लिए कहा है- **''धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत्''।** (अर्थ0 17)
- जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है- **''वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता''** (गीता-2.61)
- क्रमानुसार इनका विनाश होने पर पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है-
  चिन्तन - आसक्ति - कामना - क्रोध - मूढभाव - स्मृतिभ्रम - बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति का नाश
- **''विवेक सम्मत''**- वंश परम्परा को अविच्छिन्न रखने की दृष्टि से प्रयुक्त सहवास काम ही पुरुषार्थ है-
  ''धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।''- गीता 6.11
- पुरुष का स्त्री के प्रति तथा स्त्री का पुरुष के प्रति स्वाभाविक आकर्षण 'विशिष्ट काम' कहा गया है।
- **''स्त्रीषु जातो मनुष्याणां स्त्रीणां च पुरुषेषु वा।**
  परस्परकृतः स्नेहः काम इत्यभिधीयते॥

(शार्ङ्गधरपद्धति 1.6)

मोक्ष- मोक्ष शब्द **'मोक्ष् अवसाने'** धातु में **घञ्** प्रत्यय के योग से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- छुटकारा।

- मनुष्य के पुरुषार्थ की अन्तिम परिणति अर्थात् चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष है। इसे परमपुरुषार्थ भी कहा जाता है।
  'मुच्यते सर्वैर्दुःखबन्धनैः यत्र स मोक्षः'
- प्रमुख दर्शनों में मोक्ष का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के साधन इस प्रकार हैं-

1. **न्याय-वैशेषिक -** अपवर्ग
   स्वरूप - सुखदुःखनिर्विशेष
   साधन - प्रमाणादि षोडश पदार्थों का तत्त्वज्ञान

2 सांख्य-योग - कैवल्य

स्वरूप - पुरुष का स्वरूपावस्थान

साधन - व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञान (विवेकख्याति)

3. वेदान्त - मोक्ष

स्वरूप - सच्चिदानन्दात्मक

साधन - अविद्यानिवृत्ति

4. बौद्ध - निर्वाण

स्वरूप - ज्ञेयावरण एवं मोहावरण का विनाश

साधन - अष्टाङ्गिक मार्ग (सम्यक् दृष्टि, संकल्प, वाक्, कर्मान्त, आजीव, व्यायाम, स्मृति तथा समाधि)

5. जैन- कैवल्य

स्वरूप- सम्पूर्ण कर्मवियोग

साधन- त्रिरत्न (सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र)

- मनु के अनुसार - इन्द्रिय निरोध, रागद्वेषत्याग तथा प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा के व्यवहार से मोक्ष सम्भव होता है।

  ''इन्द्रियाणां निरोधेन राग द्वेषक्षयेणं च।
  अहिंसया च भूता नाममृतत्वाय कल्पते।।

- गीता में मोक्ष के दो मार्ग प्रतिपादित हैं-

  1. ज्ञानयोग 2. कर्म योग

  जिसमें ज्ञानयोग की अपेक्षा कर्मयोग की प्रधानता स्वीकार की गयी है।

- जो व्यक्ति शुभाशुभ फलों को त्याग कर निष्काम भाव से कर्म करता है वह अभय पद (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

  ''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
  अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

  (गीता 18.66)

3.6 भारतीय दर्शन

- 'दर्शन' शब्द **'दृश्'** धातु से **ल्युट्** प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- 'जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।'
- भारतीय दर्शन की दो शाखाएँ हैं - **आस्तिक तथा नास्तिक।** जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें आस्तिक दर्शन कहते हैं, जिनमें सांख्य- योग, न्याय -वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना होती है।
- जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें 'नास्तिक दर्शन' कहते हैं, जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
- सांख्य- योग, न्याय- वैशेषिक, पूर्वमीमांसा- उत्तरमीमांसा इन्हें 'षड्-दर्शन' भी कहते हैं।

भारतीयदर्शन

आस्तिकदर्शन

नास्तिकदर्शन (सांख्य ,योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा वेदान्त,) (चार्वाक,बौद्ध,जैन)

दर्शन	-	प्रवर्तक आचार्य
सांख्य	-	कपिल
योग	-	पतञ्जलि
न्याय	-	गौतम
वैशेषिक	-	कणाद
पूर्वमीमांसा	-	जैमिनि
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	-	बादरायण
चार्वाक	-	बृहस्पति/चार्वाक
बौद्ध	-	महात्मा गौतम बुद्ध
जैन	-	ऋषभदेव/महावीर स्वामी

- नास्तिकदर्शन को वेद विरोधी दर्शन भी कहा जाता है - **'नास्तिको वेदनिन्दकः'**
- चार्वाकदर्शन भौतिकवादी दर्शन है, जिसे **लोकायत** नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य एवं योग एक दूसरे के पूरक दर्शन हैं। सांख्य ईश्वर की सत्ता नहीं मानता जबकि योग ईश्वर की सत्ता मानता है। इसीलिए सांख्य को **'निरीश्वर सांख्य'** तथा योग को **'सेश्वर सांख्य'** भी कहते हैं।

दर्शन **ग्रन्थ** **अध्याय** **सूत्र**
प्रमाण **पदार्थ** **प्रमुखतत्त्व सिद्धान्त/ वाद**

सांख्य सांख्यसूत्र 6 537 तीन
प्रमाण 25 सत्कार्यवाद परिणामवाद

योग योगसूत्र 4 पाद 195
तीन प्रमाण 26 सत्कार्यवाद सेश्वरवाद

न्याय न्यायसूत्र 5 60-70
चार प्रमाण 16 असत्कार्यवाद
पिठरपाकवाद

वैशेषिक वैशेषिकसूत्र 10 370 दो
प्रमाण 7 परमाणुवाद पीलुपाकवाद
पूर्वमीमांसा मीमांसासूत्र 12 2644 6
प्रमाण अपूर्ववाद
उत्तरमीमांसा ब्रह्मसूत्र 4 555 6
प्रमाण 2 विवर्तवाद (वेदान्त)
मायावाद

- बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदायों का उल्लेख प्राप्त होता है वैभाषिक, सौत्रान्तिक, विज्ञानवादी, शून्यवादी।
- **नागार्जुन** बौद्धदर्शन के प्राचीन आचार्य हैं।
- जैनदर्शन के प्राचीन आचार्य - **उमास्वाति** हैं।
- अकलंकदेव, विद्यानन्द, प्रभासचन्द्र, हेमचन्द्रसूरि, मल्लिषेण जैन दर्शन के प्रमुख आचार्य हैं
- न्यायदर्शन के प्रवर्तक आचार्य गौतम हैं। न्यायदर्शन को **तर्कप्रधान दर्शन** भी कहते हैं।
- न्यायदर्शन में आगम प्रमाण के द्वारा ईश्वर की सिद्धि की गई है।
- सर्वदर्शनसंग्रह में वैशेषिक दर्शन को **'औलूक्य दर्शन'** कहा गया है।
- पूर्वमीमांसादर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनि हैं।
- पूर्वमीमांसा दर्शन वेद को स्वतन्त्र एवं स्वतः प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है।

❑❑

4. निम्नलिखित कृतियों का सामान्य अध्ययन

4.1 कठोपनिषद्

- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह **यजुर्वेद** की **कठ शाखा** से सम्बंधित है।
- कठोनिषद् में कुल **2 अध्याय** हैं और प्रत्येक अध्याय में **तीन-तीन वल्लियाँ** हैं।

कठोपनिषद्

प्रथम अध्याय	**द्वितीय अध्याय**
प्रथम वल्ली -29	प्रथम वल्ली - 15
द्वितीय वल्ली-25	द्वितीय वल्ली- 15
तृतीय वल्ली- 17	तृतीय वल्ली- 18
कुल मन्त्र-71	**कुल मन्त्र-48**

- इसप्रकार कठोपनिषद् में लगभग 119(120) मन्त्र हैं।

कठोपनिषद् का तथ्यात्मक अध्ययन

- सर्वप्रथम यम नचिकेता की कथा का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मण में मिलता है। पुनः कठोपनिषद् में यम नचिकेता की कथा है।
- इसके अतिरिक्त **नचिकेता का उपाख्यान** महाभारत के अनुशासन पर्व में भी आया है।
- **आत्मतत्त्व विवेचन** की दृष्टि से कठोपनिषद् अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- कठोपनिषद् में **यज्ञ विद्या (अग्निविद्या)** का संक्षेप में वर्णन प्राप्त होता है।
- **प्रथम अध्याय-** प्रथम अध्याय में नचिकेता और यम के उपाख्यान द्वारा **आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या** की गयी है।

प्रथम अध्याय के महत्वपूर्ण विषय-

कठोपनिषद् का शान्ति पाठ

- **ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।**

ॐ = पूर्णब्रह्म-परमात्मन् सह = साथ-साथ
नौ = हम दोनों की अवतु = रक्षा करें
भुनक्तु = पालन करें वीर्यम् = शक्ति

करवावहै = प्राप्त करें अधीतम् = पढ़ी हुयी विद्या
तेजस्वि = तेजोमयी अस्तु = हो
मा विद्विषावहै = हम दोनों परस्पर द्वेष न करें।

- गौतम वंशीय महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक ऋषि ने फल की कामना से **विश्वजित् नामक यज्ञ** किया।
- उद्दालक दक्षिणा में, व्यर्थ, और दुग्ध तथा प्रजनन शक्ति से हीन गायें दे रहे थे तो नचिकेता के मन में श्रद्धा बुद्धि उत्पन्न हुयी और उसने पिता से पूछा- "आप मुझे किसको दान कर रहे हैं?" दो तीन बार पूछने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा "तुझे मृत्यु को देता हूँ।" पिता की आज्ञा से नचिकेता ने मृत्यु के समीप जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया।
- नचिकेता यमलोक पहुँचा तो उस समय यमराज कहीं बाहर गये थे अतएव नचिकेता तीन दिन अन्न जल ग्रहण किये बिना ही यमराज की प्रतीक्षा करता रहा। जब यम लौटकर आये तो उन्होंने नचिकेता का सत्कार किया और तीन रात्रियों के बदले तीन वरदान मांगने को कहा।

प्रथम वर- (पितृ परितोष)

- नचिकेता ने प्रथम वर के रूप में पिता की प्रसन्नता माँगी-

शान्तसङ्कल्पःसुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥

द्वितीय वर

- दूसरे वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा अत्यन्त सुख के लोक, स्वर्ग की प्राप्ति होती है और किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता।

स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण॥

- नचिकेता की विलक्षण प्रतिभा देखकर यम ने प्रसन्न होकर इस अग्नि विद्या को नचिकेता के नाम से ही प्रसिद्ध होने का वरदान दिया और अनेक रूपों वाली माला **सृङ्का** प्रदान की।

तृतीय वर

- तीसरे वर के रूप में नचिकेता ने मनुष्य की मृत्यु के बाद के आत्मास्तित्व के विषय में जिज्ञासा की।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणमेष वरस्तृतीयः॥

- नचिकेता के दृढ़ संकल्प और आत्म ज्ञान प्राप्ति के लिए योग्यता देखकर यम ने आत्मतत्त्व का उपदेश दिया।

द्वितीय वल्ली

- द्वितीय वल्ली में जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है।

श्रेय तथा प्रेय मार्ग-

- प्रेय मार्ग भौतिक सुख-समृद्धि का मार्ग है।
- श्रेय अर्थात् दुःखों से छूटकर नित्य आनन्दस्वरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का मार्ग है।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥ 1/2/2

आत्मा का स्वरूप

- यमराज आत्मा के शुद्ध स्वरूप और उसकी नित्यता का निरूपण नचिकेता से करते हैं।
- यह आत्मा अजन्मा, नित्य, सदा एकरस रहने वाला पुरातन है और कभी भी इसका नाश नहीं किया जा सकता।

"अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।"

तृतीय वल्ली

- तृतीय वल्ली में परमात्मा को प्राप्त करने का साधन यम ने नचिकेता को बताया है।
- जीवात्मा शरीर, मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए कठोपनिषद् में रथ रूपक को प्रस्तुत किया गया है।
- जीवात्मा - रथी शरीर - रथ
  बुद्धि - सारथी मन - लगाम
  इन्द्रियाँ - घोड़े विषय - मार्ग
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
  बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ 1/3/3
  इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ स्तेषु गोचरान्।
  आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥ 1/3/4
- यम नचिकेता को बताते हुये कहते हैं कि तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो और शरीर को रथ तथा बुद्धि को सारथि समझो और मन को लगाम समझो।
- यम नचिकेता से इन्द्रियों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि -

इन्द्रियेभ्यः पर ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥ 1/3/10
(इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा)

- इन्द्रियों से शब्दादि विषय बलवान् हैं शब्दादि विषयों से मन प्रबल है और मन से भी बुद्धि प्रबल है और बुद्धि से भी महान् आत्मा अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।
- **आत्मा का साक्षात्कार-** आत्मा के साक्षात्कार की प्रक्रिया यह है कि स्थूल तत्त्व को उससे अधिक सूक्ष्म तत्त्व में उत्तरोत्तर विलीन करना पड़ता है।
- वाणी,मन बुद्धि, आत्मा

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यज्छेज्ज्ञान आत्मनि।

ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥
1/3/13

बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि वाक् आदि समस्त इन्द्रियों को मन में निरुद्ध करें फिर उस मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें।ज्ञानस्वरूप बुद्धि को महान आत्मा में विलीन करें और उस आत्मा को शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।

➢ यम मनुष्यों को उद्बोधित करते हुए कहते हैं कि आत्मज्ञान की ओर उन्मुख होने और श्रेष्ठ आचार्यों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करके ही इस परबह्म परमेश्वर को जाना जा सकता है।

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥
1/3/14

➢ हे मनुष्यों! उठो जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

द्वितीय अध्याय : प्रथम वल्ली

➢ **नेह नानास्ति किञ्चन-** इस उपनिषद् का गम्भीर शंखनाद है।

'मनसौवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किंचन।'

शुद्ध मन से ही यह परमात्मतत्त्व प्राप्त किये जाने योग्य है। इस जगत् में एक परमात्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में परब्रह्म परमात्मा का अदितिदेवी के रूप में वर्णन किया गया है।

➢ कठोपनिषद् में जीव शब्द परमात्मा के लिए आया है।

यं इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात्।

द्वितीय वल्ली

➢ कठोपनिषद् के अनुसार मानव शरीर में एकादश (ग्यारह) द्वार हैं। 2 आँख, 2 कान, 2 नासिका छिद्र, एक मुख, ब्रह्मरन्ध्र, नाभि, गुदा, शिश्न (11 द्वार)

➢ यह 11 द्वारों वाला, मानव शरीर ही उस सर्वव्यापी अविनाशी, अजन्मा, नित्य, निर्विकार, एकरस , विशुद्ध ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की नगरी है।

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः
अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते॥ 2/2/1

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के द्वितीय वल्ली में अग्नि का दृष्टान्त देकर उस परब्रह्म परमेश्वर की व्यापकता का वर्णन किया गया है।

➢ **अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव। एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च॥**
2/2/9

➢ जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट एक ही अग्नि नाना रूपों में प्रकट होकर विभिन्न रूप धारण करती है उसी प्रकार समस्त प्राणियों के अन्तरात्मा परब्रह्म परमात्मा एक होते हुए भी नाना रूपों में प्रकट होते हैं।

तृतीय वल्ली

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली में यह बताया गया है कि वह परमात्मा ही सब पर शासन करने वाला है और सब उसके नियन्त्रण में ही हो रहा है-

भयादस्याग्निस्तपति भयात् तपति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः॥ 2/2/3

➢ उस परमेश्वर के भय से अग्नि तपता है, उसी के भय से सूर्य तपता है तथा उसी परमेश्वर के भय से इन्द्र, वायु और पाँचवें मृत्यु देवता अपने-अपने कामों में प्रवृत्त हो रहे हैं।

➢ तृतीय अध्याय में योग की सर्वोत्तम स्थिति बतलाते हुए योगियों की परमगति का वर्णन किया गया है।

➢ कठोपनिषद् में यम, नचिकेता को योग के विषय में बताते हुए कहते हैं कि **इन्द्रिय मन** और **बुद्धि** की स्थिर धारण का नाम योग है।

➢ कठोपनिषद् में **नाड़ियों की संख्या कुल एक सौ एक** बतायी गयी है, जिसमें सुषुम्णा प्रमुख है।

कठोपनिषद् - प्रथम अध्याय - तृतीय वल्ली का अध्ययन

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥ 1/3/10

शब्द	-	**अर्थ**
हि	-	क्योंकि
इन्द्रियेभ्यः	-	इन्द्रियों से
अर्थाः	-	शब्दादि विषय
पराः	-	बलवान् हैं
च	-	और
अर्थेभ्यः	-	शब्दादि विषयों से
मनः	-	मन
परम्	-	और मन से भी
बुद्धिः	-	बुद्धि
परा	-	बलवती है
बुद्धिः	-	बुद्धि से
महान् आत्मा	-	महान् आत्मा
परः	-	अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।

अन्वय- इन्द्रियेभ्यः परा अर्थाः हि। अर्थेभ्यः च परं मनः। मनसः तु परा बुद्धिः बुद्धेः परः महान् आत्मा।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में यम, नचिकेता को यह बताते हैं कि स्वभाव से ही दुष्ट और बलवान् इन्द्रियों को उनके प्रिय और अभ्यस्त

असत् मार्ग से किस प्रकार हटाया जाए।

- **अनुवाद-** इन्द्रियों की अपेक्षा उनके विषय श्रेष्ठ है विषयों से मन उत्कृष्ट है मन से बुद्धि पर है और बुद्धि से भी महान् आत्मा है।

इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा

व्याख्या- इस मन्त्र में यह बताया गया है कि इन्द्रियों से विषय बलवान् हैं। वे साधक की इन्द्रियों को बलपूर्वक अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं, अतः साधक को उचित है कि इन्द्रियों को विषयों से दूर रखें।विषयों से बलवान् मन है।यदि मन की विषयों में आसक्ति न रहे तो इन्द्रियाँ और विषय -ये दोनों साधक की कुछ भी हानि नहीं कर सकते। मन से भी बुद्धि बलवान् है, अतः बुद्धि के द्वारा विचार करके मन को राग द्वेष रहित बनाकर अपने वश में कर लेना चाहिए।बुद्धि से भी इन सब का स्वामी महान् आत्मा बलवान् है।उसकी आज्ञा मानने के लिए ये सभी बाध्य हैं। अतः मनुष्य को आत्मशक्ति का अनुभव करके उसके द्वारा बुद्धि आदि सबको नियन्त्रण में रखना चाहिए।

- **विशेष-** इन्द्रियों से उनके विषयों को इसलिए श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि वे उन्हें अपनी ओर खींच लेते हैं-

''विषिण्वन्ति बध्नन्ति स्वेन रूपेण निरूपणीयं कुर्वन्तीति विषयाः।

- इस मन्त्र में 'पर' शब्द का प्रयोग बलवान् के अर्थ मे हुआ है।
- इसमें महान् आत्मा में आया हुआ आत्मा शब्द भी जीवात्मा का वाचक है।

2. महत परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।
पुरुषानपरं किञ्चित् सा काष्ठा सा परा गतिः॥1/3/11

शब्द	**अर्थ**
महतः	उस जीवात्मा से
परम्	बलवती है
अव्यक्तम्	भगवान् की अव्यक्त माया शक्ति
अव्यक्तात्	अव्यक्त माया से भी
परः	श्रेष्ठ है
पुरुषः	परमपुरुष
पुरुषात्	परमपुरुष भगवान् से
परम्	श्रेष्ठ और बलवान्
किञ्चत्	कुछ भी
न	नहीं हैं
सा काष्ठा	वही सबकी परम अवधि
सा परा गतिः	वही परम गति है।

अन्वय- महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् परः पुरुषः। पुरुषात् परं किञ्चित् न। सा काष्ठा, सा परा गतिः।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में मन को भगवान् की तरफ लगाने का वर्णन करते हुए यम, नचिकेता से कहते हैं,

अनुवाद- महत्तत्व से अव्यक्त मूलप्रकृति पर है और अव्यक्त से भी पुरुष पर है।पुरुष से पर और कुछ भी नहीं है। वही परा काष्ठा है, वही परा (उत्कृष्ट) गति है।

व्याख्या - इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इन सब पर आत्मा का अधिकार है, अतः यह स्वयं उनको वश में करके भगवान् की ओर बढ़ सकता है।परन्तु इस आत्मा से भी बलवान् एक और तत्त्व है, जिसका नाम अव्यक्त है। कोई उसे **प्रकृति** और **माया** भी कहते है। इसी से सब जीव समुदाय मोहित होकर उसके वश में हो रहा है। इसको हटाना जीव के अधिकार की बात नहीं है, अतः इससे भी बलवान् जो इसके स्वामी परम पुरुष परमेश्वर हैं - जो बल, क्रिया और ज्ञान आदि सभी शक्तियों की अन्तिम अवधि और परम आधार हैं- उन्हीं की शरण लेनी चाहिए।जब वे दया करके इस माया रूप परदे को स्वयं हटा लेंगे, तब उसी क्षण वहीं भगवान् की प्राप्ति हो जायेगी, क्योंकि वे तो सदा से ही सर्वत्र विद्यमान हैं।

विशेष - इस मन्त्र में अव्यक्त शब्द भगवान् की त्रिगुणमयी दैवी माया शक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।

- यह अव्यक्त माया ही जीवात्मा और परमात्मा के बीच में परदा है, जिसके कारण जीव सर्वव्यापी अन्तर्यामी परमेश्वर को नित्य समीप होने पर भी नहीं देख पाता।

12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः॥ 1/3/12

शब्द	**अर्थ**
एषः आत्मा	यह सबका आत्मरूप परमपुरुष
सर्वेषु भूतेषु	समस्त प्राणियों में रहता हुआ भी
गूढः	माया के परदे में छिपा रहने के कारण
न प्रकाशते	सबके प्रत्यक्ष नहीं होता
तु सूक्ष्मदर्शिभिः	केवल सूक्ष्म तत्त्वों को समझने वाले पुरुषों द्वारा ही
सूक्ष्मया अग्र्यया बुद्ध्या	अति सूक्ष्म तीक्ष्ण बुद्धि से
दृश्यते	देखा जाता है।

अन्वय- सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा एषः न प्रकाशते। सूक्ष्मदर्शिभिः तु अग्र्य्या सूक्ष्मया बुद्ध्या दृश्यते।

अनुवाद- सम्पूर्ण भूतों में छिपा हुआ यह आत्मा प्रकाशमान नहीं होता।यह तो सूक्ष्मदर्शी पुरुषों द्वारा अपनी तीव्र और सूक्ष्मबुद्धि

से देखा जाता है।

व्याख्या- ये परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान् सबके अन्तर्यामी हैं, अतः सब प्राणियों के हृदय में विराजमान हैं, परन्तु अपनी माया के परदे में छिपे हुए हैं, इस कारण उनके जानने में नहीं आते। जिन्होंने भगवान् का आश्रय लेकर अपनी बुद्धि को तीक्ष्ण बना लिया है, वे सूक्ष्मदर्शी ही भगवान् की दया से सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उन्हें देख पाते हैं।

विशेष- गूढोत्मा- यह वैदिक या आर्ष प्रयोग है, पाणिनि मत से ठीक रूप नहीं है। पाणिनिकृत व्याकरण से गूढः आत्मा का सन्धि कृत रूप गूढ आत्मा होगा।विसर्ग का लोप हो जायेगा, फिर सवर्ण दीर्घसन्धि (गूढात्मा) नहीं होगा।

13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥

1/3/13

शब्द	अर्थ
प्राज्ञः	बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि
वाक्	(वाक्) वाणी को
मनसी	मन में
यच्छेत्	निरुद्ध करे
तत्	उस मन को
ज्ञाने आत्मनि	ज्ञानस्वरूप बुद्धि में
यच्छेत्	विलीन करे
ज्ञानम्	ज्ञान स्वरूप बुद्धि को
महति आत्मनि	महान् आत्मा में
नियच्छेत्	विलीन करे
शान्ते आत्मनि	शान्तस्वरूप परमपुरुष परमात्मा में।

अनुवाद- विवेकी पुरुष वाक् इन्द्रिय का मन में उपसंहार करे, उसका प्रकाशस्वरूप बुद्धि में लय करे, बुद्धि को महतत्त्व में लीन करे और महतत्त्व को शान्त आत्मा में नियुक्त करे।

व्याख्या - बुद्धिमान् मनुष्य को उचित है कि वह पहले तो वाक् आदि इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर मन में विलीन कर दे अर्थात् इनकी ऐसी स्थिति कर दे इनकी कोई भी क्रिया न हो- मन में विषयों की स्फुरणा न रहे। जब यह साधन भली-भाँति होने लगे, तब मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन कर दें अर्थात् एकमात्र विज्ञानस्वरूप निश्चयात्मिका बुद्धि की वृत्ति के सिवा मन की भिन्न सत्ता न रहे, किसी प्रकार का अन्य कोई भी चिन्तन न रहे।जब यह तक दृढ़ अभ्यास हो जाय, तदन्तर उस ज्ञानरूप बुद्धि को भी जीवात्मा के शुद्ध स्वरूप में विलीन कर दें।अर्थात् ऐसी स्थिति में स्थित हो जाय, जहाँ एकमात्र आत्मतत्त्व के सिवा- अपने से भिन्न किसी भी वस्तु की सत्ता या स्मृति नहीं रह जाती।इसके पश्चात् अपने- आप को भी पूर्व निश्चय के अनुसार शान्त आत्मारूप परब्रह्म पुरुषोत्तम में विलीन कर दें।

विशेष-

- इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि विवेकी साधक पूर्वोक्त क्रम से स्थूल को सूक्ष्म में लय करते-करते अन्ततः सूक्ष्मतम निर्विशेष एवं समस्त प्रत्यय साक्षिभूत मुख्य आत्मा तक पहुँच जाता है।

14. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

1/3/14

शब्द	अर्थ
उत्तिष्ठत	उठो (हे मनुष्यों)
जाग्रत	जागो (सावधान हो जाओ)
वरान् प्राप्य	श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर
निबोधत	उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो (क्योंकि)
कवयः	त्रिकालज्ञ ज्ञानीजन
तत पथः	उस तत्वज्ञान के मार्ग को
क्षुरस्य	छूरे की
निशिता दुरत्यया	तीक्ष्ण की हुई दुस्तर
धारा (इव)	धार के सदृश
दुर्गम्	दुर्गम (अत्यन्त कठिन)
वदन्ति	बतलाते हैं

अन्वय- उत्तिष्ठत जाग्रत वरान् प्राप्य निबोधत। कवयः क्षुरस्य निशिता दुरत्यया धारा तत् पथः दुर्गं वदन्ति।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में श्रुति मनुष्यों को सावधान करती हुई कहती है। कि-

अनुवाद- (अरे अविद्याग्रस्त लोगों!) उठो, (अज्ञान -निद्रा से) जागो, और श्रेष्ठ पुरुषों के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार छुरे की धार तीक्ष्ण और दुस्तर होती है, तत्त्वज्ञानी लोग उस मार्ग को वैसा ही दुर्गम बतलाते हैं।

व्याख्या- हे मनुष्यों! तुम जन्म-जन्मान्तर से अज्ञान निद्रा में सो रहे हो। अब तुम्हें परामात्मा की दया से यह दुर्लभ मनुष्य-शरीर मिला है। इसे पाकर अब एक क्षण भी प्रमाद में मत खोओ।शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याण का मार्ग और परमात्मा का रहस्य समझ लो। परमात्मा का तत्त्व बड़ा गहन है, उसके स्वरूप का ज्ञान उसकी प्राप्ति का मार्ग महापुरुषों की सहायता और परमात्मा की कृपा के बिना वैसे ही दुस्तर है, जिस प्रकार छूरे की तेज धार पर चलना।ऐसे दुस्तर मार्ग से सुगमता पूर्वक पार होने का सरल उपाय वे अनुभवी महापुरुष ही बता सकते हैं, जो स्वयं इसे पार कर चुके हैं।

15. अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते॥
1/3/15

शब्द	अर्थ
यत्	जो
अशब्दम्	शब्दरहित
अस्पर्शम्	स्पर्शरहित
अरूपम्	रूपरहित
अरसम्	रस रहित
च	और
अगन्धवत्	बिना गन्धवाला है
तथा	तथा (जो)
अव्ययम्	अविनाशी
नित्यम्	नित्य
अनादि	अनादि
अनन्तम्	अनन्त (असीम)
महतः परम	महान् आत्मा से श्रेष्ठ
ध्रुवम्	सर्वथा सत्य तत्त्व है
तत्	उस परमात्मा को
निचाय्य	जानकर
मृत्युमुखात्	मृत्यु के मुख से
प्रमुच्यते	सदा के लिए छूट जाता है।

अन्वय- यत् अशब्दम् अस्पर्शम् अरूपम् अव्ययम् अरसं नित्यम् अगन्धवत् अनादि अनन्तं महतः परं तथा ध्रुवं च तत् निचाय्य मृत्युमुखात् प्रमुच्यते।

प्रसङ्ग- संसार चक्र या जन्म मरण परम्परा से नित्य मुक्ति का साधन होने से उसी की परम पुरुषार्थता का वर्णन यम, नचिकेता से करते हुए कहते हैं कि -

अनुवाद- जो अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय तथा रसहीन नित्य और गन्धरहित है, जो अनादि अनन्त महत्तत्त्व से भी पर और ध्रुव है उस आत्मतत्व को जानकर पुरुष मृत्यु के मुख से छूट जाता है।

व्याख्या- इस मन्त्र में उस परब्रह्म परमात्मा की प्रकृति शब्द स्पर्श, रूप,रस और गन्ध से रहित बतलाकर यह दिखलाया गया है कि सांसारिक विषयों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियों की वहाँ पहुँच नहीं है।वे नित्य, अविनाशी, अनादि और असीम हैं। जीवात्मा से भी श्रेष्ठ और सर्वथा सत्य हैं। उन्हें जानकर मनुष्य सदा के लिये जन्म-मरण से छूट जाता है।

कठोपनिषद् का बिन्दुवार अध्ययन

- उपनिषद् शब्द का अर्थ है- **आत्मविद्या**
- ज्ञानकाण्ड किनका विषय है - **उपनिषदों का**
- प्राचीन पद्योपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में हुआ-**17वीं सदी में**
- जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं - **उपनिषद्**
- भगवान् आद्य शङ्कराचार्य ने कितने उपनिषदों पर भाष्य लिखा - **10(दश)**
- उपनिषद् शब्द में धातु है - **सद्**
- उपनिषदः प्रतिपाद्यते - **ज्ञानकाण्डम्**
- उपनिषद् पुस्तकें आधारित हैं - **दर्शन पर**
- उपनिषदों की विषयवस्तु है - **दर्शन**
- प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है - **उपनिषद्**
- उपनिषदों में वर्णित है - **ब्रह्मविद्या**
- वेदों का अन्तिम भाग है- **उपनिषद्**
- वैदिक साहित्य का कौन- सा भाग वेदान्त के नाम से जाना जाता है - **उपनिषद्**
- उपनिषद् पद में प्रत्यय है - **क्विप्**
- नचिकेतोपाख्यान मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य है - **दार्शनिक विषय**
- भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है- **उपनिषद् साहित्य**
- नचिकेता को अग्नि विद्या का उपदेश दिया था - **यम ने**
- कठोपनिषद् के अनुसार महत् से पर (बलवान्) है- **अव्यक्तम्**
- नवकृत्वोपदेश करता है- **उद्दालक**
- रथरूपक का वर्णन है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् के अनुसार सारथि है - **बुद्धि**
- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध है - **कठोपनिषद्**
- कौन से वर में यम ने नचिकेता को अग्नि विद्या दी - **द्वितीय वर में**
- यम नचिकेता संवाद मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने यज्ञ किया था - **सर्वमेध**
- कठोपनिषद् में अध्यायों की संख्या है - **दो**
- कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा प्राप्त होता है - **परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा**
- कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति वरण करता है - **श्रेय का**
- कठोपनिषद् में सृङ्का का अर्थ है - **अकुत्सितकर्ममयीगति**
- कठ शाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- नचिकेता के पिता ने नचिकेता को दान किया - **मृत्यु को**
- कठोपनिषद् के अनुसार प्राणों के सहित उत्पन्न होती है- **अदिति**
- मन से अधिक गति वाला है - **परमेश्वर**
- कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता को प्राप्त होता है - **तीन वर (वरं त्रयम्)**

- यम के द्वारा श्रेयप्रेय का विवेचन प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' यह मन्त्र प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" यह मन्त्र मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- नचिकेता को तीन वर प्राप्त हुये थे- **यम से**
- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः यह मन्त्रांश प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- वाजश्रवा के पुत्र का नाम है - **नचिकेता**

मन्त्रों से सम्बन्धित पूछे जा सकने वाले प्रश्न-

मन्त्र

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥10॥

- इन्द्रियों की अपेक्षा श्रेष्ठ कौन है?- **विषय**
- विषयों से उत्कृष्ट क्या है - **मन**
- मन से बलवान् कौन है? - **बुद्धि**
- बुद्धि से श्रेष्ठ किसे कहा गया है - **आत्मा**
  क्रम- (इन्द्रिय-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा)
- आत्मा से कम श्रेष्ठ किसे कहा गया है - **बुद्धि को**

11. महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः।
पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः॥11॥

- महत्तत्व से पर (श्रेष्ठ) क्या है?- **अव्यक्त**
- अव्यक्त से श्रेष्ठ कौन है? - **पुरुष**
- सबसे श्रेष्ठ कौन है- **पुरुष**
- सबसे सूक्ष्म कौन है? - **पुरुष**
- सबसे महान् किसे कहा गया है? - **पुरुष को**
- पुरुष से उत्कृष्ट क्या है? - **कुछ भी नहीं**
- पुरुष से कम श्रेष्ठ किसे कहा गया है ? - **अव्यक्त को**

12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः पुरुष॥12॥

- सम्पूर्ण भूतों में कौन छुपा हुआ है? - **आत्मा**
- आत्मा को कौन देख सकता है? - **सूक्ष्मदर्शी पुरुष**
- आत्मा किस बुद्धि से देखा जाता है? - **सूक्ष्मबुद्धि**
- आत्मा कहाँ छिपा रहता है? - **सम्पूर्ण भूतों में**
- सभी भूतों का साक्षी कौन है? - **आत्मा**

13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥13॥

- विवेकी पुरुष किसका उपसंहार करते हैं? - **वाणी का**
- वाणी का उपसंहार कहाँ किया जाता है? - **मन में**
- विवेकी पुरुषों के द्वारा मन को कहाँ लीन किया जाता है?- **बुद्धि में**
- बुद्धि कहाँ लीन होती है? - **महत्तत्त्व में**
- महत्तत्व में कौन - सा तत्त्व लीन हुआ रहता है?- **बुद्धि**
- महत्तत्त्व किसमें निवास करता है ? - **आत्मा में**

14. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्यकवयो वदन्ति॥14॥

- 'उत्तिष्ठत जाग्रत' यह मन्त्र कहाँ पाया जाता है? - **कठोपनिषद् में**
- उपर्युक्त मन्त्र में किससे जागने की बात कही गयी है? - **अज्ञान निद्रा से**
- अज्ञानी लोगों को ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? - **श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा**
- सूक्ष्म बुद्धि कैसी होती है? - **छुरे की धार के समान दुस्तर**
- दुरत्यया किसे कहते है? - **जिसे कठिनता से किया जा सके**

15. अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं
तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं
निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते॥ 15॥

- अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, रसहीन, नित्य, गन्धरहित, अनादि, अनन्त किसे कहा गया है? -**आत्मा को**
- किसका आदि और अन्त नहीं है? - **ब्रह्म का (आत्मा का)**
- पुरुष कैसे मुक्त हो सकता है?- **आत्मतत्त्व को जानकर**
- उपर्युक्त मन्त्र में आत्मा के कितने विशेषण आये हैं?- **एकादश (11)**
- आत्मतत्त्व को जानकर पुरुष किस स्थिति को प्राप्त होता है? - **मृत्यु के भय से मुक्त**
- महततत्त्व से श्रेष्ठ (पर) कौन है? - **आत्मा**

4.2 श्रीमद्भगवद्गीता

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमता भगवता गीतम् या सा) सर्वशास्त्रमयी सार्वभौमिक ग्रन्थ है।
- गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।
- गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक् पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है

  गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता॥

  'गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीता जी को भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तः करण में धारण कर

लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारबिन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है।

- गीता को उपनिषदों का सार बताते हुए कहा गया है कि सभी उपनिषदें मानों गऊएं है और उनका दोहन करने वाले गोपालनन्दन श्रीकृष्ण हैं, अर्जुन बछड़े हैं और 'गीता' दूध रूपी अमृत है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

- महर्षिवेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है।
- विश्व में सर्वाधिक टीकाओं से युक्त होने का गौरव गीता को ही प्राप्त है।

गीता में वर्णित शंख

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

देवता		**शंख**
श्रीकृष्ण	-	पाञ्चजन्य
अर्जुन	-	देवदत्त
भीम	-	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	-	अनन्तविजय
नकुल	-	सुघोष
सहदेव	-	मणिपुष्पक

गीता के श्लोक संख्या

अध्याय नाम	**-**	**श्लोकसंख्या**
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रय विभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78

कुल श्लोक - 700

- सबसे बड़ा अध्याय - 18, मोक्षसंन्यासयोग (78 श्लोक)
- सबसे छोटा अध्याय - 12और 15 वाँ (20-20 श्लोक)

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ प्रमुख पात्र परिचय -

धृतराष्ट्र	-	दुर्योधन आदि कौरवों के पिता
संजय	-	दिव्यदृष्टि प्राप्त धृतराष्ट्र के मन्त्री
धृष्टद्युम्न	-	पाण्डवों के सेनापति, द्रौपदी के भाई, द्रुपद के पुत्र
भीम	-	पाण्डवों में द्वितीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
अर्जुन	-	श्रीकृष्ण के सखा, पाण्डवों में तृतीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
युधिष्ठिर	-	पाण्डवों में प्रथम पाण्डव, कुन्तीपुत्र, धर्मराज के अवतार
नकुल	-	पाण्डवों में चतुर्थ पाण्डव,माद्री के पुत्र
सहदेव	-	पाण्डवों में अन्तिम पाण्डव, माद्री के पुत्र
द्रुपद	-	द्रौपदी के पिता,
धृष्टकेतु	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
चेकितान	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
काशिराज	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
पुरुजित्	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
कुन्तिभोज	-	पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा
अभिमन्यु	-	अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र
पितामह भीष्म	-	कौरव पक्ष के प्रथम सेनापति, 10 दिन तक सेनापति रहे।
द्रोणाचार्य	-	कौरवों और पाण्डवों के गुरु, कौरवों के द्वितीय सेनापति,05 दिन तक सेनापति।
कर्ण	-	कौरवों के तीसरे सेनापति, 2 दिन तक सेनापति रहे।
कृपाचार्य	-	कौरवों के प्रमुख योद्धा, सप्त चिरंजीवियों में एक
अश्वत्थामा	-	द्रोणाचार्य के पुत्र, कौरव पक्ष के प्रमुख योद्धा
विकर्ण	-	कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा (दुर्योधन का

भाई)

भूरिश्रवा - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा

श्रीकृष्ण - भगवान् विष्णु के अवतार, अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले

राजा विराट - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा, अज्ञातवास में पाण्डव यहीं रहे थे।

दुर्योधन - धृतराष्ट्र के पुत्र, 100 पुत्रों में सबसे बड़ा

गीता में वर्णित चतुर्विध भक्त

अर्थार्थी	**आर्त**
जिज्ञासु	**ज्ञानी**

➢ चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। (7-16)
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। (7-17)
हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु, और ज्ञानी - ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं।उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति राजा ज्ञानी भक्त अति उत्तम हैं,क्योंकि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है।

➢ गीता में श्रीकृष्ण अपने अवतार का कारण बताते हैं-

➢ **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।** (4-7)

➢ **परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।** (4-8)
हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।
साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वाले का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

➢ **भगवान् के अवतार के हेतु**

- धर्म की स्थापना के लिए
- साधुपुरुषों की रक्षा के लिए
- पापकर्म करने वालों को मारने के लिए
- धर्म की वृद्धि के लिए
- अधर्म की हानि के लिए

➢ **गीता में अर्जुन के लिए सम्बोधन**
अर्जुन, गुडाकेश, पार्थ, परन्तप, भारत, कुन्तीपुत्र, पृथापुत्र, धनञ्जय, महाबाहो, निष्पाप, कुरुश्रेष्ठ, सव्यसाचिन्, किरीटी, पाण्डव, कुरुनन्दन आदि।

➢ **गीता में श्रीकृष्ण के लिए सम्बोधन**
हृषीकेश, कृष्ण, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, श्रीभगवान्, अरिसूदन, गोविन्द, केशव, जगत्स्वामी, पुरुषोत्तम, अनन्त, देवेश, जगन्निवास, सच्चिदानन्दघन, आदिदेव, सनातनपुरुष, विश्वरूप, सहस्रबाहो, कमलनेत्र, परमेश्वर, महायोगेश्वर, देवदेव, अच्युत, केशिनिषूदन, योगेश्वर।

➢ **गीता में वर्णित आत्मा की विषेशताएंः-**
गीता के अनुसार आत्मा अच्छेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य, अशोष्य, नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर, सनातन, अव्यक्त, अचिन्त्य, विकाररहित, अबध्य है।
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते - (2-25)
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।
**अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।** (2/24)
**देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।** (2/30)

➢ **गीता में वर्णित प्रमुख योग-**कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग

➢ **कर्मयोग-** हे अर्जुन ! तेरा कर्म करने का अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।
**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा तेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।** (2/47)

➢ योग मार्ग में स्थित होकर कर्मों को करना चाहिए।
योगस्थः कुरु कर्माणि....।

➢ गीता में समत्व को योग कहा गया है। 'समत्वं योग उच्यते' (2/48)

➢ समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।
योगः कर्मसु कौशलम् (2/50)

➢ गीता के अनुसार योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है।
कर्मयोगेन योगिनाम् (3/3)

➢ 'जो मनुष्य इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ समस्त इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आचरण करता है, वही श्रेष्ठ है।'
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते (3/7)

➢ गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना अत्यन्त श्रेष्ठ है। **नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः** (3/8)

➢ **भक्तियोग-**

➢ ईश्वर के प्रति अनन्यभाव से समर्पित होना ही भक्तियोग है।

- जो भक्तजन परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हैं उनका योगक्षेम स्वयं भगवान् अपने ऊपर ले लेते हैं।
  अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते
  तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ (9/22)
- भक्तिपूर्वक जो कुछ भी सामग्री भगवान् को अर्पण की जाती है वह भगवान् उसी रूप में स्वीकार करते हैं।
  पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति (9/26)
- गीता में श्रीकृष्ण यह कहते हैं कि जो मनुष्य मेरे लिए कर्म करता है, मेरा परायण करता है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित वह अनन्यभक्ति से युक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है।
  मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
  निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥ (11/55)
- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जो सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की शरण में आ जाता है उसे मैं सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर देता हूँ।
  सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
  अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)
- **स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण**
  - दुःख में उद्विग्न न होना।
  - सुख में अत्यधिक हर्षित न होना।
  - राग, भय, क्रोध से मुक्त।
- **गीता के अनुसार अष्ट प्रकृति**

पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु
आकाश	मन	बुद्धि	अहंकार

- **श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ का वर्णन -**
  गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जिस समय मनुष्य अपने मन में सभी कामनाओं को मिटाकर आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।
  प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
  आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥ (2/55)
- दुःख होने पर जो उद्वेग नहीं करता और अत्यधिक सुख में सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके मन से राग, भय, और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है। **वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते (2/56)**
- गीता में अष्ट प्रकृति का वर्णन - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ये अष्ट प्रकार से विभाजित प्रकृति है।
  भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
  अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥ (7/4)
- श्रीमद्भगवद्गीता को **गीतोपनिषद्** भी कहा जाता है।
- **गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की विभूतियाँ -**

जल में - **रस** "रसोऽहमप्सु कौन्तेय" (7.8)
चन्द्र सूर्य में - **प्रकाश** "प्रभास्मि शशिसूर्ययोः" (7.8)
वेदों मे - **ओंकार** "प्रणवः सर्ववेदेषु" (7.8)
आकाश में - **शब्द** "शब्दः खे" (7.8)
पुरुषों में - **पुरुषत्व** "पौरुषं नृषु" (7.8)
पृथ्वी में - **गन्ध** "पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च" (7.8)
अग्नि में - **तेज** "तेजश्चास्मि विभावसौ" (7.8)
तपस्वियों में - **तप** "तपश्चास्मि तपस्विषु" (7.9)
सम्पूर्णभूतों में- **जीवन** "जीवनं सर्वभूतेषु" (7.9)
बुद्धिमानों में - **बुद्धि** "बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि" (7.10)
तेजस्वियों में - **तेज** "तेजस्तेजस्विनामहम् " (7.10)
अदितिपुत्रों में - **विष्णु** "आदित्यानामहं विष्णुः " (10.21)
ज्योतियों में - **किरणों वाला सूर्य** "ज्योतिषां रविरंशुमान् " (10.21)
नक्षत्रों में अधिपति- **चन्द्रमा** "नक्षत्राणामहं शशी" (10.21)
वेदों में - **सामवेद** "वेदानां सामवेदोऽस्मि" (10.22)
देवों में - **इन्द्र** "देवानामस्मि वासवः " (10.22)
इन्द्रियों में - **मन** "इन्द्रियाणां मनश्चास्मि" (10.22)
एकादश रुद्रों में- **शंकर** "रुद्राणां शङ्करश्चास्मि" (10.23)
यक्ष तथा राक्षसों में - **कुबेर** "वित्तेशो यक्षरक्षसाम् " (10.23)
आठ वस्तुओं में - **अग्नि** "वसूनां पावकश्चास्मि " (10.23)
पर्वतों में - **सुमेरु** " मेरुः शिखरिणामहम् " (10.23)
पुरोहितों में - **बृहस्पति** "पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्" (10.24)
सेनापतियों में - **स्कन्द** "सेनानीनामहं स्कन्दः" (10.24)
जलाशय में - **समुद्र** "सरसामस्मि सागरः" (10.24)
महर्षियों में - **भृगु** "महर्षीणां भृगुरहम्" (10.25)
शब्दों में - (अक्षर) **ओंकार** "गिरामस्म्येकमक्षरम् " (10.25)
यज्ञों में - **जपयज्ञ** "यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि " (10.25)
स्थिर रहने वालों में- **पहाड़** "स्थावराणां हिमालयः" (10.25)
वृक्षों में - **पीपल** "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम् " (10.26)
देवर्षियों में - **नारद** "देवर्षीणां च नारदः" (10.26)
सिद्धों में - **कपिल** "सिद्धानां कपिलो मुनिः" (10.26)
गन्धर्वों में - **चित्ररथ** "गन्धर्वाणां चित्ररथः" (10.26)
अश्वों में - **उच्चैःश्रवा** "उच्चैः श्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्" (10.27)

हाथियों में - **ऐरावत** "ऐरावतं गजेन्द्राणाम्"
मनुष्यों में - **राजा** "नराणां च नराधिपम्" (10.27)
शस्त्रों में - **वज्र** "आयुधानामहं वज्रम्" (10.28)
गौओं में - **कामधेनु** "धेनुनामस्मि कामधुक्" (10.28)
सर्पों में - **वासुकि** "सर्पाणामस्मि वासुकिः" (10.28)
सन्तानोत्पत्ति में- **कामदेव** "प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः" (10.28)
नागों में - **शेषनाग** "अनन्तश्चास्मि नागानाम्" (10.29)
जलचरों में - **वरुण** "वरुणो यादसामहम्" (10.29)
पितरों में - **अर्यमा** "पितृणामर्यमा चास्मि" (10.29)
शासन करने वालों में - **यमराज** "यमः संयमतामहम्" (10.29)
दैत्यों में - **प्रह्लाद** "प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्" (10.30)
पशुओं में - **सिंह** "मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहम्" (10.30)
पक्षियों में - **गरुड़** "वैनतेयश्च पक्षिणाम्" (10.30)
गणना करने वालों में - **समय** "कालः कलयतामहम्" (10.30)
पवित्र करने वालों में - **वायु** "पवनः पवतामस्मि" (10.31)
शस्त्रधारियों में - **श्रीराम** "रामः शस्त्रभृतामहम्" (10.31)
मछलियों में - **मगर** "झषाणां मकरश्चास्मि" (10.31)
नदियों में - **भागीरथी गंगा** "स्रोतसामस्मि जाह्नवी" (10.31)
विद्याओं में -**अध्यात्मविद्या** "अध्यात्मविद्या विद्यानाम्" (10.32)
तर्क में - **वाद** "वादः प्रवदतामहम्" (10.32)
अक्षरों में - **अकार** "अक्षराणामकारोऽस्मि" (10.33)
समासों में - **द्वन्द्व** "द्वन्द्वः सामासिकस्य च" (10.33)
नाश करने वालों में - **मृत्यु** "मृत्युः सर्वहरश्चाहम्" (10.34)
स्त्रियों में - "**कीर्ति, श्री, वाक्,स्मृति, धृति, क्षमा,** कीर्तिः श्रीर्वाक्चनारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा" (10.34)
श्रुतियों में - **बृहत्साम** "बृहत्साम तथा साम्नां" (10.35)
छन्दों में - **गायत्री** "गायत्री छन्दसामहम्" (10.35)
महीनों में - **मार्गशीर्ष** "मासानां मार्गशीर्षोऽहम्" (10.35)
ऋतुओं में - **वसन्त** "ऋतूनां कुसुमाकरः" (10.35)
छल करने वालों में - **जूआ** "द्यूतं छलयतामस्मि" (10.36)
प्रभावशाली पुरुषों का - **प्रभाव** "तेजस्तेजस्विनामहम्" (10.36)
जीतने वालों का - **विजय** "जयोऽस्मि" (10.36)
निश्चय करने वालों का - **निश्चय** "व्यवसायोऽस्मि" (10.36)
सात्त्विक पुरुषों का - **सात्त्विक भाव** "सत्त्वं सत्त्ववतामहम्" (10.36)
वृष्णिवंशियों में - **वासुदेव** "वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि" (10.37)
पाण्डवों में - **धनञ्जय** "पाण्डवानां धनञ्जयः" (10.37)
मुनियों में - **वेदव्यास** "मुनीनामप्यहं व्यासः" (10.37)
कवियों में - **शुक्राचार्य** "कवीनामुशना कविः" (10.37)
दमन करने वालों का - **दण्ड** "दण्डो दमयतामस्मि" (10.38)
जीतने की इच्छा वालों की - **नीति** "नीतिरस्मि जिगीषताम्" (10.38)
गुप्त रखने योग्य भावों का (रक्षक) - **मौन** "मौनं चैवास्मि गुह्यानां" (10.38)
ज्ञानवानों का - **तत्त्वज्ञान** "ज्ञानं ज्ञानवतामहम्" (10.38)

➢ **गीता में वर्णित दैवीय गुण** -

➢ गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि दैवीय प्रकृति के आश्रित महात्मा मुझको सब भूतों का कारण जानकर अनन्य मन से निरन्तर भजते हैं।

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्॥ (9/13)

➢ गीता में श्रीकृष्ण दैवी सम्पत्तियों का स्वरूप वर्णन करते हुए कहते हैं कि भय का सर्वथा अभाव, अन्तःकरण की शुद्धता, तत्त्वज्ञान के लिए ध्यान में स्थिति सर्वस्व समर्पण, इन्द्रियों का भली प्रकार दमन ये सब दैवी गुण हैं।

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥(16/1)

➢ 'मन, वाणी, शरीर से किसी को कष्ट न देना यथार्थ और प्रियभाषण, अहंकार करने वाले पर भी क्रोध न करना, किसी की भी निन्दा न करना, सभी प्राणियों में दया- ये सब दैवी सम्पत्तियाँ हैं।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥ (16/2)

➢ **गीता में वर्णित दैवी गुण**

- अभय
- सत्त्वसंशुद्धि
- ज्ञानयोगव्यवस्थिति
- दान
- इन्द्रियों का दमन
- गुरुजनों की पूजा
- अग्निहोत्र करना
- स्वाध्याय करना
- अहिंसा
- सत्यभाषण
- क्रोध न करना
- अन्तः करण की शुद्धि
- निन्दा से दूर रहना
- बिना कारण दया करना
- तेज
- क्षमा
- धैर्य
- बाहर की शुद्धि (गीता - 16/1,3)

➢ **गीता में वर्णित आसुरी सम्पदा**

- दम्भ
- दर्प
- अभिमान
- क्रोध
- कठोरता
- अज्ञान
- असत्यभाषण
- अपवित्रता
- भ्रमित चित्त वाला
- विषय भोगों में अत्यन्त आसक्त

(गीता-16/4,7,10,15,16)

➢ **गीता में वर्णित आसुरी सम्पदा प्राप्त पुरुषों के लक्षण-**

➢ श्रीकृष्ण बताते हैं कि दम्भ, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अज्ञान ये आसुरी सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।। (16/4)

➢ आसुर स्वभाव वाले मनुष्य प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों को नहीं जानते। इसलिए उनमें न तो बाहर भीतर की शुद्धि है, न श्रेष्ठ आचरण है और न सत्यभाषण ही है।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।। (16/7)

➢ **गीता में अर्जुन द्वारा पूछे गये कुछ प्रमुख प्रश्न -**

➢ गीता के प्रारम्भ में अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि हे मधुसूदन! मैं किस प्रकार भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूँगा? क्योंकि वे दोनों पूजनीय हैं ?

कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।।

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं जिस प्रकार एक गुरु अपने शिष्य का सभी प्रकार से कल्याण करता है उसी प्रकार मैं आपका शिष्य हूँ अतः मेरे लिए जो कल्याण का साधन हो वह कहिये।

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे।
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। (2/7)

➢ श्रीकृष्ण से पूछते हुए अर्जुन कहते हैं कि यदि कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ है तो आप मुझे कर्म में क्यों लगाते हो ?

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।। (5/1)

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से ब्रह्म, अध्यात्म, क्रम के विषय में प्रश्न पूछते हुये कहते हैं कि ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है?

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते (8/1)

➢ अर्जुन अगुण परमेश्वर और निराकार ब्रह्म दोनों प्रकार के उपासकों के विषय में प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि दोनों में अति उत्तम योगवेत्ता कौन हैं?

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।। (12/1)

➢ अर्जुन, श्रीकृष्ण से प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर देवताओं का पूजन करते हैं, उनकी कौन-सी गति होती है? सात्विकी, राजसी अथवा तामसी?

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः।। (17/1)

➢ **गीता के अनुसार ईश्वर का निवास -**

➢ श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सभी प्राणियों के हृदय में जो रहता है वही ईश्वर है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति (18/61)

➢ **गीता के अनुसार ज्ञान और अज्ञान का स्वरूप-**

➢ अध्यात्म ज्ञान में नित्यस्थिति और तत्वज्ञान के अर्थरूप परमात्मा को ही देखता यह सब ज्ञान है और जो इससे विपरीत है वह अज्ञान है।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।। (13/11)

श्रीमदभगवद् गीता के माहात्म्य को बताने वाले कुछ प्रमुख श्लोक -

➢ **गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।**
विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः।।

➢ **गीताध्ययनशीलस्य प्राणयामपरस्य च।**
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च।।

➢ **मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।**
सकृद् गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्।।

➢ **भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वत्राद्विनिः सृतम्।**
गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

➢ **एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।**
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माण्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

चार वर्णों का वर्णन

➢ गीता में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।। (4/13)

वर्ण

1.ब्राह्मण 2.क्षत्रिय 3.वैश्य 4.शूद्र

- ब्राह्मणक्षत्रियविंशा शूद्राणां च परन्तप।
  कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। (18/41)
- गीता में भगवान् की पाँच शक्तियों का वर्णन हुआ है-
  आद्या गुणमयी दैवी तथान्या दिव्यचिन्मयी।
  योगमायेति च प्रोक्ता गीतायां पञ्च शक्तयः॥
- **पञ्च शक्तियाँ**
  मूल प्रकृति - (9/7)
  दिव्य चिन्मयशक्ति - (4/6)
  योगमाया शक्ति - (7/25)
  दैवी शक्ति - (9/13)
  गुणमयी माया - (3/27,29)

गीता में विश्वरूप-दर्शन-

- गीता के एकादश अध्याय में अर्जुन के प्रार्थना पर भगवान् श्रीकृष्ण अपना विराट स्वरूप अर्जुन को दिखलाते हैं।
- **मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।**
  तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।
  (11/47)
- गीता में कहे गये श्लोकों की संख्या-
- श्रीकृष्ण भगवान् के द्वारा कहे गये श्लोक - 574
- अर्जुन के द्वारा कहे गये श्लोक - 84
- संजय के द्वारा कहे गये श्लोक - 41
- धृतराष्ट्र के द्वारा कहे गये श्लोक - 1

योग - 700

- **गीता में प्रयुक्त मुख्य छन्द-** गीता में चार छन्दों का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है।
  1. अनुष्टुप् 2. बृहती 3. त्रिष्टुप् 4. जगती
- **गीता में अनुबन्ध चतुष्टय-**

1. **विषय-** गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग आदि विषय हैं।
2. **प्रयोजन-** जीव मात्र का कल्याण करना ही इस ग्रन्थ का प्रमुख प्रयोजन है।
3. **अधिकारी-** अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्य गीता को पढ़ने के अधिकारी हैं। किसी भी देश में रहने वाला, किसी वेश को धारण करने वाला, किसी सम्प्रदाय को मानने वाला, किसी वर्ण आश्रम में रहने वाला, किसी भी अवस्था वाला इस दिव्य वेद सार स्वरूप गीता को पढ़ने का और मुक्ति पाने का अधिकारी है।
4. **सम्बन्ध-** गीता के विषय और गीता में परस्पर प्रतिपाद्य-प्रतिपादक का सम्बन्ध है। जीव का कल्याण किस प्रकार हो - यह प्रतिपाद्य विषय है और कल्याण की युक्तियाँ बताने वाली होने से गीता स्वयं प्रतिपादक है।

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय-2 सांख्ययोग

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥2/13॥

शब्द	-	**अर्थ**
यथा	-	जैसे
देहिनः	-	जीवात्मा की
अस्मिन्	-	इस
देहे	-	देह में
कौमारम्	-	बालकपन
यौवनम्	-	जवानी
जरा	-	वृद्धावस्था
तथा	-	वैसे ही
देहान्तरप्राप्तिः	-	अन्य शरीर की प्राप्ति होती है
तत्र	-	उस विषय में
धीरः	-	धीर पुरुष
न मुह्यति	-	मोहित नहीं होता

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को आत्मा के विषय में बताते हुये कहते हैं कि आत्मा नित्य है आत्मा के विषय में शोक करना उचित नहीं है-

अनुवाद- जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

सम्भावित प्रश्न-

- मनुष्य शरीर की कितनी अवस्थाए है?- **तीन**
  (1) बचपन (2) जवानी (3) वृद्धावस्था
- अन्य योनियों की प्राप्ति पर कौन मोहित नहीं होता?- **धीर पुरुष**

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥2/14॥

शब्द	**अर्थ**
कौन्तेय	हे कुन्तीपुत्र!
शीतोष्णसुखदुःखदाः	सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देने वाले
मात्रास्पर्शाः	इन्द्रिय और विषयों के संयोग
तु	तो
आगमापायिनः	उत्पत्ति विनाशशील (और)
अनित्याः	अनित्य हैं

भारत	हे भारत!
तान्	उनको
तितिक्षस्व	सहन कर

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बन्धु-बान्धवादि के साथ होने वाले संयोग-वियोगादि को अनित्य बताकर उनको सहन करने की आज्ञा देते हैं।

अनुवाद- हे कुन्तीपुत्र! सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्ति, विनाशशील और अनित्य हैं, इसलिए हे भारत! उनको तू सहन कर।

सम्भावित प्रश्न-

- उपर्युक्त श्लोक में भारत किसे कहा गया है -**अर्जुन को**
- सुख दुःख और इन्द्रियों के संयोग को क्या बताया गया है? - **अनित्य**
- सुख दुःख आदि द्वन्द्वों को सहन करना क्या है।? **तितिक्षा**

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥2/15॥

शब्द	अर्थ
हि	क्योंकि
पुरुषर्षभ	हे पुरुष श्रेष्ठ!
समदुःखसुखम्	दुःख सुख को समान समझने वाले
यम्	जिस
धीरम्	धीर
पुरुषम्	पुरुष को
एते	ये (इन्द्रिय और विषयों के संयोग)
न व्यथयन्ति	व्याकुल नहीं करते
सः	वह
अमृतत्वाय	मोक्ष के
कल्पते	योग्य होता है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से धीर पुरुष के स्वरूप के विषय में कहते हैं कि-

अनुवाद - क्योंकि हे पुरुष श्रेष्ठ! दुःख-सुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है।

सम्भावित प्रश्न -

- मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी कौन है? - **धीर पुरुष**
- 'पुरुषर्षभ' शब्द किसके लिए आया है?- **अर्जुन के लिए**
- 'समदुःखसुखं धीरम् सोऽमृतत्वाय कल्पते इस श्लोक का वक्ता कौन है? - **श्रीकृष्ण**
- सुख और दुःख को कौन पुरुष समान समझता है? - **धीर पुरुष**

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥2/16॥

शब्द	अर्थ
असतः	असत् (वस्तु) की
भावः	सत्ता
न	नहीं
विद्यते	है
तु	और
सतः	सत् का
अभावः	अभाव
न	नहीं
विद्यते	है
अनयोः	इन
उभयोः	दोनों का
अपि	ही
अन्तः	तत्त्व
तत्त्वदर्शिभिः	तत्त्वज्ञानी पुरुषों द्वारा
दृष्टः	देखा गया है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को नित्य और अनित्य वस्तु के विवेचन की रीति बतलाते हुए दोनों के लक्षण कहते हैं-

अनुवाद- असत् वस्तु की तो सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है। इस प्रकार इन दोनों का ही तत्त्व तत्वज्ञानी पुरुषों द्वारा देखा गया है।

सम्भावित प्रश्न

- किस वस्तु की सत्ता नहीं होती? - **असत् वस्तु की**
- किस वस्तु का कभी अभाव नहीं होता - **सत् वस्तु का**
- सत् और असत् दोनों के वास्तविक रूप से कौन जान पाता है? - **तत्त्वज्ञानी पुरुष**
- 'उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वननयोः' यहाँ 'उभयोरपि' शब्द किसके लिए आया है? - **सत् और असत् वस्तु के लिए**

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥2/17॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अविनाशि	नाशरहित	तु	तो
तत्	उसको	विद्धि	जान
येन	जिससे	इदम्	यह सर्वम्
सम्पूर्ण	जगत्	ततम्	व्याप्त है
अस्य	इस	अव्ययस्य	अविनाशी का

विनाशम्	विनाश	कर्तुम्	करने में
कश्चित्	कोई भी		
न, अर्हति	समर्थ नहीं है।		

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को सत् और असत् वस्तु के स्वरूप का निराकरण करते हुए युद्ध करने की आज्ञा देते हैं-

अनुवाद - नाशरहित तो तू उसको जान, जिससे यह सम्पूर्ण जगत् (दृश्यवर्ग) व्याप्त है। इस अविनाशी का विनाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

सम्भावित प्रश्न-

- अविनाशी किसे कहा गया है? - **आत्मा को**
- सम्पूर्ण चराचर जगत में कौन व्याप्त है?- **अविनाशी आत्मा**
- आत्मा का विनाश करने में कौन समर्थ है?- **कोई भी नहीं**

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥2/18॥

शब्द	अर्थ
अनाशिनः	नाशरहित
अप्रमेयस्य	अप्रमेय
नित्यस्य	नित्यस्वरूप
शरीरिणः	जीवात्मा के
इमे	ये सब
देहाः	शरीर
अन्तवन्तः	नाशवान्
उक्ताः	कहे गये हैं
तस्मात्	इस लिए
भारत	हे भरतवंशी अर्जुन!
युध्यस्व	युद्ध करो।

प्रसङ्ग- असत् वस्तु की सत्ता बतलाते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-

अनुवाद- इस नाशरहित, अप्रमेय, नित्यस्वरूप जीवात्मा के ये सब शरीर नाशवान् कहे गये हैं। इसलिए हे भरतवंशी अर्जुन ! तू युद्ध कर।

सम्भावित प्रश्न-

- 'अन्तवन्त इमे देहा' वाक्य श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से है? - **द्वितीय**
- श्रीमद्भगवद्गीता में मानव शरीर को क्या कहा गया है? - **नाशवान्**
- 'अन्तवन्त इमे देहा' सूक्ति के वक्ता कौन है? - **श्रीकृष्ण**
- इस श्लोक में जीवात्मा को किन-किन नामों से पुकारा गया है?- **नाशरहित, अप्रमेय और नित्य**

19. य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥2/19॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
यः	जो	एनम्	इस आत्मा को
हन्तारम्	मारने वाला	वेत्ति	समझता है
च	तथा	यः	जो
एनम्	इसको	हतम्	मरा
मन्यते	मानता है	तौ	वे
उभौ	दोनों ही	न	नहीं
विजानीतः	जानते	अयम्	यह आत्मा
न	न (तो किसी को)	हन्ति	मारता है (और)
न	न (किसी के द्वारा)	हन्यते	मारा जाता है।

प्रसङ्ग - इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को यह कहते हैं कि आत्मा को मरने या मारने वाला समझना ही अज्ञान है।

अनुवाद- जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते, क्यों कि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।

सम्भावित प्रश्न-

- 'नायं हन्ति न हन्यते' कहाँ की सूक्ति है? - **श्रीमद्भगवद्गीता द्वितीय अध्याय की**
- आत्मा को वास्तव में कौन नहीं जानता है? - **जो इसे मरने वाला और मारने वाला जानता है**
- 'नायं हन्ति न हन्यते' शब्द का क्या अर्थ है? - **यह आत्मा न तो किसी को मारता है और और न किसी द्वारा मारा जाता है।**

न जायते म्रियते वा कदाचि न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥2/20॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	कदाचित्	किसी काल में भी
न	न (तो)	जायते	जन्मता है
वा	और	न	न
म्रियते	मरता (ही) है	वा	तथा
न	न (यह)	भूत्वा	उत्पन्न होकर
भूयः	फिर	भविता	होने वाला (ही) है
अयम्	यह	अजः	अजन्मा
नित्यः	नित्य	शाश्वतः	सनातन (और)

पुराणः	पुरातन (है)	शरीरे	शरीर के
हन्यमाने	मारे जाने पर भी (यह)		
न	नहीं		
हन्यते	मारा जाता।		

अनुवाद- यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

सम्भावित प्रश्न-

➢ शरीर के मारे जाने पर कौन नहीं मारा जाता?- **आत्मा**

➢ आत्मा की क्या-क्या विशेषताएं हैं?**अजन्मा,नित्य सनातन,पुरातन**

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥2/21॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पार्थ	हे पृथा पुत्र अर्जुन!	यः	जो
पुरुषः	पुरुष	एनम्	इस आत्मा को
अविनाशिनम्	नाशरहित	नित्यम्	नित्य
अजम्	अजन्मा	अव्ययम्	अव्यय
वेद	जानता है	सः	वह (पुरुष)
कथम्	कैसे	कम्	किसको
घातयति	मरवाता है (और)	कथम्	कैसे
कम्	किसको	हन्ति	मारता है?

अनुवाद - हे पृथा पुत्र अर्जुन! जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है?

सम्भावित प्रश्न-

➢ नित्य किसे कहा गया है? - आत्मा को

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥ 2/22॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
यथा	जैसे	नरः	मनुष्य
जीर्णानि	पुराने	वासांसि	वस्त्रों को
विहाय	त्यागकर	अपराणि	दूसरे
नवानि	नये (वस्त्रों को)	गृह्णाति	ग्रहण करता है
देही	जीवात्मा	जीर्णानि	पुराने
शरीराणि	शरीरों को	विहाय	त्यागकर
अन्यानि	दूसरे	नवानि	नये (शरीरों को)
संयाति	प्राप्त होता है।	तथा	वैसे ही

अनुवाद- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

सम्भावित प्रश्न-

➢ 'देही' शब्द का क्या अर्थ है? - **जीवात्मा (शरीरधारी)**

➢ 'गृह्णाति' कहाँ का रूप है?-**लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन**

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ 2/23॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
एनम्	इस आत्मा को	शस्त्राणि	शस्त्र
न	नहीं	छिन्दन्ति	काट सकते
एनम्	इसको	पावकः	आग
न	नहीं	दहति	जला सकती
एनम्	इसको	आपः	जल
न	नहीं	क्लेदयन्ति	गला सकता
च	और	मारुतः	वायु
न	नहीं	शोषयति	सुखा सकता।

अनुवाद- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

सम्भावित प्रश्न-

➢ इस आत्मा को कौन नहीं काट सकता? - **शस्त्र**

➢ आत्मा को कौन नहीं जला सकता? - **आग**

➢ आत्मा को कौन जला नहीं सकता? - **जल**

➢ वायु किसको नहीं सुखा सकता ? - आत्मा को

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥ 2/24॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	अच्छेद्याः	अच्छेद्य है,
अयम्	यह आत्मा	अदाह्यः	अदाह्य
अक्लेद्यः	अक्लेद्य	च	और
एव	निःसंदेह	अशोष्यः	अशोष्य है
अयम्	यह आत्मा	नित्यः	नित्य
सर्वगत	सर्वव्यापी	अचलः	अचल
स्थाणुः	स्थिर रहने वाला	सनातनः	सनातन है

अनुवाद- क्योंकि यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य और निःसन्देह अशोष्य है तथा यह आत्मा नित्य,

सर्वव्यापी, अचल, स्थिर रहने वाला और सनातन है।

➢ किसको छेदा नहीं जा सकता है? - **आत्मा को**

➢ नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर कौन है?- **आत्मा**

➢ सनातन किसे कहा गया है? - **आत्मा को**

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचिमर्हसि॥2/25॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	अव्यक्तः	अव्यक्त है
अयम्	यह आत्मा	अचिन्त्यः	अचिन्त्य है (और)
अयम्	यह आत्मा	अविकार्यः	विकाररहित
उच्यते	कहा जाता है।	तस्मात्	इससे (हे अर्जुन)
एवम्	उपर्युक्त प्रकार से	विदित्वां	जानकर
अनुशोचितुम्	शोक करने के	एनम्	इस आत्मा को

न अर्हसि योग्य नहीं है, अर्थात तुझे शोक करना उचित नहीं है।

अनुवाद- यह आत्मा अव्यक्त है, यह आत्मा अचिन्त्य है और यह आत्मा विकाररहित कहा जाता है। इससे हे अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करने योग्य नहीं है अर्थात् तुझे शोक करना उचित नहीं है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ अव्यक्त, अचिन्त्य कौन है? - **आत्मा**

➢ विकाररहित किसे कहा गया है? - **आत्मा को**

श्रीमद्भगवद्गीता की प्रमुख सूक्तियाँ

1. क्लैब्यं मा स्म गमः (2/3)

भावार्थ- नपुंसकता को मत प्राप्त हो।

2. शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् । (2/7)

मैं आपका शिष्य हूँ इसलिए आपके शरण हुए मुझको शिक्षा दीजिए।

3. गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। (2/11)

भावार्थ- जिनके प्राण चले गये हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गये हैं उनके लिए पण्डित जन शोक नहीं करते।

4. आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत। (2/14)

भावार्थ- उत्पत्ति और विनाश दोनों अनित्य हैं इसलिए हे भारत! उनको सहन कर।

5. समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते (2/15)

भावार्थ- सुख दुःख को समान समझने वाला धीर मोक्ष के योग्य होता है।

6. नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।(2/16)

भावार्थ- असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है।

7. अन्तवन्त इमे देहा।(2/18)

भावार्थ- ये सब शरीर नाशवान है।

8. नायं हन्ति न हन्यते।(2/19)

भावार्थ- यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।

9. न हन्यते हन्यमाने शरीरे (2/20)

भावार्थ-शरीर के माने जाने पर भी (यह आत्मा) नहीं मारा जाता।

10. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2/22)

भावार्थ- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसने नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

11. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ (2/23)

भावार्थ- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

12. नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।(2/24)

भावार्थ- यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी, अचल स्थिर रहने वाला और सनातन है।

13. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। (2/27)

(क्योंकि) जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है।

14. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥ (2/38)

जय-पराजय, लाभ हानि और सुख-दुःख को समान समझकर उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा।

15. स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।(2/40)

भावार्थ- इस कर्मयोग रूप धर्म का थोड़ा-सा भी साधन जन्म मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है।

16. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।(2/47)

भावार्थ- तेरा कर्म करने में ही अधिकार है (उसके) फलों में कभी नहीं।

17. समत्त्वं योग उच्यते।(2/48)

भावार्थ- समत्व ही योग कहलाता है।

18. बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।(2/63)

भावार्थ- बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

19. प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। (2/65)

भावार्थ- अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है।

20. अशान्तस्य कुतः सुखम् (2/66)
भावार्थ- शान्तिरहित मनुष्य को सुख कैसे मिल सकता है?
21. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।(2/69)
भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जो रात्रि के समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्द की प्राप्ति में स्थितप्रज्ञ योगी जागता है।
22. स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।(2/70)
भावार्थ- वही पुरुष परम शान्ति को प्राप्त होता है, भोगों को चाहने वाला नहीं।
23. निर्ममो निरहङ्कार स शान्तिमधिगच्छति।(2/71)
भावार्थ- ममतारहित, अहंकाररहित जो है वही शान्ति को प्राप्त होता है।
24. तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।(3/2)
भावार्थ- उस एक बात को निश्चित करके कहिये, जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ।
25. न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।(3/5)
भावार्थ- निःसन्देह कोई भी (मनुष्य) किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता।
26. यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। (3/9)
भावार्थ- यज्ञ के निमित्त किये जाने वाले कर्मों से अतिरिक्त दूसरे कर्मों में (लगा हुआ ही) यह मनुष्य समुदाय कर्मों से बँधता है।
27. परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। (3/11)
भावार्थ- एक दूसरे को उन्नत करते हुए (तुम लोग) परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।
28. भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।(3/13)
भावार्थ- जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।
29. अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।। (3/14)
भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ, विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।
30. एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। (3/16)
भावार्थ- हे पार्थ! जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार परम्परा से प्रचलित सृष्टि चक्र के अनुकूल नहीं बरतता अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करने वाला पापायु व्यर्थ ही जीता है।
31. नैव तस्थ कृतेनार्थे नाकृतेनेह कश्चन।(3/18)
भावार्थ- उस महापुरुष का इस विश्व में न तो कर्म करने से कोई प्रयोजन रहता है और न कर्मों के न करने से।
32. तस्मादसक्त सततं कार्यं कर्म समाचर।(3/19)
भावार्थ- इसलिए तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भलीभाँति करता रह।
33. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।(3/21)
भावार्थ- श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं, वह जो कुछ प्रमाणित कर देता है समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।
34.अहङ्ककारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।(3/27)
भावार्थ- जिसका अन्तः करण अहंकार से मोहित हो रहा है ऐसा अज्ञानी मैं कर्ता हूँ ऐसा मानता है।
35. तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।।(3/28)
भावार्थ- परन्तु हे महाबाहो! गुणविभाग और कर्मविभाग के तत्त्व को जानने वाला ज्ञानयोगी सम्पूर्ण गुण ही गुणों में बरत रहे है। ऐसा समझकर (उनमें) आसक्त नहीं होता।
36. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।। (3/35)
भावार्थ- अपने धर्म में मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।
37. जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।(3/43)
भावार्थ- हे महाबाहो! (अर्जुन) तू इस कामरूप दुर्जय शत्रु को मार डाल।
38. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4/7)
भावार्थ- हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।
39. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (4/8)
भावार्थ- साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।
40. जन्म कर्म च मे दिव्यम् (4/9)
भावार्थ- (हे अर्जुन) मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं।
41. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।(4/11)

भावार्थ- जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

42. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।(4/13)

भावार्थ- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णो का समूह, गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है।

43. गहना कर्मणो गतिः (4/17)

भावार्थ- क्योंकि कर्म की गति गहन है।

44. यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। (4/23)

भावार्थ- यज्ञ सम्पादन के लिए कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म भलीभाँति विलीन हो जाते हैं।

45. ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।। (4/24)

भावार्थ- जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किये जाने योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप कर्त्ता के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म है - उस ब्रह्मकर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म ही है।

46. यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।(4/31)

भावार्थ- यज्ञ से बचे हुए अमृत का अनुभव करने वाले योगीजन सनातन परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

47. सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।(4/33)

भावार्थ- हे अर्जुन! यावन्मात्र सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

48. तद्विद्धि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।। (4/34)

भावार्थ- उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भली-भाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मतत्त्व को भली-भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

49. यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्। (4/35)

भावार्थ- जिसको जानकर फिर मोह नहीं होगा।

50. श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं।(4/39)

भावार्थ- श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है।

51. संशयात्मा विनश्यति।(4/40)

भावार्थ- संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है।

52. कर्मयोगो विशिष्यते।(5/2)

भावार्थ- कर्मयोग (साधन में सुगम होने से) श्रेष्ठ है।

53. निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। (5/3)

भावार्थ- क्यों कि राग द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित (पुरुष) सुखपूर्वक संसारबन्धन से मुक्त हो जाता है।

54. फले सक्तो निबध्यते।(5/12)

भावार्थ- फल में आसक्त होकर बँधता है।

55. इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।(5/19)

भावार्थ- जिनका मन समभाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है।

56. ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः। (5/20)

भावार्थ- ब्रह्मवेत्ता पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा में स्थित है।

59. ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।(5/22)

भावार्थ- जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब भोग हैं, वे यद्यपि विषयी पुरुषों को सुखरूप भासते हैं तो भी निःसन्देह दुःख के ही हेतु हैं और आदि अन्त वाले अर्थात् अनित्य हैं। इसलिए हे अर्जुन बुद्धिमान् विवेकी पुरुष उनमें नहीं रमता।

58. भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुह्रदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।। (5/29)

भावार्थ- मुझको सब यज्ञ और तपों का भोगने वाला, सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर तथा सम्पूर्ण भूतप्राणियों का सुहृद् अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी, ऐसा तत्त्व से जानकर शान्ति को प्राप्त होता है।

59. न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन (6/2)

भावार्थ- क्योंकि संकल्पों का त्याग न करने वाला कोई भी पुरुष योगी नहीं होता।

60. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।(6/3)

भावार्थ- योग में आरूढ़ होने की इच्छा वाले मननशील पुरुष के लिए निष्काम भाव से कर्म करना ही हेतु कहा जाता है।

61. आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः। (6/5)

आप ही तो अपना मित्र हैं और आप ही अपना शत्रु हैं।

62. समबुद्धिर्विशिष्यते।(6/9)

भावार्थ- समान भाव रखने वाला अत्यन्त श्रेष्ठ है।

63. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। (6/17)

भावार्थ- दुःखों का नाश करने वाला योग यथा योग्य आहार विहार करने वाले का, कर्मों में यथा योग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य तथा सोने जगने वाले का ही सिद्ध होता है।

64. तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्।(6/23)

भावार्थ- दुःखरूप संसार के संयोग से रहित है (तथा) जिसका नाम योग है उसको जानना चाहिए।

65. यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥ (6/30)

भावार्थ- जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सब के आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

66. अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।(6/35)

भावार्थ- परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! (यह मन) अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है।

67. न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। (6/40)

भावार्थ- हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

68. मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति।(7/7)

भावार्थ- मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम (कारण) नहीं है।

69. मामेव ये प्रपद्यन्ते मायायेतां तरन्ति ते। (7/14)

भावार्थ- जो पुरुष मुझको ही निरन्तर भजते हैं वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।

70. वासुदेवः सर्वम्। (7/19)

भावार्थ- सब कुछ वासुदेव ही है।

71. मद्भक्ता यान्ति मामपि। (7/23)

भावार्थ- मेरे भक्त (चाहे जैसे ही भजें, अन्त मे वे) मुझको ही प्राप्त होते हैं।

72. मामनुस्मर युध्य च। (8/7)

भावार्थ- मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर।

73. दुःखालयमशाश्वतम्।(8/15)

भावार्थ- दुःखों के घर (एवं) क्षणभंगुर

74. मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। (8/16)

भावार्थ- हे कुन्ती पुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता।

75. भूतग्रामः स एवायं भूत्वा प्रलीयते। (8/19)

भावार्थ- वही यह भूत समुदाय उत्पन्न हो होकर लीन होता है।

76. यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। (8/21)

भावार्थ- जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।

77. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।(9/21)

भावार्थ- पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं।

78. गतागतं कामकामा लभन्ते।(9/21)

भावार्थ- भोगों की कामना वाले पुरुष बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं अर्थात् पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आते हैं।

79. योगक्षेमं वहाम्यहम्।(9/22)

भावार्थ- योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

80. पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ (9/26)

भावार्थ- जो मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह (पत्र-पुष्पादि) मैं खाता हूँ।

81. यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥ (9/27)

भावार्थ- हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान दान देता है, जो तप करता है, वह सब मुझे अर्पण कर ।

82. कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।(9/31)

भावार्थ- हे अर्जुन! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

83. अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। (9/33)

भावार्थ- क्षणभंगुर और सुखरहित इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर निरन्तर मेरा ही भजन कर।

84. मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। (9/34)

भावार्थ- मुझमें मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर।

85. यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।(10/25)

भावार्थ- सब प्रकार के यज्ञों में (मैं) जप यज्ञ हूँ।

86. अध्यात्मविद्या विद्यानाम्।(10/32)

भावार्थ- विद्याओं में अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या हूँ।

87. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।(11/33)

भावार्थ- हे सव्यसाचिन! तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा।

88. न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो। (11/43)

भावार्थ- आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक तो कैसे हो सकता है?

89. ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः। (12/4)

भावार्थ- वे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सबमें समान भाव वाले योगी मुझको ही प्राप्त होते हैं।

90. त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्। (12/12)

भावार्थ- त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

91. जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।(13/8)

भावार्थ- जन्म, मृत्यु, जरा और रोग आदि में दुःख और दोषों का बार-बार विचार करना।

92. ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः।(13/17)

भावार्थ- वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति है।

93. पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।(13/21)
भावार्थ- प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है।

94. देहेऽस्मिन्पुरुषः परः। (13/22)
भावार्थ- इस देह में स्थित यह आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है।

95. न हिनस्त्यात्मानात्मानं ततो याति परां गतिम्।(13/28)
भावार्थ- क्योंकि जो अपने द्वारा अपने को नष्ट नहीं करता इससे वह परम गति को प्राप्त होता है।

96. शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते।(13/31)
भावार्थ- हे अर्जुन! शरीर में स्थित होने पर भी न कुछ करता है और न लिप्त ही होता है।

97. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥ (14/18)
भावार्थ- सत्त्वगुण में स्थित पुरुष स्वर्गादि उच्च लोकों को जाते हैं, राजस पुरुष मध्य में अर्थात् मनुष्यलोक में रहते हैं और तमोगुण के कार्यरूप निद्रा, प्रमाद और आलस्य में स्थित तामस पुरुष अधोगति को अर्थात् कीट, पशु आदि नीच योनियों को तथा नरकों को प्राप्त होते हैं।

98. उर्ध्वमूलमधः शाखामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।(15/1)
भावार्थ- आदि पुरुष परमेश्वर रूप मूलवाले और ब्रह्मारूप मुख्य शाखा वाले संसाररूप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं।

99. न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥(15/6)
भावार्थ- जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस (स्वयं प्रकाश परम पद को) न सूर्य प्रकाशित कर सकता है न चन्द्रमा और न अग्नि, वही मेरा परम धाम है।

100. ममैवांशो जीवलोके। (15/7)
भावार्थ- इस देह में (जीवात्मा) मेरा ही अंश है।

101. विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः। (15/10)
भावार्थ- अज्ञानी जन नहीं जानते, (केवल) ज्ञानरूप नेत्रों वाले तत्त्व से जानते हैं।

102. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः। (15/15)
भावार्थ- मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ।

103. दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। (16/5)
भावार्थ- दैवी सम्पदा मुक्ति के लिए और आसुरी सम्पदा बाँधने के लिए मानी गयी है।

104. कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः। (16/11)
भावार्थ- विषय भोगों के भोगने में तत्पर रहने वाले 'इतना ही सुख' है इस प्रकार मानने वाले होते हैं।

105. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। (16/24)
भावार्थ- इससे तेरे लिए कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है।

106. श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः। (17/3)
भावार्थ-यह पुरुष श्रद्धामय है, इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है।

107. यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते। (18/11)
भावार्थ- जो कर्मफल का त्यागी है वही त्यागी है, यह कहा जाता है।

108. यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। (18/37)
भावार्थ- जो आरम्भ काल में विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है।

109. स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18/45)
भावार्थ- अपने-अपने स्वभाविक कर्मो में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत्प्राप्ति रूप परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

110. स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। (18/46)
भावार्थ- अपने स्वभाविक कर्मों द्वारा उस परमेश्वर की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

111. सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः। (18/48)
भावार्थ- सभी कर्म धूएँ से अग्नि की भाँति दोष से युक्त हैं।

112. मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। (18/58)
भावार्थ- मुझमें चित्त वाला होकर तू मेरी कृपा से समस्त संकटों को पार कर जायेगा।

113. प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।(18/59)
भावार्थ- स्वभाव तुझे जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा।

114. ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशोऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥ (15/61)
भावार्थ- हे अर्जुन! शरीररूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

115. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।(18/62)
भावार्थ- हे भारत! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा।

116. सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)
भावार्थ- सम्पूर्ण धर्मो को अर्थात् सम्पर्ण कर्तव्य कर्मों को त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, शोक मत कर।

117. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा। (18/73)
भावार्थ- (मेरा) मोह नष्ट हो गया (और) मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है।

118. करिष्ये वचनं तव। (18/73)
आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

119. यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ (18/78)
जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है, ऐसा मेरा मत है।

गीता बिन्दुवार अध्ययन

- ''भगवद्गीता'' किस ग्रन्थ का भाग है? - **महाभारतस्य**
- श्रीमद्भगवद्गीता में कितने अध्याय हैं– **अष्टादश**
- गीता महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?- **भीष्मपर्व में**
- श्रीमद्भागवतस्य पदरत्नावलीटीका केन प्रणीता?- **विजयध्वजेन**
- श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम है- **सांख्ययोग**
- आत्मनः स्वरूपं भगवद्गीतायाः कस्मिन् अध्याये वर्णितम्?- **द्वितीयाध्याये**
- 'सांख्ययोग' इति कस्याध्यायस्य नाम-**द्वितीयस्य**
- 'भगवद्गीतायाः' तृतीयाध्यायस्य नाम किम्- **कर्मयोग**
- श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय का नाम है– **विश्वदर्शनयोग**
- गीता के अनुसार 'कर्मयोगी' को कर्म क्यों करना चाहिए- **लोकसंग्रह के लिए**
- गीतानुसारेण ''स्थितधीः.....उच्यते'' इत्यत्र रिक्तस्थानं पूरयतु - **मुनिः**
- ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः'' पंक्तिरियं कमुद्दिश्य उदीरितः - **आत्मानम्**
- 'प्रस्थानत्रयी' में किसकी गणना होती है? - **गीता की**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में अर्जुन को कौन उपदेश देता है?- **कृष्ण**
- 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा' इति कः कम् अपृच्छत्- **अर्जुनः कृष्णम् अपृच्छत्**
- क्रोधाद् भवति - **सम्मोहः**
- 'योगः कर्मसु कौशलम्' यह वाक्य है- **भगवद्गीता में**
- 'कर्मफलभोक्ता' कः - **जीवः**
- 'भगवद्गीतायां' कः शिष्यः वर्तते-- **अर्जुनः**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार निष्कामकर्म का अर्थ है- **अनासक्त होकर कर्म करना**
- गीता का स्वधर्म सिद्धान्त है - **कर्मसिद्धान्त**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार मनुष्य का अधिकार है- **कर्म करने पर**
- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बन्ध रखता है? -**सांख्यदर्शन से**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा किससे श्रेष्ठ है? **बुद्धि से**
- ''भक्ति से भगवान् की आराधना ही परम धर्म है'' यह वाक्य सम्बन्धित है - **गीतातात्पर्ये**
- 'भगवद्गीता' के द्वितीय अध्याय में योग का लक्षण है- - **कार्य में कुशलता**
- ज्ञान और कर्म से युक्त है - **गीता**
- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' श्लोकांश का आशय है- **तुम्हारा अधिकार (केवल) कर्म करने में ही है।**
- ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अस्य श्लोकांशस्य प्रवक्ता-**श्रीकृष्णः**
- ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''–इति केनोक्तम् **श्रीकृष्णः**
- ''स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते'' स्थितप्रज्ञः कः- **य आत्मन्येवात्मना तुष्टः**
- भगवद्गीतानुसारेण स्थितप्रज्ञः कः उच्यते? - **निष्कामकर्मयोगी**
- एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि ......। पूरयत - **मधूसूदन**
- कः पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखम्– **वृकोदरः**
- 'कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितं' इति वचनं कस्य? **कृष्णस्य**
- व्यवसायात्मिका बुद्धिः कुत्र न विधीयते - **समाधौ**
- दूरेण ह्यवरं कर्म-कस्मात्– **बुद्धियोगात्**
- कृष्णेन वर्णितः ऊर्ध्वमूलत्वादिलक्षणःअश्वत्थो वृक्षः केन शस्त्रेण छेदनीयो भवन्ति?- **वैराग्यरूपेण**
- ''अन्तवन्त इमे देहाः'' का तात्पर्य है कि - **ये शरीर नाशवान् है।**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में माया का कौन-सा गुण नहीं है? **असती**
- गीता में मूल प्रकृति के प्रकार हैं- **आठ**
- श्रीमद्भगवद्गीता में भीम के शंख का नाम है - **पौण्ड्र**
- ''तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं'' यह निम्न में से किस ग्रन्थ में कहा गया है?- **गीता में**
- गुडाकेश कौन कहा जाता है? - **अर्जुनः**
- ''योगस्थः कुरु कर्माणि'' श्लोकांशे वर्णितम्- **अनासक्ततया कर्म**
- सम्मोहस्य कारणं किम्? - **क्रोधः**

- भगवद्गीतायां भक्तियोगः - **द्वादशः**
- 'समत्वं योग उच्यते' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?-**श्रीमद्भगवद्गीतायाः**
- श्रीमद्भगवद्गीतायाः 'विश्वरूपदर्शनयोगः' अस्ति– **एकादशेऽध्याये**
- श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अर्जुनं प्रति .. उपदेशः वर्तते- **श्रीकृष्णस्य**
- ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
  न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।''
  प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से लिया गया है? - **श्रीमद्भगवद्गीता**
- ''मा कर्मफलहेतुर्भूः'' उक्ति है - **भगवद्गीता**
- 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' - **भगवद्गीतायाः**
- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' यह उक्ति किस ग्रन्थ की है- **गीता की**
- 'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा' इति कुत्र उक्तम्? - **गीतायाम्**
- ''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः'' श्लोकांश श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से सम्बद्ध है - **अष्टादश**
- ''स्वधर्मे निधनं श्रेयः'' इत्युक्तिः कतमेऽध्याये वर्तते? - **तृतीये**
- ''सर्वधर्मान् परित्यज्य'' यह कहाँ की उक्ति है?- **गीता की**
- ''मामेकं शरणं व्रज'' सूक्ति है - **गीता की**
- ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' पंक्तिः वर्तते- **श्रीमद्भगवद्गीतायाम्**
- ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' इति वाक्यं कस्मिन् अध्याये वर्तते?**नवमे**
- ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'' कस्मिन् अध्याये वर्तते?**चतुर्थे**
- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' पंक्ति ली गई है - **श्रीमद्भगवद्गीता से**
- ''वेदानां सामवेदोऽस्मि''-इस श्लोक वाला ग्रन्थ है -**गीता में**
- 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' इति सूक्तिः अस्ति - **श्रीमद्भगवद्गीतायाः**
- ''सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः'' इत्युक्तिः वर्तते - **श्रीमद्भगवद्गीतायाम्**
- 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति' किस ग्रन्थ का सन्दर्भ है– **गीता**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' इति ग्रन्थस्य उपरि कस्य टीका (व्याख्या) नास्ति– - **जवाहरलाल नेहरू**
- 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' यह वचन किस ग्रन्थ का है– - **गीता**
- भगवद्गीता को अध्यायों के अन्त मे किस शास्त्र के नाम से जाना जाता है। - **योगशास्त्र**
- स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं गीतायाः कस्मिन्नध्याये कृतमस्ति-**द्वितीये**
- भागवतटीकायाः टीका अतीव प्रसिद्धाऽस्ति - **श्रीधरीटीका**
- नलोपाख्यानं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते- **अरण्यपर्वणि**
- राजधर्मानुशासनं महाभारते कस्मिन् पर्वणि अस्ति- **शान्तिपर्वणि**
- श्रीमद्भगवद्गीतानुसारेण अव्यवसायिनां बुद्धयः कीदृश्यः भवन्ति- **बहुशाखाः अनन्ताश्च**

4.3 बुद्धचरितम्

महाकवि अश्वघोष का परिचय

- **नाम-** अश्वघोष
- **उपाधि-** आचार्य, भदन्त, महावादी, महावक्ता, महाकवि।
- **माता का नाम-** सुवर्णाक्षी।
- **जन्मस्थान-** साकेत (अयोध्या) उत्तर-प्रदेश।
- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसवी
- **गुरु-** पुण्ययश।
- कहीं-कहीं पर 'पार्श्व' को इनका गुरु माना जाता है।
- **जाति-** ब्राह्मण।
- **धर्मावलम्बी-** बौद्ध (पूर्व में शैव)
- **दीक्षा-** हीनयान सम्प्रदाय में
- **आश्रयदाता-** सम्राट् कनिष्क
- कनिष्क, अश्वघोष के शिष्य भी थे।
- **जीवनकाल-** अस्सी (८०) वर्ष।
- अश्वघोष, कश्मीर में सम्पन्न 'चतुर्थ बौद्ध संगीति' के उपाध्यक्ष थे।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, उपजाति।
- **रीति-** वैदर्भी
- **रचनाएँ-** चार कृतियाँ ही प्रामाणिक हैं-

1. **बुद्धचरित-** (महाकाव्य,28सर्ग,संस्कृत में अधूरा ही प्राप्त)
2. **सौन्दरनन्द-** (महाकाव्य,18सर्ग,पूर्णतः संस्कृत में उपलब्ध)
3. **शारिपुत्रप्रकरण-** (रूपक,9अङ्क,अंशतः प्राप्त)
4. **राष्ट्रपालनाटक-** (गेय नाटक, चीनी भाषा में)

- **निवास स्थान-** पुरुषपुर (पेशावर)
- **प्रिय अलङ्कार-** उपमा

बुद्धचरितम् का परिचय

- **लेखक-** अश्वघोष
- **काव्यविधा-** महाकाव्य
- **विभाजन-** 28 सर्गों में
- **उपजीव्य-** ललितविस्तर/लङ्कावतारसूत्र नामक बौद्धग्रन्थ
- **श्लोक संख्या-** 2137
- **नोट-** यह श्लोक संख्या, बुद्धचरितम् के अनुवादक पं० रामचन्द्रदास शास्त्री जी द्वारा लिखित टीका से दिया गया है। कहीं-कहीं पर 2148 श्लोक भी मिलता है।

सर्ग	श्लोक संख्या	सर्ग का नाम
प्रथम	89	भगवत्प्रसूति
द्वितीय	56	अन्तःपुर विहार
तृतीय	65	संवेगोत्पत्ति
चतुर्थ	103	स्त्री-निवारण
पञ्चम	87	अभिनिष्क्रमण
षष्ठ	68	छन्दक निवर्तन
सप्तम	58	तपोवन प्रवेश
अष्टम	87	अन्तःपुर विलाप
नवम	82	कुमार अन्वेषण
दशम	41	बिम्बसार का आगमन
एकादश	73	कामनिन्दा
द्वादश	120	अराड-दर्शन
त्रयोदश	73	मारविजय
चतुर्दश	112	बुद्धत्व प्राप्ति
पञ्चदश	67	बुद्ध का काशी गमन
षोडश	95	शिष्यों को दीक्षादान
सप्तदश	43	शिष्यों की प्रव्रज्या
अष्टादश	85	अनाथपिण्डों की दीक्षा
एकोनविंशति	49	पितापुत्र समागम
विंशति	66	जेतवन स्वीकृति
एकविंशति	71	प्रव्रज्या स्रोत
द्वाविंशति	55	आम्रपाली के उपवन में
त्रयोविंशति	75	आयुनिर्णय
चतुर्विंशति	64	लिच्छवियों पर अनुकम्पा
पञ्चविंशति	81	निर्वाण मार्ग में
षड्विंशति	110	महापरिनिर्वाण
सप्तविंशति	84	निर्वाण प्रशंसा
अष्टाविंशति	78	धातु विभाजन
	कुल श्लोक-	**2137**

- **रीति-** वैदर्भी
- **गुण-** प्रसाद एवं माधुर्य।
- **छन्द-** उपजाति, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, शिखरिणी आदि।
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ अनुप्रास, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, वक्रोक्ति तथा एकावली।
- **मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस-** शान्तरस
- **गौण/अङ्गरस-** वात्सल्य, करुण, अद्भुत।
- **नायक-** भगवान् बुद्ध/गौतम (सिद्धार्थ)
- बुद्धचरित का संस्कृत अंश केवल 14वें सर्ग तक ही प्राप्त होता है।

- **बुद्धचरित का मङ्गलाचरण**

इक्ष्वाकुवंशार्णवसम्प्रभूतः
प्रेमाकरश्चन्द्र इव प्रजानाम्।
शाक्येषु साकल्यगुणाधिवासः
शुद्धोदनाख्यो नृपतिर्बभूव।। 1/1

अनुवाद- इक्ष्वाकु वंश रूपी सागर में उत्पन्न, प्रजाजनों के लिए चन्द्रमा के समान, प्रेम की राशिभूत, सम्पूर्ण गुणों के निवासस्थान शुद्धोदन नामक राजा शाक्यवंश में हुए।

विशेष- जम्बूद्वीप के समस्त राजकुलों में शाक्यवंश ही दोषरहित है। अतः **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण** है।

- इन्द्रवज्रा छन्द रूपक अलङ्कार

- **बुद्धचरितम् के कथानक का सारांश**

प्रथम सर्ग

- इक्ष्वाकु वंश में शाक्याधिपति **शुद्धोदन** नामक राजा हुए और उनकी पत्नी का नाम **माया** था।
- एक दिन रानी को स्वप्न में **सफेद हाथी** दिखाई देता है तथा रानी के गर्भिणी होने की सूचना मिलती है।
- लुम्बिनी नामक वन में एक विलक्षण बालक का जन्म होता है, पृथ्वी काँप उठती है, आकाश से कमलों की वर्षा होती है।
- ब्राह्मणों द्वारा राजा से बताया जाता है कि यह बालक कुलदीपक एवं शुभ का सूचक है।
- महर्षि असित ने राजा के पास आकर कुमार को देखा तथा राजा को भविष्य बताकर वायुमार्ग में विलीन हो गये।
- राजा शुद्धोदन ने पुत्रजन्म से प्रसन्न होकर एक लाख गायों का दान किया।
- राजा के दान से मानों कपिलवस्तु नगर, कुबेर का नगर बन गया।

द्वितीय सर्ग

- जितेन्द्रिय पुत्र के जन्म से राजा शुद्धोदन धन-धान्य, हाथी, घोड़ों से वृद्धि को प्राप्त हुए।
- इसी कारण बालक का नाम 'सर्वार्थसिद्ध' रखा गया।
- हर्षातिरेक के कारण रानी माया का स्वर्गवास हो गया।
- उचित समय पर बालक का उपनयनसंस्कार तथा विद्याध्ययन कराकर 'यशोधरा' से विवाह कराया गया।
- तत्पश्चात् 'यशोधरा' ने 'राहुल' नाम के पुत्र को जन्म दिया।

तृतीय सर्ग

- राजा शुद्धोदन ने सभी भोगादि की व्यवस्था राजमहल में

कराकर कुमार के बाहर जाने पर रोक लगा दिया।

- कुमार ने बाह्योद्यान की सुन्दरता देखने की इच्छा व्यक्त की, राजा के विशेष व्यवस्था से मार्ग पर निकलते समय अनेक सुन्दरियों ने अटारियों और गवाक्षों से कुमार के दर्शन किये।
- मार्ग में कुमार को एक रोगी, वृद्ध तथा शव का दर्शन होता है, तब वे महल को लौटना चाहते हैं, लेकिन सारथी उन्हें अत्यन्त रमणीय 'पद्मषण्ड' नामक वन में ले जाता है।

चतुर्थ सर्ग

- उद्यान में अनेक सुन्दरियाँ कुमार को घेर कर बैठ जाती हैं, तब 'उदायी' नामक शास्त्रज्ञ, नारी के रूप-सौन्दर्य एवं काम-कला का वर्णन करता है।
- कुमार के प्रभावित न होने पर 'उदायी' कुमार को स्त्री-सेवन के लिए उचित सलाह देता है और ऋषियों द्वारा सेवित काम का पौराणिक वृत्तान्त सुनाता है।
- कुमार गम्भीर स्वर में उदायी की बातों का सतर्क खण्डन करते हैं और अपने मन को सांसारिक दुःखों की निवृत्ति हेतु एकाग्र करते हैं।

पञ्चम सर्ग

- कुमार शान्ति पाने के लिए राजाज्ञा से मन्त्रिपुत्रों के साथ वन में जाते हैं।
- जुती हुई पृथ्वी तथा मृत कीड़ों को देखकर कुमार संसार की गति पर सम्यक् विचार करते हुए शोक में डूब जाते हैं।
- वन से आकर कुमार ने संन्यास धारण करने के लिए राजा से आज्ञा मांगी जिससे राजा अत्यन्त दुःखित होते हैं।
- राजा का सभी प्रयास असफल रहा, कुमार ने छन्दक नामक सेवक को जगाकर, कंथक घोड़े पर सवार होकर पिता, पुत्र, पत्नी तथा राजलक्ष्मी को छोड़कर रात्रि में ही नगर से निकल जाते हैं।
- नगर की ओर देखकर उन्होंने कहा -

'जननमरणयोरदृष्टपारो न पुरमहं कपिलाह्वयं प्रवेष्टा।'

षष्ठ सर्ग

- नगर से निकलकर, सूर्योदय होने पर कुमार भार्गव ऋषि के आश्रम पर उतरते हैं और छन्दक को घोड़ा लेकर वहीं से वापस जाने को कहते हैं।
- छन्दक, राजा एवं विमाता गौतमी तथा यशोधरा के भय से अकेले जाने को तैयार नहीं होता और कुमार को वापस ले जाने के लिए हाथ जोड़कर विनती करता है।
- कुमार उसे समझाकर, तलवार से अपने बाल और मुकुट काटकर फेंक देते हैं और कषाय वस्त्र धारण करके आश्रम में प्रवेश करते हैं।
- छन्दक रोता हुआ, दुःखी घोड़े के साथ नगर में वापस आ जाता है।

सप्तम सर्ग

- आश्रम में कुमार को 'तपस्या का प्रयोजन स्वर्गप्राप्ति' जानकर अंसतोष हुआ।
- संध्यावन्दन, हवन, भजन इत्यादि को छोड़कर वे मोक्षप्राप्ति के लिए आश्रम से निकल गये।
- रास्ते में किसी दिव्यरूप वाले ब्राह्मण ने उन्हें अराड ऋषि से सम्पर्क करने और लक्ष्य प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया।

अष्टम सर्ग

- कपिलवस्तु की स्त्रियाँ विलाप करती हैं और छन्दक को ही कोसती हैं।
- यशोधरा की उलाहना सुनकर छन्दक, कुमार से जुड़ी समस्त घटनाओं का वर्णन करता है।
- राजा के शोक को देखकर मन्त्री, असित ऋषि के वचन का स्मरण दिलाकर धैर्य धारण करवाता है।
- तत्पश्चात् मन्त्री, पुरोहित के साथ कुमार को खोजने जाता है।

नवम सर्ग

- कुमार को खोजते हुए मन्त्री और पुरोहित भार्गव आश्रम में पहुँचते हैं।
- वहाँ सूचना पाकर वे अराड ऋषि के आश्रम की ओर जाते हैं, मार्ग में तेजपुंज कुमार को देखकर वहीं बैठते हैं।
- मन्त्री, राजा की आज्ञा से कुमार को लौटने के लिए प्रेरित करता है, किन्तु कुमार अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहते हैं।
- कुमार कहते हैं कि मैं अग्नि में प्रविष्ट हो जाऊँगा लेकिन वापस घर नहीं जाऊँगा।
- मन्त्री और पुरोहित निराश होकर वापस लौट आते हैं।

दशम सर्ग

- राजकुमार और बिम्बसार का मिलन होता है और बिम्बसार कुमार को भिक्षापात्र त्यागने तथा राज्यभोग करने का उपदेश देते हैं।
- गङ्गा पार करके वे मगधराज बिम्बसार से मिलने जाते हैं। राजा भी कुमार को भोग करने एवं त्रिवर्ग के लिए यत्न करने के लिए कहते हैं।
- कुमार, कैलाश पर्वत की भाँति अडिग रहे और मगधराज की बातों से विचलित नहीं हुए।

एकादश सर्ग

- बिम्बसार के भोग सम्बन्धी बातों का उत्तर देते हुए कुमार सांसारिक कामनाओं की निन्दा करते हैं।

- कुमार कहते हैं, प्राणी की भोग से कभी तृप्ति नहीं होती। नहुष और पुरूरवा आदि कभी तृप्त नहीं हुए।
- त्रिवर्ग नाशवान् है, सन्तुष्टिदायक नहीं।
- अन्ततः राजा बिम्बसार हाथ जोड़कर कुमार की अभीष्टसिद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

द्वादश सर्ग

- राजकुमार, अराड ऋषि के आश्रम में जाते हैं तथा अराड ऋषि उनका स्वागत करते हैं।
- कुमार के आग्रह पर ऋषि अपने दर्शन से अवगत कराते हैं, लेकिन कुमार को सन्तुष्टि नहीं मिलती।
- कुमार ने ऋषि का आश्रम छोड़कर, नैरञ्जना नदी के तट पर छः वर्षों तक तपस्या किया।
- वहीं पर कुमार को क्षीण देखकर नन्दबाला ने उनको पायस खिलाया तथा कुमार निश्चय के साथ अश्वत्थ वृक्ष के जड़ में पर्यङ्कासन बाँधकर बैठ गये।

त्रयोदश सर्ग

- कामदेव आदि कुमार की तपस्या में विघ्न डालते हैं, कुमार और कामदेव का युद्ध होता है जिसमें काम पराजित होता है।
- मार उनके तप में अनेक प्रकार की बाँधाओं को भेजा किन्तु कुमार अडिग रहे।
- मार भी पराजित होता है तथा पुष्पवर्षा होती है।

चतुर्दश सर्ग

- अनेक बाँधाओं से पार होकर, धैर्यपूर्वक, परमतत्त्व जानने की इच्छा से ध्याननिपुण कुमार को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई।
- इस परम दिव्य ज्ञान को प्राप्त करके वे मुनि बुद्ध हो गये।
- अंत में देवता से अनेक भिक्षापात्र प्राप्त होते हैं।
- बुद्ध पाँच भिक्षुओं का स्मरण करते हैं और काशी के लिए प्रस्थान करते हैं।

नोट- अश्वघोष रचित संस्कृत बुद्धचरित यहीं तक प्राप्त होता है। सम्पूर्ण ग्रन्थ चीनी एवं तिब्बती भाषा में अनूदित है। जिसके आधार पर ई० एच० जानस्टन ने बुद्धचरित को अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशित कराया। जबलपुर के पं० रामचन्द्रदास ने इसी अंग्रेजी में अनूदित बुद्धचरित को संस्कृत में रूपान्तरित किया है। अतः महाकाव्य की पूर्णता एवं कथानक की अखण्डता के लिए शेष सर्गों का संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक है।

पञ्चदश सर्ग

- मार्ग में एक भिक्षु के आग्रह पर वे अपना नाम, गुरु की महिमा, ज्ञान आदि को बताते हैं।
- गंगा और वरुणा नदियों से युक्त वे काशी नगरी पहुँचे वहाँ महानाम, अश्वजित्, कौण्डिन्य आदि मुनियों के आश्रम को देखा और वार्तालाप किये।
- उन्हीं मुनियों को ज्ञान के माध्यम से सन्तुष्ट करने पर देवता भी प्रसन्न हुए और पुष्प वर्षा करने लगे।

षोडश सर्ग

- सर्वप्रथम बुद्ध ने अश्वजित् नामक संयमी मुनि को दीक्षित किया तथा 54 अन्य लोगों को दीक्षित किया।
- शिष्यों को भ्रमण का आदेश देकर बुद्ध स्वयं 'गया' चले गये वहाँ से मगध गये और बिम्बसार से मिले।
- बिम्बसार ने बुद्ध द्वारा दिये गये धर्मदृष्टि को प्राप्त किया तथा मगधनिवासी भी मुनि दर्शन से कृतकृत्य हुए।

सप्तदश सर्ग

- बिम्बसार के निवेदन पर बुद्ध, वेणुवन-विहार में रहने लगे।
- वहाँ रहते हुए बुद्ध ने अनेक लोगों को दीक्षा दी और उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया।
- शील, समाधि तथा प्रज्ञा से युक्त अपने तीन शिष्यों से युक्त वे बुद्ध तीनों लोकों में सुशोभित हुए।

अष्टादश सर्ग

- सूर्य वंश में उत्पन्न कोशल देश का राजा सुदत्त बुद्ध के पास जाता है और दीक्षा प्राप्त करता है।
- दीक्षा से अभिभूत तथा दानशील होने के कारण वह अपने नगर श्रावस्ती में बौद्ध विहार बनवाने की आज्ञा लेता है।
- श्रावस्ती के जेतवन नामक स्थान पर राजा सुदत्त बौद्ध मठ बनवाते हैं।

नवदश सर्ग

- ज्ञान के द्वारा अनेक शास्त्रज्ञ विद्वानों को जीतकर बुद्ध अपने पैतृक नगर कपिलवस्तु को गये।
- वहाँ पर पिता शुद्धोदन ने 'न' उनको 'मुनि' कह पाये और न ही 'पुत्र'।
- उन्होंने अपने पिता से कहा कि आप शोक न करें। पुत्रानन्द का त्यागकर, धर्मानन्द का अनुभव करें।
- अनेक राजाओं और राजकुमार ने बुद्ध को देखकर घर परिवार त्याग दिये।
- राजा शुद्धोदन भी राज्य को भाई के अधीन करके स्वयं राजर्षियों की भाँति जीने लगे।
- बुद्ध भिक्षा लेकर न्यग्रोध वन को चले गये।

विंशति सर्ग

- वहाँ से जाकर बुद्ध, राजा सुदत्त के नगर श्रावस्ती के जेतवन मठ में पहुँचे, जहाँ राजा ने उनका स्वागत किया।

- राज्य को नश्वर समझकर राजा सुदत्त भी श्रावस्ती के जेतवन में ही निवास करने लगे।
- बुद्ध अपनी माता को दीक्षा देने स्वर्ग में जाते हैं, तथा भिक्षा लेकर पुनः पृथ्वी पर आते हैं।

एकविंशति सर्ग

- पृथ्वी पर आकर बुद्ध ने ज्योतिष्क, जीवक, शूर, अजातशत्रु आदि को दीक्षा दिया।
- तत्पश्चात् उन्होंने अनेक यक्षों, राक्षसों, ब्राह्मणों, सेठों, ऋषियों सर्पों को सुगत धर्म में दीक्षित किया।
- बुद्ध की उन्नति देखकर देवदत्त क्रुद्ध हुआ और वह अनेक कुकृत्य करने लगा। अन्ततः श्रेष्ठ जनों से निन्दित होकर अधोलोक में जा गिरा।

द्वाविंशति सर्ग

- मगधराज के मन्त्री 'वर्षकार' ने एक किला बनवाया तथा उसके द्वार का नाम गौतमद्वार रखा।
- जिस घाट से वे गंगा पार किये उसका नाम 'गौतम तीर्थ' से प्रसिद्ध हुआ।
- वैशाली नगर जाकर बुद्ध ने आम्रपाली के उपवन में कुछ समय बिताया।
- आम्रपाली, नाम की वेश्या बुद्ध के पास आती है और दीक्षा प्राप्त करके अपनी वृत्ति को छोड़ देती है।
- बुद्ध भी आम्रपाली के कृत्य से अत्यन्त खुश होते हैं।

त्रयोविंशति सर्ग

- आम्रपाली के घर जाने पर समस्त लिच्छवी (जाति विशेष) बुद्ध के दर्शनार्थ आते हैं।
- सभी लिच्छवियों को उपदेश देकर वे मर्कट नामक सरोवर पर बैठते है।
- वहाँ कामदेव के आग्रह पर मुनि ने निर्वाण के लिए अपनी शरीर से आयु को खींचकर चित्त में समाधिस्थ किये और बोले कि मैं भवबन्धन देने वाली आयु से निकल चुका हूँ।

चतुर्विंशति सर्ग

- बुद्ध 'आनन्द' नामक शिष्य से बताते हैं कि अब उनकी आयु सिर्फ तीन महीने ही शेष है।
- आनन्द उदास होकर रोता है तब उन मुनि ने शरीर को नाशवान् बताया उसी समय बहुत से वैशाली नगर के लिच्छवी वहाँ इकट्ठा हुए और अपने जीवन को कृतार्थ किया।
- अन्त में लिच्छवियों को अपने घर जाने के लिए कहकर बुद्ध ने उत्तर की दिशा में प्रस्थान किया।

पञ्चविंशति सर्ग

- मुनि के निर्वाण के लिए जाने पर वैशाली नगरी अन्धकारयुक्त तथा शोभाहीन हो गई।
- उस दिन वहाँ के लोगों ने न तो भोजन पकाया और न ही खाया, पूरा दिन शोक में ही बीत गया।
- बुद्ध वहाँ से भोगवती नगरी में गये, वहाँ उन्होंने अनुचरों को सौगत(बौद्धधर्म) के बारे में बताया।
- बुद्ध वहाँ से पापापुरी गये वहाँ मल्लों ने उनका स्वागत किया, चुन्द के घर भोजन करके वे कुशीनगर चले गये।
- हिरण्यवती नदी में स्नान करके शालवृक्षों के बीच बने शय्या पर निर्वाण हेतु सोये।
- मल्ल समूह उनका दर्शन करके अपने घर आ गया।

षड्विंशति सर्ग

- तत्पश्चात् सुभद्र नामक एक त्रिदण्डी, मुनि के दर्शनार्थ जाता है। तथा पूर्वमत को त्यागकर बौद्धमत अपनाता है।
- बुद्ध आदेशानुसार वह त्रिदण्डी मुनि वहीं शरीर को त्यागकर निर्वाण प्राप्त करता है।
- इसी बीच अनिरुद्ध नामक शिष्य बुद्ध के निर्वाण से अत्यन्त दुखित होता है।
- इसप्रकार सभी शिष्यों को शोकमुक्ति के विषय में बताकर महात्मा बुद्ध क्रमशः प्रथम,द्वितीय, तृतीय और अन्तिम ध्यान में प्रविष्ट हुए।
- इस प्रकार वे सदा के लिए शान्त हो गये तथा सम्पूर्ण संसार मानो शोभारहित हो गया।

सप्तविंशति सर्ग

- निर्वाण के पश्चात् देवताओं ने अपने विमानों से मुख निकालकर आपस में बुद्ध के जीवनकाल की प्रशंसा की।
- मल्लों ने शव को कन्धों पर रखकर, हिरण्यवती नदी पार करके मुकुट चैत्य के नीचे चिता को सजाया।
- तीन बार तक अग्नि न जलने पर काश्यप नामक शिष्य आया तब मुनि को प्रणाम करने पर ही चिता स्वयं जल उठी।
- मुनि का अस्थिमात्र शेष बचा जिससे लोगों ने मुनि की अस्थि का पूजाभवन बनवाया।

अष्टाविंशति सर्ग

- कुछ समय बाद मल्लों से पूजित, उस अस्थि को लेने के लिए पड़ोसी सात राजाओं के दूत वहाँ आये किन्तु मल्लों ने अस्थि देने से इनकार कर दिया।
- राजाओं को सूचना मिलने पर वे क्रुद्ध हुए और युद्ध के लिए उद्यत हुए,मल्ल भी युद्ध के लिए तैयार हुए।
- इसी बीच द्रोण नामक ब्राह्मण ने बुद्ध मार्ग पर चलकर युद्ध

को रोका तथा मल्लों को भी समझाया।

- ब्राह्मण के प्रयास से मल्लों ने अस्थि का आठ भाग किया तथा सात भाग राजाओं को देकर आठवाँ अपने पास रखा।
- द्रोण के हिस्से में केवल 'घड़ा' तथा 'पिसल' नामक भक्त को भस्म ही मिला।
- इस प्रकार पृथ्वी पर धातुगर्भित आठ, घटगर्भित एक तथा भस्मगर्भित एक, कुल दस स्तूप बने।
- बाद में सम्राट् अशोक के समय में हजारों स्तूप बनाये गये।

बुद्धचरित के कुछ प्रमुख पात्र

- **शुद्धोदन-** बुद्ध के पिता
- **माया-** बुद्ध की माता
- **यशोधरा-** बुद्ध की पत्नी
- **राहुल-** बुद्ध का पुत्र
- **असित-** एक मुनि/भविष्यवेत्ता
- **छन्दक-** सेवक
- **कन्थक-** बुद्ध का घोड़ा
- **अराड-** एक ऋषि (जिन्होंने बुद्ध को सांख्य की शिक्षा दी थी)
- **सर्वार्थसिद्ध-** बुद्ध के बचपन का नाम

पाठ्यक्रम में निर्धारित बुद्धचरित का तृतीय सर्ग

ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि पुंस्कोकिलोन्नादितपादपानि।
शुश्राव पद्माकरमण्डितानि गीतैर्निबद्धानि स काननानि॥ 3/1।।

- **अनुवाद-** तब किसी समय उस सिद्धार्थ ने वन के सम्बन्ध में सुना कि वन कोमल तृणों से सम्पन्न है और वहाँ के वृक्ष कोयलों की ध्वनि से गुंजायमान हैं तथा कमलों के तालाबों से युक्त एवं सुशोभित गीत से निबद्ध हैं। 1

श्रुत्वा ततःस्त्रीजनवल्लभानां मनोज्ञभावं पुरकाननानाम्।
बहिः प्रयाणाय चकार बुद्धिम् अन्तर्गृहे नाग इवावरुद्धः॥

3/2।।

अनुवाद- तब स्त्रियों के प्रिय नगर के उद्यानों की सुन्दरता सुनकर घर के अन्दर बँधे हुए हाथी के समान राजकुमार ने बाहर जाने की इच्छा की। **विशेष-** उपमा अलङ्कार

ततो नृपस्तस्य निशम्य भावं पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य।
स्नेहस्य लक्ष्म्या वयसश्च योग्यताम् आज्ञापयामास विहारयात्राम्॥

3/3॥

अनुवाद- इसके बाद राजा ने अपने पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ के मनोगत भाव को जानकर प्रेम, लक्ष्मी एवं अवस्था के योग्य वन-विहार यात्रा की आज्ञा दे दिया।

निवर्तयामास च राजमार्गे संपातमार्तस्य पृथग्जनस्य।
मा भूत्कुमारः सुकुमारचित्तः संविग्नचेता इति मन्यमानः॥

3/4॥

अनुवाद- कोमल चित्त वाले के मन में संवेग (वैराग्य) न हो जाये, इस विचार से राजा शुद्धोदन ने राजमार्ग में रोगादि से पीड़ित अन्य लोगों का आवागमन रोक दिया।

प्रत्यङ्गहीनान्विकलेन्द्रियांश्च जीर्णातुरादीन् कृपणांश्च दिक्षु।
ततः समुत्सार्य परेण साम्ना शोभां परां राजपथस्य चक्रुः॥

3/5॥

अनुवाद- तब राजा की आज्ञानुसार, कर्मचारियों ने राजपथ से अङ्गहीनों, इन्द्रियहीनों, वृद्धों, रोगियों एवं गरीब लोगों को परम शान्ति से हटाकर मार्ग को अनेक प्रकार से सजाया।

ततः कृते श्रीमति राजमार्गे श्रीमान्विनीतानुचरः कुमारः।
प्रासादपृष्ठादवतीर्य काले कृताभ्यनुज्ञो नृपमभ्यगच्छत्॥

3/6॥

अनुवाद- राज-पथ के सुसज्जित हो जाने पर राजकुमार, राजा की आज्ञा पाकर सुन्दर एवं विनीत सेवकों के साथ राजमहल से उतरकर उसी समय राजा के निकट गया।

अथो नरेन्द्रः सुतमागताश्रुः शिरस्युपाघ्राय चिरं निरीक्ष्य।
गच्छेति चाज्ञापयति स्म वाचा स्नेहान्न चैनं मनसा मुमोच॥

3/7॥

अनुवाद- इसके बाद प्रेमाश्रु बहाते हुए, राजा शुद्धोदन ने कुमार के सिर को चूमकर चिरकाल तक देखकर 'जाओ' ऐसे वचन से आज्ञा दे दिया किन्तु प्रेमवश उसको मन से नहीं छोड़ा।

ततः स जाम्बूनदभाण्डभृद्भिर्युक्तं चतुर्भिर्निभृतैस्तुरङ्गैः।
अक्लीवविद्वच्छुचिरश्मिधारं हिरण्मयं स्यन्दनमारुरोह॥

3/8॥

अनुवाद- तब वह कुमार सोने के आभूषणों से अलङ्कृत, सुशिक्षित चार अश्वों से संयुक्त सुवर्णमय रथ पर सवार हुआ जिसका सारथि वीर, कुशल तथा अनुरक्त था।

ततः प्रकीर्णोज्ज्वलपुष्पजालं विषक्तमाल्यं प्रचलत्पताकम्।
मार्गं प्रपेदे सदृशानुयात्रः चन्द्रः सनक्षत्र इवान्तरिक्षम्॥

3/9॥

अनुवाद- तब आकाश में नक्षत्रों सहित चन्द्रमा के समान वह राजकुमार योग्य सहचरों के साथ उस मार्ग में आया जहाँ श्वेत पुष्पों का जाल-सा बिछा हुआ था, मालाएँ लटक रहीं थी एवं पताकाएँ फहरा रहीं थीं।

विशेष- उपमा अलङ्कार

कौतूहलात्स्फीततरैश्च नेत्रैः नीलोत्पलार्धैरिव कीर्यमाणम्।
शनैः शनै राजपथं जगाहे पौरैः समन्तादभिवीक्ष्यमाणः॥
3/10॥

अनुवाद- उत्कण्ठावश अत्यन्त विकसित अर्धनील कमल के समान पुरवासियों के नेत्र मानों बिछे हुए हों, ऐसे राजपथ पर, नगरवासियों द्वारा चारों ओर से देखे गये कुमार ने धीरे-धीरे प्रवेश किया।

विशेष- उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

उपर्युक्त सभी पद्यों में उपजाति छन्द है।

➢ **प्रमुख सूक्तियाँ**

1. सत्वानिभं दोहदमामनन्ति। 1/6

भावार्थ- माया, शुद्धोदन से कहती हैं, ''गर्भ के अनुसार ही दोहद (गर्भकाल इच्छा) होती है, ऐसा माना जाता है।''

2. मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय। 1/20

भावार्थ- यह बुद्ध के विषय में कहा गया है कि-
''दुःख से पीड़ित विश्व के हित के लिए उनका जन्म हुआ है। ''

3. भूपेषु राजेत यथा प्रकाशो ग्रहेषु सर्वेषु रवेर्विभाति। 1/35

भावार्थ- बुद्ध के लिए ही कहा गया है-
''यह सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर सब राजाओं के ऊपर उसी तरह शोभित होगा जिस प्रकार समस्त ग्रहों के ऊपर सूर्य का प्रकाश।''

4.गुणा हि सर्वा प्रभवन्ति हेतोर्निदर्शनान्यत्र च नो निबोध।
1/40

भावार्थ- ''सब प्रकार के गुण किसी कारण से ही उत्पन्न होते हैं।''

5.उद्यानभूमौ हि कुतो रतिर्मे जराभये चेतसि वर्तमाने।
3/37

➢ **भावार्थ-** सिद्धार्थ, सारथी से कहते हैं कि-
''जरा का भय चित्त में रहते हुए मुझे उद्यान-भूमि में सुख कहाँ से मिलेगा।''

बुद्धचरितम् नाम की सार्थकता

➢ इस महाकाव्य के सम्पूर्ण 28 सर्गों में महात्मा बुद्ध के जीवन-चरित का वर्णन है। इसलिए इस महाकाव्य का नाम 'बुद्धचरितम्' रखा गया है।

➢ बुद्धस्य चरितम् अस्मिन् इति बुद्धचरितम् (बहुव्रीहि समास)।

4.4 स्वप्नवासवदत्तम्

महाकवि भास का परिचय-

➢ **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)

➢ **उपाधि-** धावक

➢ **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।

➢ **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य

➢ **उपासक-** वैष्णवधर्म

➢ **रीति-** वैदर्भी

➢ **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग

➢ **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।

➢ **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।

➢ **प्रिय अलंकार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि

➢ **भास की कृतियाँ**

➢ त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् - 1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम)** से प्रकाशित किया।

➢ कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

➢ **कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण**

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त-परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।
2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।
3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।

4- **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।

5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।

6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।
7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी की पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।
8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।
9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।
10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।
11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।
12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन के वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।
13. **स्वप्नवासवदत्तम्-** इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

स्वप्नवासवदत्तम् का परिचय-

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57
-

अङ्क	**श्लोक संख्या**	**अङ्क**	**श्लोक संख्या**
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग-	**57**

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** वादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक

'स्वप्नवासवदत्तम्' उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कहानी का उत्तरार्द्ध भाग है। पूर्वार्द्ध की घटना 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नामक रूपक में वर्णित है। अतः पूर्व की घटना की जानकारी भी आवश्यक हो जाती है। पूर्व के घटना का सारांश इस प्रकार है- ''वत्सराज उदयन, प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण कर उससे प्रेम विवाह कर लेता है। उदयन, वासवदत्ता की सुन्दरता पर इस प्रकार आसक्त हो जाता है कि वह राज्य से सम्बन्धित प्रमुख कार्यों से भी विमुख हो जाता है। इसी का लाभ उठाकर आरुणि नामक उदयन का शत्रु उसके अधिकांश भूभाग को अधिकृत (कब्जा) कर लेता है। इसी भूभाग को प्राप्त करने के लिये यौगन्धरायण नामक उदयन का मन्त्री लावाणक ग्राम में अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र रचता है।'' अब इसके बाद की घटना स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित है।

प्रथम अङ्क-

- मगध के राजा 'दर्शक' एवं उनकी बहन पद्मावती के सेवकों द्वारा तपोवन के लोगों को जबरदस्ती हटाया जाता है।
- उज्जयिनी की स्त्रियों के वेश में वासवदत्ता तथा मन्त्री यौगन्धरायण वहीं पर जाते हैं।
- कञ्चुकी, राजपुरुषों को रोकता है कि वे अनायास ही वन के निवासियों को परेशान न करें।
- कञ्चुकी द्वारा यौगन्धरायण को पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती, वन के आश्रम में निवास कर रही अपनी माता से मिलने आ रही हैं। इसीलिए वन प्रदेश खाली कराया जा रहा है।
- यौगन्धरायण मन में सोचता है कि यह वही राजकुमारी

पद्मावती हैं जिनके बारे में 'पुष्पक और भद्र' ज्योतिषियों ने बताया था कि "वह उदयन की महारानी बनेगी।"

- राजकुमारी पद्मावती आश्रम में प्रवेश करती हैं और तापसी को प्रणाम करती हैं।
- राजा प्रद्योत का एक सन्देशवाहक आता है।
- पद्मावती आश्रम के तपस्वियों को मनोनुकूल वस्तुओं को माँगने के लिए आमन्त्रित करती हैं।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर उसे पद्मावती के पास धरोहर रूप में रख देते हैं।
- वासवदत्ता सोचती है, मैं अभागिनी हूँ किन्तु आर्य यौगन्धरायण बिना किसी प्रयोजन के मुझे नहीं छोड़ेंगे।
- आश्रम में एक ब्रह्मचारी का प्रवेश होता है और यौगन्धरायण उससे उसका पता तथा उद्देश्य पूँछते हैं।
- ब्रह्मचारी बताता है कि वह वत्सदेश के लावाणक ग्राम में वेद का अध्ययन करता है लेकिन वत्सराज उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर गाँव में आग लग जाने से उनकी पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गयीं। अतः महाराज उदयन अत्यन्त शोकग्रस्त हैं।
- ब्रह्मचारी कहता है कि रुमण्वान् नामक मन्त्री शोक संतप्त होते हुए भी उदयन की दिन रात सेवा करता है।
- इसके बाद ब्रह्मचारी चला जाता है और यौगन्धरायण भी राजकुमारी पद्मावती के आदेश से चला जाता है।

।।प्रथम अङ्क समाप्त।।

द्वितीय अङ्क-

- प्रवेशक के माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती गेंद खेल रही हैं।
- वासवदत्ता द्वारा पद्मावती को 'महासेन की वधू' कहने पर दासी बताती है कि राजकुमारी, वत्सराज उदयन से विवाह करना चाहती हैं।
- धाय द्वारा सूचना मिलती है कि पद्मावती का विवाह वत्सराज उदयन के साथ सुनिश्चित हो गया है।

।।द्वितीय अङ्क समाप्त।।

तृतीय अङ्क-

- राजप्रासाद का अन्तःपुर विवाहोल्लास से व्याप्त है तथा वासवदत्ता अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहती हैं।
- दासी, महारानी के आज्ञानुसार, उच्चकुल में उत्पन्न वासवदत्ता से वरमाला गूँथने के लिए कहती है।
- वासवदत्ता के पूँछने पर दासी कहती है कि दूल्हा धनुष-बाण से रहित साक्षात् कामदेव है।
- वासवदत्ता 'सपत्नीमर्दन' नामक ओषधि माले में नहीं गूँथती हैं।

।।तृतीय अङ्क समाप्त।।

चतुर्थ अङ्क

- विदूषक विवाह के शुभ-अवसर पर अत्यन्त खुश है।
- पद्मावती और वासवदत्ता प्रमदवन में जाकर आपस में वार्तालाप करतीं हैं।
- उदयन और विदूषक भी प्रमदवन में जाते हैं, उदयन कहते हैं कि "जब उज्जयिनी में वासवदत्ता को देखा था तब कामदेव ने एक साथ पाँचों बाणों का प्रहार कर दिया था, अब पद्मावती को देखने पर कामदेव के पास छठा बाण कहाँ से आ गया।"
- पद्मावती और वासवदत्ता माधवीलताकुञ्ज में जाती हैं क्योंकि वे दोनो महाराज उदयन से छिपना चाहती हैं।
- विदूषक के हठपूर्वक पूँछने पर उदयन बताता है कि वासवदत्ता उसको अधिक प्यारी हैं।
- वासवदत्ता को याद करके राजा के नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं लेकिन पद्मावती द्वारा पूँछने पर वे काशपुष्प का पराग (कण) पड़ने का बहाना करते हैं।
- विदूषक, राजा को लेकर मगधराजदर्शक' के पास चला जाता है।

।।चतुर्थ अङ्क समाप्त।।

पञ्चम अङ्क-

- 'प्रवेशक' द्वारा पद्मावती के सिर में दर्द होने की सूचना मिलती है।
- उदयन, पद्मावती को देखने के लिए समुद्रगृह नामक भवन में जाते हैं किन्तु पद्मावती बिस्तर पर नहीं मिलती।
- पद्मावती का इन्तजार करते हुए उदयन उसी बिस्तर पर सो जाते हैं।
- पद्मावती के इच्छानुसार आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता भी समुद्रगृह में जाती हैं।
- वासवदत्ता, बिस्तर पर सोये हुए उदयन को पद्मावती समझकर बगल में लेट जाती है।
- उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को बुलाता है तथा वासवदत्ता उदयन द्वारा देखे जाने के डर से उठकर भागती है जिससे उदयन जाग जाता है।
- उदयन विदूषक को बताता है कि उसने वासवदत्ता को साक्षात् देखा था किन्तु विदूषक द्वारा इसे भ्रान्ति बताकर इसका निराकरण किया जाता है। इसी घटना के कारण इस नाटक का नाम स्वप्नवासवदत्त पड़ा।
- इसके बाद सूचना मिलने पर उदयन अपने सेनापति रुमण्वान् के साथ 'आरुणि' से युद्ध के लिए निकल जाता है।

।।पञ्चम अङ्क समाप्त।।

षष्ठ अङ्क-

- उदयन को सूचना देने के लिए कञ्चुकी, प्रतीहारी से कहता है कि ''उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत के कञ्चुकी 'रभ्य' तथा 'वसुन्धरा' नाम की धाय (जो माननीया अङ्गारवती द्वारा भेजी गयी है) पर उपस्थित हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।
- प्रतीहारी बताती है कि यह महाराज उदयन से मिलने का उचित समय नहीं है क्योंकि **घोषवती वीणा** की आवाज सुनकर महाराज अत्यन्त दुःखित हैं।
- महाराज उदयन वीणावादक से घोषवती वीणा के बारे में पूँछते हैं तो वीणावादक घोषवती वीणा को नर्मदा नदी किनारे कुशों की झाड़ी मे पाया हुआ बताता है।
- सूर्यामुख भवन से उतरते हुए महाराज उदयन से प्रतीहारी सूचना देती है और विष्कम्भक समाप्त होता है।
- घोषवती वीणा को पाकर उदयन अत्यन्त क्षुब्ध हो जाते हैं क्योंकि वीणा वासवदत्ता का स्मरण कराती है।
- राजा की आज्ञा से विदूषक घोषवती वीणा की मरम्मत करवाने जाता है।
- प्रतीहारी से सूचना पाकर राजा शङ्का करता है कि कहीं महासेन प्रद्योत मेरे पद्मावती के विवाह से क्रोधित तो नहीं हैं क्योंकि मैंने उनकी पुत्री वासवदत्ता का अपहरण तो कर लिया था किन्तु उसकी रक्षा न कर सका।
- महाराज प्रद्योत का कञ्चुकी रभ्य कहता है कि उदयन द्वारा पुनः जीते गये वत्स राज्य में आकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
- रभ्य, उदयन को अभिवादन करके उज्जयिनी का समाचार सुनाता है।
- महारानी अङ्गारवती का सन्देश बताते हुए धात्री कहती है कि ''आपने पाणिग्रहण के बिना ही वासवदत्ता से विवाह सम्पन्न कर लिया। इसलिए हम दोनों (प्रद्योत+अङ्गारवती) ने तुम्हारा और वासवदत्ता का चित्र, चित्रपट पर बनवाकर उसी से विधिपूर्वक विवाह भी करा दिया और यह चित्रफलक तुम्हारे पास भेजा जा रहा है।''
- यह सुनकर उदयन कहते हैं कि अपराधी होने पर भी महाराज और माननीया का प्रेम मेरे प्रति कम नहीं हुआ है।
- पद्मावती, चित्रफलक को देखकर कहती है यह आर्या का चित्र तो आवन्तिका से मिलती है।
- उदयन, आवन्तिका को सामने बुलाना चाहते हैं कि पद्मावती बताती है कि वह न्यास रूप में रखी गयी किसी ब्राह्मण की बहन है जो पर पुरुष के सामने नहीं आती।
- प्रतीहारी सूचना देती है, कि ''उज्जयिनी के ब्राह्मण बाहर उपस्थित हैं जिनकी बहन महारानी पद्मावती के पास धरोहर रूप में रखी गयी है।''
- उदयन आवाज से पहचान जाते हैं कि यह ब्राह्मण उनका मन्त्री यौगन्धरायण है।
- धात्री,आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता को पहचान लेती है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को छिपाने जैसे कार्य के लिए महाराज उदयन से क्षमा माँगते हैं।
- उदयन द्वारा 'कारण' पूँछने पर यौगन्धरायण बताता है कि ऐसा यह सब भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता का कुशल समाचार बताने के लिए रैभ्य और वसुन्धरा को उसी समय उज्जयिनी वापस भेजना चाहता है किन्तु राजा, पद्मावती और वासवदत्ता के साथ उज्जयिनी जाने का निश्चय करते हैं।

भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

स्वप्नवासवदत्तम् का मङ्गलाचरण

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम्॥

अर्थ- उदय होते हुए नये चन्द्रमा के सदृश वर्ण वाली,मद्यपान से बलरहित अथवा अबला (अपनी पत्नी) को मद्य देने वाली,लक्ष्मी के प्रकट होने से सम्पन्न वसन्त जैसी सुन्दर,बलराम की भुजाएँ आपकी रक्षा करें।

- प्रस्तुत मंगलाचरण में बलराम की स्तुति की गयी है।
- उक्त पद्य में **आशीर्वादात्मक** तथा **अष्टपदा** नान्दी है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में मुद्रालंकार तथा श्लेष अलंकार का प्रयोग है।श्लेष के माध्यम से भावी सूचना मिलने के कारण **पत्रावली नान्दी** है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में **आर्या छंद** है।
- इस पद्य में पदों के विन्यास की चतुरता से नाटक के मुख्य पात्र उदयन,वासदत्ता,पद्मावती और वसन्तक की सूचना दी गयी है।

नाटक का भरतवाक्य-

इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥ (स्वप्न.6/19)।।

भावार्थ- हमारे राजसिंह (राजाओं में प्रधान) अर्थात् महाराज उदयन, समुद्ररूप सीमावाली,हिमालय और विन्ध्यपर्वत रूप दो कुण्डलों से युक्त और एक छत्र रूप चिह्न से संयुक्त इस पृथ्वी का पालन करें।

पात्रों का सामान्य परिचय - पुरुष पात्र

- **उदयन-** वत्सदेश का राजा नायक
- **यौगन्धरायण-** उदयन का मन्त्री
- **वसन्तक-** विदूषक,उदयन का मित्र (नर्मसचिव)

- **ब्रह्मचारी-** लावाणक ग्राम का छात्र
- **कञ्चुकी-** राजकुल का सेवक
- **संभषक,भट-** पद्मावती का सेवक
- **रुमण्वान्-** उदयन के अमात्य तथा सेनापति

स्त्री पात्र-

- **वासवदत्ता-** नायिका, उदयन की प्रथम पत्नी, (मगध देश में यही आवन्तिका रूप में निवास करती है।)
- **पद्मावती-** मगधराज दर्शक की बहन, उदयन की द्वितीय पत्नी
- **तापसी-** मगध के निकट तपोवन में रहने वाली एक स्त्री
- **मधुकरिका तथा पद्मिनिका-** पद्मावती की सखियाँ एवं परिचारिकाएँ
- **धात्री-** पद्मावती की उपमाता
- **विजया-** वत्सराज की प्रतीहारी
- **धात्री-** वासवदत्ता की उपमाता
- **महादेवी-** पद्मावती की माता
- **अङ्गारवती-** प्रद्योत की रानी, वासवदत्ता की माता
- **वसुन्धरा-** वासवदत्ता की धात्री
- **वैदेही-** उदयन की माता

स्वप्नवासवदत्तम् की प्रमुख सूक्तियाँ

- **एवमनिर्ज्ञातानि दैवतान्यप्यवधूयन्ते। (अङ्क 1)**
  भावार्थ- प्रथम अङ्क में यौगन्धरायण वासवदत्ता से कहता है कि- इस प्रकार बिना - पहचाने देवता भी तिरस्कृत हो जाते हैं।
- **कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना**
  चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥ (1/4)
  भावार्थ- यौगन्धरायण, वासवदत्ता से कहता है कि, 'समय के क्रम से बदलती हुई संसार को भाग्य पंक्ति पहिये के अवयवों के समान चलती है।'
- **सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।**
  सुखमन्यद् भवेद् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्॥ (1/10)
  कञ्चुकी, पद्मावती से कहता है, कि- धन देना सरल है, प्राण का देना आसान है, तप के फल को देना सरल है अन्य सब कुछ देना सरल है, परन्तु धरोहर की रक्षा करना कठिन है।
- **तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि। (1/11)**
  भावार्थ- यौगन्धरायण कहता है कि- 'उन सिद्ध पुरुषों में विश्वास के कारण यह किया है भली प्रकार जांचे गये सिद्ध पुरुषों के वाक्य का उल्लंघन कर के भाग्य भी नहीं चलता है।'
- **सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यं नाम। (अङ्क 2)**
  भावार्थ- पद्मावती कहती है कि,- 'सौन्दर्य वही है जो सब लोगों के मन का आह्लादक हो।'
- **कामेनोज्जयिनीं गते मयि तदा कामप्यवस्थां गते**
  दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः पातिताः।
  तैरद्यापि सशल्यमेव हृदयं भूयश्च विद्धा वयं
  पञ्चेषुर्मदनो यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः॥(4/1)

भावार्थः - राजा कहते हैं कि, 'उस समय उज्जयिनी में जाने पर और अवन्तिराजकुमारी वासवदत्ता को इच्छा के अनुसार देखकर मेरी अनिर्वचनीय अवस्था में पड़ने पर कामदेव ने अपने पाँचो बाणों से मेरे ऊपर प्रहार किया। आज भी उन बाणों से मेरा चित्त विद्ध ही है। फिर भी (पद्मावती से विवाह होने पर) मैं विद्ध हो गया हूँ कामदेव पाँच बाणों से ही युक्त है तो यह छठा बाण उसने कैसे गिराया।'

- **शरत्कालतीक्ष्णो दुःसह आतपः। (अङ्क-4)**
  विदूषक राजा से कहता है कि- शरद् ऋतु का तीखा धूप असह्य है।
- **अहो सदाक्षिण्यस्य जनस्य परिजनोऽपि सदाक्षिण्य एव भवति। (अङ्क-4)**
  भावार्थ- पद्मावती सोचती है कि,अहो! सभ्य व्यक्ति का सेवक भी सभ्य ही होता है।
- **गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।**
  कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः॥ (4/9)
  भावार्थ- राजा विदूषक से कहता है संसार में महान् गुणों से युक्त और स्वागत सत्कार करने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं,लेकिन उसके वास्तविक ज्ञाता बहुत कम ही मिलते हैं।
- **ननु किं शक्यं रक्षितुं प्राप्तकाले। (अङ्क-6)**
  भावार्थ- पद्मावती राजा से कहती है कि,'भला काल आ जाने पर किसे बचाया जा सकता है।'
- **कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।**
  प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते॥ (6/7)
  भावार्थ- कञ्चुकी रभ्य,उदयन से कहता है कि कायर अथवा जो असमर्थ हैं उनमें उत्साह पैदा नहीं होता। निश्चय ही राजलक्ष्मी प्रायःउत्साह वालों से ही भोगी जाती है।
- **परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता। (6/14)**
  भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि संसार में एक दूसरे में रूप सादृश्य देखा जाता है।
- **साक्षिमन्न्यासो निर्यातयितव्यः।**

भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि, 'धरोहर साक्षी पूर्वक लौटाई जानी चाहिए।'

➢ **मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।**
भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः॥ (6/18)
भावार्थ- उदयन,यौगन्धरायण से कहते हैं कि मिथ्या उन्मत्त व्यवहारों और युद्धों, शास्त्रोक्त मन्त्रणाओं एवं आपके द्वारा किये गए प्रयत्नों से, डूबते हुए हम लोग निश्चय ही उबार लिए गये हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का नामकरण

➢ इस नाटक का नामकरण ग्रन्थ के एक घटना विशेष पर आधारित है।
➢ पञ्चम अङ्क में उदयन शिरोवेदना से पीड़ित पद्मावती को देखने जाता है तथा पद्मावती को न देखकर वह उसी की शय्या पर सो जाता है।
➢ वासवदत्ता भी पद्मावती को देखना चाहती है और बिस्तर पर सोयी हुई जानकर वहीं लेट जाती है।
➢ उदयन स्वप्न में कुछ बड़बड़ाता है तो वासवदत्ता वहाँ से जाने लगती है और उदयन भी जागकर उसके पीछे दौड़ता है।
➢ **उदयन इसी 5वें अङ्क में स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है** इसलिए यह अङ्क नाटक का सबसे महत्त्वपूर्ण अंक है।
➢ इसी महत्त्वपूर्ण घटना को आधार मानकर महाकवि भास ने इसका नामकरण **'स्वप्नवासवदत्तम्'** किया है जो कि सर्वथा उचित है।
'स्वप्ने वासवदत्ता इति स्वप्नवासवदत्ता'- सप्तमी तत्पुरुष समास ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'स्वप्नवासवदत्तम्' हुआ।

➢ **महत्वपूर्ण तथ्य-**
➢ अनेक विद्वानों के अनुसार भास 24 नाटकों के रचयिता हैं किन्तु वर्तमान में प्रामाणिक रूप से 13 रूपक ही उपलब्ध हैं।
➢ भास ने 'भूमिका' या प्रस्तावना के स्थान पर 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है।
➢ भास ने अपने किसी भी रूपक में 'ग्रन्थ' और 'ग्रन्थकार' का नाम नहीं लिया है।
➢ भास ने अपने रूपकों में मुद्रालंकार का प्रयोग किया है।
➢ भास के 13 नाटकों को प्रकाशित कराने का श्रेय श्री टी. गणपतिशास्त्री को जाता है।
➢ स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में 'प्रवेशक' तथा पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'विष्कम्भक' का प्रयोग किया गया है।
➢ वासवदत्ता की वीणा का नाम **'घोषवती'** है।
➢ उदयन और पद्मावती के विवाह की भविष्यवाणी 'भद्र' और 'पुष्पक' ने की थी।
➢ पद्मावती के घर में वासवदत्ता ही 'आवन्तिका' के रुप में रहती है।
➢ छठें अङ्क में मिश्रविष्कम्भक प्रयुक्त है।
➢ पद्मावती को शिरोवेदना पञ्चम अङ्क में होती है।
➢ वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी है।
➢ 'महासेन', उज्जयिनी के राजा प्रद्योत का विशेषण है।
➢ पञ्चम अङ्क को **'स्वप्न अङ्क'** भी कहा जाता है।
➢ लावाणक ग्राम की घटना प्रथम अङ्क में वर्णित है।
➢ दूसरा और तीसरा अङ्क केवल गद्य के माध्यम से लिखा गया है।
➢ उदयन के भवन का नाम 'सूर्यामुख' तथा पद्मावती के आवास का नाम 'समुद्रगृह' है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

1. उदयन

➢ उदयन इस **नाटक का नायक** है तथा **वत्सदेश का राजा** है।
➢ वह **धीरललित (दक्षिण)** कोटि का नायक है।
➢ वह दयालु, उदार तथा वीणा बजानें में निपुण है।
➢ उदयन, दयार्द्रचित्त तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाला व्यक्ति है।
➢ उसकी धैर्यता, विद्वता, कुलीनता, आयु तथा रूप को देखकर ही राजा दर्शक अपनी बहन **पद्मावती का विवाह** करते हैं।
➢ उदयन, वासवदत्ता से बहुत ही प्रेम करते हैं इसीलिए राज्य की सुध-बुध खो बैठते हैं।
➢ सुन्दरता में उदयन की तुलना विना धनुष बाण के कामदेव से की गयी है।

2. वासवदत्ता

➢ वासवदत्ता, उज्जयिनी नरेश **प्रद्योत की पुत्री** तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्' **नाटक की नायिका** है।
➢ वह दयालु स्वभाव की नारी तथा **अवन्तिराज्य की राजकुमारी** भी है।
➢ वासवदत्ता बुद्धिमती, तथा पतिपरायणा स्त्री है।
➢ वह उदयन की प्रेयसी, शिष्या तथा पत्नी भी है।
➢ अपने पति के हित के लिए वह यौगन्धरायण द्वारा स्वयं को मृत घोषित करवा लेती है।
➢ वासवदत्ता अपनी आँखों के समाने ही अपने पति का विवाह पद्मावती से करवा देती है।
➢ वासवदत्ता का चरित्र त्याग से भरा हुआ है।

3. पद्मावती

➢ पद्मावती, राजा **उदयन की द्वितीय पत्नी** तथा नाटक की

प्रमुख पात्र हैं।
- वह मगध के राजा **दर्शक की बहन** है।
- पद्मावती अत्यन्त सुन्दरी तथा आकर्षण की केन्द्रबिन्दु है।
- वह धर्मपरायणा स्त्री है, इसीलिए वासवदत्ता को न्यासरूप में स्वीकार करती है।
- वह गुरुजनों के प्रति आदरभाव रखती है।
- पद्मावती, उदयन के रूप और गुणों से प्रभावित रहती है तथा भविष्यवाणी के अनुसार उसी से विवाह भी करती है।
- अतः एक आदर्श नारी का सम्पूर्ण गुण पद्मावती में है।

4. यौगन्धरायण
- यौगन्धरायण उदयन का प्रधान अमात्य है तथा इस नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला पात्र है।
- वह वर्ण से ब्राह्मण है तथा स्वामिभक्ति उसके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुयी है।
- वह सभी परिस्थितियों में तथा सब प्रकार के उपायों से अपने स्वामी एवं राज्य का संरक्षण करता है।
- यौगन्धरायण, उदयन के पूर्वमन्त्री 'युगन्धर' का पुत्र है।
- यौगन्धरायण की योजना को सभी उच्चस्तरीय अधिकारी तथा राजा एवं वासवदत्ता भी मानते हैं।
- वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर वह अपने योजना को सफल बनाता है।
- यौगन्धरायण के सम्पूर्ण चरित्र को भास ने एक वाक्य में लिखा है- **''यौगन्धरायणो भवान् ननु''**

5. वसन्तक
- वसन्तक इस **नाटक का विदूषक** और राजा उदयन का परम मित्र है।
- वह जाति से ब्राह्मण तथा हास्य का पात्र है।
- प्रत्येक परिस्थिति में वसन्तक, उदयन के साथ ही रहता है।
- वसन्तक खाने-पीने से अत्यन्त खुश रहता है, इसीलिए वासवदत्ता की बड़ाई भी करता है।
- राजा का अत्यन्त प्रिय होने के कारण ही वह, उदयन की अतिप्रिय रानी के बारे में पूछ पाता है।
- वसन्तक बीच-बीच में हँसी मजाक भी करता है।
- सरल स्वभाव होने के साथ-साथ वसन्तक मूर्ख भी है।

6. रुमण्वान्
- रुमण्वान् , उदयन का **प्रधान सेनापति** है।
- वह वीर, धीर एवं गम्भीर भी है।
- वासवदत्ता और यौगन्धरायण का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानते हुए भी राजा तक को भनक नहीं लगने देता कि वासवदत्ता जिन्दा हैं।
- उसके गुणों से यौगन्धरायण भी प्रेम करते है।
- रुमण्वान् के सेनापति रहने से उदयन को आरुणि से अपना राज्य मिलता है।

स्वप्नवासवदत्तम् की अङ्कवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम अङ्क-
- वेश बदलकर वासवदत्ता और यौगन्धरायण का मगध राज्य में प्रवेश।
- वासवदत्ता को न्यास रूप में पद्मावती के पास छोड़ना।
- लावाणक ग्राम से ब्रह्मचारी का आगमन तथा वासवदत्ता का अग्नि में जलकर मरने की सूचना।

द्वितीय अङ्क-
- वत्सराज उदयन से पद्मावती का विवाह सुनिश्चित होना।

तृतीय अङ्क-
- मगध राजप्रासाद में विवाह का हर्षोल्लास।
- वासवदत्ता द्वारा वरमाला का गूँथना।

चतुर्थ अङ्क-
- उदयन और पद्मावती का विवाह होना।
- विवाहोपरान्त उदयन और विदूषक का प्रमदवन भ्रमण।

पञ्चम अङ्क-
- पद्मावती को शिरोवेदना।
- उदयन द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता को देखना
- आरुणि से उदयन का युद्ध।

षष्ठ अङ्क-
- घोषवती वीणा की प्राप्ति।
- रभ्य नामक प्रद्योत के कञ्चुकी का आगमन।
- चित्रफलक से वासवदत्ता की पहचान।
- यौगन्धरायण द्वारा समस्त घटनाओं को बताना

स्वप्नवासवदत्तम्- बिन्दुवार अध्ययन
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं - **भास**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में कुल कितने अङ्क हैं? - **छः**
- स्वप्नवासवदत्ता नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है - **धीरललित**
- उदयनः कस्य नाटकस्य नायकः? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- संस्कृते अतिप्राचीनरूपकस्य नाम किम्? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटकस्य आकरग्रन्थः - **बृहत्कथा**
- लावाणकग्राम की घटना कहाँ वर्णित है? - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- यौगन्धरायण किसका प्रमुख पात्र है? -**स्वप्नवासवदत्तम्**
- रुमण्वान् पात्र का वर्णन है - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्? - **रुमण्वान्**
- उदयनस्य चरितं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **स्वप्नवासवदत्ते**
- वसन्तक (विदूषक)–युक्तरचना अस्ति - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- स्वप्नवासवदत्त-नाटके विदूषकस्य नाम किम्? - **वसन्तकः**
- 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है? -**स्वप्नवासवदत्तम्**
- उदयनस्य वीणायाः नाम किम्? - **घोषवती**
- स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है? - **पञ्चमः**
- वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्? - **अवन्तिकायाः**

- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- "स्वप्ने नाटके भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा" कस्य वचनमिदम्?- **ब्रह्मचारिणः**
- 'दुःखं न्यासस्य रक्षणम्' एषा उक्तिः कस्य नाटकस्य? - **स्वप्नवासवदत्तस्य**

4.5 अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि० शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि०शाकु० के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि० शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि०शाकु० नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि०शाकु० के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **"तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः"** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **"तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्"** किससे सम्बन्धित है – **अभि० शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि० शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि०शाकु० के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि०शा० में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि०शा० के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि०शा० के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि० शा० का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**
- अभि०शा० का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**

- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। "कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।"**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को **'भारत का शेक्सपियर'** कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य **'फाडस्ट'** में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **"त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।"**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**
- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इन्कार कर देता है **– दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**

- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
- **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**
- भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
- 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया – **अनसूया ने**
- हस्तिनापुर से महारानी का सन्देश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
- शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
- शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**
- शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि0शा0 3-13।

- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**
- नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**
- ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि0शा0 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ 1/1 ॥

भावार्थ- जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है अर्थात् जलरूप मूर्ति, जो विधिपूर्वक की गयी हवन के हवि को देवताओं के पास ले जाती है अर्थात् अग्निरूप मूर्ति, जो यज्ञकर्ता है अर्थात् यजमान रूपमूर्ति, जो दो समय का निर्माण करतीं हैं,अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूप मूर्तियाँ, शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है अर्थात् आकाश रूप मूर्ति, जिसको विद्वान् समस्त बीजों का कारण कहते हैं, अर्थात् पृथ्वीरूपमूर्ति और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं अर्थात् वायुरूप मूर्ति, उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप लोगों की रक्षा

करें।

☆ प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।

☆ आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।

☆ समासोक्ति के माध्यम से कथानक का सङ्केत होने से पत्रावली नान्दी भी है।

☆ उपर्युक्त श्लोक में स्रग्धरा छन्द तथा अनुप्रास एवं समासोक्ति अलङ्कार है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ 7/35 ॥

भावार्थ- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्र सहित स्वयंभू भगवान् शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवान् शाम्ब शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बन्धन सदा के लिए छूट जाए।

☆ यह उत्तरार्धगत अन्तिम उक्ति महाकवि कालिदास की स्वयं अपनी प्रार्थना है।

☆ इस भरतवाक्य में लोक-कल्याण के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना की गयी है।

☆ इस पद्य में रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाम का प्रयोजन

1. अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम् अभि+ज्ञा+ल्युट् = अभिज्ञान

अर्थात् जिसके द्वारा पहचाना जाता है।

यहाँ पर अभिज्ञान से भाव है- दुष्यन्त के द्वारा पहचान के लिए शकुन्तला को दी गयी अँगूठी।

शकुन्तलाम् अधिकृत्य कृतं नाटकं शाकुन्तलम्।

शकुन्तला+अण्, ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय) अर्थात् शकुन्तला विषयक नाटक।

अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

शकुन्तला प्रधान नाटक, जिसमें अभिज्ञान (अँगूठी) मुख्य रूप से वर्णित है।

2. अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

अभिज्ञान(अँगूठी) के वर्णन से युक्त शकुन्तला-विषयक नाटक।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमञ्च का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शाङ्र्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का सन्देश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
22.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
23.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक

		क्षत्रिय कन्या।
24.	अनसूया	
		शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अंतरंग सखी।
25.	प्रियंवदा	
26.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
27.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
28.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
29.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
30.	मधुकरिका	
31.	चतुरिका	राजा की सेविका।
32.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
33.	यवनी	राजा की एक सेविका।
34.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृंगार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** हैं।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त

द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।

- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- नटी आरम्भ में दो छन्द गाती है एक आर्या –> **(सुभगसलिल.......)** दूसरा उद्गाथा –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि.....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अङ्गूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका

कर रखती है।

- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्स्ना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यंत को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अङ्गूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक
  महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
  स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥
  (दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)
  अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।
- शकुन्तला का प्रेमी/पति।
- पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
- हस्तिनापुर के सम्राट्।
- विदूषक (माधव्य) के मित्र।
- हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
- सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

- आदर्श प्रेमी।
- सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
- आदर्श राजा/उत्तम शासक
- विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
- आखेट (मृगया) प्रेमी।
- कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
- आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
- वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
- वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
- मधुरभाषी एवं उदार।
- सहृदय तथा संयमी।
- आदर्श पिता।
- मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
- चरित्रवान् नायक।
- लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्त्वपूर्ण गुण एवं कार्य

- दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
- उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।
- धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
- प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
- जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
- शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
- वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
- माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
- रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
- शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
- ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहने से वह मृग पर बाण नहीं चलाता है।
- विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
- शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
- मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
- वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
- प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
- दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।
- परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
- सन्तानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
- प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
- शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
- सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
- वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
- राजाद्वारा निर्मित शकुन्तला के चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
- राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्त्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
- दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्त्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
- दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
- इस प्रकार राजा दुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
- विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
- महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
- नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।

➤ ''**शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।**'' पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होनें के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
➤ मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
➤ राजा द्वारा परित्यक्ता होनें के बाद मारीच आश्रम में निवास।
➤ राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
➤ सर्वदमन (भरत) की माँ।
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी
2. प्रकृतिप्रिया
3. आदर्शप्रेमिका
4. आश्रमप्रेमी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी
6. सुशीला एवं लज्जावती
7. स्वाभिमानिनी
8. कार्यकुशला
9. आदर्शपुत्री
10. मधुरभाषिणी
11. सच्ची सखी
12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
- **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
- **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
- **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
- **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**
- **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
- **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
- **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**

➤ शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
➤ राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**
➤ जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। '**शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति**'। (अङ्क-1)
➤ प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – ''**अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु**'' **(अङ्क-1)**
➤ आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – ''**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।**'' **(अङ्क-4/9)**
➤ वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।(4/1)**
➤ आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। ''**सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।**'' **(अङ्क-4/9)।**
➤ राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नहीं।
➤ अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**
➤ शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नहीं देती है। **(अङ्क-5)**
➤ ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**
➤ राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।
➤ वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं......... (अङ्क-3/13)**
➤ आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
➤ आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामाक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।
यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......(अङ्क 4-14)
➤ शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –
➤ आश्रम के कुलपति।
➤ शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
➤ शकुन्तला के पालक पिता।
➤ 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
➤ श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। ''**तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः**'' **(अङ्क-7)**
➤ कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। ''**दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः**'' **(अङ्क-1)**

- आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)**
- उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।'' (अङ्क-4/5)**
- शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं – **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।'' (अङ्क 4/6) ''शममेष्यति मम शोकः......।'' (अङ्क 4-21)**
- ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)
- ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।'' (अङ्क 4-18)**
- कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।'' (अङ्क 4-17)**
- वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नहीं भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।
- कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' (अङ्क 4-19)**
- वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।'' (अङ्क 4-22)**
- कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. **(4-6)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।
- अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

- अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।
- कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)
- राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)
- दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनको पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।
- यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)
- प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।
- अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकवि कालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।
- सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।
- सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।

- दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।
- सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।
- तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।
- दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।
- चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।
- तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)
- दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का हृदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।
- दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।
- दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।
- राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)
- अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)
- अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता-पिता के विषय में राजा से बताती है – **''शृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)
- प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो – **''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो – **''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)
- अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है – **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।
- प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें – **''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि – **''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**
- अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं – **''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नहीं हो सकता – **''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)
- अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
- शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
- अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी

प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।

- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है – "**हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।**"
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह "**किं मोदकखण्डिकायाम्**" कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है – "**कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि**" (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है–'**एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।**" (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – "**त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।**" (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है, परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।
- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।
  "**परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः**" (अङ्क-2)
- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्त्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः**
  करुणपरिदेविनी शकुन्तला.......किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –
  इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–
  'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)
- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –
  जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –
  जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)
- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से'**, **'जाते'**, **'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।
  ''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।
  भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)
- आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –
  'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
  'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
  'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं।
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरु समान कहता है –

''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)

- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
  ''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्......।'' (अङ्क-4)
- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
  'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)
- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
  ''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)
- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –
  ''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु।'' (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-(5/20)**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –
  ''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –
  ''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –
  ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	• काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार • नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।

क्र.	श्लोक	छन्द	अलङ्कार/विशेष
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः.....।** (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलंकार ● इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।
5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● व्यतिरेक अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलङ्कार। ● इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	● परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	● परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।
13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।

	(काश्यप/कण्व)		• इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है। **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	• उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। • कुछ लोग "अस्मान् साधु...." के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• मालादीपक अलङ्कार। • कुछ लोग "पातुं न प्रथमं....." के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।
➢ चतुर्थ अङ्क में "**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः**" (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा "**एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी**" (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।
➢ चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
01.	**आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	**अनसूया**
02.	**न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।**	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	**प्रियंवदा**
03.	**गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।**	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	**अनसूया**
04.	**ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया**	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	**अनसूया**
05.	**सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्**	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	**अनसूया**
06.	**ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।**	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	**प्रियंवदा**
07.	**अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता।**	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	**अनसूया**
08.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् (4.1)**	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नही देख रही हो।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
	स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (4.1)	वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**

संस्कृत	अर्थ	वक्ता
09. हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	**प्रियंवदा**
10. न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं। ये **सुलभकोपो महर्षिः**	तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	**प्रियंवदा**
11. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।	**अनसूया**
12. सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	**प्रियंवदा**
13. भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	**प्रियंवदा**
14. न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
15. अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यहकथन को बताती है। कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16. अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
17. वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
18. भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नहीं है, फिर अतिथि की बात ही क्या है?	**प्रियंवदा**
19. प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
20. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**

21. को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति
कौन नवमालिका (चमेली) भला गर्मजल से सींचेगा।
प्रियंवदा

22. तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।
संसार दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।
कण्व का शिष्य

23. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र दुःसहानि (4.3)
निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।
कण्व का शिष्य

24. तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्। राजा

ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट
अनसूया

व्यवहार किया है।

25. काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे
कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने
अनसूया
जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।
असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त)

ा ि ़

प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी

शकुन्तला का प्रेम कराया है।
26. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ाःष्ट
सहन करने वाले तपस्वियों में से
अनसूया
ननु सखीगामी दोष इति।
किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर

दाेष

आयेगा।
45. वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व पुत्री!
अभी हवन की गयी
महर्षि कण्व
अग्नि
की इधर से प्रदक्षिणा करो।
46. भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।
भगवन्! यह तो वरदान है, केवल
गौतमी

आशीर्वाद नही।
47. भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः! ह `
समीपस्थ तपोवन के वृक्षों!
महर्षि कण्व
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं ाही
यह शकुन्तला पति के घर जा

सर्वैरनुज्ञायताम् रहीं
है, आप सभी लोग अनुमति दें।
48. अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वृक्षों
ने इस शकुन्तला को पतिगृह
महर्षि कण्व

वनवासबन्धुभिः। (4.10) जाने
की अनुमति दे दी है।
49. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः। इस ा
शकुन्तला का मार्ग शान्त और
आकाश भाषित

अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण
करने
वाला हो।

50. उद्गलितदर्भकवला मृग्यः
मृगियों ने कुश के ग्रास को
प्रियंवदा
परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12) उगल
दिया है, मोरों ने नाचना
छोड़
दिया है

51. अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)
लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानों
प्रियंवदा

आँसुओं को छोड़ रही हैं।

52. तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां ह `
पिताजी! मैं अपनी लता-बहिन
शकुन्तला
तावदामन्त्रयिष्ये।
वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।

53. अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु आज
से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।
शकुन्तला
भविष्यामि

54. अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति अबा
मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय
महर्षि कण्व
वीतचिन्तः। मा`
निश्चिन्त हो गया हूँ।

55. हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते
सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में
शकुन्तला
निक्षेपः सौंप
रही हूँ।

56. अयं जनः कस्य हस्ते इ स।
जन (हम दोनों) को **दोनों**
सखियाँ
समर्पितः।
किसके हाथ में सौंप रही हो।
57. को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते? य। ह
कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।
शकुन्तला
58. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते
पुत्रवत् पाला गया यह मृग
महर्षि कण्व
तो रा
मार्ग नहीं छोड़ रहा है।
59. वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं पुत्र,
साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला)
शकुन्तला
मामनुसरसि। व। े
पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।

60. वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)
अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।
महर्षि कण्व
61. मार्गे पदानि खलु ते विषमी इ स।
ऊबड़-खाबड़ भूमि
महर्षि कण्व
भवन्ति। म। ें
तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।
62. भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो
भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति
शार्ङ्गरव
जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। व।ऽ।
जलाशय तक अनुगमन करना

चाहिए–ऐसा सुना जाता है।
63. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।
आशा का बन्धन असह्य वियोग के
अनसूया
(4.16) दुःख
को भी सहन करा देता है।
64. अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः संयम
रूपी धन वाले हम लोगों को तथा
महर्षि कण्व
कुलं चात्मनः।.... (4.17) अपने

ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप
कोई
व्यवहार करें।

65. भाग्यायत्तमतः परं न खलु इसके
आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम
महर्षि कण्व
तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17) वधू के
सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।
66. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्
वनवासी होते हुए भी हम लोग
महर्षि कण्व
लोक
व्यवहार को जानने वाले हैं।

67. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम
वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।
शार्ङ्गरव
68. शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं
गुरुजनों = बड़ों की सेवा करना, सपत्नियों
महर्षि कण्व
सपत्नीजने। (4.18) व। े
साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।

69. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः इ स।
प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ
महर्षि कण्व
कुलस्याधयः। (4.18)
गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं,

और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली

युवतियाँ कुल के लिए आधि बन जाती हैं।
70. वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः पुत्री
इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका
महर्षि कण्व
तत्र गन्तुम्। वहाँ
जाना उचित नहीं है।
71. मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं मो रे
विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल
महर्षि कण्व
गणयिष्यसि। (4.19)
जाओगी।
72. तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?
पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात्

शकुन्तला

आप

मुझे कब बुलायेंगे।

73. अतिस्नेहः पापशङ्की

अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का **दोनों**

सखियाँ

करता

है।

74. भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... बहुत

दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी

महर्षि कण्व

शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20) ग्ऽर्

सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने

पाति

दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।

75. शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से

नीवार को देखते हुए मेरा शोक

महर्षि कण्व

त्वया रचितपूर्वम् (4.21) आबा

कैसे शान्त हो सकेगा।

76. गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

जाओ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।

महर्षि कण्व

77. तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव

पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने

अनसूया एवं

तपोवनं कथं प्रविशावः।

तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।

प्रियंवदा दोनों सखियाँ **78.**

हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं अहा!

शकुन्तला को ससुराल भेजकर

महर्षि कण्व

विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्। आबा

मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।

79. अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22) कन्या

वस्तुतः दूसरे का ही धन है।

महर्षि कण्व

80. जातो ममायं विशदः प्रकामं मोरा

यह हृदय उसी प्रकार अत्यन्त

महर्षि कण्व

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22) प्रसन्न

हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को

लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति

वाता

मन प्रसन्न होता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्- बिन्दुवार अध्ययन

- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ के रचयिता हैं - **कालिदास**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है - **नाटक**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तले’ कति अङ्काः सन्ति? - **7 (सात)**
- ‘शाकुन्तलकथायाः’ वास्तव्यमुपजीव्यमस्ति - **महाभारतम्**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ का अङ्गी रस है - **श्रृङ्गार**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ में किस रीति का प्रयोग है - **वैदर्भी रीति का**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ का दुष्यन्त नायक है - **धीरोदात्त**
- महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः कथां स्वीकृत्य कालिदासेन ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ विरचितम् - **आदिपर्व से**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? -**विलियमजोन्स ने**
- ‘शाकुन्तलम्’ की कथा और कहाँ प्राप्त है? - **महाभारत/पद्मपुराण दोनों में**
- महाभारत पर आश्रित नाटक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- एक आभरण खो जाने से किस कथा में स्थिति बदल गई है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ में ‘अभिज्ञान’ शब्द से किसका बोध होता है - **अँगूठी का**
- ‘अभिज्ञान’ शब्द का अर्थ है - **पहचान**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उत्स (मूल) है? - **महाभारतम्**
- शाकुन्तलमङ्गलाचरणे कीदृशः शिवः वर्णितः?- **अष्टमूर्तिः**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक - **ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है**
- अभिज्ञानशाकुन्तलस्य जर्मनभाषायां प्रथमः अनुवादकः आसीत्? - **जॉर्जफोस्टरः**
- अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति - **जलम्**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ में शकुन्तला को शाप किसने दिया? - **दुर्वासा**
- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ नाटक का विदूषक है- **माढव्य**
- दुष्यन्त की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था - **सानुमती**

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन है?- **इन्द्र का सारथि**
- एक प्रसिद्ध नाटक में मधुकरिका कौन है? - **दुष्यन्त की परिचारिका**
- दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया? - **प्रियंवदा**
- अभिज्ञानशाकुन्तल में वेत्रवती है - **प्रतीहारी**
- शर्मिष्ठा के पिता थे - **दानवराजवृषपर्वा**
- सानुमती पात्र किस काव्य में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शारद्वत पात्र का वर्णन किस नाटक में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके नायकः कः वर्तते - **दुष्यन्तः**
- अनसूया किस नाटक में एक पात्र है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- सर्वदमन किस नाटक का पात्र है - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
- राजा दुष्यन्तः कुत्र प्रसिद्धः - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- दुष्यन्तः कस्य ग्रन्थस्य नायकः - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
- अभिज्ञानशाकुन्तल में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है? - **पुरु**
- शकुन्तला की सखी कौन है? - **अनसूया/प्रियंवदा**
- शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी? - **गौतमी**
- किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी - **प्रियंवदा**
- दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी - **दुष्यन्त के**
- अनसूया और प्रियंवदा हैं - **शकुन्तला की सखियाँ**
- दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया - **कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो तुझे भूल जाएगा**
- दुर्वासा ऋषि ने शापमोचन किस तरह बताया - **-किसी अभिज्ञान (पहचान) देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा**
- अभिज्ञानशाकुन्तले दुर्वाससः शापः कस्य उदाहरणं भवति - **विष्कम्भकस्य**
- चतुर्थ अङ्क की विषयवस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है? - **बेटी की शादी होने पर- विदाई के अवसर की**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी है - **कण्व आश्रम की अध्यक्षा**
- गौतमी कौन थी? **-वृद्धा तापसी**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है - **तपोवन की अध्यक्षा**
- शार्ङ्गरव पात्र का वर्णन किस नाटक में है- **अभिज्ञानशाकुन्तल**
- 'तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्' यहाँ तपोधन शब्द प्रयुक्त हुआ है - **दुर्वासा के लिए**
- 'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः' कः? - **कण्वः**
- शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया - **कण्व ने**
- "मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि" यहाँ 'मम' से तात्पर्य है? - **कण्व**
- शकुन्तला की माता कौन थी - **मेनका**
- शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है - **सर्वदमन (भरत)**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सखियों ने शापवृत्तान्त सर्वप्रथम किसे सुनाया - **किसी को नहीं**
- दुष्यन्त के साथ शकुन्तला के विवाह की सूचना कण्व को कैसे मिली- - **अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है - **कण्व का शिष्य**
- अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके मारीचस्य शिष्यः कः अस्ति - **गालवः**
- कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे? - **काश्यप**
- राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी - **वसुमती**
- 'प्रियंवदा' किस नाटक में है - **शाकुन्तलम्**
- पुरु किसका पुत्र था? - **शर्मिष्ठा**
- मघवतः सकाशात् केन सह मनुष्यलोकमवतरति दुष्यन्तः? - **मातलिना**
- मातलि किस नाटक का पात्र है? - **अभिज्ञानशाकुन्तल**
- महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं - **गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत**
- कालिदास ने 'सुलभकोपो महर्षिः' किसे कहा है- **दुर्वासा को**
- शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्- **सर्वदमनः**
- 'गण्डकस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है - **मुहावरा**
- 'सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि' से क्या निर्दिष्ट है? - **अभिज्ञानशाकुन्तल के कथानक का प्रयोजन**
- ``......... षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।'' - **तपः**
- शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है? - **एक तापसी ने**
- 'वामाः कुलस्याधयः' में 'वामा' का अभिप्राय है - **कहे गये ढंग के विपरीत या प्रतिकूल आचरण करने वाली स्त्रियाँ**
- 'वामाः कुलस्याधयः' मे 'वामा' का क्या अर्थ है- **विपरीता**
- 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' - इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है? - **कण्व**
- "दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।" इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है? - **दुष्यन्त को**

➤ 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है - **सहचर से विदा ले लो**

➤ विदाई के साथ कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया? - **शुश्रूषस्व गुरून् ....**
➤ 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है - **चन्द्रमा के लिए**
➤ ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' में 'परिजन' का अर्थ है? - **सेवकजन**
➤ ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये .... विज्ञानम्।'' - **प्रयोग**
➤ अथवा भवितव्यानां .... भवन्ति सर्वत्र। - **द्वाराणि**
➤ गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। चीनांशुकमिव केतोः ..... नीयमानस्य - **प्रतिवातं**
➤ ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु .... मन्तःकरण- प्रवृत्तयः।'' - **प्रमाण**
➤ ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। .... हृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।।'' - **अज्ञात**
➤ येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना। स स ...... तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्।। - **पापादृते**
➤ ''तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको .... इवात्मदशान्तरेषु।'' - **नियम्यत**
➤ ''तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति।- **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः**
➤ धीवरेण शकुन्तलाया अङ्गुलीयकप्राप्तिः कस्मिन्नङ्के वर्णिता - **षष्ठ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक का चित्रण हुआ है? - **द्वितीय अङ्क में**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है - **तृतीय अङ्क**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है - **षष्ठ अङ्क में**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है? - **चतुर्थ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापवृत्तान्त किस अङ्क में है-**चतुर्थ**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदासकी किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया - **दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है? - **अङ्क के प्रारम्भ में**
➤ कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के किस अङ्क को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है? - **चतुर्थ**
➤ कस्मिन् अङ्के शकुन्तला मनोगतं गीतवस्तु नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं करोति? - **तृतीये**
➤ आकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः कस्मिन् अङ्के प्रविशति- **षष्ठे**
➤ शकुन्तलायाः हस्तात् परिभ्रष्टम् अङ्गुलीयकं पुनः कस्मिन्नङ्के राज्ञा आसादितम्? - **षष्ठे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के कण्वः शकुन्तलामुपदिशति? - **चतुर्थे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्तते - **सप्तमे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति? -**प्रवेशकस्य**
➤ किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी? - **शचीतीर्थ में**
➤ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति'-अत्र काव्यादर्शकाराभिप्रेतः गुणः कः? - **माधुर्यम्**
➤ शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है? - **अँगूठी**
➤ राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं जब वे देखेंगे - **अँगूठी**
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया- **चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ।**
➤ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है'- यह बात कण्व को किसने बताई? -**छन्दोमयी वाणी ने**
➤ शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था? - **वनज्योत्स्ना**
➤ दुष्यन्त के वंश का नाम था - **पुरु**
➤ शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे? - **सोमतीर्थ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? - **22**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कति श्लोकाः प्रसिद्धाः? -**चत्वारः**
➤ ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः,
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा,
पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।''
इत्यस्मिन् श्लोके कोऽलङ्कारः - **स्वभावोक्तिः**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है - **उत्प्रेक्षा**
➤ पक्षिभिः पालिता नायिका का? - **शकुन्तला**
➤ शकुन्तलायाः पालकपिता कः? - **कण्वः**
➤ शक्रावतारतीर्थस्य निवासी कः? - **धीवरः**
➤ 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः' में अलङ्कार है - **अर्थान्तरन्यास**
➤ दुष्यन्तगतां रतिं प्रति शकुन्तला केन शब्देन प्रतिपाद्यते - **आलम्बनविभावः**

- 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं? - **कोयल**
- 'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद किया - **राजालक्ष्मण सिंह ने**
- राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अनुवाद कब किया? - **1763 ई0**
- हंसपदिका का गीत है - **शाकुन्तलम् में**
- गृहिणी किम् उच्यते? - **गृहम्**
- दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं - **प्रसन्न**
- "अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः" इस उक्ति से युक्त नाटक है- - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**
- "अहो रागपरिवाहिणी गीतिः" राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है? - **हंसपदिका के गाने पर**
- 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'– इस उक्ति से युक्त नाटक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्" किस नाटक का श्लोक है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" इदं वाक्यमस्ति? - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- "यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया"– कस्य वचनमिदम्? - **कण्वस्य**
- "भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र" किस ग्रन्थ की उक्ति है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम" यह वाक्य किस नाटक में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" किस काव्य की उक्ति है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठः कस्मिन् छन्दसि भवति - **स्रग्धरा**
- 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है? - **धरोहर के साथ**
- "अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्" यह उक्ति कहाँ की है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "अतिस्नेहः पापशङ्की" यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम" सूक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् की**
- "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" इति कस्य पंक्तिः? - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
- 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- "लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" श्लोकांशोऽयं तिष्ठति - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- "भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि" यह उक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- "तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" यह श्लोकांश 'शाकुन्तलम्' के किस अङ्क से है? - **चतुर्थ अङ्क**
- "को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति" यह कथन किसका है? - **प्रियंवदा**
- "कुसुममिव.........यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्" - **लोभनीयं**
- "अथवा .... द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।"- **भवितव्यानां**
- "अये, लब्धं नेत्रनिर्वाणम्" इति कः कथयति अभिज्ञानशाकुन्तले? - **दुष्यन्तः**
- "सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्" इति कस्य नाटकस्य भरतवाक्येऽस्ति? -**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि" इति सूक्तिः अस्ति -**कालिदासस्य**
- "गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति" इति श्लोकः लभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- "आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।" यह श्लोक किस काव्य का है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "वामाः कुलस्याधयः" यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "कामी स्वतां पश्यति" यह सूक्ति है - **दुष्यन्त की**
- शकुन्तलायाः एकस्याः सख्याः नाम आसीत्- **प्रियवंदा**
- अभिज्ञानशाकुन्तले कयोः रसयोरपूर्वसम्मेलन विद्यते? - **शृङ्गार-करुणयोः**
- "ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः।।" यह श्लोक किससे सम्बन्धित है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् / मातलि**
- "अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्" यह पंक्ति किसने किससे कही? - **दुष्यन्त ने अँगूठी से**
- "अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः" अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है - **शार्ङ्गरव की**
- "सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं" किस नाटक से उद्धृत है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- "अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं" वचन किसके सम्बन्ध में है? - **शकुन्तला के**
- "प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः........ पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः" यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है?

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्

➤ "न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति" प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिए है? - **दुष्यन्त**

➤ "दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।" अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।" यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई? - **छन्दोमयी वाणी**

➤ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'-यह कण्व को किसके द्वारा पता चला- **अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी**

➤ "सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्" यह किससे कहा गया? - **लता-पादपों से**

➤ "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" यह किस ग्रन्थ में है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ "यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः" यह सूक्ति किस नाटक से है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ "शुश्रूषस्व गुरून्" श्लोक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➤ "अर्थो हि कन्या परकीय एव" सूक्ति सम्बद्ध है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ "तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्" इत्युक्तिः सङ्गच्छते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं.........' इत्यस्ति - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ "आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्" इति वाक्यं वर्तते - **कालिदासस्य**

➤ "अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्" इति वाक्यं अस्ति - **दुष्यन्तस्य**

➤ 'वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता" कस्येयमुक्तिः - **कण्वस्य**

➤ 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि'–अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्? -**वैखानसस्य**

➤ "गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः" कस्य उक्तिरियम् - **दुष्यन्तस्य**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तल में "मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्" किसने कहा है? - **सूत**

➤ किसने कहा है "अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः" - **मातलि**

➤ "तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" यह किस पात्र का कथन है - **कण्वशिष्य**

➤ 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।' उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है - **प्रियंवदा द्वारा**

➤ "कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव" यह श्लोकांश है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➤ "पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः" यह उक्ति किसकी है? - **कण्व की**

➤ सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं......... रिक्तस्थान की पूर्ति करें - **सर्वैरनुज्ञायताम्**

➤ "अर्थो हि कन्या परकीय एव" किसके लिए कहा गया है - **शकुन्तला के लिए**

➤ "तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व" यह कथन किसका है - **शकुन्तला का**

➤ "गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्" यह कथन है - **अनसूया का प्रियंवदा के प्रति**

➤ "अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत" इति यह उक्ति है - **दुर्वासा की**

➤ "सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्" उक्ति है - **कण्व की**

➤ "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" यह उक्ति है - **कण्व की**

➤ "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्"– वाक्य किसके बारे में कहा गया है - **शकुन्तला**

➤ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'लक्ष्म' शब्दस्य कोऽर्थः? - **चिह्नम्**

➤ 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह कथन है - **दुष्यन्त**

➤ "शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः" यह उक्ति किसकी है? - **आकाशभाषित की**

➤ 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है? - **अनसूया और प्रियंवदा का**

➤ "रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी"–यह कथन है - **अनसूया का शकुन्तला के प्रति**

➤ "अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः" यह वक्तव्य किसका है? - **काश्यप का**

➤ "कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति" यह कथन है - **अनसूया का**

➤ "ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते" यह कथन किसका है? - **कण्व शिष्य शार्ङ्गरव का**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत्? - **मारीचाश्रमे**

➤ "श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्" इति को निरूपयति - **मारीचः**

➤ "मनोरथा नाम तटप्रपाताः" इयम् उक्तिः उपलभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ निम्नलिखित पंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु "असंशयं क्षत्र परिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।।" - **वंशस्थम्**

➤ "प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः" इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति - **कालिदासस्य**

➤ "अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः" इस पंक्ति को कौन कहता है? - **मातलि**

- सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' सूक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तल**
- "स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु"–निम्नाङ्कितेषु कतस्मिन् समुपलभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. कालिदास की 'नाट्यकृति' नही है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्कों की संख्या है –
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

3. शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था –
(A) विश्वामित्र के आश्रम में (B) कण्व के आश्रम में
(C) दुर्वासा के आश्रम में (D) मारीच के आश्रम में

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रधान गुण है –
(A) माधुर्य (B) प्रसाद
(C) ओज (D) कोई नहीं

5. शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) कण्व ने (B) मारीच ने
(C) विश्वामित्र ने (D) दुर्वासा ने

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है –
(A) कण्व (B) माधव्य
(C) दुर्वासा (D) दुष्यन्त

7. शकुन्तला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र दिये थे–
(A) सखियों ने (B) मारीच ऋषि ने
(C) वृक्षों ने (D) कण्व ने

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक है –
(A) शार्ङ्गरव (B) मातलि
(C) माधव्य (D) वसन्तक

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है –
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा (D) शकुन्तला

10. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा कौन करता है –
(A) अनसूया (B) दुष्यन्त
(C) गौतमी (D) कण्व

11. मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त किसके आश्रम में पहुँचे –
(A) मारीच के आश्रम में (B) विश्वामित्र के आश्रम में
(C) कण्व के आश्रम में (D) वाल्मीकि के आश्रम में

12. शकुन्तला की विदाई का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) द्वितीय अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

13. शकुन्तला पति के चिन्तन में बैठी है –
(A) राजभवन में (B) उपवन में
(C) कुटिया के पास (D) नदी के किनारे

14. शकुन्तला की माता का नाम था –
(A) मेनका (B) गौतमी
(C) हंसपदिका (D) वसुमती

15. शकुन्तला के पुत्र का नाम था –
(A) सर्वदमन (भरत) (B) गौतम
(C) हारीत (D) नारद

16. शकुन्तला की अँगूठी गिरी थी –
(A) शचीतीर्थ में (B) मार्ग में
(C) सोमतीर्थ में (D) प्रभातीर्थ में

17. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था –
(A) सानुमती को (B) भानुमती को
(C) रम्भा को (D) उर्वशी को

18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्गी रस है –
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) हास्य

19. "अर्थो हि कन्या परकीय एव" किसने कहा –
(A) दुष्यन्त ने (B) गौतमी ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) कण्व ने

20. दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह था –
(A) गान्धर्व (B) प्राजापत्य
(C) ब्रह्म (D) दैव

21. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) विदूषक (D) शारद्वत

22. नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं –
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

23. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है –
(A) मध्य में (B) अन्त में
(C) प्रारम्भ में (D) कहीं भी

24. अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्ग
(C) नेपथ्य (D) रङ्गमञ्च

25. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है –
(A) शङ्कर का बैल (B) मङ्गलाचरण
(C) एक देवता (D) अष्टमूर्ति शिव

26. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया –
(A) गेटे (B) विलियम जोन्स

(C) मैक्समूलर (D) शेक्सपियर

27. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पुरुष पात्रों में नहीं है –
(A) वसन्तक (B) माधव्य
(C) भद्रसेन (D) सोमरात

28. महर्षि कण्व का आश्रम था –
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गङ्गा नदी के तट पर
(C) यमुना नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गये हुए थे –
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) माघमेला प्रयाग (D) हरिद्वार

30. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्यग्रन्थ है –
(A) भागवतपुराण (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

31. मारीच ऋषि का आश्रम है –
(A) हेमकूट पर्वत पर (B) विन्ध्याचल पर
(C) चित्रकूट रामगिरि पर (D) पञ्चवटी पर

32. शकुन्तला के जन्मदाता पिता थे –
(A) कण्व (B) विश्वामित्र
(C) दुर्वासा (D) मारीच

33. शकुन्तला की प्रियसखी है –
(A) प्रियंवदा (B) सानुमती
(C) गौतमी (D) मेनका

34. 'अहो रागपरिवाहिणी गीतिः' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है –
(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) गौतमी के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) वसुमती के गाने पर

35. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पात्र है –
(A) वसन्तक (B) अगस्त्य
(C) अत्रि (D) शारद्वत

37. दुष्यन्त की विशेष रुचि रही है –
(A) द्यूत में (B) मृगया में
(C) मदिरापान में (D) गजारोहण में

38. अनसूया किसकी सखी है –
(A) उर्मिला की (B) सीता की
(C) शकुन्तला की (D) गौतमी की

39. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है–
(A) आर्या (B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) अनुष्टुप्

40. कण्व थे –
(A) तपस्वी (B) भिक्षुक
(C) पर्यटक (D) गृहस्थ

61. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' यह वाक्य किसने कहा–
(A) दुष्यन्त ने सूत से (B) कण्व ने शार्ङ्गरव से
(C) दुर्वासा ने प्रियंवदा से (D) सूत ने दुष्यन्त से

62. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति है –
(A) मेघदूतम् की (B) नीतिशतकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) कादम्बरी की

63. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' किसने कहा –
(A) अनसूया ने (B) प्रियंवदा ने
(C) शकुन्तला ने (D) गौतमी ने

64. ''अस्तशिखरं'' मे समास है –
(A) द्वन्द्वसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) द्विगुसमास (D) बहुव्रीहिसमास

65. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' किसने किससे कहा–
(A) गौतमी ने शकुन्तला से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) दोनों सखियों ने शकुन्तला से
(D) अनसूया ने प्रियंवदा से

66. ''पातुं न .... व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वप्रथमं (B) द्वितीयं
(C) प्रथमं (D) प्रथमा

67. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का अनसूया से
(B) कण्व का शकुन्तला से
(C) राजा का शार्ङ्गरव से
(D) गौतमी का शकुन्तला से

68. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिए है –
(A) राजा के लिए (B) वृक्षों के लिए
(C) ऋषियों के लिए (D) सखियों के लिए

69. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' में कण्व ने किसे उपदेश दिया –
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) शकुन्तला को (D) राजा को

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क का नाम है –

(A) आश्रमप्रवेश अङ्क (B) प्रत्याख्यान अङ्क
(C) विदा अङ्क (D) पश्चात्ताप अङ्क

71. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से संकेतित/सम्बन्धित है –
(A) नूपुर (B) कङ्कण
(C) अँगूठी (D) कङ्कतम्

72. राजा दुष्यन्त की प्रथमपत्नी है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

73. राजा दुष्यन्त की द्वितीय पत्नी (प्रेमिका) थी –
(A) वसुमती (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

74. राजा दुष्यन्त की तृतीय पत्नी/प्रेमिका है –
(A) अनसूया (B) शकुन्तला
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की –
(A) विष्णु की (B) जल की
(C) अष्टमूर्ति शिव की (D) आकाश की

76. कण्व का शिष्य है –
(A) माधव्य (B) गालव
(C) शारद्वत (D) वसन्तक

77. शार्ङ्गरव किसका शिष्य है –
(A) विश्वामित्र का (B) दुर्वासा का
(C) मारीच का (D) कण्व का।

78. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' इस सूक्ति का वक्ता कौन है –
(A) कण्व (B) दुष्यन्त
(C) शकुन्तला (D) मारीच

79. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है –
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) मेनका

80. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''अग्निगर्भा शमीमिव'' कौन है –
(A) गौतमी (B) कण्व
(C) शकुन्तला (D) प्रियंवदा

81. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' किसने, किसके लिए कहा –
(A) दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शकुन्तला के लिए
(C) दुष्यन्त ने प्रियंवदा के लिए
(D) शकुन्तला ने दुष्यन्त के लिए

82. ययाति की पत्नी थी –
(A) शर्मिष्ठा (B) गौतमी
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''पुत्रकृतकः श्यामाक-मुष्टिपरिवर्धितकः'' कौन है –
(A) सर्वदमनः (B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः (D) शारद्वतः

84. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' किसकी उक्ति है–
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) शकुन्तला (D) गौतमी

85. दुष्यन्त द्वारा परित्यक्ता शकुन्तला किस आश्रम में निवास करती है –
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीचाश्रम में
(C) विश्वामित्राश्रम में (D) वशिष्ठाश्रम में

86. शकुन्तलापरित्याग की घटना किस अङ्क में है –
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

87. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव ने (B) कण्व ने
(C) राजा ने (D) शारद्वत ने

88. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है –
(A) सम्+पृच्छ्+क्त्वा (B) सम्+स्पृश्+क्त
(C) सम्+पा+ल्युट् (D) सम्+स्पृ+ष्टम्

89. ''समिद्वन्तः'' में प्रत्यय है –
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

90. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है –
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

91. ''भूयिष्ठम्'' पद में प्रत्यय है –
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

92. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

93. 'न्यषिच्यत' में सन्धि है –
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) यण् (D) अयादि

94. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक सौन्दर्य वर्णित है –
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का

(C) शकुन्तला का (D) मेनका का

95. तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं –
(A) विश्वामित्र (B) दुर्वासा
(C) शार्ङ्गरव (D) कण्व

96. कण्वाश्रम की वरिष्ठतपस्विनी है –
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) सानुमती

97. द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है –
(A) सेनापति (B) ऋषि कण्व
(C) दौवारिक (D) माधव्य

98. शकुन्तला की क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास जाती है –
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) मेनका

99. वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है –
(A) शकुन्तला का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) गौतमी का

100. "या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या" के 'सृष्टिः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) सृज्+क्तिन् (B) सृ+ष्टिः
(C) सृ+क्त (D) सृजन्+ल्युट्

101. 'ओदकान्तम्' पद का क्या अर्थ है –
(A) जल के किनारे तक (B) चावल के पास
(C) चन्द्रमा (D) सूर्य का सारथि

102. "परभृतविरुतं कलं यथा" यहाँ 'परभृत" पद का अर्थ है–
(A) कौआ (B) कोयल
(C) दूसरे की सखी (D) पशु

103. 'कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः' यहाँ 'कुशेशय' पद का अर्थ है –
(A) कमल (B) नवमालिका
(C) शकुन्तला (D) केसरवृक्ष

104. "अरण्यौकसः" पद का शब्दार्थ है –
(A) वनवासी (B) गृहस्थ
(C) ब्रह्मचारी (D) तपस्वी

105. "ओषधीनां पतिः" कौन है –
(A) सूर्य (B) चन्द्रमा
(C) अरुण (D) आश्विन वैद्य

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है –
(A) कण्व के लिए (B) दुष्यन्त के लिए
(C) दुर्वासा के लिए (D) मारीच के लिए

107. 'अनन्यमानसा' किसका विशेषण है –
(A) प्रियंवदा का (B) शकुन्तला का
(C) गौतमी का (D) दुर्वासा का

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक दुष्यन्त की प्रकृति है –
(A) धीरललित (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

109. जर्मन विद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वेणीसंहारम्

110. दुष्यन्त को देवासुरसंग्राम की सूचना देने वाला है–
(A) विदूषक (B) मातलि
(C) मारीच (D) इन्द्र

111. वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है–
(A) कण्व आश्रम में (B) मारीच आश्रम में
(C) वशिष्ठ आश्रम में (D) विश्वामित्र आश्रम में

112. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' से सम्बद्ध है –
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

113. "वामाः कुलस्याधयः" यहाँ 'वामाः' का अर्थ है –
(A) प्रतिकूल आचरण वाली स्त्री (B) सुन्दर स्त्री
(C) बायें भाग में स्थित स्त्री (D) तरुणी स्त्री

114. "भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने" यहाँ 'परिजन' पद का अर्थ है –
(A) परिवार जन (B) सेवक जन
(C) पड़ोसी जन (D) आश्रमीय जन

115. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है –
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) कहीं भी नहीं

116. दुष्यन्त के वंश का नाम था –
(A) सूर्यवंश (B) यदुवंश
(C) पुरुवंश (D) कुरुवंश

117. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है –
(A) गौतम (B) काश्यप
(C) भारद्वाज (D) मारीच

118. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है' – यह बात कण्व को किसने बतायी –
(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी आकाशवाणी ने (D) शिष्यों ने

119. शकुन्तला ने अपनी विदाई के समय जिस लता का आलिंगन किया, उसका नाम था –
(A) वनज्योत्स्ना (B) केसरलता
(C) सहकारलता (D) लतापत्रिका

120. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया –
(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति....।
(B) पातुं न प्रथमम्.....।
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य.....।
(D) शुश्रूषस्व गुरून्......।

121. दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी –
(A) गौतमी ने
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी आकाशवाणी ने
(C) सखियों ने
(D) शिष्यों ने

122. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' – इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है –
(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

123. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है–
(A) दुर्वासा का पुत्र (B) कण्व का भ्राता
(C) कण्व का शिष्य (D) दुष्यन्त का सेवक

124. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यह कथन है –
(A) अनसूया का प्रियंवदा से
(B) अनसूया का गौतमी से
(C) प्रियंवदा का अनसूया से
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा से

125. ''अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'' यह कथन है –
(A) शकुन्तला का (B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया प्रियंवदा दोनों का

126. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' यह उक्ति किसकी है –
(A) गौतमी की (B) कण्व की
(C) दुर्वासा की (D) मारीच की

127. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अशरीरिणी छन्दोमयीवाणी ने शकुन्तला विषयक वृत्तान्त किसे सुनाया –
(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) मारीच को (D) दुष्यन्त को

128. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापविषयक वृत्तान्त किस अङ्क में है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

129. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं'' यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किसकी है –
(A) शार्ङ्गरव की (B) शारद्वत की
(C) काश्यप (कण्व) की (D) दुर्वासा की

130. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है –
(A) शकुन्तला की सखी
(B) एक अप्सरा
(C) तपोवन की वरिष्ठ महिला
(D) मेनका की सखी

131. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा –
(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

132. मारीच ऋषि की पत्नी है –
(A) गौतमी (B) मेनका
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी (अदिति)

133. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) बयालीस (42) (B) बाइस (22)
(C) छियालीस (46) (D) पच्चीस (25)।

134. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है–
(A) किरातार्जुनीयम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) शुकनासोपदेश की (B) शिवराजविजयम् की

135. निम्नलिखित में कौन सा कथन असत्य है –
(A) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात सर्ग हैं।
(C) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गयी है।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व, दुर्वासा, मारीच और विश्वामित्र आदि ऋषियों का नाम आया है।

136. कालिदास को किस राजा का आश्रयदाता राजकवि माना जाता है –
(A) पुष्यमित्र (B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) अशोक (D) स्कन्दगुप्त

137. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह कथन किसका है –
(A) दुर्वासा का (B) काश्यप/कण्व का
(C) मारीच का (D) विश्वामित्र का

138. दुष्यन्त की राजधानी थी –
(A) अयोध्या (B) इन्द्रप्रस्थ
(C) कण्वाश्रम (D) हस्तिनापुर

139. ''कविताकामिनी का विलास'' किस कवि को कहा

गया है –

(A) कालिदास को (B) भारवि को

(C) माघ को (D) दण्डी को

140. शकुन्तला के चरित्र की विशेषता नही है –

(A) सुन्दरी (B) प्रकृतिप्रेमी

(C) कटुभाषिणी (D) लज्जाशीलता

141. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम विदूषक का चित्रण किया गया है –

(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में

(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

142. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–

(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में

(C) षष्ठ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

143. किस नाट्यकृति में कालिदास की कला मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है –

(A) विक्रमोर्वशीयम् में

(B) मालविकाग्निमित्रम् में

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

(D) इनमें से किसी में नहीं

144. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है –

(A) इमां सागरपर्यन्ताम्....।

(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....।

(C) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।

(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्....।

145. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा

(C) अर्थान्तरन्यास (D) रूपक

146. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किसने किससे कही–

(A) सखियों ने शकुन्तला से (B) गौतमी ने कण्व से

(C) दुष्यन्त ने सखियों से (D) कण्व ने शकुन्तला से

147. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यहाँ 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है।

(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए

(C) सानुमती के लिए (D) अनसूया के लिए

148. पतिगृह जाती हुई शकुन्तला को काश्यप/कण्व ऋषि ने आशीर्वाद दिया था –

(A) चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का

(B) धन प्राप्त करने का

(C) महादेवी बनने का

(D) पूर्णस्वस्थ रहने का

149. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' पद से तात्पर्य है –

(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का

(C) दुर्वासा का (D) दुष्यन्त का

150. दुष्यन्त के लिए सन्देश वचन किसने किससे कहा–

(A) कण्व ने शाङ्र्गरव से (B) कण्व ने गौतमी से

(C) कण्व ने प्रियंवदा से (D) कण्व ने शकुन्तला से

151. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है–

(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति

(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति

(C) अनसूया का शकुन्तला के प्रति

(D) मेनका का सानुमती के प्रति

152. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' यहाँ 'तपोधनं' शब्द प्रयुक्त हुआ है –

(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए

(C) मारीच के लिए (D) शाङ्र्गरव के लिए

153. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का उल्लेख किया गया है –

(A) यदु का (B) पुरु का

(C) तुर्वसु का (D) द्रुह्यु का

154. सानुमती पात्र है –

(A) उत्तररामचरितम् की (B) किरातार्जुनीयम् की

(C) कादम्बरी की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

155. राजशेखर ने कितने कालिदासों का उल्लेख किया है–
(A) 5 (B) 3
(C) 2 (D) 6

156. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की स्त्री-पात्र बोलती हैं –
(A) संस्कृत में (B) शौरसेनी प्राकृत में
(C) पालि में (D) खड़ी हिन्दी में

157. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सूत्रधार और नटी दोनों ने किस ऋतु का वर्णन किया है –
(A) ग्रीष्म ऋतु का (B) शिशिर ऋतु का
(C) वर्षा ऋतु का (D) हेमन्त ऋतु का

158. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः'' इस श्लोक में छन्द है –
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) स्रग्धरा
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

159. ''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा'' यहाँ 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' से किसका संकेत है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) क्षत्रियों की क्षमा का

160. ''वत्से, वीर प्रसविनी भव'' शकुन्तला के लिए यह आशीर्वाद किसने दिया –
(A) एक तापसी ने (B) गौतमी ने
(C) मारीच ने (D) कण्व ने

161. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

162. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'आधयः' पद का क्या अर्थ है–
(A) मानसिक व्याधि (B) बाधा
(C) मोक्ष (D) आधा

163. ''मा स्म प्रतीपं गमः'' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

164. ''तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

165. दुष्यन्त की कौन सी रानी पञ्चम अङ्क में सङ्गीत का अभ्यास कर रही है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) दाक्षायणी

166. रानी वसुमती के प्रेम में राजा दुष्यन्त किसे भूल गया है–
(A) हंसपदिका को (B) सानुमती को
(C) प्रियंवदा को (D) शकुन्तला को

167. हंसपदिका अपने गान के माध्यम से किसे उलाहना देती है –
(A) राजा दुष्यन्त को (B) माधव्य को
(C) शकुन्तला को (D) कण्व को

168. कण्व शिष्यों के आने की सूचना राजा दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) प्रतीहारी ने (B) कञ्चुकी वातायन ने
(C) विदूषक माधव्य ने (D) पुरोहित सोमरात ने

169. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा –
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

170. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः'' यह कथन किसका है –
(A) शार्ङ्गरव का (B) शारद्वत का
(C) कण्व का (D) पुरोहित सोमरात का

171. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सेनापति का नाम है –
(A) आत्रेय (B) भद्रसेन
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

172. ''स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'' यह कथन किसने किसके लिए कहा है –
(A) शार्ङ्गरव ने राजा दुष्यन्त के लिए
(B) कण्व ने शारद्वत के लिए
(C) दुष्यन्त ने सोमरात के लिए
(D) गौतमी ने दुष्यन्त के लिए

173. शकुन्तला द्वारा पुत्रवत्पालित मृग का क्या नाम है–
(A) दीर्घापाङ्ग (B) मृगानुसारी
(C) मृगाङ्क (D) पिनाकी

174. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्ति तक मेरे घर में ही रहे।' यह वाक्य किसने कहा –
(A) मारीच ने (B) पुरोहित सोमरात ने
(C) कण्व ने (D) दुष्यन्त ने

175. राजा दुष्यन्त की प्रतीहारी (द्वारपालिका) का क्या नाम है–
(A) सानुमती (B) बेतवारानी
(C) वेत्रवती (D) सोमवती

176. ''पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा'' यहाँ 'पाटच्चर' पद का क्या अर्थ है –
(A) चोर (B) श्याल
(C) राजा (D) कोतवाल

177.''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' में किस नाटक का निर्देश है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

178.''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी'' यहाँ 'तन्वी' पद से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) प्रियंवदा का (B) चन्द्रमा का
(C) कमल का (D) शकुन्तला का

179.''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्'' यह वाक्य किसने किसके लिए कहा –
(A) राजा ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शिष्य के लिए
(C) शकुन्तला ने राजा के लिए
(D) सखियों ने अग्नि के लिए

180.''लब्धावकाशो मे मनोरथः'' यह वचन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) राजादुष्यन्त का
(C) शकुन्तला का (D) कण्व का

181. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति –
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

182. मेनका के आगमन के समय विश्वामित्र किस नदी के तट पर उग्र तपस्या कर रहे थे –
(A) गौतमी नदी (B) यमुना नदी
(C) मालिनी नदी (D) गङ्गा नदी

183. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से क्या पूछा –
(A) अपि तपो वर्धते? (B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथम् अस्ति?(D) भवत्याः नाम किम्?

184.''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू'' राजा का यह कथन किसके लिए है –
(A) शकुन्तला के लिए – अङ्क 1
(B) प्रियंवदा के लिए – अङ्क 4
(C) अनसूया के लिए – अङ्क 4
(D) तपोवन कि लिए – अङ्क 1

185.''दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः'' यहाँ 'वनलताभिः' से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) रानियों का (B) तापसकुमारियों का
(C) जङ्गली पशुओं का (D) उद्यानसेविकाओं का

186. सोमतीर्थ जाते समय अतिथिसत्कार का दायित्व कण्व ने किसको दिया था –
(A) शिष्य शारद्वत को (B) गौतमी को
(C) शकुन्तला को (D) प्रियंवदा को

187.''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'' यह कथन किसने किससे कहा है –
(A) वैखानस ने दुष्यन्त से (B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) राजा ने सूत से (D) शिष्य ने गुरु से

188.''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' इस वाक्य से क्या निर्दिष्ट है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) दुष्यन्त का शकुन्तला से विवाह होना

189. दुष्यन्त तथा शकुन्तला का पुनर्मिलन किस अङ्क में होता है –
(A) चतुर्थ (B) तृतीय
(C) सप्तम (D) प्रथम

190. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के समालोचकों ने किसे ''निसर्गकन्या'' की उपाधि दी है –
(A) प्रियंवदा (B) शकुन्तला
(C) अनसूया (D) मेनका

191. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में अनसूया एवं प्रियंवदा नहीं दिखलायी पड़ती हैं –
(A) प्रथम एवं षष्ठ अङ्को में
(B) द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(D) पञ्चम, षष्ठ एवं सप्तम अङ्कों में

192. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में शकुन्तला की उपस्थिति नहीं है –
(A) द्वितीय एवं षष्ठ अङ्क में
(B) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

193. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महर्षि कण्व दिखलाई पड़ते हैं–
(A) सभी अङ्कों में
(B) केवल चतुर्थ अङ्क में
(C) प्रथम अङ्क छोड़कर सभी अङ्कों में
(D) केवल चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क में

194. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है –
(A) द्वितीय, पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

195. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका की सखी सानुमती किस अङ्क में

आती है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) इनमें से कोई नहीं

196. ''धर्मारण्यं प्रविशति.......स्यन्दनालोक भीतः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

197. वह 'औषधिविशेष' जिसे मारीच ऋषि ने सर्वदमन के हाथ में बाँधी थी –
(A) सञ्जीवनी (B) अमृतवटी
(C) अपराजिता (D) विशल्यकरणी

198. ''वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय'' यह आशीर्वाद दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) कण्व ने (B) महर्षि मारीच ने
(C) दुर्वासा ने (D) ऋषियों ने

199. मारीच आश्रम में दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन की बात महर्षि कण्व को किसने सूचित किया –
(A) गालव ने (B) सर्वदमन ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) गौतम ने

200. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है –
(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

उत्तरमाला

**1. (B) 2. (B) 3. (B) 4. (B) 5. (D) 6. (D)
7. (C) 8. (C) 9. (D) 10. (B) 11. (C) 12. (D)
13. (C) 14. (A) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (A)
19. (D) 20. (A) 21. (C) 22. (A) 23. (B) 24. (C)
25. (B) 26. (B) 27. (A) 28. (A) 29. (A) 30. (C)
31. (A) 32. (B) 33. (A) 34. (C) 35. (A) 36. (D)
37. (B) 38. (C) 39. (A) 40. (A) 41. (C) 42. (B)
43. (A) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (B) 48. (B)
49. (A) 50. (B) 51. (C) 52. (B) 53. (C) 54. (C)
55. (B) 56. (A) 57. (B) 58. (D) 59. (C) 60. (A)
61. (D) 62. (C) 63. (B) 64. (B) 65. (C)
66. (C) 67. (B) 68. (B) 69. (C) 70. (B) 71. (C)
72. (A) 73. (A) 74. (B) 75. (C) 76. (C) 77. (D)
78. (B) 79. (A) 80. (C) 81. (A) 82. (A) 83. (B)
84. (A) 85. (B) 86. (C) 87. (A) 88. (B) 89. (B)
90. (C) 91. (A) 92. (B) 93. (C) 94. (C) 95. (D)
96. (C) 97. (D) 98. (B) 99. (A) 100. (A) 101. (A)
102. (B) 103. (A) 104. (A) 105. (B) 106. (C)
107. (B) 108. (C) 109. (A) 110. (B) 111. (B)
112. (B) 113. (A) 114. (B) 115. (B) 116. (C)
117. (B) 118. (C) 119. (A) 120. (D) 121. (B)
122. (B) 123. (C) 124. (A) 125. (D) 126. (C)
127. (A) 128. (B) 129. (C) 130. (C) 131. (A)
132. (D) 133. (B) 134. (B) 135. (B) 136. (B)
137. (B) 138. (D) 139. (A) 140. (C) 141. (B)
142. (C) 143. (C) 144. (B) 145. (A) 146. (A)
147. (A) 148. (A) 149. (A) 150. (A) 151. (A)
152. (B) 153. (B) 154. (D) 155. (B) 156. (B)
157. (A) 158. (B) 159. (C) 160. (A) 161. (A)
162. (A) 163. (A) 164. (C) 165. (A) 166. (A)
167. (A) 168. (B) 169. (B) 170. (A) 171. (B)
172. (A) 173. (A) 174. (B) 175. (C) 176. (A)
177. (C) 178. (D) 179. (A) 180. (B)
181. (C) 182. (A) 183. (A) 184. (A) 185. (B) 186. (C)
187. (A) 188. (A) 189. (C) 190. (B) 191. (D)
192. (A) 193. (B) 194. (A) 195. (B)
196. (A) 197. (C) 198. (B) 199. (A) 200. (B)**

4.6 मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- मल्लिनाथ की **(सञ्जीवनी टीका)**
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।

- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र–**यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।** इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत शृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- कश्चित् पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्गन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।
- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिए चोंच में मृणाल लिए हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिन्हों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।

- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।
- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिए मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर पर (चोटी)धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्‌गम है उसको ही आम्रकूट मानते है।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे विल्सन ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गई है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ 'नीचैः' नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिए कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के गीले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।
- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।
- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।

- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जहनुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिए मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में कमल लिए रहती है, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती है।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलाई गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलंकरण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।
- रावण की तलवार का नाम 'चन्द्रहास' है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।
- क्रीडाशैल पर रक्त अशोक और मौलसिरी (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।
- क्रीडा शैल पर माधवीलता का कुंज है।
- अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंकणों द्वारा नचाया गया है।
- यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा

यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।

- यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिए कहता है।
- मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- यक्ष के शाप का अंत हरिबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- उसी दिन भगवान विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- यक्ष मेघ को पहचान चिह्न के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥ 6॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गई याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुयी याचना भी अच्छी नहीं है।

- यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥ 9॥
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥ 17॥
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?

- आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर। यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥ 20॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिए होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ 29॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।

- मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥ 45॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।

- ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्॥ 57॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।

- हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥ 58॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)

- मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥ 20॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा॥ 35॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः॥ 40॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिए मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥ 49॥
भावार्थ – सुखः-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54॥
भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

मेघदूतम् (व्याख्या 1-10 श्लोक)

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥

अन्वय - स्वाधिकारात् प्रमत्तः कान्ताविरहगुरुणा वर्षभोग्येण भर्तुः शापेन अस्तङ्गमितमहिमा कश्चित् यक्षः जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु रामगिर्याश्रमेषु वसतिं चक्रे।

शब्द	अर्थ
स्वाधिकारात्	अपने कर्त्तव्य पालन में
प्रमत्तः	असावधान

कान्ताविरहगुरुणा	प्रिया के वियोग से दुःसह एक वर्ष पर्यन्त भोगे जाने वाले
भर्तुः	स्वामी-कुबेर के
शापेन	शाप से
अस्तङ्गमितमहिमा	जिसकी महिमा नष्ट हो चुकी है,
कश्चित्	कोई
यक्षः	यक्ष
जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु	जनक की पुत्री सीता जी के स्नान से पवित्र जल वाले
स्निग्धच्छायातरुषु	घने छायादार वृक्षों से युक्त
रामगिर्याश्रमेषु	रामगिरि नामक पर्वत के आश्रमों में
वसतिम्	निवास
चक्रे	किया

अनुवाद- अपने कार्य से असावधान, प्रिया के विरह से दुःसह, एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जल वाले, घने छाया वाले वृक्षों से युक्त, रामगिरि (पर्वत) के आश्रमों में निवास करता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास

➢ **स्वाधिकारात् -** अधिक्रियते अस्मिन् इति स्वस्य अधिकारः स्वाधिकारः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष समास अथवा कर्मधारय समास)

➢ **अस्तङ्गमितमहिमा -** अस्तं गमितः महिमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

➢ **स्निग्धच्छायातरुषु -** छायाप्रधानाः तरवः छायातरवः, स्निग्धाः छायातरवः येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)

➢ **रामगिर्याश्रमेषु -** रामगिरेः आश्रमेषु रामगिर्याश्रमेषु - षष्ठी तत्पुरुष

➢ **वर्षभोग्येण -** भोक्तुं योग्यः भोग्यः, वर्षभोग्यस्तेन तत्पुरुष समास

➢ **जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु -** जनकस्य तनयायाः सीतायाः स्नानैः अवगाहनैः पुण्यानि पवित्राणि उदकानि जलानि येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)

➢ **कान्ताविरहगुरुणा -** कान्तायाः प्रियायाः विरहः वियोगः तेन गुरुणा - तृतीया तत्पुरुष

कारक -

➢ **स्वाधिकारात् -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पञ्चमी का प्रयोग

➢ **वर्षभोग्येण -** कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे से तृतीया

➢ **शापेन -** हेतौ सूत्र से तृतीया।

➢ **प्रमत्तः -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' से पंचमी

प्रत्यय -

➢ **अधिकारः -** अधि + कृ + घञ्

➢ **प्रमत्तः -** प्र + मद् + क्त

➢ **भर्तुः -** भृ + तृच्

➢ **शापेन -** शप् + घञ्

➢ **गमित -** गम् + णिच् + क्तः

➢ **महिमा -** महत् + इमनिच्

➢ **वसतिम् -** वस् + अति

➢ **चक्रे -** कृ + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद

➢ **रस -** मेघदूतम् में **विप्रलम्भ शृंगार** का प्रयोग किया गया है। विप्रलम्भ शृङ्गार के भी चार भेद होते है

1. पूर्वराज 2. मान 3. प्रवास - भावी, भवन्, भूत 4. करुण

इसमें भवन नामक प्रवास का उल्लेख है।

➢ **छन्द -** सम्पूर्ण मेघदूतम् में **मन्दाक्रान्ता छन्द** का प्रयोग हुआ है।

➢ **लक्षण -** 'मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं न तौ ताद् गुरू चेत्' अर्थात् इस छन्द में प्रत्येक पाद में 17 अक्षर होते हैं। वे मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रम में होते है। चौथे, दसवें और सत्रहवें अक्षर पर यति होती है।

➢ **अलङ्कार -** इस श्लोक में शाप के प्रति ''स्वाधिकारात्प्रमत्तः'' की हेतुता होने से पदार्थ हेतुक **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है।

➢ 'कान्ताविरहगुरुणा' यहाँ कान्ता पद का प्रयोग कवि की इस बात का सूचक है कि यक्ष को अपनी पत्नी से विशेष प्रेम था, क्योंकि जो भाव कान्ता पद से व्यक्त होता है वह पत्नी या भार्या से नहीं। यहाँ कान्ता पद का प्रयोग साभिप्राय है, इसलिए **परिकरालङ्कार** है। क्योंकि जहाँ विशेष्य साभिप्राय हो वहाँ परिकर अलङ्कार होता है।

➢ **लक्षण - ''विशेषणैर्यत् साकूतैरुक्तिः परिकरश्च सः''**

➢ **विशेष -** ग्रन्थ के निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति के लिए ग्रन्थ के आरम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण के तीन भेद हैं-

➢ **''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्''**

1. आशीर्वादात्मक 2. नमस्क्रियात्मक 3. वस्तुनिर्देशात्मक

यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

➢ काव्य के आरम्भ में 'क' वर्ण का प्रयोग हुआ है, 'क' शब्द वायु, ब्रह्मा और सूर्य का वाचक है अतः देवता वाचक शब्द का प्रयोग होने से मङ्गल का ही अनुष्ठान किया गया है।

श्लोक से पूछे जा सकने वाले सम्भावित प्रश्न -

➢ इस श्लोक में कौन सा मङ्गलाचरण है? **वस्तुनिर्देशात्मक**

➢ इसमें कौन सा छन्द प्रयोग किया गया है? **मन्दाक्रान्ता**

➢ यक्ष को कितने दिनो का शाप मिला था? - **एक साल**

➢ यक्ष को किसने शाप दिया था? - **यक्षों के स्वामी कुबेर**

➢ यक्ष को शाप देने का क्या कारण था? **- अपने कार्य से असावधानी के कारण**

➢ 'कश्चित्' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**

➢ रामगिरि आश्रम किसके स्नान करने से पवित्र हो गया था? **- जनकतनया सीता के**

➢ यक्ष को शाप देने की तिथि क्या थी? **- देवोत्थान एकादशी**

➢ चक्रे शब्द किस लकार और वचन में है बताइये? - **कृ लिट् लकार, प्रथम पु., एक.**

श्लोक - 2

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2

अन्वय - तस्मिन् अद्रौ अबलाविप्रयुक्तः कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः कामी स कतिचित् मासान् नीत्वा आषाढस्य प्रथमदिवसे आश्लिष्टसानुम् वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् मेघम् ददर्श।

शब्द	**अर्थ**
तस्मिन्	उस
अद्रौ	पर्वत पर
अबलाविप्रयुक्तः	प्रियतमा से वियुक्त
कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः	स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले
कामी	कामुक
सः	उस यक्ष ने
कतिचित्	कुछ
मासान्	महीनों को
नीत्वा	बिताकर
आषाढस्य	आषाढ मास के
प्रथमदिवसे	प्रथम दिन
आश्लिष्टसानुम्	पर्वत की चोटी से सटे हुए
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम्	टीले की मिट्टी के उड़ाखने में तिरछा दन्तप्रहार करने वाले हाथी के समान दर्शनीय
मेघम्	मेघ को
ददर्श	देखा।

अनुवाद - उस (रामगिरि) पर्वत पर प्रिया से वियुक्त स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले कामुक उस यक्ष ने कुछ वर्ष बिताकर आषाढ़ के प्रथम दिन पर्वत की चोटी से सटे हुए वप्रक्रीड़ा करने में तिरछा दन्त प्रहार करने वाले हाथी के सदृश दर्शनीय मेघ को देखा।

समास

➢ **अबलाविप्रयुक्तः -** अबलया विप्रयुक्तः - तृतीया तत्पुरुष अथवा अविद्यमानं बलं यस्याः सा अबला - **बहुव्रीहि समास**

➢ कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः - कनकस्य वलयस्य भ्रंशेन रिक्तः प्रकोष्ठः यस्य सः **बहुव्रीहि समास**

➢ **कामी -** कामः अस्य अस्ति इति कामी

➢ **प्रथमदिवसे -** प्रथमेदिवसे प्रथमदिवसे - **कर्मधारय**

➢ **आश्लिष्टसानुम् -** आश्लिष्टं सानु येन तम् - **(बहुव्रीहि समास)**

➢ **वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् -** वप्रक्रीडासु परिणतः तत्पुरुष स चासौ गजः **(कर्मधारय तत्पुरुष)**

➢ तमिव प्रेक्षणीयम् **(उपमित तत्पुरुष)** अथवा वप्रक्रीडापरिणत गज इव प्रेक्षणीयः तम् - **(कर्मधारयसमास)**

प्रत्यय

➢ **विप्रयुक्तः -** वि + प्र + युज् + क्त (वि+प्र+युज् +क्त)

➢ **कामी -** कम् + घञ् = कामः अथवा कामः अस्य अस्तीति काम + इनि = कामिन् (कामी)

➢ **कतिचित् -** कति + चित्

➢ **नीत्वा -** नी + क्त्वा

➢ **आश्लिष्टः -** आङ् + श्लिष् + क्त

➢ **आधान -** आ + धा + ल्युट्

➢ **प्रेक्षणीयं -** प्र + ईक्ष् + अनीयर्

धातुरूप -

➢ **ददर्श -** दृश् + लिट्। प्रथम पुरुष, एकवचन (परस्मैपद)

➢ **कतिचित् -** कति शब्द नित्य बहुवचनान्त है। इसमें चित् अव्यय का योग हुआ है।

➢ **अलङ्कार -** गजप्रेक्षणीयम् में उपमा वाचक शब्द ''इव'' लुप्त है अतः यहाँ लुप्तोपमा अलङ्कार है।

श्लोक से बनने वाले सम्भावित प्रश्न

➢ यक्ष कितने माह पर्वत पर व्यतीत कर चुका था? - **आठ माह**

➢ यक्ष ने पर्वत चोटी से किसे देखा? - **मेघ को**

➢ किस माह में यक्ष ने मेघ को सर्वप्रथम देखा? - **आषाढ माह के प्रथम दिन**

➢ यक्ष किस कारण अत्यन्त दुर्बल हो गया था? **अपनी प्रिया के विरह से**

➢ यक्ष ने अपने हाथ में क्या पहन रखा था? **स्वर्ण कङ्कण**

➢ यक्ष की कलाई किसके गिरने से सूनी हो गयी थी? - **स्वर्ण कङ्कण।**

श्लोक - 3

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥3॥

अन्वय - राजराजस्य अनुचरः अन्तर्वाष्पः कौतुकाधानहेतोः तस्य पुरः कथम् अपि स्थित्वा चिरम् दध्यौ मेघालोके सुखिनः अपि चेतः अन्यथावृत्ति भवति कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने दूरसंस्थे किम् पुनः।

शब्द	**अर्थ**
राजराजस्य	यक्षराज कुबेर का
अनुचरः	आँखो में आँसुओं को भीतर ही भीतर रोककर
कौतुकाधानहेतोः	उत्कण्ठा उत्पन्न करने वाले
तस्य	उस मेघ के
पुरः	सामने

कथमपि	किसी प्रकार, बड़े प्रयत्न से
स्थित्वा	खड़े होकर
चिरम्	बहुत समय तक
दध्यौ	सोचा
मेघालोके	मेघ के दिखाई देने पर
सुखिनः	सुखी व्यक्ति का
अपि	भी
चेतः	चित्त
अन्यथावृत्ति	दूसरे ही प्रकार के व्यवहार वाला
भवति	हो जाता है
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने	आलिङ्गन की इच्छा वाले व्यक्ति से
किम् पुनः	फिर कहना ही क्या है?
दूरसंस्थे	दूर रहने पर

अनुवाद - यक्षों के राजा कुबेर का सेवक आखों के अन्दर ही अन्दर आँसुओं को रोके हुए, उत्कण्ठा को उत्पन्न करने वाले उस मेघ के सामने किसी प्रकार ठहर कर देर तक सोचता रहा। मेघ के दर्शन होने पर सुखी व्यक्ति का भी चित्त दूसरे प्रकार की वृत्ति वाला (चञ्चल) हो जाता है, फिर कण्ठ के आलिङ्गन के इच्छुकजन प्रिया के दूर स्थित होने पर तो कहना ही क्या।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **राजराजस्य -** राज्ञां राजा राजराजः - **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्तर्वाष्पः -** अन्तः स्तम्भितं वाष्पं **(मध्यमपद लोपी)** यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कौतुकाधानहेतोः -** कौतुकस्य आधानं तस्य हेतोः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **मेघालोके -** मेघस्य आलोकः, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्यथावृत्ति -** अन्यथा वृत्तिः यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कण्ठाश्लेषप्रणयिनि -** कण्ठस्य आश्लेषः तस्य प्रणयी, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

प्रत्यय

- **अनुचर -** अनु + चर् + अच्
- **कौतुक -** कुतुक + अण्
- **आधानम् -** आङ् + धा + ल्युट्
- **स्थित्वा -** स्था + क्त्वा
- **पुरः, चिरम् -** अव्यय पद हैं दोनों
- **सुखिनः -** सुख + इनि
- **आश्लेष -** आङ् + श्लिष् + घञ् (भावे)
- **प्रणयी -** प्रणय + इनि
- **संस्था -** सम् + स्था + आङ्

धातुरूप

- **दध्यौ -** ध्यै + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में उत्तरार्द्ध से पूर्वार्द्ध स्थित चिन्तारूप पदार्थ का समर्थन होने से अर्थान्तरन्यास अलङ्कार और उत्तरार्द्ध में 'किं पुनर्दूरसंस्थे' में अर्थापत्ति अलङ्कार है। इस प्रकार अर्थान्तरन्यास और अर्थापत्ति के निरपेक्ष से स्थित होने के कारण **संसृष्टि अलङ्कार** है।

सम्भावितप्रश्न -

- राजराजस्य शब्द किसके लिए आया है? - **कुबेर के लिए**
- 'जने' शब्द यहाँ किसके लिए आया है? - **(प्रिया) यक्षणी के लिए**
- अपने आँसुओं को कौन अन्दर ही अन्दर रोके रहता है? - **यक्ष**
- 'दध्यौ' शब्द का धातु, लकार और वचन बताइये? **ध्यै + लिट् लकार**, प्रथमपुरुष, एकवचन
- मेघ को देखकर चित्त कैसा हो जाता है? - **चञ्चल**
- 'कि पुनर्दूरसंस्थे' में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थापत्ति**
- मेघालोके में कौन सा समास है? - **षष्ठी तत्पुरुष**

श्लोक - 4

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार॥4

अन्वय - नभसि प्रत्यासन्ने दयिताजीवितालम्बनार्थी सः जीमूतेन स्वकुशलमयीं प्रवृत्तिं हारयिष्यन् प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै प्रीत प्रीतिप्रमुखवचनम् स्वागतम् व्याजहार।

शब्द	**अर्थ**
नभसि	श्रावण मास के
प्रत्यासन्ने	सन्निकट आने पर
दयिताजीवितालम्बनार्थी	प्रिया के जीवन धारण के इच्छुक
सः	उस यक्ष ने
जीमूतेन	मेघ द्वारा
स्वकुशलमयीम्	अपने कुशल से पूर्ण
हारयिष्यन्	भेजने की इच्छा से
प्रत्यग्रैः	तत्काल तोड़े गये (ताजे)
कुटजकुसमैः	कुटज (पर्वतीय चमेली) के पुष्पों से
कल्पितार्घाय	अर्घ्य सामग्री तैयार करके
प्रीतः	प्रेमपूर्वक
प्रीतिप्रमुखवचनम्	प्रणय भरे शब्दों से
स्वागतम् व्याजहार	स्वागत कहा

अनुवाद - श्रावण मास के निकट आने पर प्रिया के जीवन को सहारा देने के इच्छुक उस (यक्ष) ने मेघ द्वारा अपने कुशलमय समाचार को भेजने की इच्छा से तत्काल तोड़े गये ताजे कुटज के पुष्पों से अर्घ्य सामग्री तैयार करके उस मेघ के लिए प्रसन्नतापूर्वक प्रणय भरे वचनों से स्वागत कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **दयिताजीवितालम्बनार्थी -** दयितायाः जीवितम् - **(षष्ठी तत्पुरुष)** दयिताजीवितम् तस्य आलम्बनम् - दयिताजीवितालम्बनार्थी - **(षष्ठी तत्पुरुष समास)**

- **जीमूतेन** - जीवनस्य उदकस्य मूतः पटबन्धः जीमूतः तेन **(तृतीया तत्पुरुषसमास)**
- **स्वकुशलमयीं** - स्वस्य कुशलम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **प्रत्यग्रैः** - अग्रं प्रति गतः प्रत्यग्रः तैः **(बहुव्रीहि)**
- **कल्पितार्घाय** - कल्पितोऽर्घो यस्मै तस्मै **(बहुव्रीहिसमास)**
- **प्रीतिप्रमुखवचनम्** - प्रीतिः प्रमुखं येषां येषु वा तानि **(बहुव्रीहि समास)** तानि वचनानि यस्मिन् कर्मणि तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
- **स्वागतम्** - सुशोभनम् आगतं तत् **(नित्यकर्मधारय)**

प्रत्यय -

- **प्रत्यासन्ने** - प्रति + आ + सद् + क्त
- **दयिताजीवितालम्बनार्थी** - जीव + क्त , आङ् + लबि + ल्युट् दयिताजीवितालम्बन + णिनि (इन्)
- **स्वकुशलमयीम्** - स्वकुशल + मयट् +ङीप्
- **हारयिष्यन्** - हृ + णिच् = हारि + इट् + स्य + शतृ
- **प्रीतः** - प्रीञ् + क्त
- **प्रीति** - प्रीञ् + क्तिन्
- **स्वागतम्** - सु + आ + गम् + क्त
- **व्याजहार** - वि + आङ् + हृञ् + लिट्
- **प्रवृत्तिम्** - प्र + वृत् + क्तिन्

कारक

- **कुटजकुसुमैः** - अर्घ्य क्रिया के अत्यन्त उपकारक होने से 'साधकतमं करणम्' इससे करण संज्ञा होकर कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई।
- **नभसि** - नभस् (नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी एकवचन)
- **अलङ्कार** - इस श्लोक में प्री, प्र, व , त की असकृत् होने से **वृत्त्यनुप्रास** शब्दालङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न -

- यक्ष ने किससे अर्घ्य सामग्री तैयार की? - **कुटज के पुष्पों से**
- जीमूतेन शब्द किसके लिए आया है? - **मेघ के लिए**
- स्वागतम् शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु + आ + गम् + क्त**
- 'प्रीतिप्रमुखवचनम्' शब्द में कौन सा समास है? **बहुव्रीहि**
- 'नभसि' शब्द से किस महीने का बोध होता है? - **श्रावण माह का**
- नभसि शब्द का लिङ्ग और वचन बताइये? **नभस् शब्द - सप्तमी एकवचनम्**

श्लोक - 5

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥5

अन्वय - धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः मेघः क्व? पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः संदेशार्थाः क्व? इति औत्सुक्यात् अपरिगणयन् गुह्यकः तं ययाचे, हि कामार्ताः चेतनाचेतनेषु प्रकृतिकृपणाः।

शब्द	अर्थ
धूमज्योतिः सलिलमरुताम्	धुआँ, अग्नि, जल व वायु का
सन्निपातः	(संघटन) मिश्रण
मेघः	बादल
क्व	कहाँ?
पटुकरणैः	समर्थ इन्द्रियों वाले
प्राणिभिः	प्राणियों के द्वारा
प्रापणीयाः	पहुचाने योग्य
सन्देशार्थाः	संदेशवाक्य
इति	इस बाद को
औत्सुक्यात्	उत्कण्ठा के कारण
अपरिगणयन्	विचार न करते हुए
गुह्यकः	यक्ष ने
तम्	उस मेघ से
ययाचे	याचना की
हि	क्योंकि
कामार्ताः	काम से पीड़ित प्राणी
चेतनाचेतनेषु	जड़ और चेतन पदार्थों के विषय में
प्रकृतिकृपणाः	स्वभाव से दीन, विवेकशून्य

अनुवाद - धूम, अग्नि, जल और वायु का मिश्रण मेघ कहाँ? और समर्थ इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा भेजे जाने योग्य सन्देश रूपी वस्तु कहाँ? इसका उत्कण्ठा के कारण विचार नहीं किया, क्योंकि काम पीड़ित चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से दीन होते है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **धूमज्योतिःसलिलमरुतां** - धूमश्च ज्योतिश्च सलिलं च मरुच्च धूमज्योतिः सलिलमरुतः **(इतरेतर द्वन्द्वसमास)**
- **पटुकरणैः** - पटूनि करणानि येषां तैः **(बहुव्रीहि)**
- **संदेशार्थाः** - संदेशाः ते एव अर्थाः **(कर्मधारय)**
- **औत्सुक्यात्** - उत्सुकस्य भावः औत्सुक्यं तस्मात् कारणात् **(बहुव्रीहि)**
- **अपरिगणयन्** - न परिगणयन् इति अपरिगणयन् **(नञ् तत्पुरुष समास)**
- **कामार्ता** - कामेन आर्ता **(तृतीया तत्पुरुष)**
- **चेतनाचेतनेषु** - चेतनाश्च अचेतनाश्च तेषु **(द्वन्द्व समास)**
- **प्रकृतिकृपणाः** - प्रकृत्या कृपणाः **(तृतीया तत्पुरुष समास)**

प्रत्यय -

- **सन्निपातः** - सम्+नि+पत्+घञ्
- **पटुकरणैः** - पटु+डुकृञ्+ल्युट्
- **सन्देशः** - सम्+दिश्+घञ्
- **प्राणिभिः** - प्राण+इनि
- **प्रापणीयाः** - प्र+आप्+णिच्+अनीयर्

- **औत्सुक्यात् -** उत्सुक+ष्यञ्
- **अपरिगणयन् -** नञ्+परि+गण्+शतृ
- **गुह्यकः -** गुह+ण्वुल्

धातुरूप-

- **ययाचे -** याच् + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** यहाँ मेघ तो अचेतन है किन्तु सन्देश पूर्ण इन्द्रिय से सम्पन्न व्यक्ति ही ले जाने योग्य होता है। इस प्रकार दो विपरीत पदार्थों का कथन होने के कारण **विषमालङ्कार** हुआ।
  इस श्लोक के चतुर्थ चरण के सामान्य से तृतीय चरण के विशेष कथन का समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

- मेघ कितने तत्वों के मिश्रण से बना है? **4 (चार तत्वों से)**
- मेघ के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्वों के नाम लिखिए? **धूआँ, अग्नि, जल, वायु**
- जड़ और चेतन के विषय में स्वभाव से कौन दीन होता है? **कामपीड़ित**
- सन्निपात शब्द का क्या अर्थ है? - **मिश्रण (संघटन)**
- 'ययाचे' शब्द का लकार और वचन लिखिए? **याच्** लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- 'गुह्यकः' शब्द किसके लिए आया है? **यक्ष के लिए**
- पटुकरणैः शब्द में कौन समास है? **पटूनि करणानि येषां तैः** (बहुव्रीहि)

श्लोक- 6

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥6

अन्वय - त्वाम् भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां वंशे जातं मघोनः कामरूपं प्रकृतिपुरुषं जानामि। तेन विधिवशात् दूरबन्धुः अहं त्वयि अर्थित्वं गतः। अधिगुणे याच्ञा मोघा वरं अधमे लब्धकामा न।

शब्द	**अर्थ**
त्वाम्	तुमको
भुवनविदिते	लोकप्रसिद्ध
पुष्करावर्तकानाम्	पुष्कर और आवर्तक नाम के
वंशे	कुल में
जातम्	उत्पन्न हुए
कामरूपम्	अपनी इच्छानुसार शरीर को धारण करने वाले
मघोनः	इन्द्र का
प्रकृतिपुरुषम्	प्रधान पुरुष के रूप में
जानामि	जानता हूँ
तेन	इस कारण से
विधिवशात्	भाग्यवश
दूरबन्धुः	अपनी प्रियतमा से वियुक्त
अहम्	मैं
त्वयि	तुमसे
अर्थित्वं गतः	अधिक गुण वाले व्यक्ति से
याच्ञा	याचना
मोघा	निष्फल
अपि	भी
वरम्	अच्छी
अधमे	नीच व्यक्ति के विषय में
लब्धकामाऽपि	सफल होती हुई
न वरम्	अच्छी नही

अनुवाद - (हे मेघ मैं) तुमको संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक मेघों के वंशो में उत्पन्न इन्द्र का इच्छानुसार रूप धारण करने वाला प्रधान पुरुष जानता हूँ।
इसलिए दैवयोग से दूर स्थित बन्धु वाला मैं तुम्हारे विषय में याचकत्व को प्राप्त हुआ हूँ। अधिक गुण वाले से की गयी याचना निष्फल होने पर भी अच्छी है, परन्तु (निर्गुण) नीच से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नही।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **भुवनविदिते -** भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **पुष्करावर्तकानाम् -** पुष्कराश्च आवर्तकाश्च, तेषाम् (द्वन्द्व समास)
- **कामरूपम् -** कामं रूपं कामेन रूपं वा यस्य तम् (बहुव्रीहि)
- **प्रकृतिपुरुषम् -** प्रकृतिश्चासौ पुरुषश्च (कर्मधारय)
- **दूरबन्धुः -** दूरे बन्धुः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विधिवशात् -** विधेः वशः, तस्मात् (बहुव्रीहिसमास)
- **लब्धकामा -** लब्धः कामः यया सा (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

- **विदिते -** विद् + क्त
- **जातम् -** जन् + क्त
- **बन्धुः -** बन्ध् + उ
- **अर्थित्वम् -** अर्थ + णिनि - अर्थिन् + त्व
- **गतः -** गम् + क्त
- **याच्ञा -** याच् + नङ् (श्चुत्व) + टाप् (अ)
- **मोघा -** मुह् + घञ् (अ)

धातुरूप-

- **जानामि -** ज्ञा + लट् लकार उत्तमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** "याच्ञा मोघा लब्धकामा" यहाँ सामान्य अर्थ से विशेष अर्थ का समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलंकार है।

सम्भावित प्रश्न -

- इच्छानुसार रूप धारण करने वाला कौन है? **मेघ**
- यक्ष मेघ को किसका प्रधान सेवक मानता है? **इन्द्र का**
- यक्ष मेघ को किस कुल में उत्पन्न हुआ बताता है? **पुष्कर और आवर्तक कुल में**
- अधिक गुण वाले से की गयी निष्फल कामना भी किस प्रकार की है? - **श्रेष्ठ (या अच्छी)**
- 'दूरबन्धुः' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**
- भुवनविदिते में कौन सा समास है? - **भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष)**
- इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक - 7

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या॥7

अन्वय - पयोद! त्वं सन्तप्तानां शरणम् असि तत् धनपति क्रोधविश्लेषितस्य मे सन्देशं प्रियायाः हर, ते बाह्योद्यानस्थित-हरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या अलका नाम यक्षेश्वराणां वसतिः गन्तव्या।

शब्द	**अर्थ**
पयोद	हे मेघ
त्वम्	तुम
सन्तप्तानाम्	ताप से तपे हुओं का
शरणम्	रक्षक
धनपतिक्रोध-	कुबेर के क्रोध से-
विश्लेषितस्य	(प्रिया से) वियुक्त किये गये
सन्देशम्	संदेश को
प्रियायाः हर	प्रिया के पास ले जाओ
बाह्योद्यानस्थितहर-शिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या	जिसके महल, बाहर के उद्यान में रहने वाले भगवान् शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्रिका से धुले रहते हैं
यक्षेश्वराणाम्	श्रेष्ठ यक्षों की या कुबेर की
वसतिः	निवासस्थान (नगरी)
गन्तव्या	जाने योग्य है!

अनुवाद - (हे) मेघ! तुम (विरह) पीड़ितों के रक्षक हो, इसलिए कुबेर के क्रोध से वियुक्त हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास ले जाओ। तुम्हे बाहर के उद्यान में विद्यमान शिव के सिर पर स्थित चाँदनी से उज्ज्वल महलों से युक्त अलका नाम वाली यक्षों के स्वामी कुबेर की नगरी जाना है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य -** धनस्य पतिः (षष्ठीतत्पुरुष) धनपतेः क्रोधः (षष्ठी तत्पुरुष) तेन विश्लेषितस्य (तृतीया तत्पुरुष)
- **बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या -** बाह्ये उद्याने स्थितस्य हरस्य शिरसि (बहुव्रीहि) अथवा चन्द्रिका तया धौतानि हर्म्याणि यस्यां सा तथोक्ता (बहुव्रीहि) बाह्यं च तत् उद्यानम् (कर्मधारय)
- **यक्षेश्वराणां -** यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष) अथवा यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

प्रत्यय

- **पयोद -** पयस् + दा + क
- **सन्तप्तानाम् -** सम् + तप् + क्त
- **विश्लेषित -** वि + श्लि + णिच् + क्त
- **प्रियायाः -** प्रीञ् + क + टाप्
- **अलका -** अल् + क्वुन् +टाप्
- **नाम -** यह प्रकाश्य सूचक अव्यय है।
- **गन्तव्या -** गम् + तव्य
- **हर -** हृञ् लोट् मध्यमपुरुष, एकवचन
- **वसति -** वस् + अति

विशेष -

- **अलका** यह कुबेर की राजधानी है।
- कैलाश पर बसी मानी जाती है।
- इसको वसुन्धरा, वसुस्थली, प्रभा भी कहते हैं।
- **अलति भूषयति इति अलका**
- **बाह्योद्यान -**
- इसका नाम **चित्ररथ** अथवा **वैभ्राज** बतलाया गया है।
- अलका में ही कुबेर का रम्य उद्यान है।
- **अलङ्कार -** हे पयोद! इस सार्थक विशेष्य से **परिकरालङ्कार** है।

सम्भावित प्रश्न-

- कुबेर की नगरी कौन सी है? **अलका**
- शिव के सिर की चाँदनी से कहाँ के महल अत्यन्त उज्ज्वल हैं? - **अलका नगरी के**
- विरह पीड़ितों का रक्षक किसे कहा गया है? - **मेघ को**
- पयोद शब्द किसके लिए आया है? **मेघ के लिए**
- अलका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **अलति भूषयति इति अलका - अल् + क्वुन् + टाप्**
- 'यक्षेश्वराणां' में कौन समास है? यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष)
  अथवा
  यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

श्लोक - 8

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥8

अन्वय - पवनपदवीम् आरूढं त्वां पथिकवनिताः प्रत्ययात् आश्वसत्यः उद्गृहीतालकान्ताः प्रेक्षिष्यन्ते। त्वयि सन्नद्धे विरहविधुरां जायां कः उपेक्षेत? अन्य अपि यः जनः अहम् इव पराधीनवृत्तिः न स्यात्।

शब्द	**अर्थ**
पवनपदवीम्	वायु मार्ग में, आकाश में
आरुढम्	चढ़े हुए
त्वाम्	तुमको
पथिकवनिता	परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ
प्रत्ययात्	(पति के शीघ्र आगमन के) विश्वास से
आश्वसत्यः	आश्वस्त होकर
उद्गृहीतालकान्ताः	अपने घुँघराले बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए
प्रेक्षिष्यन्ते	(उत्कण्ठा से) देखेंगी
त्वयि	तुम्हारे
सन्नद्धे	उमड़ने पर
विरह विधुराम्	विरह से व्याकुल
जायाम्	कान्ता की
उपेक्षेत	उपेक्षा करेगा
अन्य	दूसरा
अहमिव	मेरी तरह
पराधीनवृत्तिः	दूसरों के अधीन जीविका वाला
न स्यात्	न हो तो।

➢ **अनुवाद-** वायु मार्ग में चढ़े हुए तुमको परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ पति के शीघ्र आगमन के विश्वास से आश्वस्त होकर बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए उत्कण्ठा से देखेंगी। (क्योंकि) तुम्हारे उमड़ने पर विरह से व्याकुल पत्नी की कौन उपेक्षा करेगा, जो मेरे समान दूसरों के अधीन आजीविका वाला न हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

➢ **पवनपदवीम् -** पवनस्य पदवीम् (षष्ठी तत्पुरुष)
➢ **उद्गृहीतालकान्ताः -** अलकानाम् अन्ताः (षष्ठी तत्पुरुष) उद्गृहीतालकाऽन्ता याभिस्ताः (बहुव्रीहि)
➢ पथिकवनिताः - पथिकानाम् वनिताः (षष्ठी तत्पुरुष)
➢ विरहविधुराम् - विरहेण विधुरा (तृतीया तत्पुरुष)
➢ विधुरा - विगता धूः अस्या इति विधुरा (बहुव्रीहि)
➢ पराधीनवृत्तिः - परस्मिन् अधीना वृत्तिः यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रत्यय -

➢ पवनपदवीम् - पुनातीति पवनः पू+ल्युट्
➢ आरूढम् - आङ्+रुह्+क्त
➢ पथिकवनिता - पथिन्+ष्कन्
➢ प्रत्ययात् - प्रति+इ+अच्
➢ आश्वसत्यः - आङ्+श्वस्+शतृ (ङीप् , स्त्रीत्व की विवक्षा में)
➢ प्रेक्षिष्यन्ते - प्र+ईक्ष्+लृटलकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
➢ सन्नद्धः - सम्+नह्+क्त
➢ जायां - जन्+यक्+टाप्
➢ विरहः - वि+रह्+अच्

धातुरूप -

➢ स्यात् - अस् विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
➢ उपेक्षेत - उप + ईक्ष् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन

कारक -

➢ प्रत्ययात् - 'विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्' सूत्र से हेतु में पञ्चमी हुई।
➢ **अलङ्कार -** इस श्लोक में पकार, तकार और दकार की बार-बार आवृत्ति होने से वृत्त्युनुप्रास नामक शब्दालङ्कार है।

(2) सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ पराधीनवृत्ति वाला कौन है? **यक्ष**
➢ पथिकवनिताः शब्द में कौन सा समास है? **पथिकानाम् वनिताः (षष्ठीतत्पुरुष)**
➢ 'प्रत्ययात्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **प्रति+इ+अच्**
➢ इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक -9

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥9

अन्वय - अनुकूलः पवनः त्वां मन्दं मन्दं यथा नुदति, अयं सगन्धः ते वामः चातकः मधुरं नदति। गर्भाधानक्षणपरिचयात् खे आबद्धमालाः बलाकाः नयनसुभगं भवन्तम् नूनं सेविष्यन्ते।

अर्थ	**अर्थ**
अनुकूलः	मृदु गति से पीछे-पीछे चलने वाला
पवनः	वायु
मन्दं मन्दम्	बहुत धीरे, मन्थर गति से
यथा त्वां	तुम्हारे समान ही
नुदति	प्रेरित कर रहा है
सगन्धः	गर्व सहित
ते	तुम्हारे
वामः	बाईं ओर स्थित (वामभागस्थ)
चातकः	पपीहा पक्षी
मधुरं नदति	मधुर शब्द कर रहा है
गर्भाधानक्षणपरिचयात्	गर्भाधान के आनन्द से परिचित होने के कारण
खे	आकाश में

आबद्धमालाः	पंक्ति में बँधी हुई
बलाकाः	बगुलियाँ
नयनसुभगम्	नयनों को सुन्दर लगने वाले
भवन्तम्	तुम्हारा
नूनम्	निश्चय ही
सेविष्यन्ते	आश्रय लेगीं (सेवन करेंगी)

अनुवाद - और जैसे कि अनुकूल वायु तुम्हें धीरे धीरे प्रेरित कर रहा है तथा गर्व से भरा यह पपीहा तुम्हारे वाम भाग में स्थित होकर मधुर शब्द कर रहा है। निश्चय ही गर्भ धारण करने वाली बगुलियाँ नेत्रों को सुन्दर लगने वाले आपकी आकाश में सेवा करेंगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **गर्भाधानक्षणपरिचयात् -** गर्भस्य आधानम् (षष्ठी तत्पुरुष) तदेव क्षणः (कर्मधारय समास) तस्मिन् परिचयः (सप्तमी तत्पुरुष) अथवा
- गर्भाधाने क्षमः समर्थः परिचयः संगमो यस्य तम् (बहुव्रीहि समास)
- **आबद्धमालाः –** आबद्धा माला याभिः ताः (बहुव्रीहि समास)
- **नयनसुभगम् -** नयनयोः सुभगः (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- **आधान -** आ+धा+ल्युट्
- **आबद्ध -** आ+बन्ध्+क्त
- **बलाका -** बल+अक्+अच्+टाप्

धातुरूप -

- नुदति=नुद्, लट्लकार , प्रथम पुरुष, एकवचन
- नदति - णद् लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- सेविष्यन्ते - सेव् लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में मकार, नकार, दकार, तथा तकार की असकृत् आवृत्ति होने से अनुप्रास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

- मेघ के बायें भाग में कौन स्थित है? **चातक (पपीहा)**
- 'नयनसुभगम्' मे कौन सा समास है-**षष्ठीतत्पुरुष/ नयनयोः सुभगः**
- बलाका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **बल+अक्+अच्+टाप्**
- सेविष्यन्ते का धातु और वचन बताइये? **सेव + लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन**

श्लोक - 10

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥10

अन्वय - अविहतगतिः दिवसगणनातत्पराम् एकपत्नीं तां भ्रातृजायां च अव्यापन्नाम् अवश्यं द्रक्ष्यसि, हि आशाबन्धः अङ्गनानां कुसुमसदृशं विप्रयोगे सद्यः पाति प्रणयि हृदयं प्रायशः रुणद्धि।

शब्द	**अर्थ**
अविहतगतिः	बेरोक टोक गति वाला
दिवसगणनातत्पराम्	दिनों की गणना में लगी हुई
एकपत्नीम्	पतिव्रता
भ्रातृजायां	भाभी को
अव्यापन्नाम्	जीवित (आने की आशा से)
अवश्यं	निश्चित हि
द्रक्ष्यसि	देखोगे
आशाबन्धः	आशा का बन्धन
अङ्गनानाम्	महिलाओं का
कुसुमसदृशं	फूल के समान कोमल
विप्रयोगे	वियोग में
सद्यःपाति	शीघ्र नष्ट हो जाने वाला
प्रणयि हृदयं	प्रेमी हृदय को
प्रायशः	प्रायः
रुणद्धि	रोके रखता है।

अनुवाद - (हे मेघ) अबाध गति वाले तुम दिन गिनने में लगी हुई उस पतिव्रता भाभी को अवश्य ही जीवित देखोगे। (क्योंकि) आशा का बन्धन फूल के समान शीघ्र कुम्हलाने वाले स्त्रियों के प्रेमी हृदय को वियोग में प्रायः थामे रहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास-

- दिवसगणनातत्पराम् - दिवसानां गणना (षष्ठी तत्पुरुष) तस्यां तत्परा ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)
- अव्यापन्नाम् - न व्यापन्ना (नञ् तत्पुरुष समास)
- एकपत्नीम् - एकः पतिः यस्याः सा एकपत्नी (बहुव्रीहि) एका चाऽसौ पत्नी ताम् एकपत्नी (कर्मधारय)
- भ्रातृजायां - भ्रातुः जाया भ्रातृजाया (षष्ठी तत्पुरुष)
- अविहतगतिः - अविहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि) अथवा न विहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- आशाबन्धः - आशा एव बन्धः (कर्मधारय समास) आशायाः बन्धः (षष्ठी तत्पुरुष)
- कुसुमसदृशम् - कुसुमेन सदृशम् (तृतीया तत्पुरुष)
- सद्यःपाति - सद्यः पततीति तच्छीलं (उपपद तत्पुरुष)

प्रत्यय

- गणना - गण+णिच्+युच्+टाप्
- गतिः - गम्+क्तिन्
- विहतः - वि+हन्+क्त

- बन्धः - बन्ध+घञ्
- प्रायशः - प्राय+शस्
- अङ्गना - अङ्ग+नङ्+टाप्
- सद्यःपाति - सद्यस्+पत्+णिनि
- विप्रयोगे - वि+प्र+युज्+घञ्

धातुरूप -

- दक्ष्यसि - दृश्+लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
- रुणद्धि - रुध् लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक की तृतीय पंक्ति में प्रयुक्त आशाबन्ध में रूपक अलङ्कार है।
- कुसुमेन तुल्यम् इति कुसुमसदृशम् इस पद में लुप्तोपमा अलङ्कार है।
- उत्तरार्द्ध में सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

- भ्रातृजाया शब्द किसके लिए आया है? **मेघ की पत्नी लिए**
- अविहतगति वाला कौन है? मेघ
- गणना शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? गण् + णिच् + युच् + टाप्

मेघदूतम्-बिन्दुवार अध्ययन

- ऋतुओं का वर्णन किसमें पाया जाता है? - **ऋतुसंहार में**
- ऋतुसंहार है - **गीतिकाव्य**
- ऋतुसंहारे कियद् ऋतूनां वर्णनमस्ति - **6 (षट्)**
- महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'ऋतुसंहार' कहलाता है - **गीतिकाव्य**
- राजन्ते ऋतुसंहारे सर्गाः कति वदाधुना - **षट्**
- अध उक्तेष्वेको लघुत्रय्यां नास्ति - **ऋतुसंहारम्**
- मेघदूतम् के रचयिता हैं - **कालिदास**
- कालिदास द्वारा विरचित खण्डकाव्य है - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् के कथानक का मूलस्रोत है - **कविकल्पित**
- 'कालिदासस्य गीतिकाव्ये विरहव्यथा' वर्णिता - **यक्षस्य**
- मेघदूत किस विधा की रचना है? - **गीतिकाव्य**
- मेघदूतम् किस श्रेणी का काव्य है? - **दूतकाव्य**
- मेघदूत है - **खण्डकाव्य**
- खण्डकाव्य है - **मेघदूतम्**
- मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है? - **मन्दाक्रान्ता**
- मेघदूतम् में किसको संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्यप्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त है जो इस नाम से विख्यात है - **सन्देशकाव्य**
- मेघदूतोपरि मल्लिनाथेन विरचिता टीका ..... अस्ति? - **सञ्जीवनी**
- मेघदूते कुबेरेण निर्वासितो यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे? - **रामगिर्याश्रमेषु**
- मेघदूतम् का प्रधान रस है? - **विप्रलम्भ शृङ्गाररस**
- केवलं मन्दाक्रान्ताच्छन्दसि निबद्धम् - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं- **17**
- मेघदूतम् का अङ्गीरस है - **वियोग शृङ्गार**
- मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है - **खण्डों में**
- मेघदूतम् कितने भागों में विभक्त है - **दो**
- मेघदूतम् का प्रमुख पात्र है - **यक्ष**
- यक्ष का स्वामी कौन था? - **कुबेर**
- यक्ष को कितनी अवधि के लिये अपनी पत्नी से दूर रहना था? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् का नायक है? - **यक्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष शापित है - **कुबेर के द्वारा**
- विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?- **रामगिरि पर्वत में**
- यक्ष की विरहकथा किस ग्रन्थ में वर्णित है?- **मेघदूत में**
- यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथम दिन को देखा था - **आषाढ के प्रथम दिन**
- पुराणों में 'मेघदूतम्' के विरही यक्ष का नाम मिलता है - **हेममाली**
- विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?- **अलकापुरी**
- मेघदूते कस्याः नगर्याः वर्णनमस्ति - **उज्जयिन्याः**
- कस्य काव्ये मेघः दूतभावेन कल्पितः - **कालिदासस्य**
- कस्य काव्यस्यारम्भः 'कश्चित्' पदेन भवति? -**मेघदूतस्य**
- 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तःस कामी' मेघदूत की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है? -**नीत्वा मासान्कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः**
- मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे? - **राजहंस**
- 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है - **यक्षिणी का**
- मेघदूत में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है? - **चार**
- कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन है? - **कामार्त**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है - **मेघ का**
- मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है? - **चातक की**
- मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है- **उदयन का**
- ''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी''– यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है - **पर्वत से**
- 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः'

प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है - **मेघ समूह से**
- मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है - **मेघों का कुल**
- 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसाः दशार्णाः', यहाँ 'दशार्णाः' है एक - **देश**
- मेघदूतम् में 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' है - **मेघ**
- 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' होते हैं - **कामार्ताः**
- राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं - **मानसरोवर**
- यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है?- **आठ माह**
- ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है - **यक्षिणी**
- यक्ष को शाप किसने दिया था - **कुबेर**
- 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं? - **कामार्त**
- ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है - **सीता**
- कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है - **वृक्ष से**
- स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है - **स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना**
- 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'- यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है -**भगवान् विष्णु**
- 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है - **बादल से**
- मेघदूत के प्रथम श्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ है?- **कुमति च**
- स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है? - **कुसुमसदृश**
- सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है?- **रिक्त (मेघ)**
- विदिशा नगरी में कौन-सी नदी थी? - **वेत्रवता**
- 'कृतान्तः' का अर्थ है - **दैव (भाग्य)**
- मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल ग्रहण करने की सलाह दी गयी है? - **नर्मदा (रेवा)**
- 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है- **चार माह**
- 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा? - **अपने कर्त्तव्य पालन में भूल करने के कारण शापवश**
- विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है- **नर्मदा (रेवा)**
- यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था - **देवप्रबोधिनी एकादशी**
- 'कुन्द' का पुष्प होता है - **सफेद**
- 'शूली' का अर्थ है - **शिव**
- 'कान्तोदन्त' का अर्थ है - **प्रियतम का वृत्तान्त**
- उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है?- **महाकाल**
- किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है- **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है? - **पुष्पों से**
- 'शफर' से अभिप्राय है- **जल में चमकने वाली एक छोटी मछली**
- मेघदूतम् में यक्ष 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' कहकर मेघ से किस नगरी में जाने का अनुरोध करता है? - **उज्जयिनी**
- आसु कस्याः नद्या उल्लेखो मेघदूते नास्ति? - **तुङ्गभद्रायाः**
- 'मेघ' एक अचेतन, ज्ञान शून्य, धुआँ-प्रकाश और वायु का - **कामार्ता हि प्रकृतिकृप-** सम्मिश्रण है। सन्देश तो किसी अचेतन प्राणी के द्वारा ही भेजा
- कालिदास का जन्मस्थान अधिकांश विद्वान् उनके ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर उज्जयिनी मानते हैं। - **वक्रः पन्था यदपि भवतः**
- पूर्वमेघ में भी कुछ श्लोकों से इसी अभिप्राय की ओर संकेत मिलता है। निम्नलिखित में से किस श्लोक को उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित किया जाता है। - **प्रस्थितस्योत्तराशाम्**
- मेघदूत मे किस नगरी का उल्लेख मिलता है? - **अलका**
- 'हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या' रूपेण वर्णिता नगरी अस्ति- **अलका**
- मेघदूते 'राजराजस्य दध्यौ' इतिपद्ये 'राजराजस्य' इति पदेनाभिहितोऽस्ति - **कुबेरः**
- अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते - **मेघदूते**
- कालिदास ने किस ग्रन्थ में अमरकण्टक के सौन्दर्य का चित्रण किया है? - **मेघदूतम्**
- विदिशा .... नदी के तट पर स्थित है- **बेतवा**
- मेघदूते 'यक्षेश्वराणां वसतिः' का वर्णिता? - **अलका**
- अलकापुरी केषां वसतिः? - **यक्षेश्वराणाम्**
- मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति - **रामगिर्याश्रमः**
- 'वक्रः पन्था यदपि' इति सङ्केतेन का नगरी ज्ञाता भवति? - **उज्जयिनी**
- मेघदूते इयं नगरी नास्ति वर्णिता - **वाराणसी**
- कविसमयानुसारेण वर्षाकाले के मानसं यान्ति? - **हंसाः**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'। किसने यह लिखा है? - **कालिदास**
- मेघदूतम् में 'दिङ्नाग' कौन हैं? - **बौद्ध**
- प्रसिद्ध टीकाकार, मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं? - **121**
- मेघदूतम् के प्रारम्भ में निम्न में से किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है? -**वस्तुनिर्देशात्मक**
- अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस

दिशा में मेघदूतम् में बताया गया है? - उत्तर

➤ 'मेघदूतम्' में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है?
- **अयोध्या**

➤ मेघदूतम् अस्मिन् गीतिकाव्ये का जह्नुकन्या?- **गङ्गा**

➤ "न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।"
उपर्युक्त में कौन सा छन्द है? - **मन्दाक्रान्ता**

➤ 'कान्ताविरहगुरुणा' इत्यत्र कति पदानि सन्ति? - **एकम्**

➤ "कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु"
- यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**

➤ "रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय"
का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**

➤ निम्नांकित में कौन-सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है -
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।

➤ 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'
यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है। - **मेघदूतम्**

➤ "प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार" कुत्रेयमुक्तिः।
- **मेघदूते**

➤ मेघदूतम् काव्य का खड़ी बोली मे अनुवाद किया है?
- **राजा लक्ष्मण सिंह ने**

➤ "स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु"
सूक्ति किस ग्रन्थ में है? - **मेघदूतम् में**

➤ "न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः"
उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **मेघदूतम् से**

➤ "के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः"
यह सूक्ति इस रचना से उद्धृत है - **मेघदूतम्**

➤ "जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्' यह उक्ति है- **मेघदूते**

➤ "वेणीभूतप्रतनुसलिलातामतीतस्य सिन्धुः" इयं पंक्तिः अस्ति
- **मेघदूतस्य**

➤ "प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः"
यह श्लोकांश उद्धृत है - **मेघदूतम् से**

➤ "कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण" इस श्लोक का सन्देश है
- **सुख-दुःख परिवर्तनशील है।**

➤ कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।
उपर्युक्त श्लोकांश किस ग्रन्थ में मिलता है? - **मेघदूतम्**

➤ "सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि"
– इस सूक्ति वाला ग्रन्थ है -**मेघदूतम्**

➤ "श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं.........."
इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते? - **मेघदूते**

➤ 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' कुतः उद्धृतम्-
मेघदूतम्

➤ 'मेघे माघे गतं वयः' कस्येयमुक्तिः? - **मल्लिनाथस्य**

➤ विप्रलम्भश्रृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये - **मेघदूते**

➤ 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'
पंक्ति का सम्बन्ध किस काव्य से है? - **मेघदूतम्**

➤ 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाऽचेतनेषु' इति उक्तिः विद्यते?-
मेघसन्देशे

➤ "कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा"
– इत्यंशः कस्य ग्रन्थस्य प्रथमे श्लोके विद्यते - **मेघदूतस्य**

➤ 'त्वत्सम्पर्कात् पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।'
इत्यस्मिन् पद्यांशे कः अर्थालङ्कारः अस्ति? - **उत्प्रेक्षा**

➤ 'या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्।'
इत्यस्य कः शब्दः श्लेषयुक्तः अस्ति? - **उच्चैर्विमाना**

मेघदूतम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. मेघ की पत्नी है–
(A) अभिसारिका (B) विशालाक्षी
(C) विद्युत् (D) उज्जयिनी नगरी

2. "ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्" यह किसके कथन का अनुवाद है–
(A) मैक्समूलर (B) क्षेमेन्द्र
(C) गेटे (D) डॉ0 कीथ

3. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) दण्डी ने (D) क्षेमेन्द्र ने

4. 'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) जयदेवस्य (B) बाणस्य
(C) राजशेखरस्य (D) मल्लिनाथस्य

5. सुमेलित करें–

कथनम्	**वक्ता**
(1) "पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः"	(क) मल्लिनाथ
(2) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु"	(ख) उद्भट
(3) "श्रृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु"	(ग) बाणः

(4) "उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्" (घ) राजशेखर

(A) (1) क (2) ग (3) ख (4) घ
(B) (1) घ (2) क (3) ख (4) ग
(C) (1) क (2) ग (3) घ (4) ख
(D) (1) क (2) ख (3) घ (4) ग

6. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, क्षिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) चर्मण्वती, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

7. पूर्वमेघ में कालिदास किस नगरी का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करते हैं–
(A) अलका का (B) उज्जयिनी का
(C) दशपुर का (D) विदिशा का

8. किस पर्वत समूह का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नहीं किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

9. सुमेलित करें– कथनम् वक्ता
(1) कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती (क) श्रीकृष्णः
(2) कालिदासकविता नवं वयः (ख) मम्मटः
(3) कालिदासादीनामिव यशः (ग) मल्लिनाथः
(4) न कालिदासादपरस्य वाणी (घ) उद्भटः
(A) (1) ग (2) घ (3) ख (4) क
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ
(C) (1) क (2) ख (3) ग (4) घ
(D) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क

10. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह सूक्ति है–
(A) पूर्वमेघ में (B) उत्तरमेघ में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) शृङ्गारशतकम् में

11. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह कथन है–
(A) पूर्वमेघ के 5वें श्लोक में
(B) पूर्वमेघ के 6वें श्लोक में
(C) पूर्वमेघ के 7वें श्लोक में
(D) पूर्वमेघ के चतुर्थ श्लोक में

12. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कालिदास ने इन सुन्दर वचनों को कहा है–
(A) पूर्वमेघ के पूर्वार्द्ध में (B) उत्तरमेघ के उत्तरार्ध में
(C) उत्तरमेघ के पूर्वार्द्ध में (D) पूर्वमेघ के उत्तरार्ध में

13. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है–
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और सन्तोषी

14. यक्ष मेघ का प्रथम दर्शन कहाँ करता है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) अलकापुरी में (D) विन्ध्यपर्वत में

15. कालिदास का मेघ रूपी दूत की कल्पना प्रेरित है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकिरामायण से
(C) भागवतपुराण से (D) वेदों से

16. किस ग्रन्थ में एकमात्र मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग मिलता है–
(A) गीतगोविन्दम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मेघदूतम् में (D) रघुवंशम् में

17. सम्पूर्ण मेघदूतम् में किस रस का रसास्वादन होता है–
(A) सम्भोगशृङ्गार का (B) विप्रलम्भशृङ्गार का
(C) करुणरस का (D) शान्तरस का

18. पुराणों में प्राप्त विरही यक्ष के उपयुक्त नाम की कल्पना करें–
(A) विरहदेवः (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

19. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया होगा–
(A) भागवतपुराण (B) वायुपुराण
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण (D) इनमें से कोई नहीं

20. रामगिरि पर्वत में यक्ष कितने महीने व्यतीत कर चुका है–
(A) नव माह (B) चार माह
(C) आठ माह (D) दश माह

21. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है–
(A) गीतगोविन्दम् की (B) वाल्मीकिरामायणम् की
(C) गीता की (D) मेघदूतम् की

22. उदयन या वासवदत्ता की प्रेमकथायें कही जाती हैं–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) विदिशा में

23. मेघदूतम् में सर्वप्रथम किस नदी का वर्णन है–

(A) रेवा (नर्मदा) नदी का (B) वेत्रवती नदी का
(C) निर्विन्ध्या नदी का (D) शिप्रा नदी का

24. शिप्रा नदी के तट पर स्थित महाकाल का मन्दिर किस नगरी में अवस्थित है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) चित्रकूट में

25. मल्लिनाथ के अनुसार सम्पूर्ण मेघदूतम् में प्रक्षिप्त श्लोकों सहित कुल पद्यों की संख्या है–
(A) लगभग 121 (B) लगभग 132
(C) लगभग 152 (D) लगभग 102

26. कालिदास किस देवता के उपासक माने जाते हैं–
(A) विष्णु के (B) शिव के
(C) शक्ति के (D) राम के

27. भौगोलिक स्थानों के वर्णन से परिपूर्ण ग्रन्थ है–
(A) आभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

28. ''अनावृतकपाटं द्वारं देहि'' यह कथन है–
(A) कालिदास का (B) विद्योत्तमा का
(C) शारदातनय का (D) कालीदेवी का

29. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

30. ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'' विद्योत्तमा का यह कथन किसके लिए कहा गया–
(A) अपने पिता के लिए
(B) शास्त्रार्थ में आए पण्डितों के लिए
(C) मूर्ख कालिदास के लिए
(D) माँ काली की कृपा प्राप्त कालिदास के लिए

31. ''मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'' यहाँ 'कौलीनात्' पद का अर्थ है–
(A) यक्षिणी (B) कुलीन वर्ग
(C) लोकापवाद (D) कुलपरम्परा

32. ''अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना'' यहाँ 'प्रतनु' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) मूलप्रातिपदिक (D) अव्ययपदम्

33. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है–
(A) अभ्र (B) जलमुक्
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

34. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र + क्रीम् + तिप् + विधिलिङ्
(B) प्र + क्रम् + सिप् + विधिलिङ्
(C) प्र + कृ + थ + लोट्
(D) प्र + की + सिप् + लट्

35. 'सहस्व' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सह+सिप्+विधिलिङ् (B) सह+तिप्+लोट्
(C) सह+सिप्+लोट् (D) सह+सिप्+लृट्

36. ''तस्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्'' यहाँ 'असकृत्' पद का अर्थ है–
(A) एक बार (B) बार-बार
(C) कभी-कभी (D) सम्पूर्ण

37. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) सुन्दर अथवा कोमल (B) आँसू
(C) नवीन (D) कठोर

38. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है–
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

39. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है–
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

40. 'गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः' यहाँ 'कलभ' शब्द प्रयुक्त है–
(A) सिंह के बच्चे के लिए
(B) गीदड़ के बच्चे के लिए
(C) हाथी के बच्चे के लिए
(D) कमल के फूल के लिए

41. यक्ष के घर में है–
(A) वापी (B) क्रीडाशैल
(C) मन्दारवृक्ष (D) सभी

42. अलकापुरी स्थित कुबेर के उद्यान का नाम है–
(A) नन्दनोद्यान (B) आनन्दोद्यान
(C) कुमुदोद्यान (D) वैभ्राजोद्यान

43. ''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'' इस पंक्ति में वर्णन है–
(A) उज्जयिनी की वनिताओं का
(B) अलकापुरी की कामिनियों का
(C) विदिशा की सुन्दरियों का
(D) दशार्ण की कन्याओं का

44. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति है–
(A) उत्तरमेघ की
(B) पूर्वमेघ की
(C) हंसदूत की
(D) पूर्वमेघ के अन्तिम श्लोक की

45. मेघदूतम् की अन्तिम पंक्ति है–

(A) मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः
(B) इष्टान् देशान् जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीः
(C) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण
(D) सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्

46. मेघदूतम् का नायक है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) शिव

47. यक्ष शाप की एक वर्ष की अवधि कहाँ व्यतीत करता है–
(A) देवगिरि में (B) रामगिरि पर्वत में
(C) उज्जयिनी में (D) अलकापुरी में

48. कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे–
(A) राजहंस (B) चातक
(C) यक्ष (D) बलाका

49. मेघदूतम् के अनुसार भगवान् कार्तिकेय का निवास स्थान कहाँ है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) देवगिरि में (D) विशाला में

50. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है–
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

51. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी–
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघशुक्ल सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को

52. मेघदूतम् का मेघ किसका अनुचर था–
(A) कुबेर का (B) वरुण का
(C) यम का (D) इन्द्र का

53. 'धूमज्योतिस्सलिलमरुतां' के संयोग से पैदा होता है–
(A) यक्ष (B) मेघ
(C) जल (D) प्रकाश

54. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) रेवा (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) गम्भीरा

55. मेघदूतम् के अनुसार उज्जयिनी में किसका सुप्रसिद्ध मन्दिर है–
(A) श्रीकृष्ण का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) महाकाल का

56. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) निर्विन्ध्या (B) शिप्रा
(C) रेवा (D) गम्भीरा

57. 'अन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः' यहाँ 'त्वम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) यक्ष का (B) यक्षिणी का
(C) मेघ का (D) कुबेर का

58. 'सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्' यह किस नदी का विशेषण है–
(A) रेवाम् (B) जह्नुकन्याम् (गङ्गाम्)
(C) गम्भीराम् (D) यमुनाम्

59. ''सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी'' इसमें मेघ का सोपानत्व किसके आरोहण के लिए उद्दिष्ट है–
(A) रति-कामदेव (B) शिव-पार्वती
(C) लक्ष्मी-नारायण (D) यक्ष-यक्षिणी

60. कालिदास के अनुसार यक्षों की एकमात्र अवस्था क्या है–
(A) शैशव (B) जरा
(C) कौमार (D) यौवन

61. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराःपादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है–
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

62. अलका में कुबेर के भवन से किस दिशा में यक्ष का आवास है–
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) उत्तर (D) दक्षिण

63. यक्ष के घर के सामने कौन सा वृक्ष है–
(A) अशोक का (B) कल्पवृक्ष का
(C) देवदारु का (D) मदार का

64. यक्ष के आवास के सामने का पहाड़ किससे बना है–
(A) मरकत मणि से (B) इन्द्रनील मणि से
(C) पद्मराग से (D) चन्द्रकान्त मणि से

65. यक्ष के द्वार पर किसका चित्र अङ्कित है–
(A) शङ्ख, चक्र का (B) गदा, पद्म का
(C) शङ्ख-पद्म का (D) चक्र-गदा का

66. ''कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'रसिके' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्षिणी (B) मयूरी
(C) सारिका (D) कोकिला

67. ''भूयो भूयःस्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति'' यह पंक्ति किस वाद्ययन्त्र से सम्बद्ध है–
(A) वीणा (B) पखावत
(C) दुन्दुभि (D) बाँसुरी

68. यक्षों का निवास स्थान है–
(A) रामगिरि (B) हिमालय
(C) अलका (D) उज्जयिनी

69. मेघदूतम् में यक्ष का स्वामी कौन है–

(A) शङ्कर (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) यम

70. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुःपूर्णता गौरवाय'' यह पंक्ति यक्ष किसके लिए कहता है–
(A) यक्षिणी के लिए (B) मेघ के लिए
(C) कुबेर के लिए (D) अलकापुरी के लिए

71. तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्त्रस्तगङ्गादुकूलाम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) गङ्गा का (B) यक्षिणी का
(C) उज्जयिनी का (D) अलका का

72. ''गर्जितैर्भाययेस्ताः'' यहाँ 'भाययेः' में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) विधिलिङ् (D) लोट्

73. ''नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयोयन्त्रधारागृहत्वम्'' यहाँ त्वाम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) कुबेर का (D) इन्द्र का

74. कैलाश की चोटी पर जब मेघ पहुँचेगा, तो कैलाश पर्वत की शोभा किसकी तरह हो जायेगी–
(A) कृष्ण (B) बलराम
(C) नारद (D) काले मेघ

75. 'प्रालेयाद्रिः' पद का अर्थ है–
(A) कैलाश (B) हिमालय
(C) विन्ध्य (D) आम्रकूट

76. 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि यहाँ 'शफर' पद प्रयुक्त है–
(A) सफेदी के लिए (B) सुन्दरता के लिए
(C) यक्षिणी के लिए (D) मछली के लिए

77. 'मा स्म भूर्विक्लवास्ताः' यहाँ 'मा स्म' पद में लकार है–
(A) लट् (B) लुङ्
(C) लिट् (D) लङ्

78. ''पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य'' यहाँ 'यायाः' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) या + विधिलिङ् म० पु० एक०
(B) इण् + लोट् म० पु० बहु०
(C) या + लोट् म० पु० द्विवचन
(D) या+लृट् उ० पु० एकवचन

79. 'दर्शितावर्तनाभेः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

80. रास्ता टेढा होने के बाद भी यक्ष मेघ को उत्तर की ओर ले जाकर किसका दर्शन कराना चाहता है–
(A) स्कन्द का (B) उज्जयिनी का
(C) गम्भीरा का (D) निर्विन्ध्या का

81. 'प्रकृतिकृपणाः' में समास है–
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष
(D) बहुव्रीहि (D) सप्तमी तत्पुरुष

82. ''प्रत्यासन्ने नभसि दयिता...............'' यहाँ 'नभसि' पद का अर्थ है–
(A) आषाढ मास (B) श्रावण मास
(C) आकाश (D) मेघ

83. ''अन्तर्वाष्पः चिरमनुचरो'' यहाँ 'अन्तर्वाष्पः' पद में समास है–
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) कर्मधराय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

84. मल्लिनाथ 'रामगिरि' पर्वत को कहाँ मानते हैं–
(A) रामगढ़ (मध्यभारत) (B) रामटेक (नागपुर)
(C) चित्रकूट (D) हिमालय पर्वत के पास

85. 'अस्तङ्गमितमहिमा' यहाँ 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है–
(A) महत्+इमनिच् (B) महान्+अण्
(C) महा+इतच् (D) महिम+आ

86. 'राजराज' पद में समास होगा–
(A) चतुर्थी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

87. 'कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः' यह पद किसका विशेषण है–
(A) सः यक्षः (B) कुबेरः
(C) मेघः (D) उपर्युक्त सभी का

88. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' यहाँ 'मघोनः' पद किसके लिए और उसमें क्या विभक्ति है–
(A) कुबेर के लिए, पञ्चमी विभक्ति
(B) इन्द्र के लिए, षष्ठी विभक्ति
(C) यक्ष के लिए, द्वितीया विभक्ति
(D) मेघ के लिए, षष्ठी विभक्ति

89. मेघदूतम् के अनुसार सन्तप्त लोगों के लिए एक मात्र सहारा कौन है–
(A) यक्षिणी (B) मेघ
(C) कुबेर (D) यक्ष

90. 'त्वय्युपेक्षेत्' पद में सन्धि है–
(A) हल् सन्धि (B) विसर्ग सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

91. 'द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्' के अनुसार कौन अपनी भाभी को देखेगा–
(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) राजहंस (D) मेघ

92. 'विप्रयोगे रुणद्धि' यहाँ 'रुणद्धि' पद में धातु है–
(A) रुध् (B) रुण्
(C) रोध् (D) रुधृम्

93. ''नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां, मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः'' इस पद्यांश में

अलङ्कार है–

(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

94. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'' यहाँ अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) दीपक

95. ''सृष्टिराद्येव धातुः'' पद से किसका सङ्केत किया गया है–

(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) यक्षिणी का (D) अलका का

96. मेघदूतम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है–

(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्क्रियात्मक (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

97. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–

(A) मगण भगण नगण तगण रगण दो गुरु–17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरु–16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु–17
(D) भगण भगण मगण तगण नगण दो गुरु–17

98. मेघदूतम् की व्याख्या की जा सकती है–

(A) मेघः एव दूतः, मेघदूतमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्
(B) मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्
(C) केवल पहला सही है।
(D) दोनों सही है

99. संस्कृत साहित्य में 'सन्देशकाव्य' या 'दूतकाव्य' का प्रारम्भ माना जा सकता है–

(A) हंसदूतम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नेमिदूतम् से (D) गीतगोविन्दम् से

100.''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' यहाँ 'बलाकाः' पद का अर्थ है–

(A) बालिकायें (B) यक्षिणियाँ
(C) बगुलियाँ (D) वेश्यायें

उत्तरमाला

1. (C)	2. (C)	3. (D)	4. (A)	5. (C)	6. (D)
7. (B)	8. (D)	9. (A)	10. (A)	11. (B)	12. (B)
13. (D)	14. (A)	15. (B)	16. (C)	17. (B)	18. (D)
19. (C)	20. (C)	21. (D)	22. (B)	23. (A)	24. (B)
25. (A)	26. (B)	27. (B)	28. (A)	29. (A)	30. (D)
31. (C)	32. (A)	33. (D)	34. (B)	35. (C)	36. (B)
37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (C)	41. (D)	42. (D)
43. (B)	44. (A)	45. (A)	46. (C)	47. (B)	48. (A)
49. (C)	50. (D)	51. (A)	52. (D)	53. (B)	54. (B)
55. (D)	56. (D)	57. (C)	58. (B)	59. (B)	60. (D)
61. (C)	62. (C)	63. (D)	64. (B)	65. (C)	66. (C)
67. (A)	68. (C)	69. (C)	70. (B)	71. (D)	72. (C)
73. (A)	74. (B)	75. (B)	76. (D)	77. (B)	78. (A)
79. (B)	80. (B)	81. (A)	82. (B)	83. (C)	84. (C)
85. (A)	86. (D)	87. (A)	88. (B)	89. (B)	90. (D)
91. (D)	92. (A)	93. (C)	94. (B)	95. (C)	96. (B)
97. (C)	98. (D)	99. (B)	100. (C)		

4.7 रघुवंशम् का परिचय

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभीनायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण शृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		कुल श्लोक -1569

- सर्वाधिक श्लोकों वाला सर्ग - 12वाँ, श्लोक = 104
- न्यूनतम श्लोकों वाला सर्ग - 18वाँ, श्लोक = 53

रस

- रघुवंश वीररस प्रधान काव्य है।
- वीररस के चार भेद- 1. धर्मवीर 2. युद्धवीर 3. दानवीर 4. दयावीर

- रघुवंश में चारों वीर रसों का वर्णन है।
- रघुवंश के अन्तिम सर्ग में मुक्तरूप से शृङ्गार का वर्णन।
- 'करुणरस' के उद्भावन में रघुवंश का 'अजविलाप' अत्यन्त द्रावक है।
- 'वीररस' के प्रयोग में कालिदास पौराणिक 'अनुष्टुप् छन्द' का प्रयोग करते हैं। (रघु की दिग्विजय, राम-रावण युद्ध)
- कालिदास का प्रिय रस **शृङ्गार** है।

छन्द-योजना

- कालिदास ने छन्द प्रयोग की दृष्टि से गेय छन्दों का अधिक उपयोग किया है।
- रघुवंश के 19 सर्गों में 22 छन्दों का प्रयोग हुआ है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = उपजाति - 578 श्लोकों में।
- दूसरा सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = अनुष्टुप् - 548 श्लोकों में।
- रघुवंश के नवम सर्ग में विभिन्न छन्दों का प्रयोग।
- रघुवंश के दुःखद प्रसंग के वर्णन में रथोद्धता छन्द का प्रयोग।
- करुण रस के चित्रण में वैतालीय छन्द का प्रयोग 'अजविलाप'
- रघुवंश में कवि ने 'नाराच' (18 वर्ण) जैसे बड़े छन्द का प्रयोग एक बार किया।

कालिदास ने रघुवंश में छन्दों को वर्ण्य विषय से सम्बद्ध किया है-

प्रसंग/वर्ण्य विषय	**सम्बद्ध छन्द का प्रयोग**
करुण प्रसंगों में -	वैतालीय
प्रवास और प्रावृट् -	मन्दाक्रान्ता
हर्षात्मक वातावरण -	प्रहर्षिणी (उपनाम-अन्वर्थनामा)
पराक्रम,शौर्य,राजनीतिक प्रसंग-	वंशस्थ
पौराणिक वृत्त, युद्धयात्रा-	अनुष्टुप्
भव्य चन्द्रोदय, उद्दीपन विभावों के वर्णन में -	रथोद्धता
वीर एवं रौद्र रस के सम्मेलन-	वसन्ततिलका
शुभकार्य के सफल करने के प्रस्थान हेतु, कार्य की सफलता के लिए, सर्गान्त में प्रयोग-	पुष्पिताग्रा
समृद्धिशीलता के प्रसंग-	द्रुतविलम्बित
उदारता, रुचि, औचित्यादि गुणो में प्रयुक्त -	हरिणी
सर्ग समाप्ति के समय, कथानक को शीघ्रता से समाप्त करते समय प्रयोग -	मालिनी

अलंकार-योजना

- रघुवंश में शब्दालंकारों में अनुप्रास का सर्वाधिक प्रयोग।
- यमक का सामान्य प्रयोग।
- अर्थालंकारों में सर्वाधिक उपमा का प्रयोग।
- उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सन्निवेश।

शैली-

- वैदर्भी रीति का प्रयोग।
- रघुवंश में आकर्षक चरित्र-चित्रण विशद एवं रुचिर वर्णन, प्रौढ़प्रतिभा, सुन्दर रसव्यञ्जना, सरल अलंकृत शैली का मणिकाञ्चन संयोग।

कथानक का मूल स्रोत-

- रघुवंश का मूलस्रोत- मुख्यतः वाल्मीकि रामायण
- अनुश्रुतियों एवं पौराणिक तथा अन्य स्रोत- पद्मपुराण, वायु पुराण, विष्णुपुराण,
- रघुवंश में रघुवंशीय राजाओं की वंशावली वाल्मीकि रामायण से भिन्न है।

प्रमुख वर्णन

- रघुवंश के 19 सर्गों में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के 29 राजाओं का वर्णन। मनु और इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन।
- प्रथम दो सर्ग में दिलीप का वर्णन।
- तीसरे, चौथे और पाँचवें के आधे भाग में रघु का वर्णन।
- पाँचवें के बचे हुए आधे भाग तथा छठें, सातवें और आठवें सर्ग में अज का वर्णन।
- नवम सर्ग में दशरथ का वर्णन।
- दशम से पन्द्रहवें सर्ग तक रामचरित वर्णित है।
- सोलहवें सर्ग में कुश तथा सत्रहवें में कुश पुत्र अतिथि का वर्णन है।
- अठारहवें में निषध तथा नल एवं नभ आदि 21 राजाओं का वर्णन।
- उन्नीसवें सर्ग में अतिविलासी राजा अग्निवर्ण के दुःखद अवसान के साथ ग्रन्थ समाप्त होता है।

रघुवंश में वर्णित राजाओं का क्रम-

दिलीप → रघु → अज → दशरथ

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न

कुश लव

अतिथि → निषध → नल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक

पुत्री अहीनगु (अहीनय)

पारियात्र → शील → उन्नाभ → शङ्खण → व्युषिताश्व → विश्वसह → हिरण्यनाभ → कौशल्य (सोमसुत) → पुत्र → पौष्य → ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण

(अन्तिम रघुवंशीय राजा जहाँ तक रघुवंश में वर्णन प्राप्त होता है)

प्रमुख चरित्र

राजा दिलीप-

- रघुवंश महाकाव्य के प्रथम उन्नायक के रूप में वर्णित
- वैवश्वत मनु के शुद्ध वंश से अधिक श्रेष्ठतर चरित्र वाला घोषित किया गया है।
- वायु भी दिलीप के शासन के अनुसार अनुगमन करता था-

यस्मिन् महीं शासति वाणिनीनां
निद्रां विहारार्धपथे गतानाम्।
वातोऽपि नास्त्रंसयदंशुकानि
को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥ (रघु. 6/75)

राजा रघु-

- रघु के व्यक्तित्त्व की महत्ता इसी से द्योतित होती है क्योंकि उन्हीं के नाम पर सूर्यवंश का नाम रघुवंश पड़ा।
- रघु का चरित्र रघुवंशियों का आदर्श है।
- रघु को रघुवंशम् का केन्द्रीय नायक माना जा सकता है।
- रघु का प्रताप और सूर्य का तेज दोनों एक समय में ही सारी दिशाओं में व्याप्त हो गये-

'प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद्व्यानशे दिशः।' (रघु. 04/15)

राजा अज-

- अज के चरित्र में शील और शौर्य की शृङ्गारिक पीठिका प्रदर्शित है।
- रघुवंश महाकाव्य के **'धीरललित'** नायक हैं।
- चक्रवर्ती सम्राट् रघु के प्रतापी पुत्र।
- रानी इन्दुमती के प्रेमी पति।

राजा दशरथ-

- दशरथ के व्यक्तित्त्व का विकास वाल्मीकि रामायण के आधार पर वर्णित है।
- दशरथ दिग्विजयी सम्राट् रघु के नाती हैं।
- राजा अज के प्रतापी पुत्र हैं।
- दशरथ मानो पृथ्वी पर अवतीर्ण इन्द्र ही हुए थे-

उपगतो विनिनीषुरिव
प्रजा हरिहयोऽरिहयोगविचक्षणः॥ (रघु. 09/18)

राजा राम -

- महाकवि कालिदास राम को विष्णु का अवतार मानते हैं।
- वस्तुतः रघुवंश के वास्तविक नायक राम ही हैं।
- महाकवि ने राम का अपनी काव्य साधना द्वारा सर्वोत्तम चरित्रांकन किया है।
- सर्वाधिक सर्गों में राम का चरित्र दर्शाया गया है।
- रघु और राम के महान् चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए महाकवि ने रघु को महाकाव्य का प्रधान नायक माना है तभी तो महाकाव्य का नाम रघुवंश पड़ा।
- अन्य आचार्यों ने राम को ही इस महाकाव्य का नायक माना है और कहा कि रघु से लेकर राम तक जो कथा है वह राम कथा को विस्तार देने के लिए है।
- राम राजा बनने की बात सुनकर रोने लगते हैं और वनगमन की आज्ञा पाकर प्रसन्न होते हैं-

पित्रा दत्तां रुदन् रामः प्राङ्महीं प्रत्यपद्यत।
पश्चाद्वनाय गच्छेति तदाज्ञां मुदितोऽग्रहीत्॥
(रघु. 12/07)

शत्रुघ्न-
उपनायक

- अयोध्या नरेश दशरथ के और रानी सुमित्रा के सबसे छोटे पुत्र।
- लवणासुर नामक राक्षस से पीड़ितों की रक्षा करने के लिये वर्णित।
- शत्रुघ्न ने यमुना तट पर मथुरा नगरी बसायी थी

कुश-

- श्रीरामचन्द्र एवं सीता के ज्येष्ठ पुत्र, लव के बड़े भाई।
- राम के बाद शासनारूढ़ होते हैं।
- नागराज की पुत्री कुमुद्वती से विवाह।
- कुशावती नगरी के संस्थापक।
- प्रथम बार रामायण का गान करने वाले कुश एवं लव

अतिथि-

- कुशपुत्र अतिथि शूरवीर एवं जितेन्द्रिय राजा हैं।
- राम के पौत्र तथा कुश एवं कुमुद्वती के पुत्र।

अग्निवर्ण-

- रघुवंशी राजा सुदर्शन का पुत्र।
- अग्निवर्ण रघुवंश का विलासी नायक है।
- महाराज सुदर्शन ने सब शत्रुओं को जीत कर पृथ्वी को निष्कंटक बनाकर अग्निवर्ण को राजा बनाया।
- वह गवाक्षों पर पैर लटका कर दर्शन देता था ऐसा वर्णन है।
- रघु के प्रतापी वंश के अन्तोन्मुख होने का कारण।

नारी पात्र

रानी सुदक्षिणा-

- मगधराज पुत्री सुदक्षिणा राजा दिलीप की उदारचारिता, शीलवती, रूपवती पत्नी हैं।

'तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च मागधी।' (रघु. 01/57)

इन्दुमती-

- कवि ने इन्दुमती को आदर्श गृहिणी कहा है-

गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना
हरता त्वां वद किं न मे हृतम्॥ (रघु. 08/67)

- सम्राट् रघु की पुत्रवधू एवं अज की प्रिया पत्नी।

सीता -

- रघुवंश में सीता का जीवन राम के लिए समर्पित है।
- राम के साथ रमण करती हुई सीता राजलक्ष्मी के समान प्रतीत होती थी-

उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयम्
कृत्वोपभोगोत्सुकयेव लक्ष्म्या। (रघु. 14/24)

- मिथिला नरेश जनक की पुत्री, अयोध्या नरेश दशरथ की पुत्र वधू।

कैकेयी -
- राजा दशरथ की प्रिय पत्नी।
- कवि ने उन्हे अतिक्रोधशीला चण्डी की उपाधि से विभूषित किया।
- दशरथ से वरदान के रूप में राम के लिए 14 वर्ष का वनवास एवं भरत के लिए राजगद्दी माँगा।

महर्षियों का चरित्र

- **महर्षि वशिष्ठ-** ब्रह्मतेज एवं ब्रह्मज्ञान की साक्षात् मूर्ति हैं।
  पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः।
  यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम्॥ (रघु. 01/63)
- **महर्षि कौत्स-** चौदह विद्याओं के अध्येता महर्षि वरतन्तु के शिष्य कौत्स गुरु आज्ञा का पालन करते हुए 14 करोड़ मुद्रा दक्षिणा स्वरूप लेने रघु के पास गये।

प्रतिनायक का चरित्र

इन्द्र-
- प्रतिनायक के रूप में चित्रण।
- इन्द्र की पत्नी का नाम-''शची''।
- पुत्र का नाम-''जयन्त''।
- स्वर्ग का शासक, और देवेन्द्र नाम वाला।
- सारथी का नाम-''मातलि''
  मातलिस्तस्य माहेन्द्रम् -----। (रघु. 12/86)
- रथ में एक हजार घोड़े।
- इनके घोड़े का रंग हरे तथा पीले भी कहीं-कहीं उल्लेख मिलता है।
- हाथी का नाम-''ऐरावत''
- शस्त्र का नाम-''वज्र'
- 100 अश्वमेध यज्ञ करने के कारण-''शतक्रतु''

रावण-
- रावण इस महाकाव्य का प्रतिनायक है।
- लंका का अधिपति तथा पुलस्त्य मुनि का नाती।
- इन्द्र और रावण ऐसे प्रतिनायक का कवि ने पूर्ण विकास नहीं दिखाया।

लवणासुर-
- शत्रुघ्न का प्रतिद्वन्द्वी
- कुम्भीनसी का पुत्र।
- मधूपन्न नामक लवण नगरी का राजा।
- बहुत अत्याचारी राक्षस
- लवणासुर भी महाकाव्य का प्रतिनायक माना जा सकता है।

पशु चरित्र

नन्दिनी-
- कामधेनु की पुत्री नन्दिनी का जीवन्त चित्रण रघुवंश के द्वितीय सर्ग में
- महर्षि वशिष्ठ की दुग्धशीला होमधेनु। (हवन धेनु)
- रंग नवीन पल्लव तथा संध्या के समान श्वेत युक्त लाल
  'तदन्तरे सा विरराज धेनुः
  दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥' (रघु. 02/20)

सिंह/कुम्भोदर-
- रघुवंश महाकाव्य का दूसरा मानवेतर पात्र।
- शंकर के गण निकुम्भ का मित्र।
- इसका नाम कुम्भोदर है।
  'कुम्भोदरं नाम निकुम्भमित्रम्।' (रघु. 02/35)
- भगवान् शंकर का अनुचर-
  'अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्त्तः---।' (रघु. 02/35)

अन्य पात्र

कुमुदनाग-
- अस्त्र ज्ञाता की उपाधि से विभूषित।
- अपनी बहन कुमुद्वती का विवाह कुश से कराता है।

गन्धर्वराज-
- स्वयंवर के लिए विदर्भ नगरी जाते समय नर्मदा के तट पर सेना सहित पड़ाव डाल देता है।
- प्रिय दर्शन नामक गन्धर्वराज का पुत्र प्रियंवद नामक गन्धर्व राजकुमार।
- मतङ्ग ऋषि के श्राप से हाथी का शरीर धारण किया था।
  मतङ्गशापादवलेपमूलादवाप्तवानस्मि मतङ्गजत्वम्।
  अवेहि गन्धर्वपतेस्तनूजं प्रियंवदं मां प्रियदर्शनस्य॥
  (रघु. 05/53)

प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

रघुवंश के सर्ग एवं सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द

सर्ग संख्या	सर्ग में प्रयुक्त छन्द	सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द
प्रथम	अनष्टुप्	प्रहर्षिणी
द्वितीय	उपजाति	मालिनी
तृतीय	वंशस्थ	हरिणी
चतुर्थ	अनुष्टुप्	प्रहर्षिणी
पञ्चम	उपजाति	पुष्पिताग्रा
षष्ठ	उपजाति	पुष्पिताग्रा
सप्तम	उपजाति	मालिनी
अष्टम	वैतालीय	मन्दाक्रान्ता
नवम	द्रुतविलम्बित, (विभिन्न छन्दों का प्रयोग)	वसन्ततिलका
दशम	अनुष्टुप्	मालिनी
एकादश	रथोद्धता	मालिनी
द्वादश	अनुष्टुप्	महामालिनी

त्रयोदश	उपजाति	वसन्ततिलका
चतुर्दश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
पञ्चदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
षोडश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
सप्तदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
अष्टादश	उपजाति	मालिनी
एकोनविंशति	उपजाति	मन्दाक्रान्ता

- उपजाति छन्द का प्रयोग सर्वाधिक 9 सर्गों में निम्नलिखित-(2,5,6,7,13,14,16,18,19)
- अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग निम्नलिखित 6 सर्गों में हुआ है-(1,4,10,12,15,17)
- वंशस्थ छन्द का प्रयोग 3 (तृतीय सर्ग) में हुआ है।
- रथोद्धता छन्द का प्रयोग मात्र 11वें (एकादशवें) सर्ग में हुआ है।
- वैतालीय छन्द का प्रयोग 8 (अष्टम) सर्ग में किया गया है।
- द्रुतविलम्बित छन्द का प्रयोग 9वें (नवम)सर्ग में हुआ है।

इस सर्ग मे अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है।

सर्गानुसार वर्णन

मङ्गलाचरण

वागार्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥ (रघु. 01/01)

- रघुवंश महाकाव्य का शुभारम्भ पार्वती और शिव के नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण से हुआ।
- ग्रन्थारम्भ में कवि ने मङ्गलाचरण के माध्यम से शब्दार्थरूप शिव और पार्वती की वन्दना की।
- वाक् और अर्थ के प्रतीक स्वयं पार्वती एवं शङ्कर हैं, क्योंकि वे जगत के माता-पिता हैं।
- 'व' शब्द अमरत्व का द्योतक है।
- मगण के दोनों अक्षर की देवता पृथ्वी हैं जो रचयिता को अक्षय कीर्ति प्रदान करती है।
- अनुष्टुप् छन्द
- वाक् = वाणी
- अर्थ = लक्ष्मी
- इ = शक्ति (शैव दर्शन के अनुसार)

प्रथम सर्ग

- रघुवंश की कथा का आरम्भ महाराज दिलीप से होता है।
- महाकवि ने दिलीप के पूर्ववर्ती राजाओं की चर्चा करते हुए कहा कि इस वंश का प्रादुर्भाव 'सूर्य' से हुआ।
- इस वंश में 'मनु' पृथ्वी लोक के सर्वप्रथम राजा हैं।
- रघुवंशी राजाओं के जीवन में आश्रम व्यवस्था इस प्रकार होती थी-

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥
(रघु. 01/08)

- प्रथम सर्ग में महाराजा दिलीप सन्तान प्राप्ति का उपाय पूँछने अपने गुरु वसिष्ठ के आश्रम जाते हैं।
- वसिष्ठ उन्हे कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय की सेवा करने का परामर्श देते हैं।

द्वितीय सर्ग

- राजा दिलीप द्वारा कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का वर्णन है।
- नन्दिनी राजा दिलीप द्वारा की गयी 21 (इक्कीस) दिनों की सेवा से प्रसन्न होती है और उनकी परीक्षा भी लेती हैं।
- कुम्भोदर सिंह का वर्णन।
- दिलीप परीक्षा में सफल होते हैं, नन्दिनी उन्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देती हैं।

तृतीय सर्ग

- रघु का जन्म, विद्या अध्ययन आदि।
- महाराज दिलीप ने समस्त शास्त्र विद्या और शस्त्र में प्रवीण रघु को युवराज बनाने के उपरान्त अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया।
- अदृश्य रूप से इन्द्र द्वारा यज्ञीय अश्व अपहरण कर लिया गया।
- रघु और इन्द्र में घोर युद्ध एवं विजय प्राप्ति।
- रघु का राज्याभिषेक।
- अपनी वंश परम्परा के अनुसार दिलीप तपस्यार्थ वन चले जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग

- रघु की दिग्विजय का वर्णन।
- सर्वप्रथम पूर्व दिशा में वंश आदि देशों को जीतकर अपना विजय स्तम्भ गङ्गासागर के द्वीपों में गाड़ दिया।
- कवि ने रघु को सूर्य से अधिक प्रतापी सिद्ध किया है।

दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि।
तस्यामेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे॥
(रघु. 04/49)

- भारत के विभिन्न प्रदेशों की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

पञ्चम सर्ग

- विश्वजित् यज्ञ करके अपना सर्वस्व दान करने वाले महाराज रघु के त्याग का अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है।
- इस सर्ग के अन्त में विदर्भराज भोज अपनी बहन (पुत्री) इन्दुमती के स्वयंवर का वर्णन।
- रघु पुत्र राजकुमार अज स्वयंवर मे भाग लेने के लिए प्रस्थान करता है।
- ब्रह्मचारी कौत्स अपने गुरु वरतन्तु को दक्षिणा देने के लिए रघु से 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ माँगता है।
- इस सर्ग में अज को जगाने के लिए सूत पुत्रों द्वारा गाया गया 'प्रभात-गीत' बहुत प्रसिद्ध एवं मनोरम है। (श्लोक सं - 05/66-74 तक)

षष्ठ सर्ग

- इन्दुमती स्वयंवर का चित्ताकर्षक वर्णन है।
- इन्दुमती अज के गले में वरमाला डालती हैं अर्थात् वररूप अज को चुनती हैं, क्योंकि भौरों की पंक्ति खिले हुए आम के बौरों को छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाते-

नहि प्रफुल्लं सहकारमेत्य
वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदालिः॥ (रघु. 06/69)

सप्तम सर्ग

- अज का इन्दुमती के साथ विवाह होता है।
- स्वयंवर में आये अन्य राजा अज से युद्ध छेड़ देते हैं और परास्त होते हैं।
- अज को देखने के लिए विदर्भ की नारियों की उत्सुकता का भव्य वर्णन सर्गारम्भ में किया गया है।

अष्टम सर्ग

- महाराज रघु अज को राज्य सौंप कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर जाते हैं।
- उपवन विहार करते समय नारद की वीणा से गिरी माला के स्पर्श से इन्दुमती का निधन हो जाता है।
- इस सर्ग में अज का अत्यन्त कारुणिक विलाप वर्णित है।
- कारुणिक वर्णन में वियोगिनी (वैतालीय) छन्द का प्रयोग हुआ है
- 'अज-विलाप' ही सर्ग का प्राण है।

विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
(रघु. 08/43)

- वसिष्ठ के सन्देश से अज को सान्त्वना मिलती है।
- प्रिया वियोग एवं पुत्र दशरथ का पालन दो तरह की विपरीत परिस्थियों में, वह किसी तरह 8 वर्षों तक जीवित रह सके।
- अन्त में गंगा-सरयू संगम में उन्होंने प्राण त्याग दिये।

नवम सर्ग

- सर्गारम्भ दशरथ के शासन के वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- महाराजा दशरथ वन्यगज के भ्रम में श्रवण कुमार की हत्या कर देते हैं।
- दशरथ को श्रवण के माता-पिता द्वारा पुत्र वियोग में मरने का शाप मिलता है।
- इस सर्ग में वसन्त का अत्यन्त मनोरम वर्णन हुआ है-

कुसुम जन्म ततो नवपल्लवास्तदनु षट्पदकोकिलकूजितम्।
(रघु. 09/26)

दशम सर्ग

- दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ किया जाना वर्णित है।
- रावण से त्रस्त देवताओं का विष्णु के पास जाने का वर्णन है।
- विष्णु का दशरथ पुत्र राम के रूप में अवतरित होने की घोषणा।
- रामादि चारों भाइयों का जन्म।

एकादश सर्ग

- विश्वामित्र का राम और लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा हेतु आश्रम ले जाना।
- ताटका आदि राक्षसों का वध।
- विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण का मिथिला जाना।
- 'सीता स्वयंवर' का वर्णन, राम द्वारा शिव धनुष भंग रामादि चारों भाइयों का विवाह वर्णित है।
- परशुराम के पराभव का वर्णन।

द्वादश सर्ग

- दशरथ राम के राज्याभिषेक का विचार करते हैं, तभी कैकेयी उनसे वरदान माँगती हैं।
- इस सर्ग में राम वनवास से लेकर शूर्पणखा वृत्तान्त, सीता हरण, बालि वध, सीता खोज, राम-रावण युद्ध 'रावणवध' तक की कथा कवि ने शीघ्रता से कही है।
- सर्ग के अन्त में राम को पुष्पक विमान से अयोध्या जाने की सूचना दी गयी है।

त्रयोदश सर्ग

- पुष्पक विमान से अयोध्या लौटने की यात्रा का मनोरम दृश्य राम, सीता को दिखाते हैं, और पवित्र तीर्थों का परिचय कराते हैं।
- भौगोलिक स्थलों का प्रामाणिक वर्णन एवं सीता वियोग की करुण स्मृतियों का चित्रण किया गया है।
- इस प्रसंग में दो महत्त्वपूर्ण वर्णन-

1. **समुद्रवर्णन (02-13 श्लोक)**
   वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं
   मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम्॥ (रघु. 13/02)
2. **गङ्गा-युमना का वर्णन (54-57 श्लोक)**
   'पश्यानवद्याङ्गि! विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुनातरङ्गैः।'
   (रघु. 13/57)

- पुष्पक विमान राम की इच्छा के अनुसार संचरण करता है-

यथाविधो मे मनसोऽभिलाषः
प्रवर्तते पश्य तथा विमानम्॥ (रघु. 13/19)

चतुर्दश सर्ग

- राम का राज्याभिषेक एवं राम राज्य वर्णित है।
- इस सर्ग में राम के द्वारा लोकापवाद कारण सीता का परित्याग वर्णित है-

"लोकापवादो बलवान् मतो मे" (रघु. 14/40)

- लोकापवाद के कारण छोड़ी गयी सीता राम को लक्ष्मण द्वारा सन्देश देती हैं की जो कृत्य किया गया। वह तुम्हारे उच्च कुल के योग्य है-

मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य
(रघु. 14/61)

- सीता वाल्मीकि के आश्रम जाती हैं।
- राम द्वारा सीता की स्वर्णमूर्ति बनवाकर अश्वमेध यज्ञ करने का वर्णन है।

पञ्चदश सर्ग

- राम के आदेश पर शत्रुघ्न लवणासुर से युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं।
- मार्ग में वाल्मीकि आश्रम में रात्रि विश्राम के लिए ठहरते हैं और उसी रात्रि में सीता कुश और लव दो पुत्रों को जन्म देती हैं।
- लवणासुर से घोर युद्ध और उसका वध।
- शत्रुघ्न द्वारा यमुना तट पर मथुरा नगरी की स्थापना।

उपकूलं स कालिन्द्याः पुरीं पौरुषभूषणः।
निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृति॥ (रघु. 15/28)

- राम द्वारा शम्बूक वध और राम के अश्वमेध यज्ञ में लवकुश द्वारा रामायण गान।
- राम अपने पुत्रों से रामायण गान सुनते हैं।

अथ प्राचेतसोपज्ञं रामायणमितस्ततः।
मैथिलेयौ कुशलवौ जगतुर्गुरुचोदितौ॥ (रघु. 15/63)

- वाल्मीकि सीता की निर्दोषिता बताते हुए राम से उनको स्वीकार करने का अनुरोध करते हैं।
- इसी समय सीता के निवेदन पर धरती माँ प्रकट होती हैं और सीता को अपनी गोद में लेकर पाताल चली जाती हैं।
- सर्गान्त में भरत को सिन्धु-देश का राजा बनाया जाता है।
- भरत का अपने पुत्रों तक्ष और पुष्कल को सिन्धु देश का राज्य सौंप कर अयोध्या लौटना।
- लक्ष्मण के पुत्रों को कारापथ का राज्य सौंपा जाता है।
- सर्गान्त में राम, लक्ष्मण आदि का महाप्रयाण।

षोडश सर्ग

- कुश का राज्याभिषेक एवं कुश के शासन की प्रशंसा
- कुशावती को राजधानी बनाना।
- अयोध्या की दुर्दशा का वर्णन एवं कुश की स्वप्न में एक तेजोदीप्त अयोध्याधिष्ठात्री देवी के दर्शन का वर्णन है-

'तस्याः पुरः सम्प्रति वीतनाथां जानीहि राजन्नधिदेवतां माम्।' (रघु. 16/09)

- देवी के कथनानुसार कुश पुनः अयोध्या को अपनी राजधानी बनाते हैं।
- कुश का जल विहार में आभूषण खोने का वर्णन।
- कुमुदनाग पर कुश द्वारा गुरुडास्त्र का प्रयोग करने पर कुमुदनाग अपनी बहन कुमुद्वती को कुश को उपहार स्वरूप देता है।
- कुमुद्वती एवं कुश विवाह वर्णन।

सप्तदश वर्णन

- कुमुदवती से अतिथि नाम का पुत्र जन्म लेता है-

अतिथिं नाम काकुत्स्थात्पुत्रं प्राप कुमुद्वती। (रघु. 17/01)

- कुश युद्ध में वीरगति प्राप्त करता है और कुमुद्वती सती हो जाती है।
- अतिथि का राज्याभिषेक एवं उसकी राज्यव्यवस्था का वर्णन।

स गुणानां बलानां च षण्णां षण्मुखविक्रमः।
बभूव विनियोगज्ञः साधनीयेषु वस्तुषु॥ (रघु. 17/67)

अष्टादश-सर्ग

- इस सर्ग में अतिथि के पुत्र निषध के बाद की अनेक पीढ़ियों के राजाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।
- 1 निषध 2 नल 3 नभ 4 पुण्डरीक 5 क्षेमधन्वा 6 देवानीक 7 अहीनगु 8 पारियात्रि 9 शिल 10 उन्नाभ 11 वज्रणाभ 12 शंखण 13 व्युषिताश्व 14 विश्वसह 15 हिरण्यनाभ 16 कौशल्य 17 ब्रह्मिष्ठ 18 पुत्र 19 पुष्प 20 ध्रुवसन्धि 21 सुदर्शन आदि राजाओं का संक्षिप्त परिचय।

एकोनविंश सर्ग

- इस सर्ग में सुदर्शन पुत्र अग्निवर्ण का वृत्तान्त है।
- शासन का समस्त कार्यभार मन्त्रियों पर छोड़कर अहर्निश विलासिता में लिप्त रहता है।
- अनेक रानियों दासियों आदि को कामुकता का शिकार बनाने से उसे क्षय रोग हो जाता है।
- उसे वैद्यों के उपदेश भी इन दुर्व्यसनों से अलग नहीं कर सके-

''दृष्टदोषमपि तन्न सोऽत्यजत्सङ्गवस्तु भिषजामनाश्रवः।
स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते॥ (रघु. 19/49)

- मन्त्रियों ने गुप्तरूप से गृह उपवन में ही उसे जला दिया-

तं गृहोपवन एव सङ्गताः पश्चिमक्रतुविदा पुरोधसा।
रोगशान्तिमपदिश्य मन्त्रिणः सम्भृते शिखिनि गूढमादधुः॥ (रघु. 19/54)

- मन्त्रियों द्वारा अग्निवर्ण की गर्भवती रानी का राज्याभिषेक किया जाता है।

तैः कृतप्रकृतिमुख्यसङ्ग्रहैराशु तस्य सहधर्मचारिणी।
साधु दृष्टशुभगर्भलक्षणा प्रत्यपद्यत नराधिपश्रियम्॥ (रघु. 19/55)

- रानी ने विश्वासपात्र मन्त्रियों के साथ विधिपूर्वक पति के राज्य का शासन किया और इस प्रकार रघुवंश की कथा का अन्त होता है।

निष्कर्ष

- रघुवंश की कथा का अन्त पतनाभिलाषी राजा के विलासी चरित्र से होता है।
- आरम्भ जिस तरह से उदात्त और महान् चरित्र वाले राजा दिलीप से हुआ, वहीं उसका अन्त अत्यन्त ही कारुणिक है।
- अग्निवर्ण जैसे विलासी चरित्र का दुःखद अन्त कराकर कवि ने यह तथ्यात्मक आदर्श प्रकट किया है कि-

1- चरित्र की उदात्तता एवं महानता के कारण रघु और राम ने सूर्यवंश को महत्ता प्रदान की।
2- उसी वंश में विलासी कामी नृप अग्निवर्ण ने अपनी दुश्चरित्रता के कारण सूर्यवंश को भ्रष्ट किया और उसका भी अत्यन्त दुःखद अन्त हुआ।

- कवि का मूल उद्देश्य रघु और राम के उदात्त चरित्र का वर्णन करना था।

''रघुवंशम् की सूक्तियाँ''

- **हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।** (रघु. 01/10)

सुवर्ण की शुद्धता और श्यामता अग्नि में ही देखी जाती है।

- **''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।''** (रघु. 01/18)

सूर्य सहस्रगुना (हजारगुना) बरसाने के लिए ही जल लेता है।

- **'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'** (रघु. 01/79)

पूज्यों की पूजा का उल्लङ्घन करना कल्याण को रोकता है।

- **'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः'** (रघु. 02/04)

मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

➢**'भक्त्योपपन्नेषु हि तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।'** (रघु. 02/22)

प्रेमी व्यक्तियों के प्रसन्नता के चिह्न निःसन्देह फल के कारण होते हैं।

➢**''न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।''** (रघु. 02/34)

सिंह, राजा दिलीप से कहते हैं कि- वृक्ष को उखाड़ने वाली शक्ति रखने वाले वायु का वेग पर्वत के विषय में व्यर्थ होता है।

➢**''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति।।''** (रघु. 02/40)

सिंह, दिलीप से कहते हैं कि- रक्षा करने के योग्य वस्तु शस्त्र से नही बचायी जा सकती, वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारियों की कीर्ति को दूषित नहीं कर सकती।

➢**'स्थातुं नियोक्तुर्न हि शक्यमग्रे, विनाश्य रक्ष्यं स्वयमक्षतेन।'** (रघु. 02/56)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- रक्षा करने योग्य वस्तु का नाश करके स्वयं बिना नष्ट हुए, नौकर स्वामी के आगे उपस्थित होने के लिए समर्थ नही हो सकता।

➢**'एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।'** (रघु. 02/57)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- लोगों के अवश्य नष्ट होने वाले पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश इन पाँच महाभूतों से बने शरीर में अपेक्षा नहीं रहती है।

➢**'सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।'** (रघु. 02/58)

राजा दिलीप सिंह से कहते हैं कि- दो व्यक्तियों में बातचीत आरम्भ हो जाय तो उसी से उनका रिश्ता जुड़ जाता है। अर्थात् सम्बन्ध को बातचीत के द्वारा उत्पन्न हुआ कहते हैं।

➢**भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्** (रघु. 03/14)

सत्पात्र को दी हुई शिक्षा सफल होती है।

➢**'पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्।'** (रघु. 03/46)

रघु, इन्द्र से कहते हैं कि वेद के मार्ग को दिखाने वाले बड़े लोग मलिन (निन्दित) मार्ग का अवलम्बन नहीं करते हैं।

➢**'यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः।'** (रघु. 03/48)

इन्द्र-रघु यश को ही धन मानने वाले लोगों को शत्रु से यश की रक्षा करनी उचित है।

➢**'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।'** (रघु. 03/62)

गुण ही सर्वत्र शत्रु-मित्रादिकों में पैर को स्थापित करते हैं अर्थात् गुण से ही सर्वत्र आदर होता है।

➢**'गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम्।'**(रघु.03/70)

वृद्ध इक्ष्वाकुवंश के राजाओं का यह वन में जाना (वानप्रस्थ होना) कुलागत नियम है।

➢**'प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो ही महात्मनाम्।'** (रघु. 04/64)

महात्माओं का क्रोध (कोप) प्रणाम करने से ही दूर (शान्त) हो जाने वाला होता है।

➢**'आदानं हि विसर्गाय सतां वारि मुचामिव।'** (रघु. 04/86)

सज्जनों का लेना मेघों की भाँति, उसी प्रकार से दूसरे को देनें के लिए होता है।

➢**सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा।** (रघु. 05/13)

कौत्स ऋषि रघु से कहते हैं कि- सूर्य के प्रकाशमान होने पर अन्धकार-समूह लोगों की दृष्टि को ढँकने के लिए किसी प्रकार से भी समर्थ नहीं होता।

➢**'पर्यायपीतस्य सुरैर्हिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः।'** (रघु. 05/16)

कौत्स, रघु से- देवताओं द्वारा क्रम से पीये गये चन्द्रमा की कलाओं का क्षय होना बढ़ने की अपेक्षा निश्चय करके अधिक प्रशंसनीय होता है।

➢**निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि।**(रघु.05/17)

कौत्स, रघु से-चातक (पपीहा) पक्षी भी शरद् कालीन जलरहित मेघ से याचना नहीं करता है।

➢**उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत्साप्रकृतिर्जलस्य।** (रघु. 05/54)

गन्धर्व राजकुमार प्रियंवद-युवराज अज से कहता है कि- जैसे जल स्वाभाविक शीतल ही है कारण वश गरम हो जाता है, उसी भाँति महात्मा लोग स्वाभाविक शान्त होते हैं।

➢**'प्रातिप्रियं चेद्भवतो न कुर्यां वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धिः।'** (रघु. 05/56)

गन्धर्व राजकुमार प्रियंवद-युवराज अज से कहता है कि- उपकार के बदले मैं आपका प्रत्युपकार न करुँ तो मेरा अपना स्थान प्राप्त करना ही व्यर्थ होगा।

➢**'नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः।'** (रघु. 06/22)

द्वार पालिका सुनन्दा- राजकुमारी इन्दु मती से मगध नरेश परन्तप का परिचय कराती है- ताराग्रह नक्षत्रों से भरी रहने पर भी रात्रि 'चन्द्रमा से ही चाँदनी वाली कहलाती है।'

➢**'भिन्नरुचिर्हि लोकः।'** (रघु. 06/30)

लोग भिन्न-भिन्न रुचि वाले होते हैं, अतः जिसको जो रुचता है (अच्छा लगता है) वही उसके लिए सुन्दर और ग्राह्य होता है।

➢**'नहि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं कांक्षति षट्पदालिः।'** (रघु. 06/69)

भ्रमरों की पंक्ति खिले (बौरों से लदे) हुए आम को छोड़कर दूसरे वृक्ष की चाह नहीं करती है।

➢**'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन।'** (रघु. 06/79)

द्वारपालिका सुनन्दा-इन्दुमती से अज को वरण करने के लिए रत्न की शोभा उसके अनुरूप सुवर्ण से ही होती है, दूसरे से नहीं।

➢**'मनो हि जन्मान्तरसङ्गतिज्ञम्।'** (रघु. 07/15)

मन पूर्वजन्म के सम्बन्ध को भली भाँति पहचान लेता है।

➢**ननु तैलनिषेकबिन्दुना सह दीपार्चिरुपैति मेदिनीम्।'** (रघु. 08/38)

दीपक से गिरते हुए तेल के बूँदों के साथ दीपक की लौ भी पृथ्वी पर गिर पड़ती है।

➢**'प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते।'** (रघु. 08/40)

दवा आयु शेष रहने पर ही काम करती है अर्थात् आयु के शेष रहने पर ही उपाय सफल होता है।

➢**अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु।** (रघु. 08/43)

अजविलाप- अचेतन लोहा भी अग्नि में तपाये जाने पर पिघल जाता है तब शोक से सन्तप्त प्राणियों का क्या कहना।

➢**'विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया।'** (रघु. 08/46)

अज नारद की वीणा के माला द्वारा इन्दुमती का मृत्यु होने पर- ईश्वर की इच्छा से विष भी कहीं पर अमृत हो जाता है और अमृत भी विष हो जाता है।

➢ **'धिगिमां देहभृतामसारताम्।'** (रघु. 08/51)

अज विलाप करते हुए- देहधारियों की निःसारता को धिक्कार है।

➢ **'वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः।'** (रघु. 08/83)

महर्षि वशिष्ठ का शिष्य उनके वचनों को कहता है- राजाओं की सच्ची सहधर्मिणी तो पृथ्वी ही है।

➢**'परलोकजुषां स्वकर्मभिर्गतयो भिन्नपथा हि देहिनाम्।** (रघु. 08/85)

वशिष्ठ के वचन को अज से कहता हुआ शिष्य- मृत्यु को प्राप्त हुए जीवों की गति अपने कर्मों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है।

➢**'स्वजनाश्रु किलातिसन्ततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते।'** (रघु. 08/86)

पूर्ववत् - निरन्तर बहने वाले स्वजनों के आँसू मृतात्मा को जलाते हैं ऐसा मनु आदि महर्षि कहते हैं।

➢**'मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।'** (रघु. 08/87)

पूर्ववत् - शरीरधारियों का मरना स्वभाव और जीना विकार कहा जाता है।

➢**'द्रुमसानुमतां किमन्तरं यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः।'** (रघु. 08/90)

'वायु के बहने पर यदि वृक्ष और पर्वत दोनों चञ्चल हो उठें तो दोनों में अन्तर ही क्या रह जायेगा।'

➢**'अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः।'** (रघु. 09/74)

कभी-कभी विद्वान् लोग भी जब रजोगुण के आवेश में अन्धे हो जाते हैं तब वे अयोग्य पथ पर पैर बढ़ा लेते हैं या अयोग्य कार्य कर बैठते हैं।

➢**'कृष्यां दहन्नपि खलु क्षितिमिन्धनेद्धो बीजप्ररोहजननीं ज्वलनः करोति।'** (रघु. 09/80)

दशरथ श्रवण के माता-पिता से- घास-फूस ईंधन आदि से जलती अग्नि जोतने योग्य भूमि को जलाता हुआ भी बीज अंकुरित होने योग्य बनाकर भूमि का उपकार ही करता है।

➢**'अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्।'** (रघु. 10/06)

किसी कार्य में विलम्ब नहीं होना पूर्ण होने वाले कार्य की सिद्धि का शुभ लक्षण होता है।

➢ **'याथार्थ्यं वेद कस्तव।'** (रघु. 10/24)

देवताओं द्वारा विष्णु की स्तुति- हे विष्णु! तुम्हारी वास्तविकता कौन जानता है? अर्थात् कोई नहीं।

➢**'स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते।'** (रघु. 10/30)

पूर्ववत् - हे विष्णु अवाङ्मनस् गोचर आपके चरित्रों की स्तुति का अन्त तक वर्णन नहीं किया जा सकता।

➢**स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते।** (रघु. 10/40)

विष्णु ने देवताओं से- अग्नि की सहायता करने के लिए वायु से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती है वह तो स्वयं उसका सहायक बन जाता है।

➢ **तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।** (रघु. 11/01)

तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती।

➢**'अप्यसुप्रणयिनां रघोः कुले न व्यहन्यत कदाचिदर्थिता।'** (रघु. 11/02)

रघुवंशियों की सदा से यह रीति चली आती है कि यदि कोई उनसे प्राणों की याचना भी करे तो कभी असफल नहीं होती।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाँय पर वचन न जाई।। (मानस-तुलसी)

किं महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते। (रघु. 11/27)

क्या बड़े-बड़े सर्पो पर प्रहार करने वाले गरुड़ जी भी छोटे-छोटे सर्पो पर प्रहार करते हैं। अर्थात् नहीं।

➢**सद्य एव सुकृतां हि पच्यते कल्पवृक्षफलधर्मिकाङ्क्षितम्।**

(रघु. 11/50)
पुण्यात्माओं की अभिलाषा कल्पवृक्ष के समान तत्काल फल देने वाली होती है।

➢**'पावकस्य महिमा सा गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः।'** (रघु. 11/75)
अग्नि का प्रताप तभी प्रशंसनीय है, जब वह समुद्र में भी वैसे ही भड़ककर जले जैसे सूखी घास के ढेर में जलता है।

➢**'खातमूलमलिनो नदीरयैः पातयत्यति मृदुस्तटद्रुमम्।'** (रघु. 11/76)
परशुराम राम से कहते हैं कि- जिस वृक्ष की जड़ को नदी की प्रचण्ड धारा ने पहले ही खोखली कर दी हो उसे वायु के झोंके से ढह जाने में क्या देर लगती है।

'केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किम्पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः।' (रघु. 11/80)
रामद्वारा परशुराम के धनुष को हाथ में लेने पर- नया मेघ अकेला भी सुन्दर होता है फिर यदि वह इन्द्र धनुष से युक्त हो जाय तो उसकी शोभा का क्या कहना।

➢**'निर्जितेषु तरसा तपस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये।'** (रघु. 11/89)
राम द्वारा परशुराम के चरण स्पर्श करने पर- जब कोई पराक्रमी वीर अपने पराक्रम से अपने अपने शत्रु को जीत लेता है तब यदि वह नम्रता भी दिखाता है तो उसकी कीर्ति ही बढ़ती है।

➢**'अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः।'** (रघु. 12/33)
शूर्पणखा द्वारा राम को अपना पति बनाने को कहने पर- बहुत बढ़ा हुआ स्त्रियों का काम समय और असमय को नहीं पहचानता है।

➢**'काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः।** (रघु. 12/69)
राम द्वारा विभीषण को राक्षसों का राज देने पर- समय पर आरम्भ की गई नीतियों सफल होती है।

➢**'अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीयः।'** (रघु. 14/35)
राम द्वारा सीता को त्यागने का निश्चय करने पर- यशस्वियों को अपना यश अपने शरीर से भी अधिक प्यारा है फिर स्त्री भोग की वस्तुओं की तो बात ही क्या।

➢**छाया हि भूमेः शशिनो मलत्वेनारोपिता शुद्धिमतः प्रजाभिः।** (रघु. 14/40)
राम का कथन सीता की निर्दोषिता के विषय में लोक निन्दा को बड़ा मानने पर- चन्द्रमा में पड़ने वाली भूमि को परछाई को लोग निर्मल चन्द्रमा का कलङ्क ही कहते हैं।

➢**'अमर्षणः शोणितकांक्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः।'** (रघु. 14/41)
राम-सीता त्याग एवं रावणवध के सम्बन्ध में- असहनशील (क्रोधी) सर्प पैर से दबाने वाले व्यक्ति को रक्त पीने के लिए नही डँसता है वह तो केवल बदला लेने के लिए ही काटता है।

➢**'आज्ञा गुरूणां विचारणीया।'** (रघु. 14/46)
गुरुजनों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।

➢**'त्राणाभावे हि शापास्त्राः कुर्वन्ति तपसो व्ययम्।'** (रघु. 15/03)
लवणासुर को मुनियों नें राम रूपी रक्षक होनें के कारण ही श्राप नहीं दिया- ऐसे मुनि लोग शाप ही अस्त्र है जिनका वे रक्षक के न होने पर ही तप का व्यय करते हैं।

➢**'धर्मसंरक्षणार्थैव प्रवृत्तिर्भुवि शार्ङ्गिणः।'** (रघु. 15/04)
राम द्वारा लवणासुर का वध करने की आज्ञा देना- धर्म रक्षा के लिए ही पृथ्वी पर विष्णु जी का अवतार होता है।

➢**रुरोध सम्मुखीनो हि जयो रन्ध्रप्रहारिणाम्।** (रघु. 15/17)
लवणासुर की शस्त्र हीनता पर- शस्त्रादि से निर्बल शत्रु पर प्रहार करने वाला योद्धा अवश्य ही विजयी होता है।

➢**'गुरुर्विधिबलापेक्षी।'** (रघु. 15/85)
विधि के विधान को कोई नहीं टाल सकता।

➢**'सौभ्रात्रमेषां हि कुलानुसारि।'** (रघु. 16/01)
कालिदास कुश तथा उनके अन्य भाइयों की चर्चा में- सद्भ्रातृभाव कुलक्रमागत (खानदानी) होता है।

➢**'तुल्यपुष्पाभरणा हि धीरः।'** (रघु. 16/74)
सरयू में कुश का भूषण गिरने पर-धीर पुरुष पुष्प और भूषण को समान समझते हैं।

➢**'प्रह्वेष्वनिर्बन्धरुषो हि सन्तः।'** (रघु. 16/80)
कुश द्वारा कुमुदनाग पर प्रहार करने पर सज्जन लोग नम्र व्यक्तियों पर क्रोध करने का हठ नहीं करते, अर्थात् क्रोध नहीं करते।

➢**'वयोरूपविभूतीनामेकैकं मदकारणम्।'** (रघु. 17/43)
राजा अतिथि का गर्व रहित होने का वर्णन अवस्था (युवावस्था) सुन्दर रूप तथा ऐश्वर्य इनमें से एक-एक गर्व का कारण होता है।

➢**'कातर्यं केवला-नीतिः शौर्यं श्वापदचेष्टितम्।'**(रघु. 17/47)
राजा अतिथि की राजनीति एवं शूरता का वर्णन केवल शूरताहीन राजनीति से ही कार्य करना कायरता है तथा केवल राजनीति हीन शूरता से ही कार्य करना हिंसक जन्तुओं की चेष्टा के समान है।

➢**'न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहाशयः।** (रघु. 17/52)
अतिथि के दुर्जेय किले का वर्णन- हाथियों पर आक्रमण करने वाला सिंह भय से पहाड़ की कन्दरा में नहीं सोता है अर्थात् निर्भीक होकर भी सिंह सुरक्षित पर्वत कन्दरा में सोता है।

➢**वृद्धौ नदीमुखेनैव प्रस्थानं लवणाम्भसः।** (रघु. 17/54)
अतिथि की उन्नति का वर्णन- बढ़ने पर भी क्षार-समुद्र नदी के रास्ते ही चलता है अर्थात् बृद्धि की प्राप्ति होने पर भी महान् लोग कुमार्ग पर नहीं चलते।

➢**'समीरणसहायोऽपि नाम्भःप्रार्थी दवानलः।'** (रघु. 17/56)

अतिथि द्वारा आक्रमण करने का वर्णन- वायु के सहायक होने पर भी दावाग्नि जल की चाह नहीं करती अर्थात् जल को जलाने की इच्छा नहीं करती' अपितु तृण-काष्ठादि को ही जलाती है।

➢**'हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते।'** (रघु. 17/58)
अतिथि की मित्रता का वर्णन दुर्बल मित्र कोई लाभ नहीं पहुँचाते तथा बलवान मित्र विकार युक्त हो जाते हैं अर्थात् हानि पहुँचाते हैं।

➢**कोशेनाश्रयणीयत्वामिति तस्यार्थसङ्ग्रहः।** (रघु. 17/60)
कोष से आश्रयणीयता होती है अर्थात् लोग धनिक व्यक्तियों का ही आश्रय करते हैं क्योंकि जल से पूर्ण मेघ का ही चातक अभिनन्दन करता है।

➢**प्रवृद्धौ हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथाविधः।** (रघु. 17/71)
अतिथि की सर्वदा समृद्धि का वर्णन- बढ़े हुए चन्द्रमा तथा समुद्र भी क्षीण हो जाते हैं।

➢**'उदधेरिव जीमूताः प्रापुर्दातृत्वमर्थिनः।'** (रघु. 17/72)
अतिथि की दानशीलता का वर्णन- निर्जलमेघ समुद्र के पास जाने से उससे अत्यधिक जल पाकर जल को देने वाला बन जाता है।

➢**''सुखानि सोऽभुङ्क्त सुखोपरोधि वृत्तं हि, राज्ञामुपरुद्ध वृत्तम्॥''** (रघु. 18/18)
परियात्र का वर्णन- सुखरोधक राजाओं का व्यापार (प्रजापालन आदि कार्य) सुख को रोकने वाला होता है। अतएव वह कारागार के समान है।

➢**दृष्टो हि वृण्वन्कलभप्रमाणोऽप्याशाः पुरोवातमवाप्य मेघः।** (रघु. 18/38)
बालक सुदर्शन के मुकुट धारण करने का वर्णन- हाथी के प्रमाण वाले (अत्यन्त थोड़े) भी मेघ को पूर्व वायु (पुरवैया हवा) के साथ दिशाओं को घेरते देखा गया है।

➢**''स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते।''** (रघु. 19/49)
अग्निवर्ण के दोषों का वर्णन- प्रियकर विषयों के वशीभूत इन्द्रिय समूह को इन्द्रिय प्रियकर विषयों से दुःख पूर्वक रोका जाता है।

रघुवंश पर टीकाएँ-
रघुवंश महाकाव्य की व्यापकता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि-
➢ रघुवंश की 40 टीकाएँ प्राप्त होती हैं।
➢ मल्लिनाथ की टीका सर्वाधिक प्रमाणित मानी जाती है। उन्होने इसके प्रत्येक शब्द की व्याख्या की है।

प्रमुख टीकाकार एवं टीकाएँ

बल्लभदेव-
➢ रघुवंश महाकाव्य के सबसे प्राचीन टीकाकार।
➢ टीका का नाम- रघुवंशपञ्जिका
➢ पाण्डुलिपि के उपलब्ध, अप्रकाशित
➢ समय-दशमशती

दक्षिणावर्तनाथ-
➢ टीका का नाम- 'रघुवंशदीपिका'
➢ पाण्डुलिपि में अत्यधिक त्रुटि होने से अप्रकाशित
➢ समय-13वीं शती।

मल्लिनाथ-
➢ संस्कृत साहित्य के समर्थ टीकाकार।
➢ टीका का नाम-'सञ्जीवनी'।
➢ समय-15वीं शती।

अरुणगिरिनाथ-
➢ रघुवंश के तीसरे टीकाकार
➢ टीका का नाम- 'प्रकाशिका'
➢ समय- 15वीं शती।

नारायण पण्डित-
➢ अरुण गिरिनाथ का अनुवर्तन किया।
➢ टीका का नाम- 'पदार्थदीपिका'
➢ समय- (वि.स. 1506/1555)

चरित्रवर्धन-
➢ टीका का नाम- 'शिशुहितैषिणी'
समय- 15वी शती

रघुवंश के अन्य टीकाकार
➢ जिन समुद्रसूरि, हेमाद्रि, रत्नचन्द्र, सुमालिविजय, हरिदास मित्र, कृष्णभट्ट, जनार्दन और नल विजयराम प्रमुख हैं।

महत्वपूर्णतथ्य
➢ रघुवंश ध्वनि काव्य है यह ध्वनि काव्य का ज्वलन्त रूप है।
➢ रघुवंश में 19 सर्गों में रघुवंशी राजाओं का चरित्र गान किया गया है।
➢ रघुवंश चरित्रप्रधान काव्य है।
➢ लोकप्रियता की दृष्टि से रघुवंश कालिदास की कृतियों में श्रेष्ठ है।
➢ यह एक पौराणिक काव्य है जिसकी कथा इतिहास, पुराण, रामायण तथा महाभारत से ली गयी है।
➢ इतनी व्यापक और विराट् कथा के आयोजन के फलस्वरूप ही आचार्यों ने कालिदास को 'रघुकार' की उपाधि दी

रघुवंशम्-बिन्दुवार अध्ययन

➢ 'रघुवंश'-महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्? - **कालिदासः**
➢ 'रघुवंशम्' है? - **महाकाव्यम्**
➢ 'रघुवंशमहाकाव्य' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की? - **शिव-पार्वती की**
➢ रघुवंशे 'जगतः पितरौ' इति कौ वर्णितौ? - **पार्वतीपरमेश्वरौ**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये सर्गाः सन्ति **19सर्गाः**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये कति राजानो वर्णिताः सन्ति? **31**
➢ रघु के वंश का किसमें वर्णन है? - **रघुवंश में**
➢ रघुवंश में किस वंश के राजाओं का वर्णन है?-**सूर्यवंश के**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनम् अस्ति-**दिलीपस्य**
➢ इक्ष्वाकुवंशे जातः -**रामः**
➢ 'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते' इत्यत्र राजार्थकः शब्दः कः- **अधिपः**

- 'रघुवंशे' कस्य वर्णनं नास्ति - **पार्वत्याः**
- 'रघुवंश' में किसकी गो-सेवा वर्णित है - **दिलीप की**
- 'रघुवंश' में दशरथ के पिता कौन हैं - **अज**
- 'नन्दिनी धेनु' का वर्णन किसमें है - **रघुवंशम् में**
- 'रघुवंश' में इन्दुमती किसकी रानी हैं - **अज की**
- राजा दशरथ का सम्बन्ध किस वंश से था - **सूर्यवंश से**
- 'रघुवंश-महाकाव्य' किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है - **शिव-पार्वती की**
- रघुवंशी राजाओं में सर्वप्रथम नाम आता है - **वैवस्वत**
- रघुवंशस्य व्याख्यानं केन विरचितम्? - **मल्लिनाथेन**
- अजविलाप किसमें है - **रघुवंशम् में**
- कालिदासविरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक में अग्निमित्र की द्वितीय पत्नी है - **इरावती**
- 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है - **रघुवंशम् की**
- 'रघुवंशमहाकाव्य' का पात्र नहीं है - **भीम**
- 'अग्निवर्ण' पात्र है - **रघुवंश का**
- वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते - **रघुवंशे**

- 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' इति कः कं प्रति आह - **दिलीपः वशिष्ठं प्रति**
- 'सन्ध्या' से किसकी तुलना की गयी है - **धेनु की**
- इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का निरूपण प्राप्त होता है- **रघुवंशम् में**
- किसका परिश्रम व्यर्थ है - **राजा दिलीप का**
- किसके ऊपर चलाया गया अस्त्र व्यर्थ होगा - **सिंह पर**
- रघुवंशमहाकाव्ये कस्य वंशस्य राज्ञां वर्णनं विद्यते - **इक्ष्वाकुवंशस्य**
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' इतीयं पंक्तिः केन आश्रमेण सम्बद्धा - **संन्यासाश्रमेण**
- कौन लज्जा त्यागकर लौट जाय - **राजा दिलीप**
- किसके प्रति शिष्य भक्ति प्रदर्शित करें - **गुरु के प्रति**
- नन्दिनी गाय ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था-**पुत्र-प्राप्ति का**
- रघुवंशे रघोः पिता कः? - **दिलीपः**
- रघुवंश के किस सर्ग में सीतापरित्याग का वृत्तान्त है? -**चतुर्दशे**
- रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्? - **सीतापरित्यागः**
- रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?- **द्वितीये**
- रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार? - **विश्वजित्**
- "श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्"–इत्यत्र कोऽलङ्कारः? - **उपमा**
- राजा दिलीप की पत्नी का नाम है? - **सुदक्षिणा**
- दिलीपस्य गोसेवा कस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽस्ति?- **रघुवंशे**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'–इति कस्य ग्रन्थस्य प्रथमं पद्यम्? - **रघुवंशस्य**
- 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' इस पंक्ति को कौन कहता है? - **वशिष्ठ**
- रघुवंशमहाकाव्ये अजः कस्य पुत्रः? - **रघोः**
- गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है - **कालिदास कृत रघुवंश में**
- दिलीपस्य वृत्तं कस्मिन् काव्ये अस्ति? - **रघुवंशे**
- 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' प्रस्तुत श्लोकांश उद्धृत है-**रघुवंशे**
- "प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
  सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।"
  यह किस ग्रन्थ में मिलता है - **रघुवंशम्**
- "श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्" इस उक्ति के रचयिता कौन हैं - **कालिदास**
- "सञ्चारिणी दीपशिखेव" यह उपमा कालिदास के किस काव्य में है - **रघुवंशम् में**
- 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः' – पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **रघुवंश में**
- 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।।' श्लोकांश उद्धृत है - **रघुवंशम् से**
- "प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः" यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
- "हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा" यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
  यह कथन किसने किसके लिए कहा- **सिंह ने दिलीप से**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' श्लोकांश किस काव्य में है? - **रघुवंश में**
- "शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्" इत्यस्ति - **रघुवंशमहाकाव्ये**
- "सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ" इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन्सन्दर्भे वर्णितं भवति - **इन्दुमती-स्वयंवरः**
- "सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे" सूक्ति ग्रहण की गई है - **रघुवंशम् से**
- "शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति" इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **रघुवंशे**
- "ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
  गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।"
  कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः? - **दिलीपस्य**
- पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्।
  सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।।
  रघुवंशे कस्येयमुक्तिः? - **रामस्य**
- रघोः वंशस्य आदिमः मनुः कः? - **वैवस्वतमनुः**
- कस्य शापः दिलीपस्य सन्ततिप्रतिबन्धकः आसीत्? - **कामधेनोः शापः**
- रघुवंशमहाकाव्यस्य उपजीव्यम् अस्ति - **रामायणम्**

- दिलीपः किमर्थं बलिमग्रहीत्? - **प्रजाक्षेमाय**
- 'उद्बाहुरिव वामनः' इत्युपमा कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते - **रघुवंशे**
- 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' – इत्युक्तिः? - **कालिदासस्य**
- राज्ञः दिलीपस्य पत्नी सुदक्षिणा .... राजकन्या आसीत्? - **मगधस्य**
- 'इन्दुमती-स्वयंवर-वर्णनम्' रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे विद्यते? - **षष्ठे**
- 'क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्' इत्थं का वदति - **सीता**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्' इति कालिदासोक्तिः रघुवंशे कुत्रास्ति? - **प्रथमसर्गे**
- आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुधा हि सा का - **नन्दिनी**
- 'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।' इतीयं पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते? - **रघुवंशे**
- 'यशोधनानां हि यशो गरीयः' इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते- **रघुवंशे**
- स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः–इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते - **रघुवंशे**
- वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ? - **पार्वति-परमेश्वरौ**
- 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।' कः?- **दिलीपः**
- 'शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति'- कस्य वचनमिदम्? - **सिंहस्य**
- रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गे का कथा वर्णिता अस्ति - **रामस्य अयोध्याप्रत्यागमनम्**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्'
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' कथनम् इदं केषां सन्दर्भे प्रयुक्तम्? - **रघूणाम्**
- राजा दिलीपः किमर्थं राज्यभारं सचिवेषु निचिक्षिवे - **संतानार्थाय विधये**
- रघुवंशस्य .... सर्गे राज्ञः दिलीपस्य गोसेवाचरणव्रतं वर्णितमस्ति- **द्वितीये**
- "वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे" – इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः- **रामः**

4.8 कुमारसम्भवम्-महाकाव्य का परिचय

- 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है।
- इसमें कवि शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म, तथा उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है।
- इस महाकाव्य में 17 **सर्ग** हैं।
- किन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है।
- 'विवरण टीका' के लेखक- नारायण पण्डित ने कहा कुमारसम्भव काव्य का लक्ष्य पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण मात्र था।
- काव्यशास्त्रीय आचार्यों ने प्रथम आठ सर्गों से ही उद्धरण दिये हैं।
- मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
- मल्लिनाथ के पूर्ववर्ती अरुणगिरिनाथ ने भी आठ सर्गों तक ही टीका लिखी है।
- भाषा, भाव की दृष्टि से परवर्ती सर्ग मौलिक सर्गों की अपेक्षा हीनतर है।
- केवल सीताराम नामक कवि ने संजीवनी नाम से उन सर्गों की व्याख्या की है।
  (सर्वप्रथम टीका सम्पूर्ण काव्य पर 17 सर्ग तक)
- 'कुमारसम्भवम्' में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है।
- वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता है।

कुमारसम्भवम् - महाकाव्य का परिचय

- **प्रणेता-** महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना।
- **नायक-** कुमारसम्भव के नायक शिव दिव्य कोटि के हैं।
- **प्रतिनायक-** तारकासुर
- **सर्ग संख्या-** 17 सर्ग (मूल रूप से 8 सर्गों की रचना को (आगे विवरण) पेज
- **उपजीव्य-** शिवपुराण, रामायण, महाभारत।

रस-

- कुमारसम्भवम् का अङ्गी रस **शृङ्गार** है।
- शिवपार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य शृङ्गार मय है।

  तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।
  सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्॥
  (कुमार. 08/16)
- चतुर्थ सर्ग में रति के करुण विलाप में आद्यन्त करुण रस छाया हुआ है।

  गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः।
  अहमस्य दशेव पश्य माम विषह्यव्यसनेन धूमिताम्॥
  (कुमार. 4/30)
- समाधिस्थ शिव की मूर्ति एवं पार्वती की तपस्या वर्णन में शान्त रस की छटा दिखती है।
- अंग रस के रूप में हास्य रस भी इस महाकाव्य में विन्यस्त है।

छन्द-

- कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिये थे।
- बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है।
- छोटे छन्दों में भी उपजाति और अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।
- कुमारसम्भव में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ।

अलंकार-

कुमारसम्भवम् के सर्गों में प्रयुक्त छन्द

सर्ग संख्या	सर्ग में प्रयुक्त छन्द	सर्गान्त मे प्रयुक्त छन्द

प्रथम सर्ग	उपजाति	मालिनी
द्वितीय सर्ग	अनुष्टुप्	मालिनी
तृतीय सर्ग	उपजाति	मालिनी
चतुर्थ सर्ग	वियोगिनी	पुष्पिताग्रा
पञ्चम सर्ग	वंशस्थ	वसन्ततिलका
षष्ठ सर्ग	अनुष्टुप्	पुष्पिताग्रा
सप्तम सर्ग	उपजाति	मालिनी
अष्टम सर्ग	रथोद्धता	मालिनी
नवम सर्ग	उपजाति	पुष्पिताग्रा
दशम सर्ग	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
एकादश सर्ग	उपजाति	हरिणी
द्वादश सर्ग	उपजाति	हरिणी
त्रयोदश सर्ग	उपजाति	मालिनी
चतुर्दश सर्ग	उपजाति	मालिनी
पञ्चदश सर्ग	उपजाति,वंशस्थ	शार्दूलविक्रीडित
षोडश सर्ग	अनुष्टुप्	हरिणी
सप्तदश सर्ग	वसन्ततिलका	मालिनी

विशेष-

- कुमारसम्भवम् में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग निम्न लिखित 9 सर्गों में हुआ-
- नव सर्गों में 1,3,7,9,11,12,13,14,15 उपजाति छन्द प्रयुक्त
- सर्गान्त में सर्वाधिक मालिनी छन्द का प्रयोग निम्नलिखित 8 सर्गों में हुआ है।
- आठ सर्गों में 1,2,3,7,8,13,14,17 सर्गान्त में मालिनी छन्द प्रयुक्त
- अनुष्टुप् छन्द का भी विभिन्न सर्गों में प्रयोग हुआ है- 4 सर्गों में 2,6,10,16 अनुष्टुप् छन्द प्रयुक्त
- हरिणी छन्द का प्रयोग निम्नलिखित सर्गों के अन्त में हुआ है-
- तीन सर्गों में 11,12,16 सर्गान्त में हरिणी छन्द प्रयुक्त
- वियोगिनी छन्द का प्रयोग चतुर्थ सर्ग में हुआ है रति विलाप में इसका प्रयोग-

'वियोगिनी विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी।'

अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता।
विधिना प्रतिपादयिष्यता नववैधव्यमसह्यवेदनम्।।

(कुमार. 04/01)

कुमारसम्भवम् के सर्गों का नाम एवं श्लोक संख्या

सर्गसंख्या	सर्ग का नाम	सर्ग में श्लोक संख्या
प्रथम सर्ग	उमोत्पत्ति (उमा उत्पत्ति)	60
द्वितीय सर्ग	ब्रह्मसाक्षात्कार	64
तृतीय सर्ग	मदन दहन	76
चतुर्थ सर्ग	रति विलाप	46
पञ्चम सर्ग	तपः फल उदय	86
षष्ठ सर्ग	उमाप्रदान	95
सप्तम सर्ग	उमा परिणय	95
अष्टम सर्ग	उमासुरतवर्णन	91
(श्रीसीताकवि)	उमा परिणय	(मल्लिनाथ)
नवम सर्ग	कैलाश गमन	52
दशम सर्ग	कुमार उत्पत्ति	60
एकादश सर्ग	कुमार उत्पत्ति	50
द्वादश सर्ग	कुमार सेनापतिवर्णन	60
त्रयोदश सर्ग	कुमार सेनापति अभिषेक	51
चतुर्दश सर्ग	देवसेना प्रयाण	51
पञ्चदश सर्ग	देवसेना प्रयाण सुरासुरसैन्य संघट्ट	53
षोडश सर्ग	देवसेना प्रयाण सुरासुरसैन्य संग्रामवर्णन	51
सप्तदश सर्ग	तारकासुर वध	55
		कुल=1096

- **सर्गानुसार कथावस्तु**

सर्ग-1
- हिमालय का भव्य वर्णन
- हिमालय-मैना विवाह
- पार्वती का जन्म और सौन्दर्य
- नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह की चर्चा।
- पार्वती द्वारा शिव की आराधना।

सर्ग-2
- तारकासुर से पीड़ित देवताओं के द्वारा ब्रह्मा की प्रार्थना।
- ब्रह्मा द्वारा उपाय कि शङ्कर-पार्वती पुत्र ही तारक-वध कर सकता है।

सर्ग-3
- देवगण शिव के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने के लिए कामदेव का उपयोग करते हैं।
- कामदेव द्वारा वसन्त ऋतु फैलाना शिव पर बाण चलाना।
- शिव द्वारा कामदेव को भस्मसात् करना।

सर्ग-4
- कामदेव की पत्नी रति का विलाप
- वियोगिनी छन्द का कवि द्वारा प्रयोग।

सर्ग-5
- महाकाव्य का श्रेष्ठ सर्ग।
- पार्वती की घोर तपस्या का वर्णन
- असाध्य शिव को तपस्या ही द्रवित करती है।
- शिव पार्वती का रमणीय संवाद।

सर्ग-6
- विवाहोच्छुक शिव का सन्देश लेकर सप्तर्षिगण हिमालय के पास जाते हैं।

सर्ग-7
- शिव की दर्शनीय वर यात्रा।
- पार्वती-परिणय।

सर्ग-8
- रथोद्धता छन्द में विवाह के अनन्तर शिव पार्वती दाम्पत्य जीवन। केलि विहार वर्णन।
- कुछ विद्वान् 8 सर्ग तक ही कालिदास की रचना मानते हैं।

सर्ग-9
- शिव-पार्वती का विहार यात्रा करते हुए कैलास पर्वत गमन।

सर्ग-10
- कार्तिकेय (कुमार, स्कन्द का गर्भ में आना।)

सर्ग- 11
- कुमार का जन्म तथा बाल्यावस्था वर्णन अर्जुन की चार पत्नी- द्रौपदी, सुभद्रा, नागकन्या लूपी, चित्रांगदा

सर्ग-12
- कुमार का सेनापति बनना।

सर्ग-13
- कुमार का सैन्य संचालन कौशल वर्णन।

सर्ग-14
- देवसेना द्वारा आक्रमण हेतु प्रस्थान।

सर्ग-15
- देवासुर-सेनाओं का संघर्ष।

सर्ग-16
- युद्ध वर्णन

सर्ग-17
- कुमार द्वारा तारकासुर का वध।

प्रमुख सूक्तियाँ

1- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (5/33)
2- न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (5/11)
3- आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः। (3/40)
4- कठिनाः खलु स्त्रियः। (4/5)
5- प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता। (5/1)
6- न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। (5/45)
7- प्रायेण समग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। (3/28)
8- स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृत द्वारमिवोपजायते।। (4/26)
9- क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते। (5/86)
10- नहीश्वरव्याहृतयः कदाचित् पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्। (3/63)
11- मनोरथानामगतिर्न विद्यते।
12- प्रायेण गृहिणी नेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।
13- विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्
14- एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।
15- न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्ष्यते।

महाकाव्य का वैशिष्ट्य
- महाकाव्य का नामकरण कथानक पर आधारित है-
- 'कुमारस्य सम्भवः जन्म यस्मिन् काव्ये तत् कुमारसम्भवम्'
- महाकाव्य के अधिकांश लक्षण कुमारसम्भव में मिलते हैं जो कि विभिन्न आचार्यों द्वारा बताते गये हैं।
- ''विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।'' काव्य महादेव को वास्तविक धीर कहा गया है।

कुमारसम्भवम्- बिन्दुवार अध्ययन
- 'कुमारसम्भवमहाकाव्य' के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- कुमारसम्भवमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति? - **सप्तदश**
- कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य कस्मिन् सर्गे हिमालयवर्णनमस्ति? - **प्रथम**
- कस्मिन् काव्ये हिमालयवर्णनं प्रथमतः? - **कुमारसम्भवे**
- 'शिव-पार्वत्योः' चर्चा कस्मिन् ग्रन्थे दृश्यते? - **कुमारसम्भवे**
- कुमारसम्भवमहाकाव्ये कुमारः वर्तते - **कार्तिकेयस्य**
- 'कुमारसम्भव' में किस राक्षस का वध वर्णित है? - **तारकासुर**
- कुमारसम्भवे उमातपोवर्णनं कस्मिन् सर्गे कृतम्? - **पञ्चम**
- ''स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः'' अत्र अलङ्कारोऽस्ति? -**उत्प्रेक्षा**
- ''एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः'' उपर्युक्त सूक्ति कहाँ मिलती है? - **कुमारसम्भवम्**
- ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' सूक्ति है - **कुमारसम्भवे**
- ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः'' यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **कुमारसम्भवम्**
- क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव - **कुमारसम्भव**
- 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' इयं पंक्ति अस्ति - **कुमारसम्भवस्य**
- ''स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः'' उक्ति है - **कुमारसम्भवम् की**
- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य? - **कुमारसम्भवम्/ब्रह्मचारी का कथन**
- 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- शिव पार्वती विवाह, कार्तिकेय जन्म व कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध – ये समस्त घटनायें किस महाकाव्य की ओर सङ्केत कर रही हैं? - **कुमारसम्भवम्**
- 'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता'–इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- 'मनोरथानामगतिर्न विद्यते'-कस्येदं वाक्यम्? -**पार्वत्याः**
- कुमारसम्भवम् महाकाव्यस्य प्रारम्भः कीदृग्विधेन मङ्गलाचरणेन अस्ति? - **वस्तुनिर्देशात्मकेन**

4.9 मृच्छकटिकम्

महाकवि शूद्रक का परिचय
- **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।

- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
- **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
- शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
- महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''

- शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
- शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
- 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
- शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
- **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम् का परिचय

- **लेखक-** शूद्रक
- **विधा-** प्रकरण
- **अङ्क-** 10(दस)
- **प्रधान/अङ्गी रस-** श्रृङ्गार
- **गौण/अङ्ग रस-** हास्य, करुण, भय तथा अद्भुत।
- **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
- डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
- **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
- **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
- **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
  2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
- **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
- **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
- **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
- मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	380

मृच्छकटिक- एक तथ्यात्मक अध्ययन

- चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।
- चारुदत्त उज्जयिनी का गरीब ब्राह्मण है।
- वह जन्मना ब्राह्मण और कर्मणा सार्थवाह (व्यापारी) है।
- वसन्तसेना उज्जयिनी की ही एक प्रसिद्ध गणिका है।
- मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम का वर्णन है।
- धूता, चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- चारुदत्त और धूता के बच्चे का नाम रोहसेन है।
- मैत्रेय इस प्रकरण का विदूषक है। वह जाति से ब्राह्मण तथा चारुदत्त का परम मित्र है।
- शकार, राजा पालक का साला है तथा वसन्तसेना से एकतरफा प्रेम करता है।
- शर्विलक, चौर्यकर्म में निपुण एक ब्राह्मण है, जो वसन्तसेना की क्रीतदासी 'मदनिका' का प्रेमी है।
- चारुदत्त का पूर्वभृत्य संवाहक है जो जुए में सब कुछ हारकर बौद्धभिक्षु बन जाता है।
- सूत्रधार के साग्रह अनुरोध, सिद्धान्न भोजन और प्रचुर दक्षिणा के प्रलोभन पर भी मैत्रेय (विदूषक) उसके घर भोजन करने से इनकार कर देता है।
- चारुदत्त के मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा भेजा हुआ शाल मैत्रेय लेकर आता है।
- मैत्रेय अत्यन्त डरपोक है इसलिए मातृबलि देने चौराहे पर रदनिका (चारुदत्त की दासी) के साथ जाता है।
- विट और चेट के साथ शकार द्वारा पीछा किये जाने पर वसन्तसेना, चारुदत्त के घर में छिपती है।
- रात के अँधेरे में शकार, रदनिका को वसन्तसेना समझकर पकड़ लेता है, इस पर मैत्रेय शकार को मारने दौड़ता है।
- वसन्तसेना अपना आभूषण चारुदत्त के घर में रख देती है और बताती है कि वह **'कामदेवायतन उद्यान'** में चारुदत्त को देखकर उसके प्रति अनुरक्त हो गयी थी।
- संवाहक पाटलिपुत्र से आकर उज्जयिनी में चारुदत्त का सेवक बन जाता है।
- चारुदत्त के दरिद्र हो जाने पर संवाहक जुआरी हो जाता है।
- जुए में सर्वस्व हारने पर, चारुदत्त का पुराना नौकर जानकर वसन्तसेना, संवाहक को छुड़ा लेती है।
- वसन्तसेना के हाथी का नाम **'खुण्डमोटक'** है।
  यः सः आर्यायाः खुण्डमोटको नाम दुष्टहस्ती।
- चारुदत्त को रेभिल का संगीत अत्यन्त पसन्द है।
- शर्विलक, चारुदत्त के घर में सेंध काटकर वसन्तसेना के रखे हुए गहने चुरा लेता है और अपनी प्रेयसी मदनिका को गुलामी की जंजीर से छुड़ाता है।
- धूता अपने पति चारुदत्त को चोरी के कलङ्क से बचाने के लिए

अपना 'रत्नावली' नामक आभूषण वसन्तसेना के पास भेजती है।

- वसन्तसेना अपनी माँ के कहने पर भी शकार के पास जाने से मना करती है।
- राजा पालक द्वारा आर्यक को बंदी बनाया जाता है।
- अपने मित्र के बंदी बनाए जाने पर शर्विलक मदनिका को रेभिल के घर पहुँचाकर स्वयं आर्यक को छुड़ाने जाता है।
- वसन्तसेना, धूता के आभूषण को मैत्रेय द्वारा वापस कर देती है।
- वसन्तसेना शाम को चारुदत्त के घर जाती है और वर्षा के कारण रात वहीं बिताती है।
- चारुदत्त **'पुष्पकरण्डक'** नामक बगीचे में जाता है और वसन्तसेना को वहीं बुलवाता है।
- चारुदत्त का पुत्र 'रोहसेन' सोने की गाड़ी के लिए रोता है, इस पर वसन्तसेना अपना आभूषण गाड़ी बनवाने के लिए दे देती है।
- आर्यक, राजा पालक के कैद से भाग जाता है।
- भूलवश वसन्तसेना शकार की गाड़ी में बैठ जाती है।
- बैलगाड़ी उद्यान में पहुँचने पर वसन्तसेना शकार के प्रणय प्रार्थना को ठुकरा देती है, जिससे क्रुद्ध होकर शकार उसका गला दबा देता है।
- वसन्तसेना के मूर्च्छित होने से मृत समझकर शकार भाग जाता है और चारुदत्त के विरुद्ध हत्या का आरोप लगाकर न्यायालय में मुकदमा करता है।
- बौद्धभिक्षु संवाहक वसन्तसेना की रक्षा करता है।
- चारुदत्त पर अभियोग चलता है और विदूषक के बगल से वसन्तसेना का आभूषण मिलने पर चारुदत्त को फाँसी का दण्ड मिलता है।
- फाँसी के वक्त ही भिक्षु वसन्तसेना के साथ वध्यस्थल पर जाता है, शकार भाग खड़ा होता है।
- पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है और झूठे अभियोग चलाने के कारण शकार को फाँसी होती है किन्तु चारुदत्त उसे माँफ कर देता है।
- चारुदत्त को राज्य मिलता है और वसन्तसेना को वधू का सम्मानित पद।
- भरतवाक्य के साथ प्रकरण समाप्त होता है।
- मृच्छकटिकम् का अर्थ है - 'मिट्टी की गाड़ी।'
- मृच्छकटिकम् में सात प्राकृतों (शौरसेनी, अवन्तिका, प्राच्या, मागधी, शकारी, चाण्डाली, और ढक्की) का प्रयोग है।
- मृच्छकटिकम् के 30 पात्रों में केवल 6 पात्र ही संस्कृत बोलते हैं।
- संस्कृत बोलने वाले पात्र-चारुदत्त, आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, अधिकरणिक।
- यह प्रगतिवादी एवं समाजवादी रूपक है। इसमें शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है।
- जुआ खेलने वालों का प्रमुख- सभिक।
- इसमें वैदर्भी रीति अपनायी गयी है, कहीं-कहीं गौडी रीति का भी आश्रय लिया गया है।
- निम्न कोटि के पात्रों की संख्या अधिक है।
- शकार की बहन राजा पालक की रखैल है।
- मृच्छकटिकम् की कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है।
- प्राकृतों में देशी शब्दों की प्रधानता है।
- **चोरों के देवता**- कार्तिकेय- (**नमो वरदाय कुमार कार्तिकेयाय**)
- **चोरों के गुरु**- कनकशक्ति, ब्रह्मण्यदेव, देवव्रत तथा भास्करनन्दी। (**नमः कनकशक्तये ब्रह्मणदेवाय देवव्रताय नमो भास्करनन्दिने**)
- शर्विलक के गुरु- योगाचार्य। (**नमो योगाचार्याय यस्याहं प्रथमः शिष्यः**)
- योगरोचना- ऐसा द्रव्य जिसको लगाने से चोर आदि को कोई देख नहीं सकता।

मृच्छकटिकम्- अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

- चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण।
- विट और चेट सहित शकार के द्वारा वसन्तसेना का पीछा करना।
- अन्धकार का लाभ उठाकर वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में छिपना तथा अपने आभूषणों को न्यास (धरोहर) के रूप में चारुदत्त के घर में छोड़ना।

द्वितीय अङ्क

- चारुदत्त के पूर्व सेवक संवाहक का द्यूत में ऋणी होकर वसन्तसेना के पास आना तथा वसन्तसेना द्वारा उसे ऋणमुक्त कराना।
- जुआरी संवाहक का बौद्धभिक्षु बन जाना।
- वसन्तसेना के मत्त हाथी का संवाहक पर आक्रमण करना,सेवक द्वारा संवाहक की रक्षा करना तथा पुरस्कार के रूप में चारुदत्त अपनी बहुमूल्य चादर सेवक को देना।

तृतीय अङ्क

- चारुदत्त के घर में सेंध मारकर शर्विलक द्वारा वसन्तसेना के आभूषणों को चुराना।
- चोरी हुए आभूषणों के बदले में चारुदत्त की पत्नी धूता द्वारा अपनी बहुमूल्य 'रत्नमाला' का दिया जाना।

चतुर्थ अङ्क

- शर्विलक द्वारा चोरी के आभूषण से अपनी प्रेयसी मदनिका को वसन्तसेना के घर से मुक्त कराना तथा वधू के रूप में स्वीकार करना।
- शर्विलक द्वारा अपने बन्दी मित्र आर्यक को छुड़ाने के निमित्त जाना।
- रत्नमाला लेकर गये विदूषक द्वारा वसन्तसेना के विशाल भवन का अवलोकन।

पञ्चम अङ्क

- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में रात बिताना।

- वर्षाकाल का भव्य वर्णन।

षष्ठ अङ्क

- चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का सोने की गाड़ी के लिए जिद करना जबकि दासी रदनिका मिट्टी की गाड़ी (मृत +शकटिका) देती है।
- इस दृश्य पर वसन्तसेना का मिट्टी की गाड़ी को आभूषणों से भरना।
- वसन्तसेना की गाड़ी भ्रमवश बदल जाना।
- चन्दनक सिपाही द्वारा बन्दी आर्यक को अभयदान।

सप्तम अङ्क

- आर्यक का चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में जाना और चारुदत्त द्वारा आर्यक के बन्धन को कटवाना।

अष्टम अङ्क

- पुष्पकरण्डक उद्यान में शकार द्वारा वसन्तसेना का गला घोंटना।
- वसन्तसेना को मृत समझकर शकार द्वारा चारुदत्त पर झूठा अभियोग चलाने के लिए न्यायालय जाना।
- बौद्धभिक्षु संवाहक द्वारा वसन्तसेना को उपचार हेतु बौद्ध विहार में ले जाना।

नवम अङ्क

- शकार द्वारा अपने पक्ष में निर्णय देने के लिए न्यायाधीश को धमकी।
- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर जाने सम्बन्धित वसन्तसेना की माता की गवाही।
- वसन्तसेना का आभूषण विदूषक के पास से मिलना और चारुदत्त को फाँसी की सजा।

दशम अङ्क

- पालक को मारकर आर्यक का राजा बनना।
- चारुदत्त को फाँसी से मुक्ति।
- वसन्तसेना को वधू पद प्राप्त होना।

मृच्छकटिकम् में अलङ्कार एवं छन्द योजना

- मृच्छकटिकम् में स्वाभाविक रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा के साथ-साथ काव्यलिङ्ग,विशेषोक्ति और समासोक्ति अलङ्कारों का विशेष रूप से वर्णन है।
- महाकवि शूद्रक ने पूरे मृच्छकटिक में 21 (इक्कीस) प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और उपजाति मुख्य हैं।

मृच्छकटिकम् की सूक्तियाँ

- **''अकन्दसमुत्थिता पद्मिनी अवञ्चको वणिक् अचौरः सुवर्णकारः अकलहो ग्रामसमागमः अलुब्धा गणिकेति दुष्करमेते सम्भाव्यन्ते।''** (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में विदूषक वसन्तसेना के बारे में कहता है, ''बिना जड़ के उत्पन्न हुई कमलिनी, न ठगने वाला बनिया, न चुराने वाला सुनार, जिसमें झगड़ा न हो ऐसा ग्राम सम्मेलन, न लोभ करने वाली वेश्या, इनकी सम्भावना करना कठिन है।''

- **अग्राह्या मूर्धजेष्वेताः स्त्रियो गुणसमन्विताः।**
  न लताः पल्लवच्छेदमर्हन्त्युपवनोद्भवाः॥ (8/21)

भावार्थ- आठवें अङ्क में जब शकार, वसन्तसेना को बाल पकड़कर जबरदस्ती गाड़ी से उतारना चाहता है, तब विट, शकार से कहता है, ''सुन्दरता आदि गुणों से युक्त इन नारियों के केश नहीं पकड़ना चाहिए, क्योंकि उद्यान में उत्पन्न होने वाली लताएँ, कोमल पत्ते तोड़ने योग्य नहीं होतीं।''

- **अपण्डितास्ते पुरुषा मता मे ये स्त्रीषु च श्रीषु विश्वसन्ति।** (4/12)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक, मदनिका और वसन्तसेना के समक्ष कहता है,'' वे मनुष्य मुझे मूर्ख लगते हैं जो स्त्रियों और सम्पत्ति पर विश्वास करते हैं। सम्पत्ति तथा स्त्रियाँ सर्पकन्याओं के समान कुटिल गमन करती हैं।''

- **दुर्लभा गुणा विभवाश्च। अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक, वसन्तसेना से बताता है कि चारुदत्त दान देने के कारण अत्यन्त दरिद्र हो गये हैं, इस पर वसन्तसेना कहती है, ''गुण और सम्पत्ति का एकत्र पाया जाना दुर्लभ है। न पीने योग्य पानी वाले तालाबों में बहुत पानी होता है।''

- **अभ्युदयेऽवसाने तथैव रात्रिं दिवमहतमार्गा।**
  उद्दामेवकिशोरी नियतिः खलु प्रत्येषितुं याति॥ (10/19)

भावार्थ- दशवें अङ्क में जब चाण्डाल, चारुदत्त को फाँसी के लिए बुलाता है और 'आर्य' सम्बोधन नहीं करता इस पर दूसरा चाण्डाल कहता है,'' सम्पन्नावस्था में और सम्पत्ति के समाप्त होने पर तथा रात और दिन में यह अप्रतिहतगति वाली नियति स्वच्छन्द युवती के समान पुरुष को खोजने के लिए जाती है।''

- **अम्भोजिनी लोचनमुद्रणं किं भानावनस्तंगमिते करोति।** (10/58)

भावार्थ- दशवें अङ्क में धूता के आत्मदाह करने के समय चारुदत्त कहते हैं, '' हे प्रिये! पति के विद्यमान रहते ही तुमने यह क्या कठोर निश्चय कर लिया था? क्या सूर्य के अस्त को प्राप्त हुए बिना कमलिनी कभी नेत्र मूँदती है?''

- **अयंचसुरतज्वालः कामाग्निः प्रणयेन्धनः।**
  नराणां यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥ (4/11)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक कहता है, '' रतिक्रीडा जिसकी ज्वाला है एवं प्रेम जिसका ईंधन है, ऐसी यह कामवासना रूपी अग्नि है, जिस कामाग्नि में मनुष्यों के यौवन और धन हवन किये जाते हैं।''

- **अल्पक्लेशं मरणं द्रारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।** (1/11)

भावार्थ- चारुदत्त प्रथम अङ्क में विदूषक से कहता है, हे मित्र! निर्धनता और मृत्यु में से मृत्यु मुझे अच्छी लगती है, निर्धनता नहीं। मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।''

➢ **अर्थतः पुरुषो नारी या नारी साऽर्थतः पुमान्।** (3/27)

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चारुदत्त विदूषक से कहता है, कि ''धन न होने के कारण ही पुरुष नारी तुल्य है और जो नारी है वह धन होने से पुरुष के समान है।''

➢ **अहो धिग् वैषम्यं लोकव्यवहारस्य।** (अङ्क-9)

भावार्थ- नवें अङ्क में शकार द्वारा झूठे अभियोग पर अधिकरणिक (न्यायाधीश) कहता है,'' अहो! लोकव्यवहार की विषमता को धिक्कार है।''

➢ **अहो व्यवहारपराधीनतया दुष्करं खलु परचित्तग्रहणमधिकरणिकैः।** (अङ्क-9)

भावार्थ- नवें अङ्क में अधिकरणिक कहता है,''अहो! न्यायालय के पराधीन होने के कारण न्यायाधीशों के द्वारा दूसरों के मन को जानना कठिन है।''

➢ **अहो! प्रभावः प्रियसङ्गमस्य मृतोऽपि को नाम पुनर्ध्रियेत।** (10/43)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चारुदत्त कहता है, प्रिय वसन्तसेने! तुम्हारे कारण नष्ट किया जाता हुआ यह मेरा शरीर तुम्हारे द्वारा ही मुक्त करा दिया गया। ''अहो! प्रियमिलन का महान प्रभाव। अन्यथा मरा हुआ भी कोई फिर जीवित हो सकता है?''

➢ **आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।
हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्॥** (1/50)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विट शकार से कहता है, '' ये भी नहीं सुना तुमने- हाथी खम्भे में बाँधने से रोका जाता है, घोड़ा लगाम से रोका जाता है, स्त्री हृदय से प्रेम करने पर वश में की जाती है, और यदि हृदय में प्रेम नहीं है तो जाइये।''

➢ **इन्द्रः प्रवाह्यमानो गोप्रसवः संक्रमश्च ताराणाम्।
सुपुरुषप्राणविपत्तिश्चत्वार इमे न द्रष्टव्याः॥** (10/7)

भावार्थ- दशवें अङ्क में दोनों चाण्डाल कहते हैं, '' विसर्जन के लिए ले जाया जाता इन्द्रध्वज, गौ का प्रसव, तारों का पतन और श्रेष्ठ पुरुष का प्राण-त्याग-इन चारों को नहीं देखना चाहिए।''

➢ **इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः।
निष्फलत्वमलं यान्ति वेश्याविहगभक्षिताः॥** (4/10)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है, ''इस संसार में अपनी समस्त सम्पत्ति ही जिनका फल है, ऐसे कुलीन पुत्र रूपी महान् वृक्ष वेश्या रूपी पक्षियों द्वारा खाये जाकर पूर्णतः निष्फलता को प्राप्त हो जाते हैं।''

➢ **ईदृशो दासभावः यत्सत्यं कमपि न प्रत्यायति।** (अङ्क-10)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चेट कहता है,''दासता ऐसी बुरी है कि सत्य का भी किसी को विश्वास नहीं करा पाती।''

➢ **एते खलु दास्याः पुत्राः अर्थकल्यवर्ता
वरटाभीता इव गोपालदारका अरण्ये यत्र यत्र
न खाद्यन्ते तत्र तत्र गच्छन्ति।** (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विदूषक चारुदत्त से कहता है, कि हे मित्र! ''ये दासी के पुत्र कलेवा जैसे तुच्छ धन, बर्र से डरे हुए गोपाल बालकों के समान वन में वहीं-वहीं जाते हैं, जहाँ काटे नहीं जाते।''

➢ **एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्याय प्रसक्तोविधिः।** (10/60)

भावार्थ- दशवें अङ्क के अन्त में चारुदत्त कहता है, ''कूपयन्त्र (रहट) की घटिकाओं की पद्धति का अनुसरण करने वाला वह भाग्य क्रीडा करता है।''

**20. कत्ताशब्दो निर्नाणकस्य हरति हृदयं मनुष्यस्य।
ढक्काशब्द इव नराधिपस्य प्रभ्रष्टराजस्य॥** (2/5)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक माथुर से कहता है, ''जिस प्रकार भ्रष्ट राज्य वाले राजा के हृदय को ढक्का का शब्द हर लेता है उसी प्रकार कत्ता (जुए का विशेष चिह्न) धनरहित भी जुआरी मनुष्य के मन को हर लेता है।''

➢ **कथं हीनकुसुमादपि सहकारपादपान्
मकरन्दबिन्दवो निपतन्ति।** (अङ्क-4)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में विदूषक द्वारा 'रत्नावली' नामक आभूषण स्वीकार करते समय वसन्तसेना अपने आप से कहती है ''मञ्जरी रहित आम के वृक्ष से भी पुष्पराज की बूँदें कैसे गिर रहीं हैं।''

➢ **कामो वामः।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में विदूषक, चारुदत्त को समझाता है कि वह वसन्तसेना नामक गणिका से दूर रहे, लेकिन चारुदत्त अधिक ही उत्कण्ठित हो जाता है तो विदूषक कहता है,''काम का स्वभाव तो उल्टा ही होता है,किसी के समझाने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

➢ **किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्।
भवन्ति सुतरां स्फीताः सुक्षेत्रे कण्टकिद्रुमाः॥** (8/29)

भावार्थ- आठवें अङ्क में शकार वसन्तसेना को मारने के लिए प्रवृत्त होता है, इस पर विट उसे ढकेल देता है और मना करता है। शकार कहता है- मल्लक के समान कुल में उत्पन्न होकर मैं यह अकार्य कैसे कर सकता हूँ। तब विट कहता है, ''कुल के कथन से क्या लाभ? क्योंकि इस कुकृत्य में तो स्वभाव ही कारण है, जैसे कि अच्छे खेत मे भी काँटो वाले वृक्ष भली-भाँति समृद्ध हो जाते हैं।''

24. किं हीनकुसुमं सहकारपादपं मधुकर्यः पुनः सेवन्ते। (अङ्क-2)

भावार्थ- निर्धन चारुदत्त पर आसक्त होने पर द्वितीय अङ्क में मदनिका, वसन्तसेना से कहती है, ''आर्ये! क्या भ्रमरियाँ मञ्जरी रहित आम के वृक्ष का भी सेवन करती हैं।''

➢ **कूष्माण्डी गोमयलिप्तवृन्ता............भवति पूतिः।** (1/51)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में वसन्तसेना के चारुदत्त के घर में घुसने पर शकार विदूषक से कहता है, कि चारुदत्त से कहो कि वसन्तसेना को मुझे सौंप दे तब उससे मेरी मित्रता हो जायेगी

अन्यथा मृत्यु पर्यन्त शत्रुता क्योंकि "गोबर से लिप्त डण्ठल वाला कद्दू , सूखा हुआ शाक, तला हुआ मांस, हेमन्त ऋतु में बनाया हुआ भात, अधिक समय बीत जाने पर भी विकृत नहीं होते हैं।"

➢ **गगनतले प्रतिवसन्तौ चन्द्रसूर्यावपि विपत्तिं लभेते।** (अङ्क-10)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चाण्डाल चारुदत्त से कहता है, " आर्य! आकाश तल में निवास करने वाले चन्द्रमा और सूर्य भी विपत्ति को प्राप्त होते हैं, फिर मनुष्यों की क्या बात।"

➢ **गणयन्ति न शीतोष्णं रमणाभिमुखाः स्त्रियः।** (5/16)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में वसन्तसेना चारुदत्त के घर जाने की इच्छुक वर्षा होने पर विट से कहती है, कि "बादल बरसें, गरजें या वज्र ही गिरा दें, किन्तु रमण की इच्छुक कामिनियाँ गर्मी, ठण्डी, बरसात किसी की परवाह नहीं करतीं।"

➢ **गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निराक्रियते।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पाँचवे अङ्क में विदूषक चारुदत्त को वेश्या वसन्तसेना के प्रति भड़काता है और कहता है, कि "वेश्या तो जूते के अन्दर प्रविष्ट हुई कङ्कड़ के समान फिर दुःख से ही निकाली जाती हैं।"

➢ **गणिका हस्ती कायस्थो भिक्षुष्चाटो रासभश्च यत्रैते निवसन्ति तत्र दुष्टा अपि न जायन्ते।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में ही विदूषक चारुदत्त से कहता है,कि "वेश्या, हाथी कायस्थ, भिखारी, धूर्त और गधा- जहाँ ये रहते हैं,वहाँ दुष्ट भी वृद्धि को प्राप्त नहीं होते, सज्जनों की क्या बात।"

➢ **गुणः खल्वनुरागस्य कारणं, न पुनर्बलात्कारः।** (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विट, वसन्तसेना से कहता है, तुम वेश्या हो इसलिए समान रूप से सबका सेवन करो। इस पर वसन्तसेना कहती है,कि "प्रेम का वास्तविक कारण गुण है, न कि बलात्कार।"

➢ **गुणेषु यत्नः पुरुषेण कार्यो न किञ्चिदप्राप्यतमं गुणानाम्।** (4/23)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक वसन्तसेना से कहता है,कि "गुणों के अर्जन में मनुष्य को सदा प्रयत्न करना चाहिए, गुणों के द्वारा कुछ भी अलभ्य नहीं है।" अपने गुणों के उत्कर्ष के कारण चन्द्रमा शिवजी के दुर्लभ मस्तक पर आश्रय पा लिया है।

➢ **गुणेष्वेव हि कर्त्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।**
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः॥ (4/22)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, "मनुष्यों को गुणों में यत्न करना चाहिए। गुणवान् दरिद्र भी गुणहीन धनिकों के समान नहीं, बल्कि उनसे बढ़कर हैं।"

➢ **छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति।** (9/26)

भावार्थ- नवम अङ्क में चारुदत्त न्यायालय में सोचता है कि "आपत्ति काल में मनुष्य की भूल होते ही अनेक अनिष्ट एकत्रित हो जाते हैं।"

➢ **त्यजति किल तं जयश्रीर्जहति च मित्राणि बन्धुवर्गश्च।**
भवति च सदोपहास्यो यः खलु शरणागतं त्यजति॥ (6/18)

भावार्थ- षष्ठ अङ्क में आर्यक, चन्दनक से कहता है कि, "जो शरणागत का त्याग कर देता है, उसको विजयलक्ष्मी त्याग देती हैं, मित्र एवं बन्धुगण भी त्याग देते हैं तथा वह सदा उपहास के योग्य होता है।"

➢ **दरिद्रपुरुषसंक्रान्तमनाः खलु गणिका लोकेऽवचनीया भवति।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में वसन्तसेना अपनी दासी मदनिका से कहती है, "निर्धन व्यक्ति में मन लगाने वाली वेश्या निःसन्देह संसार में निन्दनीय नहीं होती।"

➢ **दारिद्र्याद्ध्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसो।** (1/14)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त, विदूषक से कहता है, कि "दरिद्रता से मनुष्य लज्जा को प्राप्त होता है, लज्जा को प्राप्त व्यक्ति तेज से रहित हो जाता है तथा तेजहीन अपमानित होता है।"

➢ **दुष्करं विषमौषधीकर्तुम्।** (अङ्क-8)

भावार्थ- आठवें अङ्क में विट अपने मन में सोचता है कि " विष को ओषधि बनाना दुष्कर है।"

➢ **द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम्।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में दर्दुरक कहता है, "जुआ भी मनुष्य का विना सिंहासन का राज्य है।"

➢ **द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च।** (4/25)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में शर्विलक कहता है, कि "इस संसार में मित्र और स्त्री दोंनो ही मनुष्यों को अत्यन्त प्रिय हैं, समय आने पर सौ सुन्दरियों से मित्र अधिक प्रमुख है।"

➢ **धनैर्वियुक्तस्य नरस्य लोके किं जीवितेन।** (5/40)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त अपने आप सोचता है, "संसार में धनहीन पुरुष के जीवन आदि से ही क्या लाभ है? जिसके प्रतिक्रिया न करने के कारण क्रोध और प्रसन्नता दोनों पहले से ही निष्फल होते हैं।"

➢ **धिक्प्रीतिं परिभवकारिकामनार्याम्।** (8/41)

भावार्थ- अष्टम अङ्क में विट, शकार से कहता है कि, इस हँसी को छोड़ दो तुम्हारे साथ मेरा स्नेह नहीं रहेगा, "अनादर करने वाली इस निकृष्ट मैत्री को धिक्कार है।"

➢ **न कालमपेक्षते स्नेहः।** अङ्क-7, पेज-212

भावार्थ- चारुदत्त, विदूषक को शीघ्रता से वसन्तसेना को रथ से उतारने को बोलता है और कहता है, कि "प्रेम समय की अत्यधिक देरी को सहन नहीं करता है।"

➢ **न चन्द्रादातपो भवति।** अङ्क-4, पेज-126

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में मदनिका, शर्विलक द्वारा चुराये हुए आभूषण को चारुदत्त को लौटाने के लिए कहती है इस पर शर्विलक आशंका करता है कि कहीं चारुदत्त अभियोग न लगवा दें। फिर मदनिका, चारुदत्त को लक्ष्य करके कहती है, कि "चन्द्रमा से गर्मी नहीं होती।"

➢ **न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति।**

(4/17)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक वेश्याओं पर तीखा प्रहार करते हुए कहता है, कि ''पर्वत की चोटी पर कमलिनी नहीं उगती है, घोड़े के भार को गधे नहीं ले जा सकते हैं, खेत में बोये हुए जौ, धान नहीं हो जाते हैं इसी प्रकार वेश्यालय में उत्पन्न हुई स्त्रियाँ पवित्र नहीं होती हैं।''

➢ **न पुष्पमोषमर्हत्युद्यानलता।** अङ्क-1, पेज-48

भावार्थ- प्रथम अङ्क में शकार से भयभीत होकर वसन्तसेना अपने आभूषण देना चाहती है, इस पर विट कहता है, ''उद्यान-लता, पुष्प-हरण के योग्य नहीं है।''

➢ **न युक्तं परकलत्रदर्शनम्।** अङ्क- 1, पेज- 48

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त के घर में छिपी वसन्तसेना को देखकर चारुदत्त कहता है, कि ''पराई स्त्री का दर्शन करना उचित नहीं।''

➢ **न शक्या हि स्त्रियो रोद्धुं प्रस्थिता दयितं प्रति।** (5/31)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त के घर जाते समय वर्षा होने लगती है तो वसन्तसेना कहती है, कि ''हे इन्द्र! चाहे गरजो या बरसो अथवा सैकड़ों वज्र छोड़ो, फिर भी प्रियतम के प्रति प्रस्थान करती हुई स्त्रियाँ नहीं रोकी जा सकतीं।''

➢ **न ह्याकृतिः सुसदृशं विजहाति वृत्तम्।** (9/16)

भावार्थ- नवम अङ्क में अधिकरणिक चारुदत्त के बारे में कहता है, कि '' ऊँची नासिका तथा विशाल नेत्रों से युक्त मुख को धारण करता है। यह मुख निश्चय ही इच्छानुसार लगाये गये दोषों का पात्र नहीं है, क्योंकि हाथी, गाय, अश्व तथा मनुष्यों में उनका आकार अपने अनुकूल चरित्र का त्याग नहीं करता।''

➢ **निशायां नष्टचन्द्रायां दुर्लभो मार्गदर्शकः।** 4/21

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक, मदनिका से कहता है, ''आपका अनुशरण करके मैंने विशद बुद्धि प्राप्त की। फिर रात्रि में चन्द्रमा अस्त हो जाता है, उसमें पथ-प्रदर्शन करने वाला दुष्प्राप्य होता है। विवेक भ्रष्ट मुझको आपने उचित मार्ग प्रदर्शित किया है।''

➢ **नृणां लोकान्तरस्थानां देहप्रतिकृतिः सुतः।** 9/42

भावार्थ- न्यायालय में सजा प्राप्त चारुदत्त, मैत्रेय से कहता है, ''परलोक में गये हुए जनों का पुत्र अपना प्रतिनिधि होता है।'' अतः तुम्हारा मुझ पर जो स्नेह है, वह रोहसेन में लगा दिया जाए।

➢ **पक्षविकलश्च पक्षी शुष्कश्च तरुः सरश्च जलहीनम्।**
सर्पश्चोद्धृतदंष्ट्रस्तुल्य लोके दरिद्रश्च॥ (5/41)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त, वसन्तसेना से कहता है, ''पंखरहित पक्षी, सूखा वृक्ष, जल रहित तालाब तथा दाढ़ उखाड़ा हुआ सर्प एवं दरिद्र ये सब संसार में समान हैं।''

➢ **परोऽपि बन्धुः समसंस्थितस्य मित्रं न कश्चिद्विषमस्थितस्य।** (10/16)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चारुदत्त कहता है, ''सुख की अवस्था में अन्य जन भी सगे-सम्बन्धी हो जाते हैं, किन्तु आपत्ति में पड़े हुए मनुष्य का कोई मित्र नहीं होता।''

➢ **पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते, न पुनर्गेहेषु।** अङ्क-1,पेज-50

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त के ''यह घर धरोहर के योग्य नहीं है'' कहने पर वसन्तसेना कहती है, ''आर्य! यह झूठ है, पुरुषों पर धरोहर रखी जाती है, न कि घरों में।''

➢ **बहुदोषा हि शर्वरी।** (1/58)

भावार्थ- न्यास रूप में रखे आभूषणों के रक्षणार्थ चारुदत्त विदूषक से कहता है, ''ठगी-चोरी से बचाना चाहिए क्योंकि रात्रि वास्तव में बड़ी दोषपूर्ण होती है।''

➢ **मा दुर्गत इति परिभवो नास्ति कृतान्तस्य दुर्गतो नाम।** 1/43

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विदूषक शकार को लक्ष्य करके विट से कहता है, ''निर्धन का अपमान मत करो, यमराज के समक्ष कोई निर्धन नहीं है'' और चरित्रहीन धनवान् भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

➢ **मूले छिन्ने कुतः पादपस्य पालनम्।** अंक-9, पेज-298

भावार्थ- नौवें अङ्क में सजा प्राप्त चारुदत्त, विदूषक से रोहसेन का पालन करने के लिए कहता है, इस पर विदूषक कहता है, ''जड़ कट जाने पर वृक्ष का पालन कैसे होगा?''

➢ **य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं मनुष्यः।** 2/14

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक अपने से सोचकर कहता है, ''जो मनुष्य अपने बल को जानकर उसके अनुसार भार को वहन करता है'' उसका पतन नहीं होता है, वह दुर्गम पथ पर चलने से भी विपद्ग्रस्त नहीं होता है।

➢ **यज्ञोपवीतं हि नाम ब्राह्मणस्य महदुपकरणद्रव्यम्।** अङ्क-3,पेज-96

भावार्थ- तृतीय अङ्क में सेंध काटते समय प्रमाणसूत्र भूलने के कारण यज्ञोपवीत से नाप करते हुए शर्विलक कहता है, ''यज्ञोपवीत भी ब्राह्मण की बहुत उपयोगी वस्तु है।'' विशेषतः हम जैसों की।

➢ **यदा तु भाग्यक्षय पीडिता दशां नरः कृतान्तोपहितां प्रपद्यते।**
तदास्य मित्राण्यपि यान्त्यमित्रतां चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः॥ (1/53)

भावार्थ- चारुदत्त, रदनिका को सम्बोधित करके कहता है, ''जब मनुष्य दैव द्वारा प्राप्त करायी गयी भाग्यनाश के कारण पीड़ित दशा को प्राप्त हो जाता है, तब इस निर्धन के मित्र भी शत्रुता को प्राप्त हो जाते हैं, दीर्घकाल से प्रेम करने वाला व्यक्ति भी विरक्त हो जाता है।''

➢ **येऽभि भवन्ति साधुं ते पापास्ते च चाण्डालाः।** (10/22)

भावार्थ- फाँसी के समय रोहसेन के पूँछने पर कि 'चाण्डालों मेरे पिता को कहाँ ले जाते हो' तब चाण्डाल कहता है, बालक! चाण्डाल कुल में उत्पन्न होकर भी हम चाण्डाल नहीं हैं, ''जो सज्जन को अपमानित करते हैं वे पापी हैं और वे ही चाण्डाल हैं।''

➢ **राहुगृहीतोऽपि चन्द्रो न वन्दनीयो जनपदस्य।** 10/20

भावार्थ- प्रथम चाण्डाल के चारुदत्त के साथ 'आर्य' सम्बोधन

न करने पर द्वितीय चाण्डाल कहता है, "क्या राहु द्वारा ग्रसित चन्द्रमा भी नगरवासियों के लिए वन्दनीय नहीं होता?"

➢ **वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धने।** (6/17)

भावार्थ- आर्यक अपने आप ही कहता है, भीम का अनुकरण करूँगा, मेरी भुजा ही शस्त्र होगी। "लड़ते हुए मृत्यु अच्छी है, कारागार में पड़े हुए की नहीं।"

➢ **विविक्तविश्रम्भरसो हि कामः।** (8/30)

भावार्थ- शकार के प्रणय निवेदन को ठुकराने पर विट अपने मन में सोचता है, यह स्थान मैं खाली करता हूँ क्योंकि "काम निर्जन एवं विश्वस्त स्थान में आनन्ददायक होता है।"

➢ **विषमा इन्द्रियचौरा हरन्ति चिरसञ्चितधर्मम्।** (8/1)

भावार्थ- आठवें अङ्क के प्रारम्भ में भिक्षु कहता है, अज्ञानी जनों धर्म का संचय करो क्योंकि "ये इन्द्रिय रूपी चौर भयङ्कर हैं, ये बहुत समय से संचित धर्म को हर लेते हैं।"

➢ **वीणा हि नामासमुद्रोत्थितं रत्नम्।** (अङ्क-3,पेज-86)

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चारुदत्त रेभिल के गानों की प्रशंसा करते हुए कहता है, "वीणा तो वास्तव में बिना समुद्र से निकला हुआ रत्न है।"

➢ **वेश्या श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः।** (4/14)

भावार्थ- शर्विलक वेश्याओं के विषय में कहता है, वेश्याएं धन के कारण हँसती और रोती हैं, पुरुष को विश्वास दिलाती हैं किन्तु स्वयं पुरुषों पर विश्वास नहीं करतीं, इस कारण कुलीन एवं शीलयुक्त पुरुष को "श्मशान के पुष्पों के समान वेश्याओं का त्याग कर देना चाहिए।"

➢ **शत्रुः कृतापराधः शरणमुपेत्य पादयोः पतितः।**

शस्त्रेण न हन्तव्यः .... उपकारहतस्तु कर्त्तव्यः॥ (10/55)

भावार्थ- चारुदत्त कहता है, यदि अपराध करने वाला शत्रु शरण में आकर चरणों में गिर गया तो उसे शस्त्र से नहीं मारना चाहिए। शर्विलक पूँछता है कि क्या कुत्तों द्वारा खिलाया जाय? फिर चारुदत्त कहता है, नहीं, किन्तु उसे उपकार द्वारा मरा हुआ कर देना चाहिए।"

➢ **शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता।** (3/24)

भावार्थ- वसन्तसेना के आभूषण चोरी हो जाने पर चारुदत्त, विदूषक से कहता है, मित्र! वास्तविकता पर कौन विश्वास करेगा? सभी मुझे तुच्छ अपराधी समझेंगे क्योंकि "इस संसार में पौरुषविहीन निर्धनता शङ्का के योग्य होती है।"

➢ **शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।**
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य॥ (1/8)

भावार्थ- सूत्रधार कहता है, "पुत्रहीन का घर सूना है, जिसका अच्छा मित्र नहीं है उसका सब समय सूना है, मूर्ख के लिए सभी दिशाएँ सूनी हैं, निर्धन के लिए तो सब कुछ सूना है।"

➢ **शून्यैर्गृहैः खलु समाः पुरुषा दरिद्राः।** (5/42)

भावार्थ- चारुदत्त कहता है, "दरिद्र व्यक्ति वस्तुतः सूने घरों, जलरहित कूपों तथा शुष्क वृक्षों के समान है।"

➢ **सत्कारधनः खलु सज्जनः।** (2/15)

भावार्थ- संवाहक, वसन्तसेना से कहता है, "दूसरों का सत्कार करना ही सत्पुरुषों का धन होता है।" चञ्चल सम्पत्ति किसके पास नहीं होता?

➢ **सत्येन सुखं खलु लभ्यते सत्यालापे न भवति पातकम्।**

सत्यमिति द्वे अप्यक्षरे मा सत्यमलीकेन गूहय॥ (9/35)

भावार्थ- श्रेष्ठी कायस्थ कहता है, आर्य चारुदत्त! यहाँ सच कहना चाहिए क्योंकि "निश्चय ही सत्य से सुख प्राप्त होता है , सत्य कहने पर पाप नहीं होता। 'सत्य' में दो अक्षर नष्ट न होने वाले हैं। अतः सत्य को झूठ से न छिपाओ।"

➢ **समीहितसिद्ध्यै प्रवृत्तेन ब्राह्मणोऽग्रे कर्त्तव्यः।** (अङ्क-10,पेज-342)

भावार्थ- धूता के अग्नि में प्रविष्ट होते समय विदूषक कहता है, "अभीष्ट-सिद्धि के लिए प्रवृत्त हुए व्यक्ति को ब्राह्मण आगे करना चाहिए।"

➢ **सर्वः खलु भवति लोके लोकः सुखसंस्थितानां चिन्तायुक्तः।**
विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति॥ (10/15)

भावार्थ- फाँसी के समय दोनों चाण्डाल कहते हैं,"संसार में सभी जन सुखी मनुष्यों के ही शुभचिन्तक होते हैं। विपत्ति में पड़े हुए मनुष्यों का हित करने वाला दुर्लभ ही है।"

➢ **सर्वत्रार्जवं शोभते।** (अंक-10,पेज-334)

भावार्थ- दशवें अङ्क में शर्विलक, चारुदत्त के पास जाने में संकोच करता है फिर कहता है, "सरलता सब जगह शोभायमान होती है।"

➢ **सस्यलम्पटवलीवर्दो...........न शक्यो वारयितुम्।** (3/2)

भावार्थ- "धान्य के लोभी बैल को, दूसरे की स्त्री में आसक्त पुरुष को, जुए में अनुरक्त मनुष्य को रोका नहीं जा सकता। स्वाभाविक बुराई का निवारण नहीं किया जा सकता।"

➢ **साहसे श्रीः प्रतिवसति।** अङ्क-4, पेज-118

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक अपनी चोरी का गुणगान करते हुए मदनिका से कहता है, अज्ञे! "साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।"

➢ **सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।** (3/1)

भावार्थ- चेट कहता है, "सेवकों पर दया करने वाला सज्जन स्वामी धनहीन होता हुआ भी शोभित होता है।"

➢ **स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।**
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥ (4/19)

भावार्थ- शर्विलक मदनिका से कहता है, "स्त्रियाँ तो वस्तुतः स्वभाव से ही कुशल होती हैं, पुरुषों की कुशलता तो शास्त्रों के द्वारा ही सिखायी गयी होती है।"

➢ **स्त्रीषु न रागः कार्यो रक्तं पुरुषं स्त्रियः परिभवन्ति।**
रक्तैव हि रन्तव्या विरक्तभावा तु हातव्याः॥ (4/13)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, "स्त्रियों पर प्रेम नहीं करना चाहिए, स्त्रियाँ प्रेमी पुरुष को भी तिरस्कृत कर देती हैं। प्रेम करने वाली स्त्री के साथ ही रमण करना चाहिए, प्रेमहीन स्त्री को तो त्याग ही देना चाहिए।"

➢ **स्वके गेहे कुक्कुरोऽपि तावच्चण्डो भवति किं पुनरहं ब्राह्मणः।** अङ्क-1,पेज-36

भावार्थ- रदनिका को शकार द्वारा पकड़ने पर विदूषक क्रोधपूर्वक डण्डा उठाकर कहता है, अरे! "अपने घर में तो कुत्ता भी बलवान् होता है फिर मैं ब्राह्मण तो क्या।"

➢ **स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः।** (4/2)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, "वस्तुतः मनुष्य अपने दोषों के कारण शङ्कित हो जाता है।"

मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का सामान्य परिचय

चारुदत्त

➢ चारुदत्त मृच्छकटिकम् का नायक है। नायक कोटियों के अनुसार चारुदत्त 'धीरप्रशान्त' कोटि का नायक है।
➢ दशरूपक के अनुसार धीरप्रशान्त का लक्षण है-
'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः'
➢ चारुदत्त उज्जयिनी का एक उदार, दयालु और परोपकारी ब्राह्मण युवक है।
➢ उसके पूर्वज व्यापारी थे, चारुदत्त भी व्यापार करके अत्यधिक धन-सम्पत्ति अर्जित किया था, किन्तु अपनी अतिशय उदारता और दानशीलता से अत्यन्त दरिद्र हो जाता है।
➢ कोई व्यक्ति अथवा सेवक जब प्रशंसनीय कार्य करते हैं, तब चारुदत्त उन्हें कुछ न कुछ पुरस्कार अवश्य देता है। इन्हीं गुणों से वसन्तसेना नामक गणिका उस पर मुग्ध हो जाती है।
➢ चारुदत्त अपराधी के प्रति भी क्रोध नहीं करता और शरण में आये की रक्षा करता है।
➢ चारुदत्त को अपनी प्रतिष्ठा और चरित्र की विमलता का भी ध्यान है।
➢ मृत्युदण्ड पाने पर भी उसे डर नहीं है, डर है तो केवल अपयश का।
'न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः।'
➢ चारुदत्त संगीत, कलाप्रेमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। एक प्रकरण के नायक के सभी गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं।

वसन्तसेना

➢ वसन्तसेना इस प्रकरण की नायिका है। नायिका प्रकार की दृष्टि से वह साधारण स्त्री/गणिका/वेश्या और प्रगल्भा नायिका है।
➢ वह भी उज्जयिनी की ही एक वैभवशालिनी गणिका है, उसके भवन कुबेर के समान समृद्धशाली हैं।
➢ वसन्तसेना उदारहृदया स्त्री है, वह अपरिचित संवाहक को भी अभयदान तथा मदनिका को दासता से मुक्तकर देती है। रोहसेन की गाड़ी के लिए वह अपने आभूषण दे देती है।
➢ वसन्तसेना एक बुद्धिमती, कला-कुशल तथा विदुषी नारी है। वह चारुदत्त का चित्र बनाकर मदनिका को दिखाती है।
➢ वसन्तसेना ऐश्वर्यशालिनी होते हुए भी सामाजिक संरचना के ज्ञान से अछूती नहीं है, वह जानती है कि वह एक गणिका है और चारुदत्त के अन्तःपुर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं रखती-
"मन्दभागिनी खल्वहं तवाभ्यान्तरस्य।"
➢ अत्यन्त प्रेम के आवेग से वह वध्यस्थल पर पहुँच जाती है तथा 'कुलवधू' पद को प्राप्त करती है।
➢ इस प्रकार वसन्तसेना ने अत्यन्त उदार हृदय, अनन्य प्रेम तथा अपूर्व त्याग आदि गुणों से गणिका होने की कालिमा को प्रक्षालित करके एक साध्वी नारी के पद को सुशोभित किया है।

शकार

➢ 'शकार' महाकविशूद्रक का कल्पनाप्रसूत पात्र है। यह मृच्छकटिकम् का प्रतिनायक है।
➢ दशरूपक के अनुसार प्रतिनायक लोभी, धीरोद्धत, जड़ प्रकृति वाला,पापी और व्यसनी होता है। शकार भी मूर्खता, प्रवञ्चना, पाप और कायरता आदि दुर्गुणों से परिपूर्ण है।
➢ शकार किसी रखेली का पुत्र है (काणेलीमातः), राजा पालक की रखेली का भाई, राजा का साला और संस्थानक भी है। वह शकारी प्राकृत बोलता है।
➢ शकार राजश्यालक होने के कारण अत्यन्त घमण्डी है। वह न्यायालय में धमकी देकर चारुदत्त को दण्ड दिलवाता है।
➢ उसे पद और धन का भी अभिमान है , इसीलिए वह अपने आपको **'देवपुरुष मनुष्य वासुदेव'** कहता है।
➢ वह अत्यन्त मूर्ख है और इतिहास विरुद्ध उपमाएं देता है जैसे- **'द्रोणपुत्रो जटायुः'**
➢ वह दुराग्रही और अस्थिर चित्त वाला है। विट और चेट को कपटपूर्वक हटाकर वह वसन्तसेना का गला घोंट देता है और चारुदत्त पर अभियोग चलाता है।
➢ शकार के चरित्र में प्रायः सभी दुर्गुणों का पुञ्ज दिखायी देता है।
➢ वह केवल लम्पट, मूर्ख और धूर्त ही नहीं अपितु मनुष्य रूप में राक्षस ही कहा जा सकता है।

विदूषक

➢ 'मैत्रेय' मृच्छकटिकम् का विदूषक है।
➢ दशरूपक के अनुसार वह नायक का सहायक तथा हँसी उत्पन्न करता है- **'हास्यकृच्च विदूषकः'।**
➢ मैत्रेय, चारुदत्त का सच्चा मित्र है। चारुदत्त की दरिद्रावस्था में

भी वह साथ नहीं छोड़ता। इधर-उधर अपनी उदरपूर्ति करते हुए वह चारुदत्त की सहायता करता है।

- वह चारुदत्त को वेश्या-प्रसंग से हटाना चाहता है। अतः वसन्तसेना को भी घृणित निगाह से देखता है।
- चारुदत्त पर मिथ्या आरोप लगाने पर वह न्यायालय में ही शकार से लड़ बैठता है। चारुदत्त के विना वह जीवित नहीं रहना चाहता।
- मैत्रेय, क्रोधी, भीरु तथा साधारण कोटि का समझदार व्यक्ति है। वह चारुदत्त से कहता है कि जब पूजा करने पर भी देवता प्रसन्न नहीं होते तो देवपूजा से क्या लाभ?
- कहीं-कहीं भोजनप्रिय और पेटू के रूप में विदूषक का दर्शन होता है।
- अतः मैत्रेय एक व्यावहारिक मनुष्य है। वह एक सच्चा मित्र है,यद्यपि बुद्धिमान् मित्र नहीं।

शर्विलक

- शर्विलक चौर्यकला में निपुण तथा प्रेमी हृदय वाला ब्राह्मण है।
- वह चोरी को अच्छा नहीं समझता, केवल स्वतन्त्र व्यवसाय मानकर ही उसे ग्रहण करता है-

''स्वाधीना वचनीयताऽपि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः।''

- शर्विलक बुद्धिमान् तथा गुणग्राहक है। वह आपत्ति में मित्र का साथ देता है।
- अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त हुई भी मदनिका को छोड़कर वह अपने मित्र आर्यक को बचाने जाता है।
- वह षड्यन्त्र करने में भी कुशल है।

मदनिका

- मदनिका, वसन्तसेना की क्रीतदासी तथा शर्विलक की प्रेयसी है।
- वसन्तसेना उस पर अत्यधिक विश्वास करती है, वह भी वसन्तसेना से अधिक प्रेम करती है।
- चारुदत्त के घर चोरी की बात सुनकर वह मूर्च्छित हो जाती है। वह शर्विलक को सद्गृहिणी की भाँति सत्सम्मति देती रहती है। वसन्तसेना को भी समय-समय पर अच्छे विचार देती है, इसीलिए वसन्तसेना उसकी प्रशंसा करती है-

'साधु मदनिके साधु'

- मदनिका डरती नहीं है, वह शर्विलक जैसे साहसी की पत्नी होने योग्य है।
- उसने दासता से मुक्ति पाकर एक कुशल गृहणी का पद प्राप्त कर लिया है।

धूता

- धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- वह एक पतिव्रता नारी तथा पति की अपकीर्ति से डरती है। इसी अपयश से बचाने के लिए वह अपना बहुमूल्य 'रत्नावली' आभूषण, वसन्तसेना के पास भेज देती है।
- धूता अत्यन्त उदार और सरल स्वभाव की है। वह वसन्तसेना से ईर्ष्या नहीं करती और अपने पति के प्रति क्रोध भी नहीं करती।
- पति के अनिष्ट को सुनकर वह अपना प्राण त्याग देना चाहती है।
- वह एक सच्ची पतिव्रता भारतीय नारी है।

संवाहक

- संवाहक पाटलिपुत्र का मूलनिवासी है तथा आजीविका की तलाश में उज्जयिनी आकर चारुदत्त के घर नौकरी करता है।
- चारुदत्त के दरिद्र होने पर वह द्यूतक्रीडा से अपनी आजीविका चलाता है।
- द्यूत में सर्वस्व हार कर वह वसन्तसेना द्वारा मुक्त कराया जाता है।
- इसी लिए संसार से विरक्त होकर वह बौद्धभिक्षु बन जाता है।

विट

- यह सहृदय और बुद्धिमान पात्र है।
- वसन्तसेना की चारुदत्त के प्रति प्रेम देखकर वह वसन्तसेना की प्रशंसा करता है तथा यथासम्भव सहायता भी करता है।
- वह पाप का विरोध करता है और शकार का साथ छोड़कर चला जाता है।

चेट

- इसका नाम स्थावरक है और यह शकार का यानवाहक है।
- चेट को परलोक का भी भय है, सज्जनों के प्रति प्रेम एवं सम्मान है।
- वह स्वयं विपत्ति में पड़कर भी अकार्य नहीं करता तथा चारुदत्त की रक्षा का प्रयास करता है।

अधिकरणिक

- यह 'मृच्छकटिकम्' का न्यायाधीश है।
- अधिकरणिक पवित्र-हृदय वाला एवं न्याय-प्रिय है।
- वह सज्जनता का सम्मान करता है और सच्चाई को ढूँढना चाहता है, किन्तु डरपोक भी है तथा राजश्यालक के दबाव में उचित न्याय नहीं कर पाता।

रोहसेन

- यद्यपि पूरे प्रकरण में रोहसेन की बहुत बड़ी भूमिका नहीं है, फिर भी मृच्छकटिकम् नाम की सार्थकता से रोहसेन का सीधा सम्बन्ध है।
- रोहसेन चारुदत्त और धूता का पुत्र है।
- वह मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलना चाहता और स्वर्ण की गाड़ी के लिए जिद करता है। इसी कारण इस प्रकरण का नाम मृत्+ शकटिकम् = 'मृच्छकटिकम्' पड़ा है।

मृच्छकटिक का नामकरण

मृत्+शकटिका
उपर्युक्त संहिता में तकार के बाद 'श' है, अतः **'स्तोः श्चुना श्चुः'** सूत्र से 'त' के स्थान पर 'च' होगा - मृच्+शकटिका
अब **'शश्छोऽटि'** सूत्र से 'श' के स्थान पर 'छ' आदेश हुआ-मृच् + छकटिका = मृच्छकटिका

- इस प्रकार ग्रन्थवाची पद होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन

में 'मृच्छकटिकम्' बना। इसका हिन्दी अर्थ होगा- 'मिट्टी की गाड़ी'।

- 'मृदः शकटिका यस्मिन् इति मृच्छकटिकम्'- **बहुव्रीहि समास**
- साहित्यदर्पण के अनुसार प्रकरण का नाम, नायक- नायिका के नाम पर होना चाहिए- **'नायिकानायकाख्यानात् - संज्ञा प्रकरणादिषु।'**
- मृच्छकटिक एक प्रकरण है, अतः इसका नामकरण इसके छठवें अङ्क में वर्णित एक विशेष घटना के आधार पर किया गया है।
- चारुदत्त का पुत्र रोहसेन, पड़ोसी बच्चे की गाड़ी को देखकर मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलता और सोने की गाड़ी माँगता है। रदनिका के बहलाने पर भी नहीं मानता, इस पर वसन्तसेना अपने आभूषण, स्वर्ण शकटिका बनवाने के लिए उसके मिट्टी की गाड़ी पर लाद देती है।
- इसप्रकार पूरे प्रकरण में 'मिट्टी की गाड़ी' सम्बन्धी घटना विशेष महत्त्व रखती है।
- इसलिए 'मृच्छकटिकम्' नाम अत्यन्त ही उपयुक्त है।

पात्र- परिचय

पुरुष-पात्र

1. **सूत्रधार-** प्रधान नट एवं मञ्च का व्यवस्थापक।
2. **चारुदत्त-** नायक, उज्जयिनी का ब्राह्मण व्यापारी।
3. **मैत्रेय-** विदूषक एवं चारुदत्त का परम मित्र।
4. **शकार-** प्रतिनायक, राजा पालक का साला, संस्थानक।
5. **विट-** शकार का सहचर।
6. **चेट-** शकार का सेवक।
7. **माथुर-** सभिक, प्रधान जुआरी
8. **दर्दुरक-** जुआरी
9. **संवाहक-** चारुदत्त का भूतपूर्व नौकर, जुआरी एवं बौद्धभिक्षु।
10. **कर्णपूरक-** वसन्तसेना का सेवक।
11. **शर्विलक-** मदनिका का प्रेमी ब्राह्मण, चोर।
12. **वर्धमानक (चेट)-** चारुदत्त का यानवाहक।
13. **बन्धुल-** बन्धुल, वसन्तसेना का आश्रित।
14. **कुम्भीलक-** वसन्तसेना का दास।
15. **चेट-** वसन्तसेना का दास।
16. **विट-** वसन्तसेना का शृङ्गार-सहचर।
17. **रोहसेन-** चारुदत्त का पुत्र।
18. **आर्यक-** गोपाल-बालक, राजा पालक का कैदी, बाद में राजा।
19. **स्थावरक चेट-** शकार का यानवाहक।
20. **वीरक-** पालक का सेनापति, रक्षक
21. **चन्दनक-** पालक का सेनापति, रक्षक
22. **शोधनक-** न्यायालय का नौकर।
23. **अधिकरणिक-** न्यायाधीश।
24. **श्रेष्ठी-** नगर का प्रतिष्ठित पुरुष, न्याय करने में न्यायाधीश का सहायक।
25. **कायस्थ-** न्यायालय का लेखक (पेशकार)
26. **चाण्डाल-** फाँसी देने वाले जल्लाद

स्त्री-पात्र

1. **नटी-** सूत्रधार की पत्नी।
2. **वसन्तसेना-** नायिका, उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका।
3. **मदनिका-** वसन्तसेना की क्रीतदासी, शर्विलक की प्रेयसी।
4. **रदनिका-** चारुदत्त की परिचारिका।
5. **धूता-** चारुदत्त की पत्नी।
6. **चेटी-** वसन्तसेना की दासी।
7. **छत्रधारिणी-** वसन्तसेना की सेविका।
8. **चेटी-** चारुदत्त की दासी।
9. **वृद्धा-** वसन्तसेना की माता।

मञ्च पर न आने वाले पात्र

1. **जूर्णवृद्ध-** चारुदत्त का मित्र।
2. **पालक-** अवन्ती का राजा।
3. **रेभिल-** चारुदत्त का मित्र, गायक।
4. **सिद्ध-** आर्यक की राज्य-प्राप्ति का भविष्य वक्ता।

मृच्छकटिक का मङ्गलाचरण

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः॥ (1/1)

भावार्थ- पर्यङ्क नामक योगासन में सन्धि-स्थल पर बाँधने से द्विगुणित सर्प के लपेटने से जिस शिव के घुटने बँधे हुए हैं, योग-बल के द्वारा प्राणवायु को भीतर ही रोक देने से जिसकी समस्त इन्द्रियाँ बाह्य ज्ञान से विरत तथा संयत हो गई हैं, जिसने यथार्थ ज्ञान के द्वारा इन्द्रिय-व्यापार निरोधपूर्वक अपने भीतर आत्मा का दर्शन किया है, उस शिव की समाधि जो निराकार ब्रह्म के दर्शन में होने वाली एकाग्रता के कारण ब्रह्म में लगी हुई है- आप सब सभासदों की रक्षा करें।

पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते॥ (1/2)

भावार्थ- शिवजी के काले बादल जैसा कण्ठ, जिसमें पार्वती की गौरवर्ण भुजा रूपी लता विद्युत् पंक्ति के समान शोभित होती है, आप सब की रक्षा करें।

- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- रूपक की निर्विघ्न समाप्ति के लिए नाटक के प्रारम्भ, मध्य और अन्त में माङ्गलिक पद्यों के प्रयोग का विधान है।
  'ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलम् आचरेत्।'
- नाट्य की भाषा में इसी माङ्गलिक पद्य को 'नान्दी' कहते हैं-
  'नन्दन्ति देवता अस्यामिति नान्दी।'
- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण के रूप में दो पद्यों का प्रयोग

हुआ है।

- मृच्छकटिक में आशीर्वादात्मक तथा कथावस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- द्वितीय श्लोक में समासोक्ति के माध्यम से कथावस्तु का निर्देश है, अतः **'पत्रावली नान्दी'** है।
- मृच्छकटिक में **'अष्टपदा नान्दी'** का प्रयोग हुआ है।
- किसी छन्द के चतुर्थांश/पाद/चरण को एक पद मानने पर- चार पद प्रथम श्लोक में +चार पद द्वितीय श्लोक में। क्योंकि दोनों श्लोकों के माध्यम से स्तुति की गयी है अतः चार+चार = आठ। अर्थात् अष्टपदा नान्दी।
- नान्दी पाठ का कर्त्ता सूत्रधार होता है।
- मृच्छकटिक के प्रथम पद्य में 'स्रग्धरा छन्द' और द्वितीय में पथ्यावक्त्र छन्द है तथा उपमा, रूपक तथा अनुप्रास अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है।

मृच्छकटिक का भरतवाक्य

क्षीरिण्यः सन्तु गावो भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या
पर्जन्यः कालवर्षी सकलजनमनोनन्दिनी वास्तु वाताः।
मोदन्तां जन्मभाजः सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः
श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः॥

(10/61)

भावार्थ- गौएँ प्रचुर दूध देने वाली हों, पृथ्वी सभी धान्यों से पूर्ण हो, मेघ समय पर बरसने वाला हो, समस्त जनों के मन को आनन्दित करने वाली वायु चले प्राणधारी हमेशा सुखी रहें, पूज्य ब्राह्मण लोग उत्तम शील वाले हों, समृद्धिशाली, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा धर्मनिष्ठ राजा पृथ्वी का पालन करें।

- नाटक के अन्त में प्रशस्ति रूप में वर्णित श्लोक को भरतवाक्य कहते हैं।
- भरतवाक्य में लोक कल्याण की कामना की जाती है।
- नाट्य के जन्मदाता आचार्य भरत के सम्मानार्थ प्रयोग होता है।
- सूत्रधार अथवा सारे पात्र संयुक्त रूप से भरतवाक्य बोलते हैं।
- मृच्छकटिक के भरतवाक्य में 'स्रग्धरा छन्द' एवं 'काव्यलिङ्ग' अलङ्कार प्रयुक्त है।

मृच्छकटिकम् बिन्दुवार अध्ययन

- मृच्छकटिकस्य रचयितुर्नाम - **शूद्रकः**
- शूद्रकस्य का रचना अस्ति - **मृच्छकटिकम्**
- शूद्रकेन मानभूतं प्रकरणनाट्यं निर्मितमासीत् - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकम् इत्यस्य पदस्य हिन्दीभाषायाम् अर्थोऽस्ति - **मिट्टी की गाड़ी**
- 'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक ग्रन्थ है?- **प्रकरण**
- प्रकरणस्य उदाहरणं भवति - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्याः देवतायाः समाधेः माध्यमेन रक्षाकामना कृताऽस्ति? - **शङ्करस्य**
- 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है?- **अङ्कों में**
- 'मृच्छकटिके' कति अङ्काः सन्ति? - **दश**
- 'मृच्छकटिकम्' का नायक कौन है? - **चारुदत्त**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है - **कुलजा/वेश्या दोनों**
- चारुदत्तः कस्मिन् रूपके नायकः - **मृच्छकटिके**
- 'चारुदत्त' किस श्रेणी का नायक है? - **धीरप्रशान्त**
- प्रकरण का नायक होता है - **धीरप्रशान्त**
- शकारी प्राकृत का प्रयोग किस नाटक में है- **मृच्छकटिकम्**
- चारुदत्तस्य परिचारिका का? - **रदनिका**
- चारुदत्तस्य सेवकस्य नाम - **संवाहकः**
- शर्विलकस्य प्रेमिकायाः नाम - **मदनिका**
- मृच्छकटिकप्रकरणस्य षष्ठाङ्कस्य नाम - **प्रवहणविपर्ययः**
- 'मृच्छकटिक' प्रकरण के प्रथम अङ्क का नाम है? -**अलङ्कारन्यासः**
- 'मृच्छकटिके' कियन्तः प्राकृतभेदाः प्रयुक्ताः?- **सात**
- मृच्छकटिके .... नाम 'मदनिका-शर्विलकः' अस्ति? -**चतुर्थाङ्कस्य**
- मृच्छकटिकस्य संस्थानकः? - **शकारः**
- धीरप्रशान्तः नायकः कस्य रूपकस्य वर्तते? -**मृच्छकटिकस्य**
- रोहसेनः इति पात्रं कस्मिन् नाटके वर्तते? - **मृच्छकटिके**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका कौन है? - **वसन्तसेना**
- मृच्छकटिकस्य तृतीयाङ्कस्य नाम किम्? - **सन्धिच्छेदः**
- वसन्तसेनाचारुदत्तयोः चित्रणं कस्मिन् नाटके स्तः? -**मृच्छकटिकम्**
- मैत्रेय विदूषक किस नाटक से सम्बद्ध है?- **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकम् में विदूषक का नाम क्या है? - **मैत्रेय**
- मृच्छकटिके नायकस्य भार्यास्ति - **धूता**
- 'धूता' किस कृति से सम्बन्धित है - **मृच्छकटिकम्**
- कौन-सी नारी पात्र मृच्छकटिकम् में नहीं है? **वसन्तसेना की सखी**
- शकार पात्र का वर्णन किस नाटक में है?- **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिके कः नाट्यमञ्चे न दृश्यते - **जूर्णवृद्धः**
- 'मृच्छकटिके' शर्विलकोऽस्ति - **पताकानायकः**
- शर्विलक पात्र विशेष है - **मृच्छकटिके**
- कौन चारुदत्त के घर में संध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है? - **शर्विलक**
- मृच्छकटिके चौरकर्मनिपुणः शर्विलकोऽस्ति? - **ब्राह्मणः**
- चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है? - **रोहसेन**
- 'रदनिका' इति स्त्रीपात्रं तिष्ठति? - **मृच्छकटिके**

- 'मृच्छकटिकम्' में कौन संस्कृत नहीं बोलता है?- **वसन्तसेना**
- 'मृच्छकटिके' वसन्तसेनां मृत्युमुखात् कः रक्षति? - **संवाहकः**
- 'सन्धिच्छेदकर्मणः' वर्णनं प्राप्यते - **मृच्छकटिके**
- अधस्तनेषु उपजीव्यमहाकाव्याश्रितं नास्ति- **मृच्छकटिकम्**
- किस नाटक में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है? -**मृच्छकटिकम्**
- शूद्रक द्वारा लिखी हुई प्राचीन भारतीय पुस्तक मृच्छकटिकम् का विषय था
  - **एक निर्धन व्यापारी और एक गणिका की पुत्री की प्रेमगाथा।**
- शकटविपर्यास किसमें होता है? - **मृच्छकटिकम्**
- 'मृच्छकटिके' राजश्यालकस्य भाषा अस्ति - **शकारी**
- किस नाटक मे रथ परिवर्तन से कथानक आगे चलता है
  -**मृच्छकटिकम्**
- अभिसारिकाओं (वेश्याओं) का बाहुल्य से वर्णन है?
  - **मृच्छकटिकम्**
- 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्'
  इति वाक्यं कः कं प्रति कथयति- **चारुदत्तः विदूषकं प्रति**
- 'समरव्यसनी प्रमादशून्यः' इति एतद्वर्णनं कस्य कवेः?
  - **शूद्रकस्य**
- 'हृदये गृह्यते नारी' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है
  - **मृच्छकटिकम्**
- ''लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः
  असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता''
  यह पंक्ति जिस ग्रन्थ से है वह है - **मृच्छकटिकम्**
- ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' पंक्ति ग्रहण की गई है
  - **मृच्छकटिके**
- ''स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।
  पुरुषाणान्तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते।।''
  प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है? - **मृच्छकटिकम्**
- 'मृच्छकटिकम्' में है- **अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्**
- 'छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति' यह सूक्ति कहाँ लिखित है
  - **मृच्छकटिक में**
- 'द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च'
  यह श्लोकांश किस ग्रन्थ का है - **मृच्छकटिकम्**
- ''एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः''
  यह सूक्ति किस रचना से है - **मृच्छकटिकम्**
- 'अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्'–
  यह कथन किसका है - **अधिकरणिक**
- 'केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये' यह कथन किसका है?-
  विट
- ''सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।
  पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः''।
  कुत्र वर्तते - **मृच्छकटिके**
  - **मृच्छकटिकम्/शूद्रक**
- 'अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति'–वचनमिदं कस्मिन्नाटके दृश्यते? - **मृच्छकटिके**
- 'समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः'–'राष्ट्रियबन्धः' का अभिप्राय है - **राजा का बन्धन**
- 'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति' – कथन किसका है?
  - **अधिकरणिक**
- ''उपासिके! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासीति'' – उपासिका का सम्बन्ध है - **बौद्धधर्म से**
- संसार में दरिद्र के समान नहीं है- **म्यान विहीन तलवार**
- 'मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा' – किसका कथन है
  - **विट**
- अदृश्यरूपा चपला जरेव या मनुष्यसत्वं परिभूय वर्धते का?
  - **निद्रा**
- 'न भीतो मरणादस्मि' कस्येदं वचनम्? - **चारुदत्तस्य**
- मृच्छकटिके कस्य नामपरिवर्तनं जातम्? - **संवाहकस्य**
- 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'-कस्य वचनमिदम्
  - **विटस्य**
- 'रमणाभिमुखाः स्त्रियः' किं न गणयन्ति - **शीतोष्णाम्**

4.10 किरातार्जुनीयम्

महाकवि भारवि का परिचय

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)



भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)

↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **''आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम्। **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान्।।
   – शारदातनय
6. ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।'' **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने।।
   – ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति।
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी।
    अङ्गोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः।।
    – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य
- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे। **स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।**

अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।
- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**
- श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
- विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।
- महाकवि भारवि का जन्म – **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
- भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
- भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
- राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**
- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040 (कुछ विद्वानों के अनुसार-1030)**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वैदर्भी रीति
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- बृहत्त्रयी में प्रथमस्थान पर परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18),
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20),
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**
- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ' – मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका' – श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)
  न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।

नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्।।
(किरात० – 15/14)

➤ अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
➤ **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।
➤ **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
➤ **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
➤ किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
➤ अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
➤ किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है–**किरातवेषधारी शिव**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
➤ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
➤ युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

➤ किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
➤ **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
➤ **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** 'सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
➤ किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)
➤ ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
➤ इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के पात्र

➤ अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के टीकाकार आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

➤ काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**
➤ मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**
➤ मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
➤ कुमारस्वामी की रचना– **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)
➤ मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**
➤ मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**
➤ मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

➤ इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
➤ इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**
➤ किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

➤ किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
➤ **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
➤ **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
➤ **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
➤ **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
➤ **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
➤ **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
➤ **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन
➤ **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।
➤ **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।
➤ **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।
➤ **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।
➤ **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।

- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।
- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
  – सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
  – सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
  – सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
  – सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**
- अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**
- भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**
- महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**
- ग्रन्थ के आरम्भ में '**श्री**' शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में '**लक्ष्मी**' शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**
- किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**
- भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
  (1) ''भारवेरर्थगौरवम्''
  (2) ''भा रवेरिव भारवेः''
  (3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः''
  (4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
  (5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''
- केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**
- अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)
- भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया है और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।
- भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दों की संख्या है – **13**
- भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**
- संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता हैं – **भारवि।**
- किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**
- 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – किरातार्जुनीयम् को
- शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**
- किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**
- महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**
- भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।
- महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।
- भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।
- दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई० है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**
- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई० के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई० मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।
- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान् थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** तथा **'विचित्रमार्ग के जनक'** के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।
- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका 'द्रौपदी'** हैं।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।
- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले

'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।

- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।
- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती है।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।
- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर श्रृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।
- जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।
- भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

- गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।
- वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।
- यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।
- वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।
- वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –

''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति

वाचमाददे।'' (किरात० 1/3)

- वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–
''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' (किरात० 1/2)
- वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –
''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' (किरात० 1/6)
- इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

- महाकवि भारवि ने दुर्योधन को सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–**''श्रियः कुरूणामधिपस्य'' (किरात. 1/1)**
- क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।
- किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः'' (किरात० 1/10)**
- दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।
- सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।
''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' (किरात० 1/17)
- सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –
''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – (किरात० 1/10)
- दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –
''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।'' (किरात० 1/19)
- यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –
''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।'' (किरात० 1/8)
- राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था –
''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' (किरात० 1/21)
- दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी –
''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात० 1/21)
- राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।
- साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था –
''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात० 1/12)
- न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –
''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' (किरात० 1/13)
- इस प्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

- किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।
- प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।
- वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।
- युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।
- दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।
- द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है –
''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात० 1/27)
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –
''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्........'' (किरात० 1/31)
- वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।
- द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है –
''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात० 1/38)
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते – **''न जातहार्देन न विद्विषादरः'' (किरात० 1/**

33)

- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत लें – **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''.......। (किरात० 1/45)**
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नही करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' (किरात० 1/44)**
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

किरातार्जुनीयम्-सूक्तियाँ

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।(1/4)
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। (1/2)
- सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः। (1/5)
- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः(1/5)
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। (1/8)
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। (1/12)
- नभूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्। (1/12)
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। (1/12)
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (1/23)
- तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः।।(1/28)
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।।(1/30)
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।(1/33)
- अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।। (1/33)
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। (1/37)
- परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।(1/41)
- व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।(1/42)
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। (1/43)
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।(1/45)

किरातार्जुनीयम्- बिन्दुवार अध्ययन

- किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं -**भारवि**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के किस पर्व से लिया गया है - **वनपर्व से**
- महाभारत पर आधारित ग्रन्थ है -**किरातार्जुनीयम्**
- 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में कुल कितने सर्ग हैं **-18**
- 'किरातार्जुनीयम्' का प्रथम पद्य किस छन्द में है - **वंशस्थ**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्रमुखता से प्रयुक्त छन्द कौन-सा है - **वंशस्थ**
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है - **शिवः**
- वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया - **द्वैतवन में**
- 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है - **दुर्योधन**
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है - **लक्ष्मी**
- वीररस प्रधान काव्य है - **किरातार्जुनीयम्**
- 'किरातार्जुनीयम्' शब्द निष्पन्न होता है – **-छ प्रत्यय**
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में वनेचर वार्तालाप कर रहा है - **युधिष्ठिर से**
- किरातः कस्य महाकाव्यस्य पात्रम् अस्ति - **किरातार्जुनीयस्य**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य किस पर आधारित है - **महाभारत**
- 'किरातार्जुनीयम्' का नायक कौन है - **अर्जुन**
- 'किरातार्जुनीयम्' का प्रधान रस क्या है - **वीररस**
- द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौटा - **युधिष्ठिर**
- 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' किस प्रकार का मङ्गलाचरण है - **वस्तुनिर्देशात्मक**
- 'अदेवमातृकाः' का प्रयोग किस ग्रन्थ में है - **किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में**
- ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ। युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है - **ब्रह्मचारी**
- 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है, वह आचरण/नीति निर्धारित है - **मनु के द्वारा**
- 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिये किसे भेजा गया था - **वनेचरः**
- दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है - **सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में**
- 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्'–प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है - **अग्नि**
- 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की तुलना की गई है - **उरग से**
- 'किरातार्जुनीयम्' में गुप्तचर किस वेष में जाता है - **ब्रह्मचारी**
- 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है - **गुप्तचर**
- किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः -**नारिकेलपाक**
- ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था - **वनेचर**
- धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था - **अर्जुन**

➤ 'किरातार्जुनीयम्' में किस विषय का चमत्कारित्व है - **अर्थगौरव**
➤ 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा - **गुप्तचर**
➤ किरातार्जुनीयम् में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करते हैं **-पाशुपतास्त्र**
➤ ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा - **सहसा कार्य न करें**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' में 'अदेवमातृकाः' कौन हैं - **नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले**
➤ वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे - **द्रौपदी के समीप**
➤ किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं - **हितकारी और मनोहर**
➤ 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'यमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है - **नकुल-सहदेव**
➤ महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है - **उन्नति कराने वाला**
➤ दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है - **दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके**
➤ दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है **-युधिष्ठिर का नाम सुनकर**
➤ ''महीभुजे'' में कौन-सी विभक्ति है - **चतुर्थी**
➤ 'विघाताय' में कौन-सी धातु है - **हन्**
➤ 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है - **बहुव्रीहि**
➤ 'वनेचरः' में कौन-सा प्रत्यय है - **ट**
➤ किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग के अन्त्य श्लोक में कौन-सा छन्द है - **मालिनी**
➤ 'कृषीवल' से तात्पर्य है - **किसान से**
➤ 'नारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है - **मर्यादा**
➤ 'यमौ' कौन हैं - **अश्विनी पुत्र (नकुल एवं सहदेव)**
➤ भीम किसके पुत्र हैं - **वायु के**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'—यह किस ग्रन्थ की उक्ति है - **किरातार्जुनीयम् (वनेचर)**
➤ तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'- इत्यत्र 'नताननः' कः - **सुयोधनः**
➤ 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः - **युधिष्ठिरः**
➤ अर्जुन किसमें नायक के रूप में वर्णित हैं - **किरातार्जुनीयम्**
➤ किरातार्जुनीयम् शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुआ है - **किरातवेशधारी शिव।**
➤ 'कीदृशं वचः दुर्लभं भवति।' उचित शब्द का चयन कर पंक्ति पूर्ण करें - **हितं मनोहारि च**
➤ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे - **द्वैतवन में**
➤ अर्थगौरवसम्पन्नं काव्यं किं नाम भारवेः - **किरातार्जुनीयम्**
➤ ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इत्यत्र 'खलु'अव्ययस्य अर्थ अस्ति - **निश्चयः**
➤ ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्। तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः।।'' इस पद्य में 'मां' पद से किसको कहा गया है - **द्रौपदी**
➤ 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इस पंक्ति में 'अबन्ध्यकोपस्य' का क्या अर्थ है - **सफल क्रोध वाले**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण हैं? - **जगण तगण जगण रगण**
➤ 'स वल्कवासांसि तवाधुना हरन्' कः - **अर्जुनः**
➤ 'न्यायधारा हि साधवः' का अर्थ है - **सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।**
➤ किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है - **महाभारत से**
➤ यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति **-किरातार्जुनीयस्य**
➤ ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्''- इस सूक्ति के रचयिता हैं **-भारवि**
➤ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति किसने कही है **-वनेचर ने**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभम्' का अर्थ है **-हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है।**
➤ 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है **-साधुजनों का विरोध**
➤ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है **-किरातार्जुनीयम्**
➤ ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **-किरातार्जुनीयम्**
➤ 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' कः एवं वदति - **वनेचरः**
➤ ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है **-किरातार्जुनीयम् से**
➤ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' सूक्ति उद्धृत है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्'' इदं वाक्यमस्ति - **किरातार्जुनीये**
➤ ''प्रवृत्तिसारा खलु मादृशां गिरः'' इति वचनं वर्तते - **वनेचरस्य**
➤ ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम् - **किरातार्जुनीये**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्ति है - **वनेचरस्य**
➤ हितं मनोहारि च दुर्लभं........... - **वचः**
➤ ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' सूक्ति है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः'—किस कवि का प्रिय

श्लोक है **- भारवेः**

- राजाओं का स्वभाव होता है **-दुर्विज्ञेय**
- 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में 'कृष्णा' का तात्पर्य है - **द्रौपदी से**
- 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य है -**जैसे के संग तैसा**
- "अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता"-कस्य वचनमिदम् - **भारवेः**
- "सहसा विदधीत न क्रियाम्" – इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः - **युधिष्ठिरेण**
- "निराश्रया हन्त! हता मनस्विता" यह किसकी उक्ति है - **द्रौपदी की**
- "सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः" यह किसके द्वारा कहा गया है? - **वनेचर द्वारा**
- "स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता" यह किसके विषय में कहा गया है - **दुर्योधन के**
- "निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्" यह उक्ति किसकी है? - **वनेचर**
- "विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः" यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है? - **किरातार्जुनीयम् से**
- "तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है - **किरातार्जुनीयम्**
- "प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्" यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है - **किरातार्जुनीयम् से**
- "अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता" यह सूक्ति किसके लिए कथित है - **दुर्योधन के विषय में**
- "पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्" यह उक्ति किस ग्रन्थ में है? -**किरातार्जुनीयम् में**
- "शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः" यह कथन किसका है - **द्रौपदी का**
- "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" सूक्ति किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग से उद्धृत है - **प्रथम सर्ग**
- "जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्" यह कथन किसको कहा गया है - **युधिष्ठिर को**
- "क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो, न वञ्चनीयाःप्रभवोऽनुजीविभिः" इस उक्ति वाला ग्रन्थ है - **किरातार्जुनीयम्**
- "वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः" यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है - **किरातार्जुनीयम् में, वनेचर ने**
- "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" इति केन कथितम् - **भारविणा**
- "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः" इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति - **द्रौपद्याः**
- "वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि" इति कस्योक्तिः - **भारवेः**
- 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति - **किरातार्जुनीये**
- द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ - **वनेचरः**
- 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'-अलङ्कारः कः - **अर्थान्तरन्यासालङ्कारः**
- 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **किरातार्जुनीय**
- मल्लिनाथविरचितं किरातार्जुनीयव्याख्यानं किम् - **घण्टापथ**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. "सहसा विदधीत न क्रियाम्" यह किस कवि का प्रिय श्लोक है –

(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) भवभूति

2. भारवि किसके उपासक थे –

(A) ब्रह्मा (B) शिव
(C) विष्णु (D) सूर्य

3. बृहत्त्रयी में कौन सा महाकाव्य नहीं है –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् (D) नैषधीयचरितम्

4. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं –

(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20

5. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं –

(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

6. "न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु" यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है –

(A) भारवि के किरातार्जुनीयम् से
(B) माघ के शिशुपालवधम् से
(C) कालिदास के रघुवंशम् से

(D) वाल्मीकि के रामायण से

7. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' यह सूक्ति किसकी है –
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

8. किस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गों को ''पाषाणत्रय'' कहा गया है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कुमारसम्भवम्

9. भारवि का वास्तविक नाम था –
(A) रत्नाकर (B) श्रीधर
(C) दामोदर (D) नारायण स्वामी

10. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रमुख छन्द है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

11. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिमश्लोक में छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) उपेन्द्रवज्रा

12. किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) रुचिरा

13. पाण्डव वन में कितने वर्षों तक निवास किये –
(A) 14 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 13 वर्ष

14. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है –
(A) महाभारत वनपर्व से (B) महाभारत आदिपर्व से
(C) महाभारत सभापर्व से (D) महाभारत भीष्मपर्व से

15. किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) लक्ष्मीः (B) श्रीः
(C) सरस्वती (D) कुरूणाम्

16. ''आतपत्र'' किस कवि की उपाधि है –
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

17. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

18. ''बृहत्त्रयी'' में कौन सा ग्रन्थ परिगणित है –
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशमहाकाव्यम्

19. भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है –
(A) 600 ई० के आसपास (B) 800 ई० के आसपास
(C) कालिदास के पहले (D) प्रथम शताब्दी के आसपास

20. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है–
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्ष (B) भास-भारवि-अश्वघोष
(C) भास-माघ-कालिदास (D) वाल्मीकि-भास-भारवि

21. भारवि के बाद किसका समय माना जाता है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) व्यास का (D) भास का

22. भारवि, पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं –
(A) व्यास के (B) श्रीहर्ष के
(C) कालिदास के (D) अश्वघोष के

23. किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है –
(A) वीररस (B) शृंगाररस
(C) भयानक रस (D) इनमें से कोई नहीं

24. भारवि का प्रिय अलंकार है –
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) अर्थान्तरन्यास

25. पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा –
(A) दो वर्ष (B) एक वर्ष
(C) तेरह वर्ष (D) चौदह वर्ष

26. पाण्डवों ने वनवासकाल में निवास किया –
(A) तुलसीवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) द्वैतवन में (D) नन्दनवन में

27. द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है –
(A) भीम के प्रति (B) दुर्योधन के प्रति
(C) वनेचर के प्रति (D) कर्ण के प्रति

28. भारवि के काव्य में किस अलङ्कार की प्रमुखता है–
(A) रूपक अलंकार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) उपमा अलंकार (D) चित्रालङ्कार

29. भारवि के पिता का नाम था –
(A) श्रीधर (B) महीधर
(C) लक्ष्मीधर (D) कृष्णधर

30. भारवि की माता थी –
(A) रसिका (B) सुशीला
(C) सुनीता (D) सुगीता

31. किरातार्जुनीयम् का पात्र नहीं है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) वनेचर (D) रघु

32. किरातार्जुनीयम् का पात्र है –
(A) दुष्यन्त (B) चारुदत्त
(C) युधिष्ठिर (D) बाली

33. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है –
(A) नाटक (B) चम्पू
(C) आख्यायिका (D) महाकाव्य

34. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) भवभूति का (D) इनमें से किसी का नहीं

35. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णित है –
(A) कुन्ती का (B) द्रौपदी का
(C) गान्धारी का (D) तारा का

36. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं –
(A) अर्जुन-वनेचर (B) नकुल-सहदेव
(C) युधिष्ठिर-कृष्ण (D) दुर्योधन-दुःशासन

37. किरातार्जुनीयम् का नायक है –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

38. वर्णिलिङ्गी कौन था –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

39. वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला–
(A) विन्ध्यवन में (B) नन्दनवन में
(C) विराटवन में (D) द्वैतवन में

40. वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया –
(A) राजा के वेष में (B) ब्रह्मचारी के वेश में
(C) मन्त्री के वेष में (D) किसान के वेश में

41. वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है –
(A) श्रीकृष्ण के पास (B) युधिष्ठिर के पास
(C) दुर्योधन के पास (D) द्रौपदी के पास

42. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि रहने वाले थे –
(A) दक्षिणभारत के (B) उत्तरभारत के
(C) मध्यप्रदेश के (D) पूर्वीभारत के

43. भारवि की कुल कितनी रचनायें हैं –
(A) तीन (B) दो
(C) एक (D) सात

44. द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास कौन आता है –
(A) दुर्योधन (B) भीष्म
(C) वनेचर (D) द्रोणाचार्य

45. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) वीरक्षत्राणी (B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी (D) कुलटा

46. किरातार्जुनीयम् के दुर्योधन को कहते हैं –
(A) सुयोधन (B) दुःशासन
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जय

47. वनेचर की चारित्रिक विशेषता नहीं है –
(A) सच्चा हितैषी (B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान् (D) नीच अहङ्कारी

48. किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है –
(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

49. ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) रघुवंशम् से

50. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) वनेचर के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) द्रौपदी के लिए

51. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है –
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्।

52. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है –
(A) लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन
(C) लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन

53. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है –
(A) दुर्योधन युधिष्ठिर से (B) वनेचर युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन किरात से (D) द्रौपदी युधिष्ठिर से

54. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन किसका है–
(A) वनेचर का युधिष्ठिर से
(B) द्रौपदी का युधिष्ठिर से
(C) युधिष्ठिर का वनेचर से
(D) सेवक का जनता से

55. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह सूक्ति कहाँ की है –
(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग की
(B) शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग की
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् प्रथमसर्ग की (D) नैषधीयचरितम् प्रथमसर्ग की

56. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' इसे किसने कहा –

(A) युधिष्ठिर ने (B) दुर्योधन ने
(C) वनेचर ने (D) द्रौपदी ने

57. ''नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः'' यहाँ 'सुयोधन' पद प्रयुक्त है –
(A) भारवि के लिए (B) श्रीकृष्ण के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) युधिष्ठिर के लिए

58. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' में किसके द्वारा अपने पुरुषार्थो का विस्तार किया जा रहा है –
(A) युधिष्ठिर के द्वारा (B) दुर्योधन के द्वारा
(C) वनेचर के द्वारा (D) भीम के द्वारा

59. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' किसके लिए कहा गया है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

60. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' कौन किससे कह रहा है।
(A) वनेचर-द्रौपदी से (B) वनेचर-युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) इनमें से कोई नहीं

61. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' कौन किससे कहता है –
(A) वनेचर-युधिष्ठिर से (B) वनेचर-दुर्योधन से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) दुर्वासा-शकुन्तला से

62. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है –
(A) युधिष्ठिर को (B) वनेचर को
(C) द्रौपदी को (D) दुर्योधन को

63. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है –
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

64. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) भीम के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) वनेचर के लिए

65. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं –
(A) स्वर्ण (B) चाँदी
(C) धन (D) वल्कलवस्त्र

66. किरातार्जुनीयम् में 'युगलभ्राता' के रूप में वर्णन है–
(A) भीम-अर्जुन (B) दुर्योधन-दुःशासन
(C) नकुल-सहदेव (D) वनेचर-युधिष्ठिर

67. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनु-जीविभिः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) रक्षणीयाः (B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः (D) पालनीयाः

68. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नहीं है –
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

69. ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ 'घ्नन्ति' पद में धातु है –
(A) घन् (B) हन्
(C) नन् (D) नी

70. 'परिभ्रमन्' पद में प्रत्यय है –
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

71. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा –
(A) भीम ने धृतराष्ट्र से (B) वनेचर ने युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी ने युधिष्ठिर से (D) वनेचर ने दुर्योधन से

72. ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है –
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

73. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है –
(A) भीम का (B) शिव का
(C) अर्जुन का (D) दुर्योधन का

74. ''कुरूणामधिपः'' का तात्पर्य है –
(A) दुर्योधन (B) श्रीकृष्ण
(C) अर्जुन (D) वनेचर

75. वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे–
(A) द्रौपदी के पास (B) व्यास के पास
(C) श्रीकृष्ण के पास (D) दुर्योधन के पास।

76. दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था –
(A) वनेचर को (B) भीम को
(C) नकुल को (D) किसी को नहीं

77. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन सा अस्त्र प्राप्त हुआ था –
(A) पाशुपतास्त्र (B) आग्नेयास्त्र
(C) वायव्यास्त्र (D) ब्रह्मास्त्र

78. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी

है–
(A) वनवासी यक्ष की (B) वनेचर की
(C) युधिष्ठिर की (D) द्रौपदी की

79. 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

80. किरातार्जुनीयम् में संवाद नहीं है –
(A) युधिष्ठिर-व्यास का (B) वनेचर-युधिष्ठिर का
(C) इन्द्र और अर्जुन का (D) सिंह और दिलीप का

81. भारवि का जन्म स्थान है –
(A) दक्षिणभारत का ज्ञानपुर
(B) दक्षिणभारत का अचलपुर
(C) पूर्वीभारत का सीतापुर
(D) मध्यभारत का शिवपुर

82. किरातार्जुनीयम् में कुशलगुप्तचर के रूप में चित्रित है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनचेर (D) द्रौपदी

83. किरातार्जुनीयम् निबद्ध है –
(A) अध्यायों में (B) सर्गों में
(C) काण्डों में (D) अङ्कों में

84. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) में किस पात्र का नाम नही आता है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) सुयोधन (D) श्रीकृष्ण

85. वनेचर युधिष्ठिर से कहाँ का समाचार बताता है –
(A) हस्तिनापुर के कर्ण का
(B) इन्द्रप्रस्थ के राजा का
(C) हस्तिनापुर के दुर्योधन का
(D) वनाधिराज सिंह का

86. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिर
(C) सुयोधन (D) मुरला

87. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का आरम्भिक वक्ता है–
(A) वनेचर (B) श्रीकृष्ण
(C) भीम (D) दुर्योधन

88. वनेचर ने हस्तिनापुर का समाचार किससे कहा –
(A) भीम से (B) द्रौपदी से
(C) युधिष्ठिर से (D) अर्जुन से

89. भारवि किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण किस पद से करते हैं –
(A) 'श्री' से (B) 'लक्ष्मी' से
(C) 'ॐ' से (D) 'श्रीकृष्ण' से

90. भीम अपने शरीर पर लेपन करते थे –
(A) कमलरस का (B) लालचन्दन का
(C) पीले चन्दन का (D) सुगन्धित इत्र का

91. किरातार्जुनीयमहाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या हैं–
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1030 (D) 1150

92. भारवि का आश्रयदाता राजा था –
(A) श्रीहर्ष (B) विक्रमादित्य
(C) पुलकेशिन का भाई विष्णुवर्धन (D) समुद्रगुप्त

93. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किस कवि के लिए है–
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

94. ''वनेचरः'' में कौन सा प्रत्यय है –
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

95. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' यह कथन किसका है –
(A) द्रौपदी का (B) युधिष्ठिर का
(C) वनेचर का (D) दुर्योधन का

96. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है –
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

97. अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की –
(A) रैवतक (B) इन्द्रकील
(C) विन्ध्याचल (D) चित्रकूट

98. ''किरातश्च अर्जुनश्च'' यहाँ कौन सा समास है –
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

99. किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय है –
(A) ढक् (B) छ
(C) अच् (D) घ

100. शिशुपालवधम् का उपजीव्य है –
(A) महाभारत आदिपर्व (B) महाभारत सभापर्व
(C) महाभारत वनपर्व (D) महाभारत शान्तिपर्व

उत्तरमाला

1. (A)	2. (B)	3. (C)	4. (B)	5. (C)	6. (A)
7. (C)	8. (B)	9. (C)	10. (B)	11. (C)	12. (B)
13. (D)	14. (A)	15. (A)	16. (B)	17. (A)	18. (C)
19. (A)	20. (D)	21. (B)	22. (B)	23. (A)	24. (D)
25. (B)	26. (C)	27. (B)	28. (D)	29. (A)	30. (B)
31. (D)	32. (C)	33. (D)	34. (A)	35. (B)	36. (B)
37. (A)	38. (B)	39. (D)	40. (B)	41. (B)	42. (A)
43. (C)	44. (C)	45. (D)	46. (A)	47. (D)	48. (A)
49. (B)	50. (B)	51. (B)	52. (A)	53. (B)	54. (A)

55. (A) **56.** (C) **57.** (C) **58.** (B) **59.** (A) **60.** (B) **61.** (C) **62.** (A) **63.** (D) **64.** (B) **65.** (D) **66.** (C)

67. (B) **68.** (D) **69.** (B) **70.** (A) **71.** (C) **72.** (B)
73. (B) **74.** (A) **75.** (A) **76.** (A) **77.** (A) **78.** (B)
79. (D) **80.** (D) **81.** (B) **82.** (C) **83.** (B) **84.** (D)
85. (C) **86.** (D) **87.** (A) **88.** (C) **89.** (A) **90.** (B)
91. (C) **92.** (C) **93.** (C) **94.** (B) **95.** (A) **96.** (B)
97. (B) **98.** (B) **99.** (B) **100.** (B)

4.11 महाकवि-माघ का शिशुपालवधम्

- शिशुपालवध-नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-

काव्येषु माघः

- भारवि के द्वारा प्रवर्तित विचित्र-मार्ग को माघ ने बहुत ऊँचाई पर पहुँचाया तथा भारवि से आगे बढ़ने का सफल प्रयास किया।
- माघ के **पितामह सुप्रभदेव** थे जो राजा वर्मलात (या श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा।।

- सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे।
- इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि सबकी सहायता के लिए वे तत्पर रहते थे।इन्हीं दत्तक के पुत्र महाकवि माघ थे।
- माघ सूर्य-पूजक थे।
- माघ की मृत्यु 'पादशोथ'-रोग से हुई।

निवासस्थान-

- माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था।यह नगर अभी माउंटआबू से 40 मील पूर्व जोधपुर प्रमण्डल (राजस्थान) में अवस्थित है।यह नगर उस समय गुर्जर राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था
- श्रीमाल (भीनमाल) में संस्कृत विद्या का महान् केन्द्र था, अनेक विद्याएँ यहाँ पढ़ायी जाती थीं।
- वर्मलात नामक राजा इसी नगर में रहते थे। माघ के पितामह उनके प्रधानमन्त्री थे। माघ का परिवार बहुत धनाढ्य था जगत्स्वामी सूर्य के मन्दिर के ये लोग उपासक थे। माघ अनेक शास्त्रों के विद्वान् थे, राजाश्रित होने के कारण अनेक शास्त्रों के अध्ययन की सुविधा इन्हें प्राप्त थी।

माघ का समय-

- माघ को 675 ई. के अनन्तर माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान् 700 ई. के आसपास ही माघ को स्वीकार करने के पक्षधर हैं।

शिशुपालवध-

- यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।
- इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।,

शिशुपालवध की कथा

- **सर्ग 1**- देवर्षि नारद का द्वारका में आगमन,श्रीकृष्ण द्वारा

उनका सत्कार, नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्वजन्मों तथा उसके अत्याचारों का वर्णन, शिशुपाल को मारने के लिए प्रेरित करना।

- **सर्ग 2**- श्रीकृष्ण, बलराम और उद्धव की मन्त्रणा,बलराम का शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव किन्तु उद्धव का नीतिपूर्ण प्रस्ताव कि इस विषय में शीघ्रता न करके युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेना-सहित भाग लें।
- **सर्ग 3**- द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान। नगरी, सेना और समुद्र का वर्णन।
- **सर्ग 4**- रैवतक पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग 5**- रैवतक पर सैन्य-शिविर की स्थापना।
- **सर्ग 6**- छह ऋतुओं का द्रुतविलम्बित छन्द में 'यमक' का निवेश करते हुए वर्णन।
- **सर्ग 7**- वन-विहार-वर्णन
- **सर्ग 8**- जलक्रीडा-रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 9**- सन्ध्या, चन्द्रोदय तथा शृङ्गार-विधान का वर्णन।
- **सर्ग 10**- पान-गोष्ठी एवं रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 11**- प्रभात-वर्णन।
- **सर्ग 12**- श्रीकृष्ण का पुनः प्रस्थान तथा यमुना नदी का वर्णन।
- **सर्ग 13**- श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलना, नगर-प्रवेश तथा दर्शक नारियों की चेष्टाओं का, अश्वघोष तथा कालिदास से प्रतिस्पर्धा करते हुये वर्णन।
- **सर्ग 14**- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा तथा भीष्म-द्वारा उनकी स्तुति।
- **सर्ग 15**- शिशुपाल का कोप और उनके पक्ष के राजाओं का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना।
- **सर्ग 16**- शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण के समक्ष उभयार्थक शब्दों का प्रयोग, सात्यकि का उत्तर,दूत का पुनः शिशुपाल के पराक्रम का वर्णन करना।
- **सर्ग 17**- श्रीकृष्ण के पक्ष के राजाओं का कोप, सेना की प्रस्तुति तथा प्रस्थान।
- **सर्ग 18**- सेनाओं के घोर युद्ध का वर्णन
- **सर्ग 19**- चित्रालङ्कार से पूर्ण पद्यों के द्वारा व्यूह-रचना एवं विचित्र युद्ध का वर्णन।
- **सर्ग 20** -श्रीकृष्ण और शिशुपाल का शस्त्र-युद्ध, दिव्यास्त्र युद्ध तथा वाग्युद्ध, शिशुपाल के शब्दों से कुपित कृष्ण द्वारा सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिरश्छेदन , शिशुपाल के तेज का विजयी कृष्ण में प्रवेश।
- यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय 35-43) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।
- श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध (अध्याय 71-75) में भी शिशुपाल की कथा प्रायः वैसी ही है, जैसी इस महाकाव्य में वर्णित है इसलिए बहुत से विद्वान् भागवतपुराण को ही इस महाकाव्य का उपजीव्य (स्रोत) बताते हैं।
- विद्वानों के बीच एक लोकोक्ति है- **काव्येषु माघः कवि-कालिदासः।** अर्थात् कवि की दृष्टि से कालिदास श्रेष्ठ हैं किन्तु काव्य (महाकाव्य) के लेखन में माघ उत्कृष्ट हैं
- अलङ्कारवादी महाकवियों में भी माघ अग्रणी हैं क्योंकि प्रौढ़ पाण्डित्य के साथ कथानक को विचित्र मार्ग पर ले जाने की क्षमता इनमें सर्वाधिक है।
- कृष्ण के द्वारा शिशुपाल के मारे जाने का कथानक इतिहास-प्रसिद्ध है, यह कथा महाभारत और भागवतपुराण पर आश्रित है
- इसके नायक कृष्ण हैं जो यदुपति तथा विष्णु के अवतार (जगन्निवासः) हैं।
- महाकाव्य का **प्रधानरस वीर** है, अन्य रसों में शृंगार,हास्य, अद्भुत, भयानक इत्यादि का स्वाभाविक रूप से निवेश हुआ है
- इसके सर्ग छन्दों के नियम का पालन करते हैं पूरा सर्ग एक छन्द में हो और सर्गान्त में एक दो पद्य दूसरे छन्दों में हों।
- प्रथम सर्ग में वंशस्थ है,द्वितीय सर्ग में अनुष्टुप्, तृतीय सर्ग में उपजाति है।
- पंचम सर्ग में वसन्ततिलका है तो षष्ठसर्ग द्रुतविलम्बित छन्द का है, सबके अन्त में छन्द परिवर्तित होते रहें है।
- चतुर्थ सर्ग में अनेक छन्दों का प्रयोग है।
- माघ ने शिशुपालवध के 19वें सर्ग में एकाक्षर,द्वयक्षर, सर्वतोभद्र, मुरजबन्ध, प्रतिलोमयमक (33-34), गोमूत्रिकाबन्ध, समुद्गयमक (58), अर्धप्रतिलोम-यमक (88) तथा चक्रबन्ध (120) जैसा श्रमसाध्य चित्रकाव्यों का प्रयोग किया है।
- युद्ध का वर्णन माघ ने कई सर्गों में किया है। 19वाँ सर्ग तो चित्रकाव्य के रूप में विचित्र युद्ध का भ्रम देता ही है 20वें सर्ग में दोनों पक्षों के नेताओं द्वारा विविध दिव्यास्त्रों का प्रयोग होता है, शिशुपाल के अस्त्रों को कृष्ण काटते जाते हैं।
- षष्ठसर्ग का षड्ऋतुवर्णन तथा एकादश सर्ग का प्रभातवर्णन अधिक आवर्जक है।
- माघ के पाण्डित्य और कवित्व के विषय में कई प्रशस्तियाँ विख्यात हैं। इनके शब्द भाण्डागार के विषय में कहा गया है-**नवसर्गगते माघे नव शब्दो न जायते (विद्यते)** अर्थात् माघ काव्य में नौ सर्ग समाप्त कर लेने पर संस्कृत में कोई नया शब्द जानने को रह ही नही जाता।
- माघ ने धातुरूपों के प्रयोग स्वाभाविक रूप से किये हैं। जैसे-अचूचुरत् (1/16), विरेजिरे (1/21), अभ्युपेयुषी (1/24), न्यधायिषाताम् (1/13), अपूपुजत् (1/14), निवेशयामासिथ (1/34), उपाजिहीथाः (1/37), अकारि तथा अशिश्रियत् (1/46) , भूतकाल में समुच्चयार्थक लोट् लकार का प्रयोग (1/51) अनुचकम्पिरे (1/61), दुःखाकरोति (2/11) इत्यादि।
- माघ की एक अन्य प्रशस्ति है- **माघे मेघे गतं वयः।** अर्थात् महाकाव्य के अध्ययन में और मेघदूत का आनन्द लेने में सारी आयु बीत गयी।
- **माघे सन्ति त्रयो गुणाः-** माघ-विषयक प्रशस्तियों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें एकसाथ कालिदास,भारवि और

दण्डी (या श्रीहर्ष) के साथ माघ की महत्ता का निरूपण किया गया है

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

- **दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥** अर्थात् महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है।
- माघ की सामान्य उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है,जिसके कारण उन्हें **'घण्टामाघ'** का विरुद प्राप्त हुआ है-

उदयति विततोर्ध्व - रश्मि - रज्जा
वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-
द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्॥ (4/20)

- राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है- **शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा (2/112)**

सूक्तियाँ

1. **गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः (1/14)** महात्मा लोग अपुण्यात्माओं के घर प्रेम से आना नही चाहते।
2. **श्रेयसि केन तृप्यते (1/29)** मंगलमय कार्य में कौन तृप्ति हो सकता है।
3. **सदाभिमानैकधना हि मानिनः (1/67)** मानी (मनस्वी) लोगों का एक मात्र धन स्वाभिमान ही होता है
4. **ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि (2/12)** सारभूत तत्त्व को जानने पर भी अकेला व्यक्ति अपने कर्तव्य के निर्धारण में संशययुक्त रहता है।
5. **महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः (2/13)** बड़े लोग स्वभाव से ही कम बोलते हैं।
6. **क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः (2/43)** बार-बार विरोध करने वाले को कोई नही सह सकता।
7. **सर्वः स्वार्थं समीहते (2/65)** सभी लोग अपना स्वार्थ देखते हैं।
8. **नान्यस्य गन्धमपि मानभृतः सहन्ते (5/42)** मनस्वी लोग दूसरे की गन्ध को भी नहीं सहते।
9. **शास्त्रं हि निश्चितधियां क्व न सिद्धिमेति (5/47)** निश्चित बुद्धि वाले व्यक्तियों का शास्त्र सर्वत्र सफल होता है।
10. **मन्दोऽपि नाम न महानवगृह्य साध्यः (5/49)** बलवान् व्यक्ति मूर्ख भी क्यों न हो उसे बलपूर्वक वश में नहीं किया जा सकता।
11. **समय एव करोति बलाबलम् (6/44)** समय के प्रभाव से ही कोई बली या निर्बल होता है।
12. **परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः (6/45)** शत्रु से उत्पन्न पराजय अत्यधिक दुःसह होती है।
13. **भवति महत्सु न निष्फलः प्रयासः (7/1)** महापुरुषों की (सेवा का) कोई प्रयास व्यर्थ नहीं जाता।
14. **क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः (4/17)** जो प्रत्येक क्षण में नवीन प्रतीत हो वही सुन्दरता का स्वरूप है।
15. **क्षतसकलविपक्षस्तेजसः स स्वभावः (11/59)** सभी विपक्षियों को नष्ट करना तेज का स्वभाव ही है।
16. **हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः, शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।**

- युद्ध विद्या का भी निवेश अन्तिम सर्गों में व्यापक रूप से उन्होंने किया है।इसी दृष्टि से यह काव्य शास्त्रकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है।

माघ के छन्द प्रयोग-

- माघ ने छन्दों का वैविध्य प्रदर्शित किया है। सर्ग के मुख्य छन्द भी इन्होंने सभी सर्गों में पृथक रखें हैं। केवल अनुष्टुप् का प्रयोग दो सर्गों में है (2,19) अन्य सर्गों में वंशस्थ (सर्ग-1) उपजाति (सर्ग-3), वसन्ततिलका (सर्ग-5), द्रुतविलम्बित (सर्ग-6), पुष्पिताग्रा (सर्ग-7), प्रहर्षिणी (सर्ग-8), प्रमिताक्षरा (सर्ग-9), स्वागता (सर्ग-10), मालिनी (सर्ग-11), वंशस्थ और इन्द्रवंशो की उपजाति (सर्ग-12), मंजुभाषिणी (सर्ग-13), रथोद्धता (सर्ग-14), उद्गता (सर्ग-15), वैतालीय (सर्ग-16),रुचिरा (सर्ग-17), शालिनी (सर्ग-18), औपच्छन्दसिक (सर्ग-20)ये पृथक्-पृथक् मुख्य छन्द हैं। चतुर्थसर्ग में 22 छन्दों का प्रयोग है। पृथ्वी, प्रभा, तोटक, आर्या, शिखरिणी, हरिणी, स्रग्धरा, मत्तमयूर, मन्दाक्रान्ता और शार्दूलविक्रीडित का भी इन्होंने प्रयोग किया है।
- भारवि ने 'किरातार्जुनीय' में शिव का गुणगान किया है तो माघ ने विष्णु के अवतार कृष्ण का माहात्म्य 'शिशुपालवध' में वर्णित किया है।
- भारवि तथा माघ दोनों ने महाभारत से ही अपने ग्रन्थों के कथानक लिये 'श्री' शब्द से काव्यों का आरम्भ किया और संवाद से प्रथम सर्ग का प्रवर्तन किया
- माघकाव्य में कृष्ण-नारद-संवाद है तो भारवि के काव्य में युधिष्ठिर और वनेचर का संवाद है दोनों संवाद ही महाकाव्य की मुख्य घटनाओं को प्रवर्तितकरते हैं
- वनेचर की सूचना से यदि पाण्डवों को शक्ति-संग्रह के अर्थात् महाकवि कालिदास की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है।

- माघ की सामान्य उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है, जिसके कारण उन्हें **'घण्टामाघ'** का विरुद प्राप्त हुआ है-

उदयति विततोर्ध्व - रश्मि - रज्जा
वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-
द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्॥ (4/20)

- राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है- **शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा (2/112)**

- भारवि सर्ग 5 को और माघ सर्ग 4 को विविध छन्दों से भर देते हैं यहाँ भारवि ने 16 और माघ ने 22 छन्दों का प्रयोग किया है।
- भारवि के काव्य में द्रौपदी तथा भीम युधिष्ठिर को उत्तेजित करते हैं तो माघकाव्य में कृष्ण को नारद और बलराम उत्तेजित करते हैं।
- युधिष्ठिर को व्यास का सत्परामर्श मिलता है तो कृष्ण को उद्धव का दोनों महाकाव्यों में पुष्पावचय (क्रमशःसर्ग 8 तथा 7), जलक्रीड़ा (उभयत्र सर्ग 8), प्रभात-वर्णन (सर्ग 9तथा माघ में सर्ग 11), सन्ध्या एवं चन्द्रोदय (उभयत्र सर्ग 9), शिबिर-सन्निवेश (क्रमशः सर्ग 7 तथा 5), सुरत-पानगोष्ठी (क्रमशः सर्ग 9तथा 10), नायक को देखकर स्त्रियों की चेष्टाएँ (क्रमशः सर्ग 10 तथा 13), युद्ध-वर्णन (भारविकाव्य में सर्ग 14 तथा 15 माघकाव्य में सर्ग 15, 17-19), चित्रालंकार (भारवि-15, माघ 19) इत्यादि का प्रयोग है किन्तु प्रत्येक स्थल पर भारवि से माघ आगे बढ़ जाते हैं।
- भारवि ने अपने काव्य के सर्ग छोटे रखे हैं जबकि माघकाव्य के सर्ग उनसे बड़े हैं।
- पण्डितों और समीक्षकों को यह पद्धति आकर्षक लगी। इसीलिए उन्होंने कहा-

तावभा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।

- भारवि की शोभा माघ के उदय के पूर्व तक ही है माघ का उदय होने पर सूर्य की किरणें जैसे मन्द हो जाती हैं वैसे भारवि की शोभा भी मन्द हो गयी।

टीकायें -

- शिशुपालवध पर अनेक टीकाएँ हैं जिनमें वल्लभदेव कृत' सन्देहविषौषधि', मल्लिनाथ-कृत 'सर्वङ्कषा', भरतमल्लिक-कृत 'सुबोधा' तथा दिनकरमिश्र -कृत 'सुबोधिनी' मुख्य हैं हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग से राम प्रताप त्रिपाठी का एवं चौखम्बा विद्याभवन से हरगोविन्द शास्त्री का हिन्दी-अनुवाद पूरे ग्रन्थ पर प्रकाशित है।

शिशुपालवधम्-बिन्दुवार अध्ययन

- महाभारत पर आधारित महाकाव्य है - **शिशुपालवध**
- शिशुपालवधस्योपजीव्यमस्ति - **महाभारतम्**
- 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु विभाजित है - **सर्गों में**
- शिशुपालवधस्य किं वैशिष्ट्यम् - **त्रयो गुणाः**
- रैवतक पर्वत का वर्णन कहाँ है - **शिशुपालवधम् में**
- शिशुपाल का वध किसने किया - **कृष्ण ने**
- शिशुपाल के किस सर्ग में यमुना नदी का वर्णन है - **द्वादश सर्ग में**
- शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे द्वारिकायां कस्यागमनं दृश्यते? - **नारदस्य**
- 'श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्' में 'श्रीमति'शब्द निम्नांकित में से किसका विशेषण है-**वसुदेव का घर का**
- 'कुथेननागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्'इतिउपमासूचकवाक्येनशिशुपालवधे लक्षितः - **नारदः**
- 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्'-किसे समझ लिया गया - **नारद को**
- 'शिशुपालवधम्' के रचयिता कौन हैं -**माघः**
- 'शिशुपालवध' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं -**20** (बीस)
- किस महाकाव्य का प्रारम्भ और समाप्ति 'श्री' शब्द से होता है - **शिशुपालवधम्**
- शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्? - **कृष्णनारदसम्भाषणम्**
- 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं? - **पचहत्तर (75)**
- शिशुपालवध महाकाव्य के किस सर्ग में नारद औरश्रीकृष्ण का वर्णन प्राप्त होता है - **प्रथम सर्ग में**
- 'शिशुपालवधम्' के प्रथम सर्ग का प्रधान छन्द है? - **वंशस्थ**
- 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में प्रमुख रस है? - **वीर**
- शिशुपालवधस्य .... सर्गे श्रीकृष्णनारदसम्भाषणमस्ति? - **प्रथमे**
- 'शिशुपालवधम्' का मूलस्रोत है -**महाभारतसभापर्व**
- 'श्री' इति शब्देन कस्य काव्यस्य मङ्गलाचरणं प्रारभ्यते - **शिशुपालवधस्य**
- उपमा अर्थगौरव और पदलालित्य ये तीन गुण इस काव्य में है - **शिशुपालवधम्**
- किसमें नारद का वर्णन है? - **शिशुपालवधम्**
- कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः? - **शिशुपालवधे**
- नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत्? - **अच्युतः (कृष्णः)**
- 'सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।' .... इति पद्यांशानुसारं 'भवान्तरेषु पुमांसं' किम् अभ्येति? - **स्वभावः**
- 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे'- 'इत्यत्र रथाङ्गपाणिः' कः -**कृष्णः**
- रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय - **कौशिकः**
- शिशुपालवधानुसारेण कः हिरण्यगर्भाङ्गभूः मुनिः - **नारदः**
- किं नाम महाकाव्यं 'श्रियः पतिः' इति उल्लेखेन प्रारभ्यते? - **शिशुपालवधम्**
- श्रीकृष्णस्य सम्मुखं गौरवर्णः नारदः कस्याभिरामताम् अचोरयत्? - **चन्द्रमसः**
- माघकाव्ये श्रीकृष्णः अम्बरादवतरन्तं कं ऋषिं ददर्श? - **नारदम्**
- शिशुपालवध के अनुसार शिशुपाल है - **रावण का जन्मान्तर**
- ''हतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः''

कस्य वर्णना इयम्? - **यमवाहनमहिषस्य**
- ''स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः ...." इति, शिशुपालवधस्य श्लोकांशे 'कार्तस्वर' पदस्य कोऽर्थः? - **सुवर्णम्**
- ''सदाभिमानैकधना हि मानिनः'' यह सूक्ति है - **शिशुपालवध में**
- ''सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **शिशुपालवधम्**
- ''नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है -**शिशुपालवधम्**
- 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।' शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे 'अनूरुसारथिः' भवति - **सूर्यः**
- ''महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः'' इदं वाक्यमस्ति - **शिशुपालवधे**
- 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्ति ग्रहण की गई है - **शिशुपालवधात्**
- ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' इदं वाक्यमस्ति - **माघकाव्ये**
- ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है? - **शिशुपालवधे**
- ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'' इयमुक्तिः वर्तते? - **शिशुपालवधे**
- ''हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।'' इस पद्य का कथन किया है -**शिशुपालवध में श्रीकृष्ण ने**
- ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः'' किसने प्रतिपादित किया? - **माघ ने**
- ''तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसीर्गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते''- शिशुपालवधकाव्ये इतीदं कस्य वचनम्-**श्रीकृष्णस्य वचनम्**
- ''न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्'' कस्य - **रावणस्य**
- स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो कः - **शिशुपालः**
- शिशुपालवधे शिशुपालः कीदृशं पात्रम्? - **प्रतिनायकः**
- शिशुपालवधे राजसूययज्ञः केनायोजितः - **युधिष्ठिरेण**
- शिशुपालवधमहाकाव्यानुसारम् इन्द्रस्य सन्देशमादाय कृष्णसभायां क आगतः - **नारदर्षिः**
- 'निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव।' कस्येदं वर्णनम् - **नारदमुनेः**
- श्रीकृष्णस्य पार्श्वे आकाशमार्गेण कः समागतः - **नारदः**
- ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम्? - **नारदस्य**
- 'नमुचिद्विषा' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः -**इन्द्रेण**
- 'जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधि कन्धरम्' श्लोकांश मे 'वैष्णवं' पद प्रयुक्त हुआ है - **विष्णुउपासक**
- शिशुपालवधे-''विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः'' कस्य वर्णना इयम् - **कुबेरस्य**
- कस्य गृहे वसता श्रीकृष्णेन नारदः दृष्टः - **वसुदेवस्य**
- नारद-वीणायाः नाम किम् - **महती**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. निम्न में से कौन प्रशस्ति ''माघ'' के लिए नहीं प्रयुक्त है-
(A) माघे सन्ति त्रयो गुणाः
(B) नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते
(C) मुरारिपदचिन्ता चेत्तदा माघे रतिं कुरु
(D) वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य

2. माघ किसके लिए प्रसिद्ध हैं -
(A) उपमा (B) अर्थगौरव
(C) पदलालित्य (D) सभी

3. प्रभावकचरित' के अनुसार माघ की माता का क्या नाम है-
(A) गौरी (B) ब्राह्मी
(C) पिङ्गला (D) सुशीला

4. 'शिशुपालवधम्' का उपजीव्य ग्रन्थ है-
(A) महाभारत का वनपर्व (B) महाभारत का आदिपर्व
(C) महाभारत का सभापर्व (D) महाभारत का भीष्मपर्व

5. 'शिशुपालवधम्' के अनुसार देवताओं के मन में प्रथम भय की स्थापना किसके द्वारा किया गया -
(A) रावण के (B) शिशुपाल के
(C) हिरण्यकशिपु के (D) पिनाक के

6. सुमेलित करें-

(अ) हर्षचरितम्	(1) 7 उच्छ्वास
(ब) शिशुपालवधम्	(2) 6 अंक
(स) वेणीसंहारम्	(3) 8 उच्छ्वास
(द) नलचम्पू	(4) 20 सर्ग

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	3	4	1	2

7. शिशुपाल किस नगरी में निवास कर रहा है-
(A) कोशल (B) माहिष्मती
(C) अवन्ति (D) मगध

8. शिशुपालवधम् में मङ्गलाचरण का प्रकार है-
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

9. शिशुपालवधम् के अनुसार चन्द्रमा की कितनी कलायें होती हैं-
(A) 64 (B) 16
(C) 27 (D) 12

10. ''स बाल आसीद्वपुषा चातुर्भुजो,मुखेन

पुर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।'' इस पंक्ति में ''त्रिलोचन'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) चन्द्र का (B) विष्णु का
(C) नारद का (D) शिशुपाल का

11. ''चतुर्भुजः'' पद में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु समास
(C) बहुव्रीहि समास (D) तत्पुरुष

12. ''गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः,प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।'' इस पंक्ति में 'अनूरुसारथेः' पद का सम्बन्ध है-
(A) श्रीकृष्ण से (B) नारद से
(C) अग्नि से (D) सूर्य से

13. किस कवि ने एक से अधिक महाकाव्यों की रचना की है-
(A) माघ (B) भारवि
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास

14. ''क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः।'' इस पंक्ति में ''अबोधि'' पद कहाँ का है -
(A) बुध् धातु,लुङ् लकार प्र.पु.एकवचन
(B) बुध् धातु,लङ् लकार म0पु0एकवचन
(C) बुध् धातु,लङ् लकार उ0पु0एकवचन
(D) बुध् धातु,लृट् लकार प्र.पु.एकवचन

15. निम्न मे से कौन सा विशेषण 'श्रीकृष्ण' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) चक्रिणः (B) अच्युतः
(C) देवकीसुतं (D) शितिवाससः

16. निम्न में से कौन-सा विशेषण नारद के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) धातुः सुतः (B) तपोनिधिः
(C) आदिपुरुषः (D) ऋषित्विषः

17. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इस पंक्ति में ''भवदीय'' पद से किसका बोध होता है -
(A) श्रीकृष्ण का (B) इन्द्र का
(C) नारद का (D) शिव का

18. शिशुपालवधम् के अनुसार किसका दर्शन तीनों कालों में पवित्रता को प्रकट करता है-
(A) श्रीकृष्ण का (B) नारद का
(C) पुण्डरीकाक्ष का (D) शिव का

19. ''ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः॥'' इस पंक्ति में 'क्षालयितुं' पद का क्या अर्थ है-
(A) आकाश (B) उन्मत्त
(C) निर्मल करना (D) सूर्य के बिना

20. निम्न मे से कौन-सा विशेषण ''श्रीकृष्ण'' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है-
(A) विश्वम्भर (B) आदिपुरुष
(C) उपेन्द्र (D) व्रती

21. शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं-
(A) 70 (B) 75
(C) 80 (D) 46

22. निम्न मे से कौन-सा विशेषण ''बलराम'' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) सीरपाणिः (B) रेवतीजानिः
(C) मुसलपाणिः (D) द्वैमातुरः

23. ''क्षणं क्षणोत्क्षिप्तगजेन्द्रकृत्तिना स्फुटोपमं भूतिसितेन शम्भुना'' इस पंक्ति में 'भूतिसितेन' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) शिव
(C) श्रीकृष्ण (D) गजासुर

24. देवताओं के द्वारा तीनों सन्ध्याओं के समय किसको नमस्कार किया जाता था-
(A) रावण (B) श्रीकृष्ण
(C) हिरण्यकशिपु (D) शिशुपाल

25. ''प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः '' इस पंक्ति में 'यः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) नारद (D) हिरण्यकशिपु

26. निम्न मे से कौन शिशुपालवधम् की पंक्ति नहीं है-
(A) अभीक्ष्णमुष्णैरपि तस्य सोष्मणः।
(B) सदाभिमानैकधना हि मानिनः।
(C) स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः।
(D) असंशयं सम्प्रति तेजसा रविः।

27. निम्न मे से कौन शिशुपालवधम् की पंक्ति है-
(A) दिदेश यानाय निदेश कारिणः।
(B) विवेश गत्वा स विलासकाननम्।
(C) ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्।
(D) विपादनीया हि सतामसाधवः।

28. किसके भय के कारण देवताओं ने दुर्गों का निर्माण कराया-
(A) शिशुपाल (B) हिरण्यकशिपु

(C) रावण (D) द्वैमातुर

29. ''सटाच्छटाभिन्नघनेन बिभ्रता नृसिंह सैहीमतनुं तनुं त्वया।'' इस पंक्ति में 'त्वया' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) रावण (B) श्रीकृष्ण
(C) शिशुपाल (D) नारद

30. ''प्रतिचस्करे''-इस पद में मूल धातु है-

(A) चस्क् धातु (B) कृ धातु
(C) स्कृ धातु (D) क्री धातु

31. 'नमुचिद्विषा'- किस देवता का विशेषण है-

(A) यमराज (B) वरुण
(C) सूर्य (D) इन्द्र

32. निम्न में से कौन सा इन्द्र का विशेषण नहीं है-

(A) कौशिक (B) बलस्य शत्रु
(C) नमुचिद्विषा (D) प्रकम्पनेन

33.''विकीर्णलोलाग्निकणं सुरद्विषः इस पंक्ति में 'सुरद्विषः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है-

(A) रावण (B) हिरण्यकशिपु
(C) शिशुपाल (D) यमराज

(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	1	2

ें प्राप्त होता हैं-

(A) प्रथमसर्ग (B) तृतीयसर्ग
(C) अष्टम सर्ग (D) चतुर्थ सर्ग

34. 'परेतभर्ता'-किसका विशेषण है-

(A) गणेश (B) वायु
(C) चन्द्रमा (D) यमराज

35. रावण के ''नर्मसचिव''-का काम किस देवता

(A) वैनायक (B) इन्दु
(C) अहस्कर (D) प्रचेता

36. सुमेलित करें-

(अ) विश्वम्भर!	(1) वायुः
(ब) नाकिनः	(2) वरुणः
(स) प्रचेताः	(3) देवता
(द) प्रकम्पनः	(4) श्रीकृष्ण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4

39. ''समेत्य''-इस पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी है-

(A) सम्+आ+इ+ल्यप् (B) सम्+आ+इत्+ल्यप्
(C) सम्+एत्+ल्यप् (D) सम्+एज्+ल्यप्

40. ''कीनाश'' किस देवता का विशेषण है-

(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) बलराम (D) यमराज

41. ''तमालपुष्प''-का वर्ण होता है-

(A) पीला (B) उज्ज्वल
(C) श्याम (D) हरा

42. कर्पूरचूर्ण के समान धवल वर्ण किसका है-

(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) नारद (D) यमराज

43. ''एणाजिनम्''इस पद का क्या अर्थ है -

(A) मूंज का मेखला (B) अनुकरण करना
(C) सोने की करधनी (D) कृष्णसार मृग का चर्म

44. ''विहङ्गराजाङ्गरुहैरिवायतैः'' - इस पंक्ति में ''विहङ्गराज'' पद से किसका बोध हो रहा हैं -

(A) गरुण (B) नारद
(C) बलराम (D) श्रीकृष्ण

45. ''रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः पृथग्विभिन्नश्रुतिमण्डलैः स्वरैः।'' -इस पंक्ति में 'नभस्वतः' पद से किसका बोध हो रहा हैं -

(A) वायु (B) इन्द्र
(C) सूर्य (D) वरुण

46. ''आघट्टनया''-इस पद में मूल धातु है-

(A) घा धातु (B) भू धातु
(C) घट्ट धातु (D) ईक्ष् धातु

47.''विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः'' इस पंक्ति में 'बली यः' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) वायु (D) हिरण्यकशिपु

48. ''निवर्त्य सोऽनुव्रजतः कृतानतीनतीन्द्रियज्ञाननिधिर्नभसदः'' इस पंक्ति में ''नभःसदः'' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) देवता (B) श्रीकृष्ण
(C) बलराम (D) इन्द्र

49. ''गिरेस्तडित्वानिव तावदुच्चकैर्जवेन पीBादुदतिष्ठदच्युतः।'' इस पंक्ति में ''तडित्वान्'' इस पद का क्या अर्थ है-

(A) श्रीकृष्ण (B) मेघ
(C) नारद (D) इन्द्र

50. सुमेलित करें-

पंक्ति	**सम्बद्ध देवता**
(अ) विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति	(1) इन्द्र
(ब) रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा	(2) रावण
(स) बलस्य शत्रुः प्रशशंस शीघ्रताम्।	(3) वरुण
(द) प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः	(4) नारद

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	1	2	4	3
(C)	4	3	1	2

(D)	3	4	2	1

51. सुमेलित करें-

सम्बोधन	सम्बोध्य
(अ) चिरन्तनमुनि	(1) श्रीकृष्ण
(ब) व्रती	(2) नारद
(स) त्रिदश	(3) देवता
(द) मातङ्ग	(4) हाथी

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	2	4	3
(D)	2	1	3	4

52. सुमेलित करें-

पंक्ति	नारद की उपमा
(अ) सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां	(1) शिव से
(ब) घनं घनान्ते तडितां गणैरिव	(2) ऐरावत से
(स) चकासतं चारुचमूरुचर्मणा	(3) शुभ्र मेघ से
(द) समूढकर्पूरपरागपाण्डुरम्	(4) बलराम से

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	1	2
(D)	4	3	2	1

53. ''क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः''-यहाँ 'इत्यबोधि' पद में सन्धि है-
(A) यण् (B) वृद्धि
(C) गुण (D) दीर्घ

54. ''विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति।''- इस पंक्ति में 'पुमान्' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) शिशुपाल (D) रावण

55. ''धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव।''-इस पंक्ति में''व्रततीततीरिव'' इस पद का क्या अर्थ है-
(A) लता का समूह (B) व्रत का समूह
(C) व्रत धारण करना (D) परिपक्व होना

56. ''विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम्''-इस पंक्ति में 'शितिवाससः' पद किसके लिए है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) बलराम (D) ब्रह्मा

57. ''कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्।''-इस पंक्ति में ''नागेन्द्र'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) ऐरावत (D) रावण

58. शिशुपालवधम् के अनुसार ''अतीन्द्रियज्ञाननिधिः''- यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) शिव (D) रावण

59. ''सुतेन धातुश्चरणौ भुवस्तले।''-इस पंक्ति में किसका वर्णन है-
(A) शिव (B) विष्णु
(C) नारद (D) रावण

60. ''तमर्घ्यमर्घ्यादिकयादिपूरुषः।''इस पंक्ति में 'आदिपुरुषः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) शिव (D) शिशुपाल

61. कौन श्रीकृष्ण का विशेषण नहीं है-
(A) आदिपुरुष (B) चिरन्तनमुनि
(C) पीताम्बर (D) नीलाम्बर

62. ''त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः किमस्ति कार्यं गुरु योगिनामपि।''-इस पंक्ति में ''त्वम्'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) ब्रह्मा (D) शिव

63. इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती।''-इस श्लोकांश की अग्रिम पंक्ति है-
(A) गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते
(B) तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसी
(C) न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम त्वया।
(D) उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनैः

64. उदासितारं निगृहीतमानसैः।''-इस श्लोकांश की अग्रिम पंक्ति कौन-सी है-
(A) फणाभृतां छादनमेकमोकसः।
(B) गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
(C) पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।
(D) भवान् भवच्छेदकरैः करोत्यधः।

65. ''लघू करिष्यन्नतिभारभङ्गुराममुं किल त्वं त्रिदिवादवातरः'' इस पंक्ति में ''त्रिदिवात्'' पद का अर्थ है-
(A) पृथ्वी (B) स्वर्ग
(C) पूज्य (D) अवतीर्ण

66. ''उदूढलोकत्रितयेन साम्प्रतं गुरुर्धरित्री क्रियतेतरां त्वया'' इस पंक्ति में ''त्वया'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) वायु (D) वरुण

67. ''निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहामुपाजिहीथाः न महीतलं यदि'' -इस पंक्ति में 'उपाजिहीथाः' पद में लकार है-

(A) लुङ् (B) लिट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्

68.''समाहितैरप्यनिरूपितस्ततः पदं दृशः स्याः कथमीश! मादृशाम्।'' - इस पंक्ति में 'मादृशाम्' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) शिव (B) नारद
(C) श्रीकृष्ण (D) ब्रह्मा

69. 'कृष्ण' द्वारा किये गये किसके वध को नारद मृगतुल्य समझते हैं-

(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

70. ''क्रमेण पेष्टुं भुवनद्विषामसि''-इस पंक्ति में 'पेष्टुम्' इस पद में धातु प्रत्यय है-

(A) पुज्+क्त (B) पेष्+तुमुन्
(C) पेष्ट्+तुमुन् (D) पिष्+तुमुन्

71.'अहिद्विषा'- किस देवता का विशेषण है-

(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) शिव (D) यमराज

72. शिशुपालवधम् के अनुसार इन्द्र शब्द के ''परमैश्वर्य '' रूप पद को किसके द्वारा नष्ट किया गया -

(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

73. ''भियां तनूजस्तपनद्युतिर्दितेः''-इस पंक्ति में किसकी विशेषताओं का वर्णन है-

(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

74. ''हिरण्यपूर्वं कशिपुं प्रचच्छते''-इस पंक्ति में 'प्रचच्छते ' इस पद में मूल धातु है-

(A) चक्ष् धातु (B) चि धातु
(C) चर्च् धातु (D) चच्छ् धातु

75. शिशुपालवधम् के अन्तिम पद्य में छन्द है-

(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) शार्दूलविक्रीडितम्

76.''सिषेविरे'' रूप है-

(A) सेव् धातु,लिट् लकार, प्र.पु.एकवचन
(B) सेव् धातु,लिट् लकार,प्र.पु.बहुवचन
(C) सेव् धातु,लुङ लकार, प्र.पु.एकवचन
(D) सेव् धातु,लुट् लकार, प्र.पु.बहुवचन

77. सुमेलित करें-

देवता	दिशा
(अ) इन्द्र	(1) पूर्व
(ब) यम	(2) पश्चिम
(स) कुबेर	(3) उत्तर
(द) वरुण	(4) दक्षिण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	4	3	2
(D)	1	4	2	3

78. लक्ष्मी ने ''चंचला''-इस लोकापवाद को किसके गुणों पर आकृष्ट होकर प्राप्त किया-

(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) हिरण्यकशिपु (D) कंस

79. ''स सञ्चरिष्णुर्भुवनान्तरेषु यः द्रुच्छयाशिश्रियदाश्रयः श्रियः।''-इस पंक्ति में 'सः' पद से किसका बोध होता है-

(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) गजासुर (D) हिरण्यकशिपु

80. शिशुपालवधम् के अनुसार रावण को इच्छानुसार वरदान किसके द्वारा दिया गया-

(A) पिनाकिनः (B) नमुचिद्विषा
(C) हिरण्यगर्भः (D) पुरुषोत्तमः

81. ''त्रसत्तुषाराद्रिसुता ससम्भ्रमस्वयंग्रहाश्लेषसुखेन निष्क्रयम्।''-इस पंक्ति में 'तुषाराद्रिसुता' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) सीता (B) पार्वती
(C) रुक्मिणी (D) पर्वत

82. ''य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः।'' - इस पंक्ति में यः' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) हिरण्यकशिपु (B) रावण
(C) गजासुर (D) शिशुपाल

83. सुमेलित करें-

पंक्ति	सम्बद्ध
(अ) ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्	(1) शिशुपाल
(ब) प्रकाममप्रीयत यज्वनां प्रियः	(2) रावण
(स) पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्	(3) नारद
(द) स्वयं विधाता सुरदैत्यरक्षसाम्	(4) श्रीकृष्ण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	2	1
(D)	3	4	1	2

84. सुमेलित करें-

वीणा	वीणा के स्वामी
(अ) कलावती	(1) तुम्बुरु
(ब) कच्छपी	(2) नारद
(स) महती	(3) सरस्वती
(द) बृहती	(4) विश्वावसु

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	3	2	4
(D)	1	4	2	3

85. रावण से भयभीत होकर इन्द्र किस पर्वत की शरण में गये-
(A) आम्रकूट (B) देवगिरि
(C) सुमेरु (D) विन्ध्य

86. भगवान् विष्णु का चक्र किसका कण्ठच्छेद करने में विफल हुआ-
(A) हिरण्यकशिपु (B) शिशुपाल
(C) गजासुर (D) रावण

87. ''विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः।''- इस पंक्ति में किस देवता का वर्णन है-
(A) वरुण (B) कुबेर
(C) चन्द्रमा (D) वायु

88. ''प्रहर्तुरेवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठ सभयाः प्रपेदिरे।''- इस पंक्ति में किस देवता के भय का वर्णन है-
(A) इन्द्र (B) वायु
(C) कुबेर (D) वरुण

89. 'परेतभर्तुः महिषः' किसका विशेषण है-
(A) वरुण (B) वायु
(C) यमराज का भैंसा (D) यमराज

90. रावण की स्त्रियों का अलङ्करण किसके द्वारा किया जाता था-
(A) अहस्करः (B) प्रचेतसा
(C) सुरद्विषः (D) नमुचिद्विषा

91. किस देवता ने रावण के त्रास से देवताओं को अनुगृहीत किया-
(A) चन्द्रमा (B) यमराज
(C) इन्द्र (D) वायु

92. आकाश से उतरते हुए श्रीकृष्ण ने नारद को किसके समान नहीं देखा-
(A) शम्भुना (B) शितिवासस
(C) प्रचेतसा (D) ऐरावत

93. शिशुपालवधम् के अनुसार 'शिशुपाल' के पिता का क्या नाम था-
(A) सेनकुमार (B) सात्यकि
(C) दमघोष (D) चन्द्रोदय

94. ''अनुचकम्पिरे''-इस पद में मूल धातु है-
(A) कम्प् धातु (B) चक् धातु
(C) कृ धातु (D) चकम् धातु

95. शिशुपालवधम् के अनुसार निम्न में से कौन सही नहीं है-
(A) नाकिनां देवताओं का विशेषण है।
(B) उपेन्द्र भगवान् कृष्ण के लिए है।
(C) वैनायक गणेश का विशेषण है।
(D) तनूनपात् सूर्य का विशेषण है।

96. सुमेलित करें-

दिशा	गज
(अ) पूर्व	(1) वामन
(ब) पश्चिम	(2) सार्वभौम
(स) उत्तर	(3) अञ्जन
(द) दक्षिण	(4) ऐरावत

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	2	3
(B)	4	2	1	3
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

97. सुमेलित करें-

दिशा	हाथी
(अ) दक्षिण-पूर्व	(1) सुप्रतीक
(ब) दक्षिण-पश्चिम	(2) पुष्पदन्त
(स) उत्तर-पश्चिम	(3) कुमुद
(द) पूर्व-उत्तर	(4) पुण्डरीक

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	3	4

98. ''दशाननादीनभिराद्धदेवता वितीर्ण वीर्यातिशयान् हसत्यसौ।''- इस पंक्ति में किसकी विशेषताओं का वर्णन है-
(A) गजासुर (B) हिरण्यकशिपु
(C) शिशुपाल (D) रावण

99. किसके द्वारा विधाता के शासन का उल्लंघन किया गया

है-

(A) श्रीकृष्ण (B) हिरण्यकशिपु
(C) रावण (D) शिशुपाल

100. शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग का नामकरण है-

(A) कृष्ण सम्भाषण नाम। (B) नारद सम्भाषण नाम।
(C) कृष्ण-नारद सम्भाषण नाम। (D) नारद अवतार नाम।

उत्तरमाला

1-D	2-D	3-B	4-C	5-C	6-C
7-B	8-C	9-B	10-D	11-C	12-D
13-D	14-A	15-D	16-C	17-C	18-B
19-C	20-D	21-B	22-D	23-B	24-C
25-B	26-C	27-D	28-B	29-B	30-B
31-D	32-D	33-A	34-D	35-B	36-C
37-D	38-D	39-A	40-D	41-C	42-C
43-D	44-A	45-A	46-C	47-A	48-A
49-B	50-C	51-A	52-D	53-A	54-A
55-A	56-C	57-C	58-B	59-C	60-B
61-D	62-B	63-C	64-B	65-B	66-A
67-C	68-B	69-C	70-D	71-B	72-D
73-D	74-A	75-D	76-B	77-C	78-C
79-D	80-A	81-B	82-B	83-C	84-C
85-C	86-D	87-B	88-D	89-C	90-A
91-D	92-C	93-C	94-A	95-D	96-C
97-A	98-C	99-D	100-C		

4.12 उत्तररामचरितम्

महाकवि भवभूति का परिचय

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
  (ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
- **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
- **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
  2. महावीरचरितम् (नाटक)
  3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
- **भवभूति की रीति** – गौडी
  (उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
- **भवभूति का प्रियरस** – करुण
- **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
- **उपासक** – शिव के
- उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
- महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
- भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
- **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
  भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
  रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
- भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

1. कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः।
   – अज्ञात समालोचक
   नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
2. उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**
3. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते। **– अज्ञात**
4. बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
   स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
   – राजशेखर - बालरामायण
5. भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
   रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
6. भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
   एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
   – गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।
7. स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
   नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
   – धनपाल - तिलकमञ्जरी
8. सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
   भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः।।
   – भोज - भोजप्रबन्ध
9. रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।

पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।

– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली

10. भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया।
मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।

– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।

11. मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।

– उदयसुन्दरीचम्पू

12. भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।

यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।

– गौडवहो - वाक्पतिराज

13. जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।। **– अज्ञात**

14. अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**

15. भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।। **– अज्ञात।**

16. भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।

– विश्वेश्वर पाण्डेय

17. भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।**–कपिलदेव द्विवेदी**

18. साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः। **– भवभूति**

19. भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।

– मालतीमाधवस्य प्रस्तावना

20. कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।

– कल्हण राजतरङ्गिणी

21. तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।
गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।।**– भवभूति**

उत्तररामचरितम्

- **लेखक** – भवभूति
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – करुण
- **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
- **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
(2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
(3) **विदूषक रहित** नाटक
(4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30), वसन्ततिलका (26), शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।
- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।

- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के `12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्ण प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **`38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।
- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **`48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।
- लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
- षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
- चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतिकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
- सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
- 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
- उत्तररामचरितम् में **करुणरस प्रधान** है।इसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
- तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
- मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
- प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

  **''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
  आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।''**(1/12)
- प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

  **''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
  ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।''** (1/10)
- तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

  **अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
  पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।** (3/1)
- तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। **7 'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
- तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है –

'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका) (3/47)
- लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
- सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा करती हैं।
- कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
- भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
- पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
- वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
- वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥ 1/1 ॥

भावार्थ- हम अपने पुरातन (वाल्मीकि आदि) कवियों को प्रणाम कर ''ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी देवी वाणी (सरस्वती) को प्राप्त करें'', यह कामना करते हैं।

(अर्थात् पहले के वाल्मीकि आदि कवियों को प्रणाम कर हम यह कामना करते हैं कि ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी सरस्वती को प्राप्त करें।)

- ☆ उपर्युक्त मङ्गलाचरण में वाणी देवी को नमस्कार किया गया है।
- ☆ नमस्कारात्मक नान्दी प्रयुक्त है।
- ☆ प्रस्तुत श्लोक में 12 पद हैं। अतः द्वादशपदा नान्दी है।
- ☆ अनुप्रास एवं श्लेष अलङ्कार है तथा अनुष्टुप् (पत्थ्यावक्त्र) छन्द का प्रयोग है।
- ☆ शुद्ध नान्दी का प्रयोग हुआ है।

उत्तररामचरितम् का भरतवाक्य

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥ 7/21॥

भावार्थ- संसार की माता और गङ्गा की तरह कल्याण करने वाली तथा मनोहर प्रसिद्ध यह रामायण की कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है। विद्वान् लोग अभिनय के द्वारा शब्दब्रह्म को चाहने वाले इस बुद्धिमान् कवि की नाटक के रूप में परिणत ऐसी ही उत्तररामचरितस्वरूप वाणी का विचार करें।

- ☆ इस माङ्गलिक पद्य में संसार के कल्याण के लिए नाटकीय पात्रों की ओर से शुभकामना है।
- ☆ यहाँ उपमा के चारों भेद होने से पूर्णोपमा अलङ्कार है।
- ☆ 'प्रशस्ति' नामक निर्वहण सन्धि का अङ्ग है।
- ☆ शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग हुआ है।

'उत्तररामचरित' नाम की सार्थकता

रामस्य चरितम् इति रामचरितम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

1. उत्तरं च तत् रामचरितम् इति उत्तररामचरितम् **(कर्मधारय समास)**

उत्तररामचरित अधिकृत्य कृतं नाटकं इति उत्तरामचरितम्।
'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ-
उत्तरामचरित+अण् (अ)
'लुबाख्यायिभ्यो बहुलम्' वार्तिक से 'अ' का लोप होकर 'उत्तररामचरिम्' बना।

अर्थात् जिसमें राम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का वर्णन है, ऐसा नाटक।

2. उत्तरं रामचरितं यस्मिन् तत् **(बहुव्रीहि समास)**

अर्थात् जिसमें उत्तरकालीन रामचरित का वर्णन है।

'उत्तररामचरितम्' की प्रमुख सूक्तियाँ एवं कथनों का विवरण

1. **अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।** (1/28)
   भावार्थ – निर्जन जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे और वज्र का भी हृदय फट गया था।
- **वक्ता** – लक्ष्मण, अङ्क - प्रथम (चित्रदर्शन)
  श्रोता – राम एवं सीता।
  छन्द – शिखरिणी। अतिशयोक्ति अलङ्कार

2. **एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।**
   ये सांसारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं।
- **प्रथम अङ्क** – राम का सीता से कथन

3. **इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।** (1/38)
   यह (सीता) घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है।
- प्रथम अङ्क में राम का कथन
  शिखरिणी छन्द और रूपक अलङ्कार।

4. **''दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति''**
   भाव – दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है।
   प्रथम अङ्क – सीता का कथन, राम और लक्ष्मण के समक्ष।

5. **तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।** (1/13)
   भाव – तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।
- राम का कथन है। सीता के परिपेक्ष्य में। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख प्रथम अङ्क। अनुष्टुप् छन्द। प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त अलंकार।

6. **नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा**
   मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥ (1/14)
   भावार्थ – सुगन्धित फूल का सिर पर रखा जाना स्वभावसिद्ध है, न कि पैरों से कुचला जाना।
- **प्रथम अङ्क** – राम का कथन। सीता को लक्ष्य करके। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख।
  दृष्टान्त अलङ्कार, वसन्ततिलका वृत्त।

7. **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।** (1/41)
   भावार्थ – चाहे जो भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्त्तव्य है।

- राम का कथन। दुर्मुख के सम्मुख। अनुष्टुप् छन्द। प्रथम अङ्क

8. सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति।
भावार्थ – बन्धुजनों का वियोग दुःखदायी होता है।

- सीता का कथन (प्रथम अङ्क) राम, लक्ष्मण के सम्मुख।

9. ते हि नो दिवसा गताः।
भावार्थ – हमारे वे दिन बीत गये। अनुष्टुप् छन्द।

- राम का कथन, लक्ष्मण व सीता के सम्मुख (प्रथम अङ्क)

10. ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। (2/1)
भावार्थ– सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।

- द्वितीय अङ्क (प्रथम श्लोक)
वन देवता का कथन, तापसी से। शिखरिणी वृत्त, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

11. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति। (2/7)
भावार्थ – वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।

- द्वितीय अङ्क , वासन्ती का कथन आत्रेयी से।
अनुष्टुप् छन्द। विषम, अप्रस्तुतप्रशंसा अर्थापत्ति अलङ्कार।

12. अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः। पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥ (3/1)
भावार्थ– गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।

- तृतीय अङ्क (प्रथम श्लोक)।
मुरला का कथन तमसा से। लोपामुद्रा का सन्देश।
अनुष्टुप् छन्द, उपमा अलङ्कार

13. वीचीवातैः..............प्रेरितैस्तर्पयेति॥(3/2)
भावार्थ – जल कणों से शीतल, पद्म-पराग की सुगन्ध को लाने वाली, धीरे-धीरे चलने वाली, तरङ्ग-वायुओं से रामचन्द्र की प्रत्येक मूर्च्छा के समय चेतना प्रदान करना।
मुरला द्वारा कहा गया लोपामुद्रा का संदेश 'गोदावरी' के लिए। तमसा के सम्मुख। शालिनी छन्द, समुच्चय अलङ्कार।

14. उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः। (3)
भावार्थ – स्नेह की उदारता उचित ही है। किन्तु रामचन्द्र को होश में लाने का मौलिक उपाय (सीता) आज समीप ही विद्यमान है।

- तमसा का कथन मुरला से

15. ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः। यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥ (3/3)
भाव – ऐसे व्यक्तियों (सीता और राम जैसों) की दुरवस्था भी आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं।

- **मुरला का कथन** – तमसा से।
अनुष्टुप् वृत्त, काव्यलिङ्ग अलंकार

16. अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थ इति। (3)
भावार्थ – इस समय कार्यों में अव्यस्त और केवल शोकरूपी साथी से युक्त राम का पञ्चवटी में प्रवेश बहुत अनिष्टकारी है।

- मुरला का तमसा से कथन, राम के प्रति।

17. न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद् वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुत मर्त्याः? (3)
भावार्थ – भूतल पर विद्यमान तुमको मेरे प्रभाव से वनदेवता भी नहीं देख सकेंगे, साधारण मनुष्यों की बात ही क्या।

- तमसा मुरला से भागीरथी द्वारा सीता से कही गयी बात को बताती है।

18. करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी। (3/4)
भावार्थ – सीता करुण रस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी 'वियोगव्यथा' के तुल्य वन (पञ्चवटी) में आ रही हैं।

- गोदावरी से निकलती हुयी सीता को देखकर तमसा का मुरला से कथन।
मञ्जुभाषिणी वृत्त उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

19. किसलयमिव..........केतकीगर्भपत्रम्। (3/5)
भावार्थ – हृदयरूपी कमल को सुखाने वाला, कठोर और चिरस्थायी शोक सीता के शरीर को उसी प्रकार मलिन बना रहा है, जैसे शरत्कालीन धूप केतकी के फूल के अंदर के पत्ते को। मालिनी छन्द। उपमा, रूपक अलङ्कार।

- मुरला का तमसा से कथन, सीता के विषय में।

20. अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी। स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥ (3/7)
भावार्थ – मेघ की अस्पष्ट ध्वनि पर मोरनी के तुल्य तुम कहीं से आये हुए अस्पष्ट शब्द को सुनकर इस प्रकार आश्चर्ययुक्त और उत्कण्ठित हो गई हो।

- तमसा का सीता से कथन।
अनुष्टुप् वृत्त, उपमा अलङ्कार

21. यत्र द्रुमा अपि.........गिरेस्तटानि॥ (3/18)
भावार्थ – जहाँ वृक्ष इत्यादि मेरे बन्धु थे, जहाँ प्रिया के साथ बहुत समय रहा, यह वही आश्रमस्थान है। वसन्ततिलका छन्द। अर्थापत्ति अलंकार।

- राम का कथन नेपथ्य से।

22. अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः। (3)
भावार्थ – मैं ही इनके हृदय को जानती हूँ और ये मेरे हृदय को।

- सीता का कथन तमसा से।

23. निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था। (3)
भाव – अकारण परित्याग करने वाले भी इनके इस प्रकार के दर्शन से मेरे हृदय की कैसी अवस्था हो रही है।

- सीता का कथन तमसा से।

24. श्लोक–तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्
वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव। (3/13)

भावार्थ – इस समय तुम्हारा हृदय निराशा से उदासीन-सा और अप्रिय कार्य के कारण खिन्न-सा, इस लम्बे विरहकाल में सहसा मिलन के कारण निश्चेष्ट-सा, सज्जनता से प्रसन्न-सा, प्रिय की करुणा से शोकातुर सा और प्रेम से द्रवीभूत सा हो रहा है।

शिखरिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

25. प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि
बहुमतो मम जन्मलाभः। (3)

भाव – अकारण परित्याग रूपी शल्य से विध कर भी मेरा संसार में जन्म लेना मेरे लिए श्लाघनीय है।

- सीता का कथन तमसा से।

26. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ (3/17)

भावार्थ – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। अनुष्टुप् छन्द।

- तमसा का कथन सीता से है।

27.ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।

भाव – संसार का यही (दुःखद) परिणाम हुआ।

- सीता का कथन वासन्ती को सम्बोधित करके।

28.स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः। (3/23)

भावार्थ – श्वेत, मधुर एवं मनोहर तुम्हारी दृष्टि दूध की नहर की तरह अपने हृदयेश्वर को स्नान कराती है।

उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार, मालिनी छन्द।

- तमसा का कथन सीता से।

29.पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः। (3/24)

भावार्थ – ये महाराज राम फिर स्वयं इस वन में आए हैं।

– हरिणी छन्द

- वासन्ती का कथन राम के सम्मुख वन की वस्तुओं से।

30.पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः। (3)

भावार्थ – आर्यपुत्र सभी के पूजनीय हैं विशेष रूप से मेरी प्रियसखी (वासन्ती) के।

- **सीता का कथन** – वासन्ती को सम्बोधित करके।

31. त्वं जीवितं............किमतः परेण। (3/26)

- वासन्ती का कथन राम से। राम द्वारा सीता से पहले कही बातें।
- वसन्ततिलका छन्द। आक्षेप अलंकार दशरूपक में यह श्लोक वाक्केलि के उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

32. अयि कठोर! .... मन्यसे। (3/27)

- वासन्ती का कथन राम से। द्रुतविलम्बित छन्द, उपमा अलङ्कार।

33.यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि। (3)

भावार्थ – जो इस प्रकार विलाप करते हुए (राम) को और रूला रही है।

- सीता का कथन वासन्ती से।

34. पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते। (3/29)

भावार्थ – तालाब में जल-प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।

अनुष्टुप् छन्द, दृष्टान्त अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

35. प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति। (3/30)

भाव – जिस प्रकार धूप फूल को उसी प्रकार प्रिया का शोक जीवन को सुखाता है। शिखरिणी वृत्त। उपमा अलङ्कार।

- तमसा का कथन सीता से राम के प्रति।

36. ''किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।'' (3)

भावार्थ – यह (तमसा) क्या सोचेंगी – यह परित्याग और यह आसक्ति?

- सीता का कथन।

37. एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (3/46)

भावार्थ – एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है।

वसन्ततिलका छन्द। उपमा (पूरे श्लोक में)

- तमसा का कथन सीता से।
- तृतीय अङ्क के अन्त में गङ्गा, पृथ्वी, वाल्मीकि और वशिष्ठ की प्रार्थना की गयी है।

38. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। (4/11)

भावार्थ – गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।

शिखरिणी वृत्त। अर्थान्तरन्यास अलंकार।

- **चतुर्थ अङ्क** – अरुन्धती का कथन कौशल्या से।

उत्तररामचरितम् की अन्य सूक्तियाँ

- लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः
- विना सीतादेव्यां किमिव हि न दुःखं रघुपते
- वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहकमंबाधते।
- वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः
- प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य (तमसा का कथन, अङ्क-3)।
- सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति।

उत्तररामचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

➢ 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता हैं? - **भवभूति**

➢ उत्तररामचरितम् में अङ्क की गिनती है - **7**

- 'करुणरस' प्रधान नाटक है - **उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है - **30 (तीस)**
- गर्भाङ्क इस नाटक में है - **उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? - **48**
- विदूषक रहित रचना है? - **उत्तररामचरितम्**
- भवभूति का सम्बन्ध है? - **उत्तररामचरितम् से**
- भवभूति का उत्कर्ष किस नाटक में है?-**उत्तररामचरितम् में**
- छाया अङ्क का सम्बन्ध किस नाटक से है - **उत्तररामचरिते**
- उत्तररामचरितम् नाटक रामायण के - **उत्तरार्द्ध पर आधारित है।**
- उत्तररामचरितम् नाटक का मुख्य रस है - **करुणः**
- भवभूति की मुख्यनाट्यकृति है - **उत्तररामचरितम्**
- महाकवि भवभूति किस रस के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं? - **करुण रस**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस पात्र की भूमिका नगण्य है? - **विदूषक की**
- उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति केनोक्तम्? - **सूत्रधारेण**
- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है? - **छाया-सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन**
- छाया-सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है - **तमसा**
- अस्मिन्नाटके अन्तर्नाटकं विद्यते? - **उत्तररामचरिते**
- गर्भाङ्कस्य योजना केन नाटककारेण कृता? - **भवभूतिना**
- उत्तररामचरितं .... प्रयुक्तं भवतीति सूत्रधारो विज्ञापयति - **कालप्रियानाथस्य यात्रायाम्**
- उत्तररामचरितस्य प्रथमाङ्कः उच्यते? - **चित्रदर्शनम्**
- 'चित्रदर्शनम्' इत्याख्यः अङ्कः कस्मिन् नाटके वर्तते? - **उत्तररामचरिते**
- 'उत्तररामचरितम्' में लवकुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है? - **बारहवीं**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है? - **विष्कम्भक**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है? - **अनुष्टुप्**
- 'उत्तररामचरितम्' के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है? - **कवि तथा वाणी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं? - **वासन्ती से**
- दुबारा दण्डकारण्य मे आये हुये राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है? - **वासन्ती को**
- 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं? - **दो नदियाँ**
- उत्तररामचरितम् की कथावस्तु प्रारम्भ होती है? - **राम द्वारा सीता के निर्वासन से**
- 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है?- **तृतीयः**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवाद में नाटकीय तत्त्वों का परिचय मिलता है–ये दो पात्र हैं -**तमसा और मुरला**
- कालप्रियानाथस्य यात्रायामभिनीतम् - **उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते कः रसः - **करुणविप्रलम्भशृङ्गारः**
- सीता राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं?-**बारह वर्ष**
- 'उत्तररामचरित' के तृतीय अङ्क में घटनास्थल है? - **पञ्चवटी**
- 'उत्तररामचरितम्' में सीता की सखी है? - **वासन्ती**
- ऋषि अगस्त्य की पत्नी है? - **लोपामुद्रा**
- रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाते? - **सीता को दिये गये भागीरथी के आशीर्वाद की वजह से।**
- 'छायाङ्क' का मुख्य कथानक है- **राम-सीता पुनर्मिलन**
- दण्डकारण्य मे राम कितने वर्ष बाद दुबारा आए थे? - **बारह वर्ष बाद**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीयाङ्क में किस नदी का उल्लेख है? - **गोदावरी**
- रामचन्द्र जी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे? - **तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए**
- मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली? - **सीता के कर स्पर्श से**
- कौन-सा रस विवर्त प्राप्त कर लेता है? - **करुण**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित वासन्ती है? - **सीता की सखी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं? क्योंकि - **मञ्च पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।**
- 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है? - **विष्कम्भक द्वारा**
- 'प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः। मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते।।' इस श्लोक के 'प्रत्युप्तस्येव' इस पद में अलङ्कार है? - **उत्प्रेक्षा**
- ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्'' में 'नु' किस अलङ्कार का वाचक है? - **सन्देह**
- अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था? - **लक्ष्मण**
- 'उत्तररामचरितम्' में राम किस कोटि के नायक हैं? - **धीरोदात्त**
- सीता परित्याग के बाद पुनः राम और सीता का मिलन वर्णित है - **उत्तररामचरितम् में**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस काल के समाज एवं संस्कृति का वर्णन है? - **रामायणकालीन**

- 'आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा' इत्यस्ति? - **उत्तररामचरिते**
- "भवभूतिमहाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी" इति वदन्ति - **शिखरिणी**
- "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" इत्यत्र किं छन्दः? - **अनुष्टुप्**
- 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इति केनोक्तम्? - **भवभूतिना**
- छाया-सीता इसमें आती है? - **उत्तररामचरितम्**
- छायाङ्क .... में है? - **उत्तररामचरितम्**
- अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते।।
इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?- **पुत्र का महत्त्व**
- तमसा और मुरला दोनों नदियाँ किस काव्य की पात्र हैं? - **उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते भवभूतिना कस्मिन् अङ्के भरतस्य उल्लेखः कृतः? - **चतुर्थे**
- उत्तररामचरिते शम्बूकमुनिः कतमं लोकं प्राप्नोति - **वैराजम्**
- उत्तररामचरितस्य उपजीव्यो ग्रन्थः कः अस्ति?-**वाल्मीकिरामायणम्**
- उत्तररामचरिते कतमः अङ्कः 'गर्भाङ्कः' इति नाम्ना प्रसिद्धः - **सप्तमोऽङ्कः**
- 'दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा' संवादेन भवभूतिः परिचाययति - **श्रीरामम्**
- भागीरथी 'उत्तररामचरितम्' में किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती है? - **सूर्य**
- 'उत्तररामचरितम्' में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं? - **गंगा**
- करुण के रस-राजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई? - **उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का सम्बन्ध किससे है? - **पञ्चवटी से**
- शान्ता थी - **दशरथ की पुत्री**
- 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' का अर्थ है - **सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।**
- "प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति"
यह उक्ति किससे सम्बन्धित है? - **उत्तररामचरितम्**
- "गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः"
सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? - **उत्तररामचरितम्**
- "वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे"
इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति? - **उत्तररामचरिते**
- "एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्" इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते - **उत्तररामचरितम्**
- "तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः"
यह उक्ति किसे लक्ष्य करके कही गयी है - **सीता**
- "दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा"
उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते - **सीतायाः**
- 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'
उक्तिरियम् उत्तररामचरितेऽस्ति? - **तमसायाः**
- 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति"– यह सूक्ति किस कवि की है? - **भवभूतेः**
- "अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः", - **भवभूति ने राम के करुण**
- यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा है?-**रस वर्णन में**
- "स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः" उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **उत्तररामचरितम् से**
- 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः" श्लोकांश है? - **उत्तररामचरितम् से**
- "करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी"
यह कथन किसका है? - **तमसा का**
- 'ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः" यह कथन है - **मुरला का**
- "अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्"
उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है? - **राम की**
- "ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति"
यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है? - **उत्तररामचरित से**
- 'शुचिः बिम्बग्राहे मणिः न मृदादयः'
उत्तररामचरितस्य वाक्यमिदं किं सूचयति?- **प्राज्ञजडक्षत्रप्रभेदम्**

- 'भवभूतिर्विशिष्यते'' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है? - **उत्तररामचरितम्**
- 'करुणस्य मूर्तिरथवा' यह उक्ति किसके बारे में है? - **सीता**
- ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किससे उद्धृत है - **उत्तररामचरितम्**
- ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' उक्ति है - **उत्तररामचरितम्**
- ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' कथन किसका है - **वासन्ती का**
- ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति'' यह किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है - **उत्तररामचरितम्**
- ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' इसका सम्बन्ध है - **उत्तररामचरितम् से**
- ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति? - **उत्तररामचरितम्**
- ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है, वह हैं - **भवभूति**
- ''एको रसः करुण एव'' यह कथन है - **भवभूति**
- ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' उत्तररामचरिते कस्य संवादोऽस्ति? - **आत्रेय्याः**
- ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति? - **उत्तररामचरिते**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति? - **मुरलायाः**
- ''एको रसः करुण एव'' यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है- **तृतीय**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' किस कवि से सम्बद्ध है? - **भवभूति**
- ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' के वक्ता हैं- **राम**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पूरोत्पीडे' शब्द का अर्थ है - **जलवृद्धि**
- ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते''–यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' से क्या तात्पर्य है - **तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।**
- 'लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति'–इति कस्मिन्नाटके वर्ण्यते - **उत्तररामचरिते**
- प्रियप्रायावृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः ... उक्तिः? -**तापस्याः**
- 'विपाक' शब्द का अर्थ है? - **दुरवस्था**
- 'अमरसिन्धु' है? - **गङ्गा**
- 'पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है? - **रावण से**
- 'पुटपाक' का अभिप्राय है? - **औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग**
- 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ 'प्रसवः' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'त्वं जीवितम्' का अर्थ है? - **तुम जीवन हो**
- 'नीरन्ध्रबालकदली' में 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है - **सघन**
- 'वधूद्वितीय' का अर्थ है - **प्रिया के साथ**
- 'कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्' इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है? - **राम के लिए**
- 'रात्रिरेव व्यरंसीत्'। कस्मिन् नाटके इदं दृश्यते -**उत्तररामचरिते**
- 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' – इदं कथनम् उत्तररामचरिते नाटकेऽस्ति - **वनदेवतायाः**
- उत्तररामचरितम् में तमसा और मुरला हैं - **नदी विशेषाधिष्ठात्री देवियाँ**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह कथन किसका है–

(A) भास का (B) भारवि का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

2. ''स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता'' में 'कुलपति' पद से किसका निर्देश किया गया है–

(A) भवभूति का (B) वशिष्ठ का
(C) अगस्त्य का (D) वाल्मीकि का

3. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक संख्या मानी जाती है–

(A) 244 (B) 266
(C) 256 (D) 334

4. अनुष्टुप् के बाद भवभूति का प्रिय छन्द है–

(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मालिनी

5. वशिष्ठ की पत्नी है–

(A) लोपामुद्रा (B) सुनयना
(C) भागीरथी (D) अरुन्धती

6. 'अमरसिन्धुः' पद का क्या अर्थ है–

(A) अमृतसमुद्रः (B) भागीरथी
(C) यमुना (D) पृथिवी

7. उत्तररामचरितम् का छाया अङ्क है–

(A) प्रथम अङ्क (B) सप्तम अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) तृतीय अङ्क

8. 'यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्' यह कथन किसका है–

(A) आत्रेयी (B) तमसा

(C) मुरला (D) वासन्ती

9. 'हरिणीदृशः' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) प्रथमा एक. (B) द्वितीया द्विव.
(C) षष्ठी एक. (D) चतुर्थी एक.

10. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है–
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

11. पञ्चवटी के कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) सीता ने
(C) राम ने (D) तमसा ने

12. अपनी प्रिया को मनाने के लिए नलिनीपत्ररूपी छाते को किसने लगाया–
(A) मयूर ने (B) राम ने
(C) गज ने (D) भवभूति ने

13. उत्तररामचरिते 'वारणानां विजेता' कः अस्ति–
(A) रामः (B) गजः
(C) जटायुः (D) रावणः

14. राम का 'करुणरस' है–
(A) पुटपाकवत् (B) हर्षशोकवत्
(C) स्नेहवत् (D) चञ्चलवत्

15. भवभूति के पिता का नाम है–
(A) भट्टगोपाल (B) श्रीकण्ठ
(C) नीलकण्ठ (D) ज्ञाननिधि

16. भवभूति के आश्रयदाता हैं–
(A) यशोवर्मा (B) राजवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) मित्रवर्मा

17. भवभूति के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) तेरह

18. भवभूति का एक प्रसिद्ध दार्शनिक नाम है–
(A) उम्बेक (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) यशोवर्मा

19. भवभूति का गोत्र है–
(A) वत्स (B) काश्यप
(C) गौतम (D) भारद्वाज

20. लोपामुद्रा पत्नी है–
(A) वशिष्ठ की (B) अगस्त्य की
(C) ऋष्यशृङ्ग की (D) वाल्मीकि की

21. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नहीं है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

22. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' यह कथन है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

23. लव और कुश किसके आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–
(A) वशिष्ठ के (B) अगस्त्य के
(C) विश्वामित्र के (D) वाल्मीकि के

24. सीता को अदृश्य रहने का वरदान किसने दिया–
(A) भागीरथी ने (B) तमसा ने
(C) लोपामुद्रा ने (D) इनमें से सभी ने

25. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' किसने किसके लिए कहा–
(A) मुरला ने सीता के लिए
(B) तमसा ने जानकी के लिए
(C) वासन्ती ने वैदेही के लिए
(D) सीता ने तमसा के लिए

26. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) शम्बूक के वध हेतु (B) सीता से मिलने हेतु
(C) अगस्त्य के दर्शन हेतु (D) पञ्चवटी में घूमने हेतु

27. कुश और लव की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं वर्षगाँठ (B) बारहवीं वर्षगाँठ
(C) छठवीं वर्षगाँठ (D) नौवीं वर्षगाँठ

28. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

29. ''तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्'' इसमें छन्द है–
(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) हरिणी (D) शार्दूलविक्रीडितम्

30. 'उल्लापाः' पद का अर्थ है–
(A) उल्लास (B) मदमस्त गज
(C) विलाप (D) मयूर

31. पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है–
(A) तमसा (B) वनदेवी वासन्ती
(C) प्रिया सीता (D) मुरला

32. लोपामुद्रा गोदावरी से अपना संदेश कहने को किसे भेजती हैं-
(A) मुरला को (B) तमसा को
(C) भागीरथी को (D) वासन्ती को

33. सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को कौन खींचता था–
(A) करिशावक (B) मयूर
(C) मृग (D) इनमें से कोई नहीं।

34. व्याकृष्टः में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) व्या+कृष्+क्त (B) वि+आङ्+कृष्+क्त

(C) वि+आङ्+कृ+क्त (D) वि+या+कृ+क्त

35. 'आतपत्र' पद का अर्थ है–
(A) नलिनी का पत्र (B) छाता
(C) केले का पत्ता (D) आधा पत्ता

36. 'अनराल' पद का शब्दार्थ है–
(A) सीधा (B) टेढ़ा
(C) कमल (D) नलिनीनाल

37. 'ईदृश्यस्मि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) ईदृश्+अस्मि (B) ईदृशी+अस्मि
(C) ईदृश+अस्मि (D) ईदृश्+यस्मि

38. 'तावपि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) तो+अपि (B) ताव+अपि
(C) तौ+अपि (D) ताव्+अपि

39. 'पति-पत्नी' के अर्थ में अशुद्ध पद है–
(A) दम्पती (B) जम्पती
(C) जायापती (D) इनमें से कोई नहीं।

40. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' किसने, किससे कहा–
(A) सीता ने तमसा से (B) तमसा ने सीता से
(C) वासन्ती ने राम से (D) तमसा ने मुरला से

41. सीता द्वारा पालित मोर अपनी पत्नी के साथ कहाँ बैठा है–
(A) कदम्ब में (B) पहाड़ में
(C) गोदावरी जल में (D) लताकुञ्ज में

42. 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है–
(A) काला (B) घना
(C) जल (D) बादल

43. 'अदात्' में धातु एवं लकार का सही विकल्प है–
(A) दा+लङ्0+प्र0पु0 एक.
(B) दा+लुङ्+प्र0पु0 बहु.
(C) अद्+लट्+प्र0पु0 एक.
(D) दा+लुङ्+प्र0पु0 एक.

44. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते'' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है–
(A) सीता का (B) राम का
(C) हृदय का (D) चित्त का

45. ''ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः'' यहाँ कौन किसका स्वागत करना चाह रहा है–
(A) राम, वासन्ती का (B) तमसा, राम का
(C) वासन्ती, राम का (D) अगस्त्य, वाल्मीकि का

46. 'शकुनि' पद का अर्थ है–
(A) शगुन (शुभसमय) (B) पक्षी
(C) मृग (D) वृक्ष

47. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है–
(A) सम+आ+श्वास+लोट् मु0पु0एक.
(B) समा+श्वस्+लोट्+म0पु0 द्विव.
(C) सम्+आङ्+श्वस्+लोट् म0पु0 एक.
(D) सम+आ+श्वास+लट् म0पु0 एक.

48. सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं–
(A) 12 माह (B) 14 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 16 वर्ष

49. ''किमभवद् विपिने हरिणीदृशः'' यहाँ 'हरिणीदृशः' पद से किसका निर्देश है–
(A) सीता का (B) हरिणी का
(C) कमललता का (D) नेत्रों का

50. 'उपालम्भः' पद का अर्थ नही है–
(A) ताना मारना (B) शिकायत करना
(C) उलाहना देना (D) उधार देना

51. 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

52. भवभूति की अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है–
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) लवकुशचरितम्

53. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है–
(A) वीररस (B) हास्यरस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

54. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यह कथन किसका है–
(A) क्षेमेन्द्र का (B) कालिदास का
(C) बाण का (D) भवभूति का

55. सीता का ज्येष्ठ पुत्र है–
(A) लव (B) कुश
(C) जटायु (D) कुरङ्ग

56. उत्तररामचरितम् में राम की बहन के रूप में उल्लेख है–
(A) मुरला का (B) आत्रेयी का
(C) वासन्ती का (D) शान्ता का

57. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' इस पंक्ति में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

58. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

59. 'सोढः' में प्रकृति/प्रत्यय है–
(A) सूङ्+णञ् (B) सह्+क्त
(C) श्रु+ऊढः (D) सृज+क्त

60. 'रयः' पद का अर्थ है–
(A) वेग (B) रेत
(C) भूमि (D) मोर

61. 'काकली' पद का अर्थ है–
(A) तोता (B) तोतली बोली
(C) मयूर (D) घुँघराले बाल

62. 'प्रवान्तु' में धातु एवं लकार है–
(A) प्र+√वा धातु+लोट्+प्र०पु० एक.
(B) प्र+√वा धातु+लोट् प्र०पु० बहु.
(C) √प्रवा धातु + लोट् म०पु० एक.
(D) प्र+√वह् + लोट् + प्र०पु० बहु.

63. 'पुष्' धातु का लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में रूप बनेगा–
(A) अपोष्यत् (B) अपूष्यत्
(C) अपुष्यत् (D) अपोष्यति

64. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' इसमें किस वाच्य का प्रयोग है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

65. 'वीक्ष्य' पद में प्रत्यय है–
(A) क्तवतु (B) ल्यप्
(C) यत् (D) ष्यञ्

66. 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है–
(A) कमल (B) कली
(C) समान (D) सुन्दर

67. ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्'' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है–
(A) विशेष (B) विश्वास
(C) चारों ओर से (D) हृदय

68. ''आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपैः'' में 'अमृतमय' पद में प्रत्यय है–
(A) मयट् (B) म्युट्
(C) यक् (D) मुक्

69. ''करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्'' के 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) द्वितीया
(C) प्रथमा (D) पञ्चमी

70. ''कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव'' में अलङ्कार है–
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

71. ''द्यामभ्युदस्थादरिः'' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(D) विधिलिङ् (D) लोट्

72. 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है–
(A) पत्राणाम् (B) खगानाम्
(C) शराणाम् (D) पिशाचानाम्

73. ''अहो ! उत्खातितमिदानी मे परित्यागशल्यम्'' यह कथन किसका है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) भागीरथी का

74. 'वर्षर्द्धिः' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ (B) व्यञ्जन
(C) यण् (D) गुण

75. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

76. भवभूति का निवासस्थान माना जाता है–
(A) पद्मपुर (B) धारानगरी
(C) जतुकर्णीनगर (D) अचलपुर

77. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कहा जाता है–
(A) भट्टि को (B) भारवि को
(C) भवभूति को (D) भर्तृहरि को

78. भवभूति के गुरु का नाम है–
(A) ध्याननिधि (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) नीलकण्ठ

79. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का (B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का (D) उपर्युक्त सभी

80. कुमारिलभट्ट के शिष्य और मीमांसादर्शन के विद्वान् माने जाते हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भारवि (D) भास

81. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते हैं–
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

82. उत्तररामचरितम् में प्रयुक्त 'कालप्रियानाथ' पद का अर्थ है–
(A) काल (यमराज) (B) समय के पाबंद
(C) शिव (D) महाकवि

83. भवभूति का अनुमानित समय माना जाता है–
(A) 650 ई० से 750 ई० तक
(B) 750 ई० से 850 ई० तक
(C) 650 ई० पू० से 750 ई० तक
(D) 850 ई० से 950 ई० तक

84. उत्तररामचरितम् में अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

85. उत्तररामचरितम् का मूल आधार है–
(A) वाल्मीकीयरामायण (B) तुलसीरामायण
(C) भावार्थरामायण (D) महाभारतम्

86. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडीरीति (D) उपर्युक्त सभी

87. उत्तररामचरितम् की सम्पूर्ण घटना कितने वर्षों की है–
(A) 14 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 12 वर्ष

88. उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में राम-सीता का मिलन होता है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

89. 'गर्भनाटक' की योजना उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में है–
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

90. विदूषक रहित रचना मानी जाती है–
(A) शाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

91. उत्तररामचरितम् का पात्र है–
(A) सौधातकि (B) दण्डायन
(C) दुर्मुख (D) उपर्युक्त सभी

92. करुणरस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है–
(A) भास को (B) भवभूति को
(C) कालिदास को (D) माघ को

93. चन्द्रकेतु किसका पुत्र है–
(A) लक्ष्मण का (B) राम का
(C) वशिष्ठ का (D) ऋष्यशृङ्ग का

94. राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ कौन सा यज्ञ किया–
(A) वाजपेययज्ञ (B) अश्वमेधयज्ञ
(C) पञ्चमहायज्ञ (D) दशपौर्णमासयज्ञ

95. उत्तररामचरितम् के नायक और नायिका हैं–
(A) राम-वासन्ती (B) लव-आत्रेयी
(C) राम-सीता (D) चन्द्रकेतु-तमसा

96. "ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति" किसकी उक्ति है–
(A) राम की (B) सीता की
(C) तमसा की (D) वाल्मीकि की

97. सीताविषयक लोकापवाद राम से किसने बताया–
(A) वाल्मीकि ने (B) वशिष्ठ ने
(C) अष्टावक्र ने (D) दुर्मुख ने

98. "गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः" यह सूक्ति किस नाटक से सम्बन्धित है–
(A) उत्तरसीताचरितम् (B) जानकीजीवनम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) सीताचरितम्

99. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) चित्रदर्शन अङ्क
(C) गर्भाङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

100. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है–
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

उत्तरमाला

1. (C)	2. (D)	3. (C)	4. (A)	5. (D)	6. (B)
7. (D)	8. (D)	9. (C)	10. (B)	11. (B)	12. (C)
13. (B)	14. (A)	15. (C)	16. (A)	17. (B)	18. (A)
19. (B)	20. (B)	21. (C)	22. (B)	23. (D)	24. (A)
25. (B)	26. (A)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (C)
31. (B)	32. (A)	33. (A)	34. (B)	35. (B)	36. (A)
37. (B)	38. (C)	39. (D)	40. (B)	41. (A)	42. (B)
43. (D)	44. (B)	45. (C)	46. (B)	47. (C)	48. (C)
	49. (A)	50. (D)	51. (A)	52. (B)	53. (C)
54. (A)	55. (B)	56. (D)	57. (A)	58. (B)	59. (B)
60. (A)	61. (B)	62. (B)	63. (C)	64. (A)	65. (B)
66. (B)	67. (C)	68. (A)	69. (D)	70. (C)	71. (A)
72. (C)	73. (A)	74. (D)	75. (C)	76. (A)	77. (C)
78. (B)	79. (D)	80. (A)	81. (B)	82. (C)	83. (A)
84. (B)	85. (A)	86. (C)	87. (D)	88. (D)	89. (A)
90. (C)	91. (D)	92. (B)	93. (A)	94. (B)	95. (C)
96. (A)	97. (D)	98. (C)	99. (B)	100. (A)	

4.13 मुद्राराक्षसम्

विशाखदत्त का परिचय

- **नाम-** विशाखदत्त
- **पिता का नाम-** भास्करदत्त
  (कुछ संस्करणों में इनके पिता का नाम 'पृथु' भी दिया गया है।)
- **पितामह-** बटेश्वरदत्त
- **निवासस्थान-** सम्भवतः बंगाल अथवा बिहार
- **उपासक-** शिव के
- **रीति-** वैदर्भी किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौड़ी रीति का प्रयोग।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित।
- **प्रिय अलङ्कार-** अर्थालङ्कार।
- **समय-** अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी।
- **आश्रयदाता-** तैलङ्ग महोदय के अनुसार 'अवन्तिवर्मा'।
- **रचनाएँ-** 1.मुद्राराक्षस 2.देवीचन्द्रगुप्त 3.अभिसारिकवञ्चितकम्
- 'मुद्राराक्षस' ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।

मुद्राराक्षस का परिचय

- **लेखक-** विशाखदत्त
- **काव्यविधा-** नाटक (ऐतिहासिक)
- **विभाजन-** 7 (सात) अङ्कों में
- **श्लोक संख्या-** 169

अङ्क	अङ्कों का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	मुद्रा-लाभ	27
द्वितीय	राक्षस-विचार	23
तृतीय	कृतक-कलह	33
चतुर्थ	राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम	राक्षस-निकार	24
षष्ठ	राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम	राक्षस-निग्रह	19
	योग-	169

गुण- ओज,माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय। मुद्राराक्षस में तीनों गुणों का सम्मिलित रूप से प्रयोग है।

अलङ्कार- उपमा, रूपक, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अर्थान्तरन्यास अलङ्कारों की प्रधानता।

रीति- वैदर्भी के साथ-साथ गौड़ी रीति।

छन्द- सम्पूर्ण नाटक में 19 प्रकार के छन्दों का प्रयोग है।

- अनुष्टुप् तथा आर्या जैसे छोट छन्द तथा वसन्ततिलका, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा जैसे बड़े छन्दों का भी प्रयोग है।

मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस- वीररस।

उपजीव्य- विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण

- दशरूपककार धनञ्जय, मुद्राराक्षस का उपजीव्य 'बृहत्कथा' को मानते हैं।

नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।

नायिका- कोई नायिका नहीं। (नायिका विहीन नाटक)

प्रतिनायक- राक्षस (सुबुद्धिशर्मा)

कञ्चुकी- 1.जाजलि (मलयकेतु का)
2.वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)

मुद्राराक्षस का मङ्गलाचरण

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किं नु नामैतदस्या,
नामैवास्यास्तदेत्परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः।
नारीं पृच्छामि नेन्दुं कथयतु विजया न प्रमाणं यदीन्दु-
र्देव्या निह्नोतुमिच्छोरिति सुरसरितं शाठ्यमव्याद्विभोर्वः॥1/1॥

भावार्थ- इस पद्य में शिव और पार्वती का वार्तालाप पूर्वक माङ्गलिक पद्य है-

पार्वती- आपके सिर पर विद्यमान यह धन्य स्त्री कौन है?

शिव- शशिकला।

पार्वती- क्या यह इसका नाम है?

शिव- यह इसका नाम ही है। उसे जानते हुए भी तुम्हें किस कारण भूल गया है?

पार्वती- मैं स्त्री के विषय में पूँछ रही हूँ, चन्द्रमा के विषय में नहीं।

शिव- यदि तुम चन्द्रमा को प्रमाण नहीं मानती तो तुम्हारी सखी विजया ही तुम्हें बतलाएं।

इसप्रकार देवी पार्वती से गङ्गा को छिपाने के इच्छुक भगवान् शिव की कुटिलता आप सबकी रक्षा करे।

पादस्याविर्भवन्तीमवनतिमवने रक्षतः स्वैरपातैः,
सङ्कोचेनैव दोष्णां मुहुरभिनयतः सर्वलोकातिगानाम्।
दृष्टिं लक्ष्येषु नोग्रज्वलनकणमुचं बध्नतो दाहभीतेः,
इत्याधारानुरोधात्त्रिपुरविजयिनः पातु वो दुःखनृत्तम्॥1/2॥

भावार्थ- इच्छानुसार पैर के रखने से होने वाली पृथ्वी की अवनति (रसातल में जाने से) की रक्षा करने वाले, सभी लोकों को पार करने वाली भुजाओं को बार-बार सिकोड़कर ही अभिनय करने वाले, भयङ्कर आग की लपटों को छोड़ने वाली दृष्टि को वस्तुओं पर, भस्म हो जाने के भय से न टिकाने वाले और प्रकार धरातल के सीमित होने के कारण तीनों लोकों को जीतने वाले अर्थात् भगवान् शिव का कठिनतापूर्वक किया गया नृत्य आप सब की रक्षा करे।

- मङ्गलाचरण के दोनों पद्यों में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है तथा आशीर्वादात्मक नान्दी है।
- द्वितीय पद्य में कथानक का स्पष्ट संकेत होने से वस्तुनिर्देशात्मक नान्दी है।
- उपर्युक्त पद्यों में अष्टपदा तथा पत्रावली नान्दी भी है।
- प्रथम पद्य में स्रग्धरा छन्द एवं वक्रोक्ति अलङ्कार है।
- द्वितीय श्लोक में भी स्रग्धरा छन्द एवं परिकर अलङ्कार है।

मुद्राराक्षस का संक्षिप्त कथानक

प्रथम अङ्क

- चाणक्य को अपने गुप्तचरों से सूचना मिलती है कि कुसुमपुर नगर में 'नन्द के अमात्य राक्षस' के तीन विश्वासपात्र व्यक्ति हैं जो राक्षस के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं।
- उन्हीं तीनों में से एक स्वर्णकार चन्दनदास, राक्षस के परिवार को अपने घर में आश्रय दिया था।
- राक्षस नन्दवंश का अनन्य भक्त एवं कुशल राजनीतिज्ञ था।
- चाणक्य, राक्षस को अपने पक्ष में मिलाना चाहता है, इसलिए कूटनीति करता है।
- चाणक्य के गुप्तचर को राक्षस-नामाङ्कित एक मुद्रा मिलती है।
- चाणक्य, शकटदास से एक पत्र लिखवाकर उस पर राक्षस नामाङ्कित मुद्रा से मुद्रित करवाता है। इसी मुद्रा से राक्षस की पराजय होती है।

द्वितीय अङ्क

- अमात्य राक्षस, कुसुमपुर में चन्द्रगुप्त की हत्या का षडयन्त्र करता है, क्योंकि वह चाणक्य द्वारा संरक्षित चन्द्रगुप्त से ईर्ष्या करता है।
- राक्षस, मलयकेतु की दुर्दशा पर पश्चाताप करता है तथा मलयकेतु द्वारा प्रेषित आभूषण को कञ्चुकी से प्राप्त करता है।
- सपेरा के वेश में आये विराधगुप्त नामक राक्षस के गुप्तचर से कुसुमपुर का वृत्तान्त प्राप्त होता है।
- विराधगुप्त द्वारा पता चलता है कि राक्षस का षडयन्त्र असफल हुआ और चाणक्य की बुद्धि से चन्द्रगुप्त के बजाय वैरोचक और बर्बरक की मृत्यु हुई।
- चाणक्य की ही बुद्धि से गर्भगृह में आग लगवाकर चन्द्रगुप्त के शत्रुओं को मार दिया गया।
- सिद्धार्थक के साथ शकटदास, राक्षस के पास जाता है और वृत्तान्त सुनाने पर सिद्धार्थक राक्षस द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।
- सिद्धार्थक के पास से राक्षस नामाङ्कित मुद्रा (अंगूठी) मिलती है और राक्षस मुद्रा को शकटदास को व्यवहार के लिए देता है।
- सिद्धार्थक बताता है कि मलयकेतु के पलायन काल से ही चाणक्य और चन्द्रगुप्त एक-दूसरे की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं।
- राक्षस करभक को कुसुमपुर भेजता है।

तृतीय अङ्क

- कौमुदीमहोत्सव मनाने के लिए चन्द्रगुप्त कुसुमपुर के सुगाङ्ग प्रासाद को जाता है।
- कञ्चुकी, चन्द्रगुप्त से बताता है कि 'प्रतिषेध' के कारण लोगों द्वारा कौमुदीमहोत्सव नहीं मनाया जा रहा है।
- राक्षस द्वारा भेजे गये दो वैतालिकों द्वारा शारदी-रमणीयता का वर्णन किया जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वारा राक्षस की प्रशंसा पर चाणक्य क्रुद्ध होता है।
- चन्द्रगुप्त,चाणक्य का अनादर कर स्वयं राज्य करने की घोषणा हेतु कञ्चुकी को आदेश देकर शयनगृह में चला जाता है।

चतुर्थ अङ्क

- राक्षस, चाणक्य की सफलताओं पर अत्यधिक चिन्ता करता है।

भागुरायण के साथ मलयकेतु, राक्षस के पास जाता है, तथा इसी समय पर आकर करभक नामक सेवक कुसुमपुर का समाचार बतलाता है कि किस प्रकार उत्तेजित किये जाने पर चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को अधिकारच्युत कर दिया है।

- मलयकेतु , राक्षस से शत्रु सम्बन्धी वार्ता करके वापस चला जाता है।
- जीवसिद्धि नामक क्षपणक, राक्षस को चाणक्य के सम्पर्क से चन्द्रगुप्त से मिलने के लिए इंगित करता है, क्योंकि यह समय चन्द्रगुप्त का अभ्युदयकाल है।
- सबके चले जाने पर राक्षस भी सूर्यास्त जानकर चला जाता है।

पञ्चम अङ्क

- जीवसिद्धि नामक चाणक्य का गुप्तचर मलयकेतु की सेना में प्रवेश करता है और स्वयं को राक्षस का मित्र बताता है।
- जीवसिद्धि ही मलयकेतु को बताता है कि राक्षस ने विषकन्या के प्रयोग से पर्वतेश्वर को मरवा डाला।
- उसी समय से चाणक्य ने राक्षस का मित्र जानकर मुझे निकाल दिया।
- यह सुनकर मलयकेतु, राक्षस से घृणा करने लगता है। उसी समय मलयकेतु, राक्षस की नामाङ्कित मुद्रा युक्त पत्र तथा कुछ मौखिक सूचनाएँ सिद्धार्थक से प्राप्त करता है।
- इन घटनाओं से मलयकेतु को राक्षस के शत्रुपक्ष में मिल जाने का सन्देह और भी पुष्ट हो जाता है।
- मलयकेतु ,राक्षस को बुलवाकर पत्र तथा आभूषण पेटिका दिखाकर अपमानित करता है और चित्रवर्मा,सिंहनाद,पुष्कराक्ष,सुषेण एवं मेघाक्ष को मरवा डालता है।
- मलयकेतु अपनी सेना को कुसुमपुर घेरने का आदेश देता है, इस पर राक्षस अत्यन्त व्याकुल हो जाता है और मलयकेतु को बंदी बना लिया जाता है।

षष्ठ अङ्क

- सिद्धार्थक अपने मित्र से कहता है कि चाणक्य के आदेशानुसार मैं चित्रवर्मादि पाँच आश्रित राजाओं के मारे जाने तथा मलयकेतु के बन्दी बनाये जाने की सूचना चन्द्रगुप्त को देने जा रहा हूँ।
- राक्षस अपने मित्र चन्दनदास के मृत्युदण्ड की सूचना प्राप्त

करता है।

➢ राक्षस अत्यन्त व्याकुल हो जाता है तथा चन्दनदास को बचाने का उपाय सोचता है।

सप्तम अङ्क

➢ चाण्डाल , चन्दनदास को फाँसी देने के लिए तैयार है तथा चन्दनदास की पत्नी वध्यस्थल पर ही विलाप करती है।

➢ इसी अवसर पर राक्षस आता है, चाण्डाल, राक्षस के आने की सूचना चाणक्य को देता है।

➢ चन्द्रगुप्त भी वहाँ आता है और राक्षस, चन्द्रगुप्त से प्रणाम करता है।

➢ चाणक्य के आदेशानुसार चन्द्रगुप्त, राक्षस से प्रणाम करता है और राक्षस आशीर्वाद देता है।

➢ चाणक्य, चन्दनदास के जीवन के बदले चन्द्रगुप्त के प्रधानामात्य का शस्त्र ग्रहण करने के लिए राक्षस से कहते हैं लेकिन राक्षस संकोच करता है।

➢ चाणक्य के प्रशंसा करने पर राक्षस अमात्य पद ग्रहण करता है और चन्दनदास को श्रेष्ठ सम्मान के साथ मुक्त किया जाता है।

➢ मलयकेतु को मुक्त करके उसका पैतृक राज्य उसे दे दिया जाता है।

➢ सभी बन्दी छोड़ दिये जाते है एवं प्रतिज्ञा पूर्ण होने पर चाणक्य अपनी शिखा को बाँध लेता है।

➢ भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

मुद्राराक्षस का भरतवाक्य

वाराहीमात्योनेस्तनुमवनविधावास्थितस्यानुरूपां,
यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री।
म्लेच्छैरुद्विज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः,
स श्रीमद्बन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः॥ 7/19॥

भावार्थ- पहले प्रलय को प्राप्त हुई पृथ्वी ने रक्षा करने में समर्थ वराह रूप शरीर को धारण करने वाले जिस भगवान् विष्णु के दाँतों के अग्रभाग का आश्रय लिया, उसी पृथ्वी ने अब म्लेच्छों के द्वारा पीड़ित किये जाने पर राजा चन्द्रगुप्त के शरीर को धारण करने वाले भगवान् विष्णु की दोंनो भुजाओं का आश्रय लिया है। ऐश्वर्यसम्पन्न सम्बन्धियों तथा सेवकों वाला वह विष्णु रूप राजा चन्द्रगुप्त चिरकाल तक पृथ्वी की रक्षा करें।

➢ इस भरतवाक्य में राजा तथा प्रजा के ऐश्वर्य की कामना की गयी है।

➢ इसका वक्ता राक्षस है।

➢ इस पद्य में स्रग्धरा छन्द तथा अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

पात्र-परिचय

पुरुषपात्र

➢ **सूत्रधार-** प्रमुख नट तथा मञ्च का संचालक।

➢ **चाणक्य-** नायक, महान् राजनीतिज्ञ एवं मौर्य साम्राज्य का प्रतिष्ठापक।

➢ **चन्द्रगुप्त-** उपनायक, मौर्य साम्राज्य का संस्थापक एवं चाणक्य का शिष्य। (कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को ही नायक मानते हैं)

➢ **मलयकेतु-** महाराज पर्वतक का पुत्र, राक्षस का सहायक तथा चन्द्रगुप्त का प्रतिद्वन्द्वी।

➢ **राक्षस-** प्रतिनायक, नन्द का महामात्य तथा चाणक्य का प्रतिद्वन्द्वी।

➢ **चन्दनदास-** पाटलिपुत्र का मणिकार श्रेष्ठी, राक्षस का मित्र।

➢ **भागुरायण-** मलयकेतु का कपटी मित्र, चाणक्य का गुप्तचर।

➢ **जीवसिद्धि-** क्षपणक वेषधारी राक्षस का कपटी मित्र, चाणक्य का गुप्तचर। (वास्तविक नाम- इन्दु शर्मा)

➢ **सिद्धार्थक-** चाणक्य का विश्वासपात्र गुप्तचर।

➢ **सुसिद्धार्थक-** चाण्डाल वेशधारी सिद्धार्थक का मित्र।

➢ **निपुणक-** चाणक्य का गुप्तचर।

➢ **विराधगुप्त-** राक्षस का गुप्तचर।

➢ **करभक-** राक्षस का गुप्तचर।

➢ **जाजलि-** मलयकेतु का कञ्चुकी।

➢ **प्रियंवदक-** राक्षस का नौकर।

➢ **शकटदास-** राक्षस का मित्र।

➢ **वैहीनर-** मौर्य साम्राज्य का कञ्चुकी।

➢ **वेत्रधारी पुरुष- भासुरक-** मलयकेतु के अनुचर।

➢ **दौवारिक-** राक्षस का द्वारपाल।

➢ **पुरुष-** चाणक्य का गुप्तचर।

➢ **वैतालिक-** राक्षस द्वारा नियुक्त चारणद्वय।

➢ **बालक-** चन्दनदास का पुत्र।

➢ **आहितुण्डिक-** सपेरा।

➢ **शार्ङ्गरव-** चाणक्य का शिष्य।

स्त्री-पात्र

➢ **नटी-** सूत्रधार की सहायिका

➢ **शोणोत्तरा-** चन्द्रगुप्त की द्वारपालिका।

➢ **विजया-** राजकुमार मलयकेतु की द्वारपालिका।

➢ **कुटुम्बिनी-** चन्दनदास की पत्नी।

मुद्राराक्षस का नामकरण

➢ मुद्राराक्षस का नामकरण इस नाटक के कथानक की एक महत्त्वपूर्ण घटना के आधार पर किया गया है और वह है- 'राक्षस की मुद्रा प्राप्ति'।

➢ चाणक्य, चन्द्रगुप्त के राज्य को चिरस्थायी बनाने के लिए राक्षस को उसका अमात्यपद ग्रहण करवाना चाहता है। अचानक ही अपने गुप्तचर निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस के नाम से अङ्कित उसकी अँगूठी प्राप्त हो जाती है।

➢ यही अँगूठी (मुद्रा) राक्षस को वश में करने की यन्त्र बन जाती है।

''ननु राक्षस एवास्मदङ्गुलीप्रणयी संवृत्त इति।''

➢ इसी मुद्रा की सहायता से चाणक्य कपट पत्र के द्वारा राक्षस

और मलयकेतु में भेद उत्पन्न करके राक्षस का निग्रह करने में सफल हो पाया है क्योंकि समस्त चालों की जड़ कपट पत्र पर राक्षस की यही मुद्रा अङ्कित थी।

- मुद्राराक्षस के कथानक से यह स्पष्ट ही है कि इसमें राक्षस, मुद्रा द्वारा ही जीता गया है और इसका नामकरण भी प्रारम्भ में इस बात को स्पष्ट कर देता है-

मुद्रया जितः राक्षसः यस्मिन् इति मुद्राराक्षसः। तद् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः इति 'मुद्राराक्षसम्'।

- यहाँ मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि समास है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

चाणक्य

- चाणक्य इस नाटक का नायक है क्योंकि समस्त घटनाओं का एकमात्र नियन्ता चाणक्य ही है।
- वह अत्यन्त व्यवहारकुशल, परमशास्त्रज्ञ तथा अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ के प्रणेता भी हैं।
- चाणक्य निरीह, अनासक्त तथा निःस्वार्थ ब्राह्मण होने के कारण धीरप्रशान्त नायक है-

'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'

- अभिमानी,कपटप्रवीण,क्रोधी व आत्मप्रशंसक होने के कारण वह धीरोद्धत नायक है- **'धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।'**
- इस प्रकार चाणक्य दोनों कोटियों में आता है।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त का गुरु तथा मार्गदर्शक भी है।
- चाणक्य प्रतिज्ञा लेता है कि जब तक नन्दवंश का समूल नाश नहीं कर दूँगा,तब तक अपनी शिखा नहीं बाधूँगा।
- इसप्रकार अपनी कूटनीति से चाणक्य शत्रुओं का विनाश तथा अमात्य राक्षस को अपने गुट में मिला लेता है।
- नाटक के अन्त में चाणक्य कहता है अब चन्द्रगुप्त के शासन में बन्धन मेरी शिखा का होगा, प्रजाओं का नहीं -

'पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं बध्यते शिखा।'

राक्षस

- राक्षस अत्यन्त वैभवयुक्त, यशस्वी, प्रतिभाशाली, कुलीनमन्त्री है।
- उसका वास्तविक नाम **सुबुद्धि शर्मा** है। वह ब्राह्मण है।
- राक्षस अपने स्वामी महाराज नन्द के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् कूटनीतिज्ञ तथा शस्त्रविद्या में भी प्रवीण है।
- वह स्वार्थ रहित, सहज मानवीय भावनाओं से युक्त भावुक भाग्यवादी भी है किन्तु आवेश में आकर अपनी स्वाभाविक दुष्ट बुद्धि से अपनी निर्णय सम्बन्धी भूलों के कारण दुर्भाग्य का शिकार हो जाता है।
- वह अपनी अस्थिर बुद्धि के कारण ही चाणक्य के परमभक्त जीवसिद्धि तथा सिद्धार्थक जैसे व्यक्तियों पर भी विश्वास कर अपनी पराजय को आमन्त्रित कर लेता है।
- वह पुरुषार्थी की अपेक्षा भाग्यवादी अधिक है, किन्तु उसका सम्पूर्ण जीवन निराशाओं, असफलताओं तथा दुर्भाग्य से परिपूर्ण रहा है।

चन्द्रगुप्त

- चन्द्रगुप्त को इस नाटक का उपनायक कह सकते हैं, यह धीरोदात्त कोटि का है। कुछ लोग इसे ही नाटक का नायक भी मानते हैं।
- विशाल मौर्य साम्राज्य को प्राप्त करके भी अहङ्कार उसे छू तक नहीं गया है।
- चाणक्य उसे अनेक स्थानों पर **'वृषल'** कहकर सम्बोधित करता है।
- वह लोक-रञ्जक तथा प्रकृति प्रेमी भी है, यह उसके कौमुदी महोत्सव के आयोजन से स्पष्ट परिलक्षित होता है।
- अतः मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त सभी गुणों से सम्पन्न है।

मलयकेतु

- मलयकेतु राजा पर्वतक का पुत्र है।
- मलयकेतु का चरित्र चन्द्रगुप्त की अपेक्षा राजकुमार के रूप में अधिक विकसित होता है।
- चाणक्य चालाकी से विषकन्या द्वारा इसके पिता पर्वतक की हत्या करवाकर इसे भयभीत कर कुसुमपुर से भगा देता है।
- मलयकेतु अपने अविवेकी बुद्धि के कारण राक्षस के प्रति अविश्वास रखता है।
- भागुरायण उसे राक्षस के प्रति भड़का देता है इसी से उसे राक्षस के गुण में भी दोष ही दिखलाई पड़ते हैं।
- अतः मलयकेतु अपनी अधीरता, अयोग्यता, अविवेक एवं दुर्नीति के कारण अपना सर्वनाश कर लेता है।

चन्दनदास

- चन्दनदास मुद्राराक्षस नाटक का प्रमुख पात्र है तथा वह राक्षस का अनन्य मित्र है।
- वह कुसुमपुर का प्रतिष्ठित जौहरी है, इसीलिए कुसुमपुर के प्रवासकाल में राक्षस अपने परिवार को उसी के घर पर छोड़ देता है, और वह भी अपना सर्वस्व खोकर भी अपने मित्र के परिवार की रक्षा करता है।
- चाणक्य द्वारा प्राणदण्ड की धमकी से भी वह विचलित नहीं होता।

वह दृढ़तापूर्वक कहता है, क्या मुझे डरा रहे हो, सज्जनों के घर भी मैं राक्षस के परिवार को नहीं भेजूँगा तब असज्जन की तो बात ही क्या।

'आर्य! किं मे भयं दर्शयासि, सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम्।'

- अतः चन्दनदास का चरित्र एवं व्यक्तित्व त्याग, सदाचार तथा आदर्श से परिपूर्ण है।

मुद्राराक्षस का नायक

- यह प्रश्न अत्यन्त विवादित है कि 'मुद्राराक्षस' का नायक कौन है?

➢ विद्वानों में इस बात पर मतभेद है किन्तु कुछ निर्णायक कदम बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. **चाणक्य-** नाटक में सर्वप्रथम हमारा ध्यान चाणक्य आकृष्ट करता है और वही नाटक की कथा को आगे बढ़ाता है।

➢ यद्यपि चाणक्य के किसी स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती फिर भी वीररस प्रधान होने के कारण चाणक्य ही उसका प्रधान आश्रय है। वह फल का भोक्ता भी है।

➢ चन्द्रगुप्त के राज्य को स्थिर करने के लिए चाणक्य, राक्षस के रूप में एक योग्य अमात्य देने के कारण फल का भोक्ता भी है।

अतः नायक चाणक्य है।

2. **चन्द्रगुप्त-** कुछ विद्वान् राज्य की प्राप्ति होने के कारण चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।

➢ चन्द्रगुप्त विनीत, गम्भीर,शूरवीर प्रसिद्ध नरेश है, इस दृष्टि से धीरोदात्त के सभी गुण उसमें हैं।

➢ पूरे नाटक में रङ्गमञ्च पर उसकी उपस्थिति केवल तृतीय अङ्क में, कुछ समय के लिए सप्तम अङ्क में ही हुई है, इसलिए चन्द्रगुप्त का पक्ष चाणक्य से न्यून है।

3. **राक्षस-** कुछ विद्वान् केवल मुद्राराक्षस नाम के आधार पर ही राक्षस को नायक मानते हैं।

➢ राक्षस को नायक मानने पर यह नाटक दुःखान्त हो जायेगा जबकि

नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक सुखान्त होना चाहिए तथा भारतीय नाटक सुखान्त हैं भी।

➢ सुलभता से नायक प्राप्त होने से नाटक को दुःखान्त बनाना समीचीन नहीं है, अतः राक्षस प्रतिनायक ही है।

निष्कर्ष-

➢ यह शत-प्रतिशत सत्य है कि राक्षस को वश में कर लेने से चन्द्रगुप्त को अमात्य लाभ हुआ है, परन्तु वह केवल चाणक्य के हाथ की कठपुतली है।

➢ सम्पूर्ण नाटक में चन्द्रगुप्त का प्रभाव कहीं भी दृष्टिगत नहीं है, वह केवल चाणक्य पर आश्रित है।

➢ चतुर्थ अङ्क में चाणक्य और चन्द्रगुप्त के अलग होने का समाचार

➢ पाकर राक्षस खुश होता है कि बिना चाणक्य के आश्रय के विजय मेरी ही होगी।

➢ इन सब कारणों से चन्द्रगुप्त नाटक की पृष्ठभूमि में पड़ जाता है और इसीलिए उसे नायक नहीं माना जा सकता।

➢ इसके विपरीत चाणक्य में नायकोचित सभी गुण विद्यमान हैं, अतः नाटक का नायक चाणक्य ही है।

मुद्राराक्षस की सूक्तियाँ

1.चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। 1/3

भावार्थ- प्रथम अङ्क में सूत्रधार कहता है, ''मूर्ख किसान की भी उर्वरा भूमि में की गयी खेती लहलहा उठती है।''

2.गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुखिताः। 1/16

भावार्थ- चाणक्य कहता है,''भोग करने वाले शेर और राजा स्वभाव से बलशाली होने पर भी प्रायः दुःखित एवं खिन्न रहा करते हैं।''

3.न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है,''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''

4.अत्यादरः शङ्कनीयः।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है,''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।''

5.सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः। 1/24

भावार्थ- चाणक्य, चन्दनदास के बारे में सोचता है कि,''कौन ऐसा व्यक्ति है जो पराये की रक्षा के लिए अपने प्राण देने को तैयार है।''

6.दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो जनितः न पुनः पुरुषरोषेण।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चन्दनदास कहता है कि, ''सौभाग्य से मेरा विनाश मित्र के कारण हो रहा है, किसी नरापराध से नहीं।

7. नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम। 1/26

भावार्थ- राक्षस कहता है, ''नन्दवंश का विनाश करने में लगी शक्तिमहिमा वाली मेरी बुद्धि मुझसे अलग न होवे।

8. पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी। 2/7

भावार्थ- राक्षस कहता है, काशपुष्प के अग्रभाग के समान ''स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।''

9. एकमपि नीतिबीजं बहुफलतामेति यस्य तव। 2/19

भावार्थ- राक्षस, कौटिल्य के बारे में सोचता है, धन्य हो कौटिल्य ! ''तुम्हारी राजनीति का एक ही बीज अनेक प्रकार के फलों को दे रहा है।''

10. श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम्। 3/5

भावार्थ- चन्द्रगुप्त मन ही मन सोचता है, ''आश्चर्य है कि राजलक्ष्मी अतिप्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती हैं।''

11. न हि प्रयोजनमनपेक्षमाणः स्वप्नेऽपि चाणक्यश्चेष्टते।

भावार्थ- चाणक्य तृतीय अङ्क में चन्द्रगुप्त से कहता है, वृषल ! ''चाणक्य निष्प्रयोजन कार्य स्वप्न में भी नहीं करता है।''

12. दैवमविद्वांस्सः प्रमाणयन्ति।

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चाणक्य कहता है कि ''भाग्य को मूर्ख लोग मानते हैं।''

13. स दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः। 3/32

भावार्थ- कञ्चुकी मन में ही सोचता है कि ''राजा जो कुछ असत् कार्य करता है, वह सब सचिव का ही अपराध माना जाता है।''

14. गण्डस्योपरि विस्फोटः।

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में मलयकेतु द्वारा राक्षस पर आरोप लगाने पर राक्षस सोचता है- ''यह दूसरा गण्डस्थल पर फोड़ा बना।''

15. विनैव युद्धादार्येण पराजितं दुर्जयं रिपुकुलमिति।
भावार्थ- सप्तम अङ्क में चन्द्रगुप्त सोचता है कि ''संघर्ष के बिना ही आर्य चाणक्य ने कठिनता से जीता जा सकने वाला शत्रु-दल पराजित कर दिया है।''

अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क
- राक्षस के मुद्रा की प्राप्ति।
- चाणक्य की इच्छानुसार शकटदास द्वारा कूटपत्र का लेखन।

द्वितीय अङ्क
- आहितुण्डिक वेश में राक्षस के गुप्तचर विराधगुप्त का आगमन।
- राक्षस के समस्त योजनाओं के असफल होने की सूचना।

तृतीय अङ्क
- कौमुदीमहोत्सव तथा निषेध।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त का दिखावटी अंतर्द्वन्द्व तथा कृतककलह की समाप्ति।

चतुर्थ अङ्क
- मलयकेतु का राक्षस के कृत्य पर संदेह।
- राक्षस द्वारा मलयकेतु को समझाने का प्रयत्न।

पञ्चम अङ्क
- राक्षस के मुद्रा से अङ्कित पत्र की प्राप्ति।
- मलयकेतु का राक्षस के प्रति क्रोध एवं प्रतीकार हेतु राक्षस के पाँच राजाओं की हत्या।

षष्ठ अङ्क
- कुसुमपुर के जीर्णोद्यान का वर्णन तथा चन्दनदास को मृत्युदण्ड के लिए बध्यस्थल पर ले जाना।
- राक्षस द्वारा आत्मसमर्पण से चन्दनदास को बचाने का निश्चय।

सप्तम अङ्क
- राक्षस का आत्मसमर्पण तथा अमात्य पद की प्राप्ति।
- चन्दनदास को दण्डमुक्त एवं सम्मानित किया जाना।
- चाणक्य का शिखा बन्धन।

महत्वपूर्ण तथ्य
- मुद्राराक्षस एक **कूटनीतिक नाटक** है।
- यह नाटक, **नायिका एवं विदूषक से रहित** है।
- मुद्राराक्षस के पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का प्रयोग है।
- मुद्राराक्षस के सभी पात्र चन्द्रगुप्त, चाणक्य, नन्द तथा राक्षस इत्यादि **ऐतिहासिक पात्र** हैं।
- राजा नन्द के आठ पुत्र थे। राजा तथा आठ पुत्र 'नवनन्द' कहे जाते थे।
- मुद्रा का अभिप्राय अँगूठी अथवा मुहर है।
- चन्द्रगुप्त का जन्म नन्द तथा 'मुरा' नामक शूद्र स्त्री से हुआ था।
- चाणक्य किसी अवसर पर उच्च आसन पर बैठ जाता है जिसके कारण उसे नन्दों द्वारा अपमानित होना पड़ता है।
- आसन से उतारने पर वह प्रतिज्ञा करता है कि जब तक वह नन्द वंश का विना नहीं कर देगा तब तक अपनी शिखा नहीं बाँधेगा।
- मुद्राराक्षस की घटना एक वर्ष में ही घटित हुई प्रतीत होती है।
- नाटक का प्रारम्भ चैत्र मास के पूर्णिमा के दिन से होता है।

मुद्राराक्षस- बिन्दुवार अध्ययन

- मुद्राराक्षस का लेखक कौन है - **विशाखदत्त**
- मुद्राराक्षस नाटक का नायक कौन है? - **चाणक्य**
- मुद्राराक्षस में अङ्कों की संख्या है? - **7**
- कस्मिन् रूपके नायिका नास्ति - **मुद्राराक्षसे**
- मुद्राराक्षस का प्रधान रस है? - **वीर**
- राक्षस पात्र जिस रूपक में है, वह है - **मुद्राराक्षसम्**
- मुद्राराक्षस है - **नाटक**
- मुद्राराक्षसनाटके नन्दस्य मन्त्री - **राक्षसः**
- मुद्राराक्षसस्य प्रथमाङ्कस्य का संज्ञा - **मुद्रालाभः**
- किस नाटक में स्त्रियों का प्रयोग नहीं है - **मुद्राराक्षस**
- मुद्राराक्षसनाटके मुद्रा केन सम्बद्धा भवति? - **राक्षसेन**
- नन्दवंश पर आधारित नाटक कौन-सा है?- **मुद्राराक्षसम्**
- सर्वार्थसिद्धिः केन वंशेन सम्बद्धः? - **नन्दवंशेन**
- राजनीति और कूटनीतिक विषयों पर आधारित संस्कृत नाटक कौन है? - **मुद्राराक्षसम्**
- चन्दनदास सेठ जिस नाटक में आता है, वह नाटक है - **मुद्राराक्षसम्**
- अस्मिन्नाटके विदूषकः नास्ति - **मुद्राराक्षसम्**
- विशाखदत्त के प्राचीन भारतीय नाटक मुद्राराक्षस की विषयवस्तु है - **चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसन्धियों के बारे में**
- मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः? - **चाणक्येन**
- कस्य गृहे स्वकुटुम्बं संन्यस्य राक्षसः नगराद् बहिः जगाम? - **चन्दनदासस्य**
- 'सः दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः'–इससे सम्बन्धित ग्रन्थ है - **मुद्राराक्षसम्**
- कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्त्तते?- **मुद्राराक्षसे**
- कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति? - **तृतीये**
- मुद्राराक्षसनाटके चाणक्यः कं श्रेष्ठिनं निगृहीतुम् इच्छति - **चन्दनदासम्**
- अधोलिखितेषु नाटकेषु कस्मिन्नाटके स्त्रीपात्रो न? - **मुद्राराक्षसम्**
- ''न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति'' इति कुत्र वर्तते - **मुद्राराक्षसे**
- ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम''–मुद्राराक्षसे

कस्येयमुक्तिः? - **चाणक्यस्य**

- कः नन्दसाम्राज्यस्य महामात्यः, यः अन्ते चन्द्रगुप्तस्य महामात्यपदं स्वीकरोति - **राक्षसः**
- 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः - **विराधगुप्तस्य**
- "सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
  क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।"
  मुद्राराक्षसे इयमुक्तिर्भवति - **चाणक्यस्य**
- कः चाणक्यस्य शिष्यः आसीत्? - **चन्द्रगुप्तः**
- मुद्राराक्षसे नान्दीश्लोके कस्य स्तुतिः विद्यते - **शिवस्य**
- मुद्राराक्षसे नाटके किं पात्रं सर्वप्रधानमस्ति - **चाणक्यः**
- "अत्यादरो शङ्कनीयः" – इदं कथनं मुद्राराक्षसनाटकेऽस्ति - **प्रथमेऽङ्के**
- 'न विदूषको नापि नायिका' कस्मिन् रूपके - **बालभारत**

4.14 नैषधीयचरितम्

महाकवि श्रीहर्ष का परिचय-

- **नाम** - श्रीहर्ष
- **पिता** - श्रीहीर
- **माता** - मामल्लदेवी
- **श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्**
  श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्। 1/145
- **समय-** 12वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बीच (सम्भावित)
  आश्रयदाता- जयचन्द्र
  उपाधि-1.नवभारती 2. कविपण्डित (राजा गोविन्दचन्द्र द्वारा)
  उपासक- शिव, विष्णु, सरस्वती
  प्रिय छन्द- उपजाति
- श्रीहीर काशी के राजा गहरवारवंशी विजयचन्द्र की राज्यसभा के प्रधान पण्डित थे।
- श्रीहीर को विजयचन्द्र की राज्यसभा में मिथिला के प्रसिद्ध पण्डित श्री उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- श्रीहीर पुत्र श्रीहर्ष ने उदयनाचार्य को पराजित करने का वचन अपने पिता (श्री हीर) को उनके मरते समय दिया था।
- श्रीहर्ष ने 'चिन्तामणि' मन्त्र का एक वर्ष पर्यन्त जप किया था।
- त्रिपुरादेवी के वरदान से श्रीहर्ष **अत्यन्त** उत्कृष्ट विद्वान् हो गये।
- जयचन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् महाकाव्य की रचना की।
- नैषधीयचरित महाकाव्य की दोष रहित प्रामाणिकता के लिए श्री हर्ष कश्मीर गये थे।
- महाकवि श्रीहर्ष नदी तट पर बैठकर रुद्र मन्त्र का जप किये थे।
- हरिहर कवि को भी श्रीहर्ष का वंशज माना जाता है।
- श्रीहर्ष के निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वान् मतैक्य नहीं हैं।
- कुछ विद्वान् कन्नौज का, कुछ वाराणसी का, कुछ बंगाल का एवं अन्य कश्मीर का निवासी बतलाते हैं। "ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।" (नैषध. 22/15)
- कविवर राजशेखर सूरि ने महाकवि श्रीहर्ष की सौ से अधिक रचनायें होने का उल्लेख किया है -
  "खण्डनादिग्रन्थान् परश्शतान् जग्रन्थ।"
- नैषधीयचरित में नैषध के अतिरिक्त 8 ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।
- महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित में अपनी रचनाओं के साथ-साथ प्रत्येक सर्गान्त श्लोक में अपने माता व पिता का भी उल्लेख किया है। श्रीहर्षं कविराजराजि मुकुटालङ्कारहीरः सुतम्, श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्।
- श्रीहर्ष के शताधिक ग्रन्थों के नाम का कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- ये 10 रचनायें अविवादित व प्रमाणित हैं-
  1. नैषधीयचरित 2. स्थैर्यविचारप्रकरण 3. विजय-प्रशस्ति 4. खण्डनखण्डखाद्य 5. गौडोर्वीशकुल-प्रशस्ति 6. अर्णववर्णन 7. छिन्दप्रशस्ति 8. शिवशक्तिसिद्ध 9. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू 10. ईश्वराभिसन्धि
- इनमें से नैषधीयचरित व खण्डनखण्डखाद्य के अलावा शेष 8 ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।
- श्रीहर्ष की काव्य शैली प्रसादगुणों से युक्त वैदर्भी शैली है,
- गुण में प्रमुखतः माधुर्य और ओज की प्रचुरता है।
- महाकाव्य में एक स्थल पर श्लेष अलंकार का इतना सुन्दर चित्रण किया है कि, अन्य कवि इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।
  देवः पतिर्विदुषि नैषधराजगत्या
  निर्णीयते न किमु न ब्रियते भवत्या।
  नायं नलः खलु तवातिमहा नलाभो
  यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते ॥ नैषध 13/33
- हर्ष ने उपर्युक्त श्लोक के पाँच अर्थ बताये हैं-

1. इन्द्रपक्ष में 2. अग्नि पक्ष में 3. यम पक्ष में 4. वरुण पक्ष में 5. नल पक्ष में

- नैषधीयचरित में 9 निधियों का उल्लेख है-
  महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील व खर्व

नैषधीयचरितम् का परिचय

- **लेखक** - श्रीहर्ष
- **काव्यविधा** - महाकाव्य
- **कुल सर्ग** - 22 (बाईस)
- **नायक** - नल (धीरोदात्त)
- **नायिका** - दमयन्ती
- **प्रतिनायक** - 4 नल के रूप में क्रमशः अग्नि, वरुण, इन्द्र

व यम
- **अङ्गीरस/प्रधानरस** -शृङ्गार
- **अन्य रस**-वीर, हास्य, करुण, रौद्र एवं अद्भुत आदि
- **गुण** - माधुर्य, ओज, प्रसाद (प्रायः सभी काव्य गुण पाये जाते हैं)
- **रीति** - मुख्यतः वैदर्भी
- **अलङ्कार** - अनुप्रास (मुख्य रूप से)
- **अन्य अलङ्कार** - अतिशयोक्ति आदि।
- **छन्द** - कुल उन्नीस 19 छन्दों का प्रयोग है जिनमें उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, वंशस्थ तथा शिखरिणी प्रमुख हैं। (उपजाति सर्वाधिक 7 सर्गों में है।)

प्रमुख उक्तियाँ
- **''काव्यं नवं नैषधम्''** - चाण्डु पण्डित
- **''नैषधं विद्वदौषधम्''**
- **'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः'**
- **नैषधे पदलालित्यम्** अथवा
- **''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
  नैषधे पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥''
- **उपजीव्य** - महाभारत (वनपर्व)
- **अन्य स्रोत** - शतपथ-ब्राह्मण, कथासारित्सागर, कुमारपालप्रतिबोध, लिङ्गपुराण, वायुपुराण, हरिवंश-पुराण, ब्रह्माण्ड-पुराण आदि।
- **कुल श्लोक** - 2804 (लगभग)
- **नोट** - प्रत्येक सर्ग के अन्त के परिचयात्मक सभी श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्द में हैं।
- बृहत्त्रयी का **सबसे बड़ा ग्रन्थ** नैषधीयचरितम् ही है।
- महाभारत के वनपर्व में **'नलोपाख्यान'** उनतीस अध्यायों (58-78) में है।
- नलोपाख्यान की सरल छोटी कथा 'नैषधीयचरित' में बहुत थोड़ी ही ली गयी है।
- नलोपाख्यान एक उपदेश कथा है, जबकि नैषधीयचरितम् एक सरस एवं मनोरम महाकाव्य है।
- नलोपाख्यान के आदि के छः सर्गों की घटना को श्रीहर्ष ने विशाल 22 (बाईस) सर्गों में नैषधीयचरितम् नामक ग्रन्थ में उल्लिखित किया है।

नामकरण
- निषध देश के राजा (नल) का चरित्र वर्णित होने से इस ग्रन्थ का नाम 'नैषधीयचरितम्' रखा गया है।

पात्र-परिचय

- **नल** - नायक, (निषध देश का राजा)
- **दमयन्ती** - नायिका, (विदर्भ देश की राजकुमारी)
- **भीम** - दमयन्ती के पिता, विदर्भ के राजा (कुण्डिनपुर)
- **प्रतिनायक** - इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम
- **हंस** - नल - दमयन्ती के प्रेम का सन्देशवाहक, दूत
- **अन्य पात्र** - कला आदि दमयन्ती की सखियाँ, हंस पंक्षी का परिवार आदि
- **दमन** - दमयन्ती का भाई

मङ्गलाचरण

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्ति मण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥
1/1

भावार्थ- अपने विस्तृत कीर्तिमण्डल को श्वेत छत्र के समान धारण करने वाले तेजपुञ्ज स्वरूप पृथ्वी रक्षक जिस सूर्य की कथा का पूर्णतया पान करके देवगण जैसे चन्द्रमा का आदर नहीं करते वैसे ही वह राजा नल थे। जिनकी कथा का पान करके विद्वान् लोग अमृत का भी वैसा आदर नहीं करते थे। अर्थात् राजा नल का भी कीर्तिमण्डल सूर्य के समान था। जो उत्सवों में देदीप्यमान होता था।

- 'नैषधीयचरितम्' का प्रारम्भ श्रीहर्ष ने नल रूपी कथा वस्तु को संकेत करते हुए वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण से किया है। मङ्गलाचरण वंशस्थ छन्द में हैं। वस्तुतः प्रथम सर्ग के एक से लेकर एक सौ बयालिस (1-142) श्लोकों तक वंशस्थ छन्द का ही प्रयोग किया है। (जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ) सम्पूर्ण मङ्गलाचरण चरण में संसृष्टि अलंकार है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

नल -
- नल महाकाव्य की कथा के नायक हैं, अतः इन्हें एक प्रमुख पात्र कहा जा सकता है।
- नल के पिता वीरसेन हैं। (**वीरसेनसुतकण्ठभूषणीभूत**-नै.18/4)
- श्रीहर्ष ने राजा नल के गुणों का वर्णन प्रथमसर्ग के प्रथम तीस श्लोकों में किया है।
- **धीरोदात्त नायक** के सभी गुण राजा नल में विद्यमान हैं।
- नल की करुणाशीलता का वर्णन हंस प्रसंग के समय प्रकट होती है।
- गम्भीर, करुणाशील, दानशील, दृढ़प्रतिज्ञ आदि गुणों से अलंकृत होने के कारण नल एक आदर्श नायक हैं।
- वे साधारण राजाओं की भाँति विदर्भनरेश भीमसेन से दमयन्ती की याचना नहीं करने जाते हैं।

दमयन्ती
- नैषधीयचरितम् की एक प्रमुख स्त्री पात्र दमयन्ती है जो इस महाकाव्य की **नायिका** है।
- दमयन्ती एक कुलीन नायिका है। वह विवाह के पहले अन्या (अनूठा परकीया) एवं विवाहोपरान्त स्वा (विवाहिता, स्वीया) कोटि की नायिका है।
- श्रीहर्ष ने दमयन्ती की सुन्दरता का वर्णन करते हुए त्रिलोक की सुन्दरियों से भी सर्वोत्कृष्ट बताया है-

  भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम्।
  उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ॥
  नै. 2/18
- दमयन्ती त्रिलोक की सुन्दरियों के सौन्दर्याभिमान का दमन करने वाली है अतः इसका नाम दमयन्ती रखा गया है।

➢ नारद मुनि भी दमयन्ती के अनुरूप वर केवल नल को ही बताते हैं।

➢ दमयन्ती गुणशील, रमणीय के साथ-साथ विवेकशील भी है। इसका परिचय पाँच नलों में से एक को वरण करने से मिलता है।

हंस

जिस प्रकार रामायण में हनुमान व मेघदूतम् में मेघ को दूत बनाया गया है उसी प्रकार ''नैषधीयचरितम्'' में श्रीहर्ष ने **हंस को दूत** बनाया है।

➢ इसके स्वर्ण के समान पंखों को देखकर राजा नल इसके प्रति आकर्षित होते हैं।

➢ नल के द्वारा पकड़े जाने पर हंस सबसे पहले अपने परिवार का परिचय भय, करुणा व विनम्रता पूर्वक मनुष्य वाणी में बताता है।

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दयन्नहो विधे! त्वां करुणा रुणद्धि नो॥

नै. 1/135

भीमसेन

➢ भीमसेन दमयन्ती के पिता हैं।

➢ वे विदर्भ देश के राजा एवं दमयन्ती स्वयंवर के कर्ता हैं।

➢ भीमसेन एक धर्मोचित पिता के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं।

➢ भीमसेन के पुत्र का नाम दम या दमन है।

प्रतिनायक

➢ यहाँ प्रतिनायक के रूप में चार देवताओं इन्द्र, अग्नि, वरुण एवं यम को परिलक्षित किया है।

➢ ये चारों देवता नल से मिलकर, व स्वयं नल का रूप धारण करके स्वयंवर सभा में प्रस्तुत होकर नल को छलने का प्रयास करते हैं।

➢ महाभारत में वर्णित नलोपाख्यान में कल्कि को प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया है।

नैषधीयचरितम् की टीका एवं टीकाकार

टीका	**टीकाकार**
नैषधीयप्रकाश टीका	नारायण
नैषधदीपिका	चाण्डुपण्डित (प्राचीन टीकाकार)
साहित्यविद्याधरी	विद्याधर
दीपिका	नरहरि
तिलक	चारित्रवर्धन
जीवातु	मल्लिनाथ
सुखावबोध	जिनराज

अन्य टीकाकार - आनन्दराजानक, ईशानदेव, उदयनाचार्य, गोपीनाथ, भगीरथ, आदि।

सर्गवार कथा

प्रथम सर्ग - इस सर्ग में निषध देशाधिपति महाराज नल के शौर्य, गुण, प्रताप एवं उत्कर्ष का वर्णन किया गया है।

➢ राजा नल का विदर्भनरेश भीम की पुत्री दमयन्ती के प्रति कामार्त होना एवं उपवन में जाना इसी सर्ग में है।

➢ उपवन में राजा, हंस पक्षी को पकड़ते हैं और उसकी करुण वाणी सुनकर उसे छोड़ देते हैं।

द्वितीय सर्ग -

➢ हंस के हर्षोल्लास से यह सर्ग आरम्भ होता है।

➢ हंस अपने परिवार से मिलकर पुनः कृतज्ञता प्रकट करने नल के पास उपवन में जाता है।

➢ राजा नल, हंस से दमयन्ती के पास कुण्डिनपुर जाने के लिए आग्रह करते हैं।

➢ हंस कुण्डिनपुर पहुँचकर उपवन में सखियों के साथ विहार कर रही दमयन्ती के पास रुक जाता है।

तृतीय सर्ग -

➢ दमयन्ती, हंस को पकड़ना चाहती है और इसी प्रयास में वह हंस के पीछे-पीछे सघन वन में पहुँच जाती है।

➢ वहाँ एकान्त पाकर हंस राजा नल के अलौकिक गुणों का एवं अनुपम सौन्दर्य का वर्णन करता है।

➢ दमयन्ती, राजा नल के प्रति अपनी आसक्ति प्रकाशित करती हैं।

चतुर्थ सर्ग - इसमें [illegible] आता है और सफलता की सूचना देता है।

➢ दमयन्ती, राजा नल से मिलने की इच्छा प्रकट करती है और विकल होने लगती हैं।

➢ विदर्भ नरेश भीमसेन अपनी पुत्री दमयन्ती की यह विचित्र दशा देखकर स्वयंवर का निश्चय करते हैं।

पञ्चम सर्ग -

➢ पञ्चम सर्ग का प्रारम्भ देवलोक में महर्षि नारद द्वारा इन्द्र की सभा में दमयन्ती की विलक्षण सुन्दरता का वर्णन करते हुए होता है।

➢ इन्द्र, वरुण, अग्नि, एवं यम देवताओं के साथ पृथ्वीलोक में प्रस्थान करते हैं।

➢ मार्ग में जाते हुए नल का अनुपमेय सौन्दर्य देखकर देवताओं को ईर्ष्या होती है।

➢ देवता, राजा नल को दमयन्ती के पास जाने के लिए कहते हैं एवं दमयन्ती, 'इन्द्र, वरुण, अग्नि व यम' में से किसी को वरण करें ऐसा दमयन्ती से कहने की याचना करते हैं।

➢ राजा नल ऐसा करने के लिए तैयार हो जाते हैं और इन्द्र द्वारा इन्हें अदृश्य होने की शक्ति प्रदान हो जाती है।

षष्ठ सर्ग -

➢ राजा नल अदृश्य रूप में दमयन्ती के राजप्रासाद में पहुँचते हैं।

➢ देवों की दूतियाँ नल के पहुँचने के पहले से ही किसी एक देवता को वरण करने का आग्रह कर रही थीं

➢ दमयन्ती उन्हें मना कर देती है। यह देखकर नल अत्यधिक

प्रसन्न होते हैं।

सप्तम सर्ग -

- राजा नल दमयन्ती के सौन्दर्य का अवलोकन एवं स्वयं को प्रकट कर देने का भी निश्चय कर लेते हैं।
- इस सर्ग में दमयन्ती के नखशिख का स्वरूप भी वर्णित है।

अष्टम सर्ग -

- राजा नल अपने स्वरूप को प्रकट कर, स्वयं को देवदूत बताकर, देवताओं में से किसी एक देवता का वरण करने को कहते हैं।

नवम सर्ग -

- इस सर्ग में नल एवं दमयन्ती में परस्पर वार्तालाप होता है।
- दमयन्ती राजा नल का ही वरण करने को कहती हैं।
- नल, दमयन्ती को उसकी स्वयंवर सभा में आने की स्वीकृति देकर वापस लौट आते हैं।

दशम सर्ग -

- स्वयंवर के कार्यक्रम से यह सर्ग प्रारम्भ होता है
- चारों दिशाओं से आये राजाओं से पृथ्वी के ठसाठस भर जाने का वर्णन है।
- इन्द्रादि चारों देवता भी नल रूप में स्वयंवर में उपस्थित होते हैं।
- विष्णु, देव, अप्सरायें आदि भी स्वयंवर में दर्शनार्थ होते हैं।
- विष्णु राजाओं के वर्णन के लिए सरस्वती को भेजते हैं।

एकादश सर्ग -

- सरस्वती द्वारा राजाओं के वर्णन से यह सर्ग प्रारम्भ होता है।
- नल के प्रति आसक्ति से दमयन्ती स्वयंवर सभा में बैठे सभी राजाओं को क्रमशः छोड़ते हुए आगे बढ़ती जाती है।

द्वादश सर्ग -

- इस सर्ग में भी अन्यान्य अवशिष्ट राजाओं के स्वयंवर में सम्मिलित होकर दमयन्ती द्वारा उपेक्षित होने का वर्णन है।
- सरस्वती विभिन्न देशों के नरेशों का एक-एक करके वर्णन करने के उपरान्त अन्त में नल के समीप पहुँचती है।
- दमयन्ती पाँच राजा को नल के समान देखकर आश्चर्य-चकित हो जाती हैं।

त्रयोदश सर्ग -

- राजा नल के वेश में विद्यमान पाँचों नलों का श्लेष शब्दों का प्रयोग करके वर्णन सरस्वती द्वारा किया जाता है और दमयन्ती आश्चर्य एवं संशय में पड़ जाती हैं।
- दमयन्ती देवताओं और राजा नल में अन्तर न कर सकने के कारण क्षुब्ध एवं दुःखी हो जाती है।

चतुर्दश सर्ग -

- दमयन्ती, देवताओं का मानसिक पूजन करती हैं जिससे देवता प्रसन्न होकर श्लेष शब्दों को समझने की शक्ति प्रदान करते हैं।
- दमयन्ती अपने विवेक से राजा नल को पुष्प माला पहनाकर वरण कर लेती हैं।
- तदुपरान्त सरस्वती व सभी देवता आशीर्वाद देते हैं।

पञ्चदश सर्ग -

- स्वयंवर में दमयन्ती द्वारा नल का वरण करने के उपरान्त भीमसेन विवाह की तैयारी में लग जाते हैं और नल को आमन्त्रित करते हैं।

षोडश सर्ग -

- राजा भीम बारात का पर्याप्त स्वागत सत्कार करते हैं।
- राजा नल वहाँ छः दिन निवास करके पुनः अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान करते हैं।
- राजधानी में नल का जनता द्वारा स्वागत किया जाता है।

सप्तदश सर्ग -

- स्वर्ग को प्रस्थान करते हुए देवताओं की कलि/कल्कि से भेंट हो जाती है।
- कलि/कल्कि देवताओं से बतलाता है कि वह दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहा है।
- कलि को देवता बताते हैं कि दमयन्ती, नल को वरण कर चुकी है तो वह राजा नल को राज्यच्युत होने और दमयन्ती से वियुक्त होने का शाप दे देता है।
- द्वापर के साथ कलि निषध देश में गया और उपवन में **बिभीतक** वृक्ष का आश्रय लेकर कई वर्षों तक दमयन्ती तथा नल में दोषान्वेषण किया किन्तु कोई दोष नहीं पाया।

अष्टादश -

- यह सर्ग प्रमोदोद्यान के वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- कामशास्त्र के मर्मज्ञ नल, एवं नवोढ़ा दमयन्ती की काम क्रीड़ा का वर्णन है।

एकोनविंश सर्ग -

- उषा काल से दूरारूढ़ सूर्य का क्रमिक वर्णन है।
- दमयन्ती द्वारा बन्दीगण को उपहार दिया जाता है।
- तदनन्तर आकाशगंगा में स्नान कर लौटे हुए नल, दमयन्ती के पास आते हैं।

विंश सर्ग -

- नल राजभवन में प्रवेश करते हैं, जहाँ दमयन्ती द्वारा उनका स्वागत होता है।
- दमयन्ती को स्वर्ग कमल देकर, प्रातः कालीन कृत्य के लिए उससे आज्ञा माँगते हैं।
- दमयन्ती व्यथित एवं रुष्ट होकर अपनी सखी के घर चली जाती है।
- दमयन्ती के लौटने पर नल उसकी सखी 'कला' की सहायता से उसका मान भंग करना चाहते हैं और उससे विविध प्रकार के सम्भोगों का स्मरण दिलाते हैं।
- मध्याह्न की सूचना से नल स्नानादि के लिए उठ जाते हैं।

एकविंश सर्ग -

- यह सर्ग नल के चारुचरित वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- अर्थ एवं मोक्ष पुरुषार्थों का विस्तृत चित्रण हुआ है।
- चकवी के विरह को दूर करने के लिए सूर्य से प्रार्थना करने

के बहाने सन्ध्योपासन के लिए नल नदी तट पर चले जाते हैं।

द्वाविंश सर्ग -

➢ इसके उपरान्त ग्रन्थ की प्रशस्ति तथा संक्षिप्त परिचय के साथ इस महाकाव्य का उपसंहार होता है।

नैषधीयचरित की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम् 1/39

भावार्थ- चित्रदर्शन के बाद दमयन्ती के द्वारा नल को स्वप्न में देखे जाने का वर्णन किया गया है-
''कभी प्रत्यक्ष दर्शन न किये गये पदार्थ को भी स्वप्न मनुष्यों की दृष्टि का अतिथि बना देता है अर्थात् दिखा देता है।''

2. त्यजन्त्यसञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम् 1/50

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि ''स्वाभिमानी लोग प्राण और सुख भले ही त्याग देते हैं किन्तु माँगते नहीं हैं। यह उनका व्रत होता है।''

3. स्मरः स रत्यामनिरुद्धमेव यत्सृजत्ययं सर्गनिसर्ग ईदृशः। 1/54

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि- ''प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है कि अनुराग होने पर कामदेव चञ्चलता को जन्म देता है।''

4. क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः 1/102

भावार्थ- नल के लिए (कामपीड़ित होने पर), वन में भी तरंगों के वादन, कोयलों तथा भौरों के संगीत एवं मयूर के नृत्य आदि सुख के सभी साधन (संगीत, नृत्य, वाद्य आदि), उपलब्ध हैं। ''क्योंकि भाग्यशाली पुरुष को भोग कहाँ नहीं प्राप्त होता है?''

5. विगर्हितं धर्मधनैर्निबर्हणं विशिष्य विश्वासजुषां द्विषामपि। 1/131

भावार्थ- हंस, राजा नल की निन्दा करते हुए कहता है कि - हे राजन! मेरा वध करने से आपको प्राणिवध के साथ विश्वास - घात का भी पाप लगेगा ''क्योंकि विश्वास युक्त शत्रुओं का भी वध धर्माचार्यों के द्वारा विशेष रूप से निन्दनीय कहा गया है।

6. नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना ।

भावार्थ- राजा नल ने स्वयं कपट से नारायण की तरह अपने शरीर को छोटा करके शब्द रहित चरण से हंस के पास जाकर हंस (पक्षी) को हाथ से पकड़ लिया।

7. सरोरूहं तस्य दृशैव तर्जितम्, जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः। ''कुतः परं भव्यमहो महोयसी, तदाननस्योपमितौ दरिद्रता।।'' 1/24

भावार्थ- नल के नेत्र के द्वारा कमल और मुस्कुराहट के द्वारा चन्द्रमा की शोभा जीत ली गई है। ''नल से अधिक सुन्दर वस्तु क्या हो सकती है, आश्चर्य है कि नल के मुख की उपमा में बहुत दरिद्रता हो गई है।''

8. अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा 3/93

भावार्थ- दमयन्ती कहती है, हे हंस! उचित अवसर देखकर ही नल के समक्ष यह प्रस्ताव रखना, ''क्योंकि, जो जन जल पीकर पूर्णतः तृप्त हो चुका हो, उसे स्वादिष्ट, सुगन्धि और अति शीतल जल की धारा में भी स्वाद नहीं आता।''

9. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।

भावार्थ- इन्द्र का सम्पूर्ण कपटाचार जान लेने पर नल ने वैसे छल वाक्यों का प्रयोग करना चाहा जैसे कि इन्द्र ने किया था, ''क्योंकि कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती।''

10. कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (3/17)

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है कि स्वर्ण कमलिनियों के अग्रभाग खाने वाले हम अपने खाद्य के अनुरूप ही शरीर शोभा रूप समृद्धि के भाजन हैं, ''क्योंकि कार्य कारण से ही गुण प्राप्त करता है।''

11. घनाम्बुना राजपथेऽति पिच्छिले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते।। (9/36)

भावार्थ- दमयन्ती की सखी द्वारा दमयन्ती से कहा गया है जिस विपत्ति में धर्म के अनुसरण से रक्षा नहीं हो पाती है, उस समय धर्म के विरुद्ध आचरण भी उचित होता है, ''क्योंकि वर्षा जल से राजमार्ग में कीचड़ हो जाने पर समझदार व्यक्ति अपथ से भी कहीं-कहीं चला करते हैं।''

**12. ममापि साधु प्रतिभात्ययं क्रमः
चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः (9.56)**

भावार्थ- नल कहता है कि- हे दमयन्ती तू धर्मशील है और यमराज को भी धर्म पर चलने वाला बताया जाता है अतः तुम्हारे लिए यमराज ही वर के रूप में योग्य है उनका ही तुम्हें वरण करना चाहिए ''क्योंकि योग्य से योग्य का संगम सुशोभित होता है।''

13. झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः 5/109

भावार्थ- नल देवताओं से कहता है कि दमयन्ती को हृदय में बसाकर श्वास लेने वाला मैं (नल) उसके सामने किस प्रकार भावों को सभालने में समर्थ हो सकूँगा ''क्योंकि विषयों को विद्वान् भी कठिनता से ही जीत पाते हैं।''

14. द्यौर्न काचिदथवास्ति निरूढा सैव सा चलति यत्र । हि चित्तम् (5/57)

भावार्थ- जहाँ चित्त रमे वहीं स्वर्ग है, इसी भाव का वर्णन है - विद्वान् होकर भी जब कोई स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर अनुसरण करे तो खेद है। इससे तो यही स्पष्ट होता है कि 'स्वर्ग कोई विशिष्ट स्थान नहीं है, क्योंकि जहाँ चित्त रमता है वहीं स्वर्ग है।'

15. नैयाय्यमुपेक्षते हि कः।

भावार्थ- नल दमयन्ती से कहता कि यदि तुम नल के बिना

अपने को फाँसी लगाना चाहती हो, तब अन्तरिक्ष जाती तुमको अन्तरिक्ष में वसने वालों का स्वामी इन्द्र हर लेगा, "क्योंकि न्याय से प्राप्त वस्तु की कौन उपेक्षा करता है?" अर्थात् कोई नहीं।

16. ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् (2.48)

भावार्थ- हंस राजा नल से, दमयन्ती के समीप जाने की आज्ञा माँग रहा है इसी विषय के लिए वह स्वयं को धिक्कारता है कि ओह! उसने आज्ञा क्यों माँगी "क्योंकि सज्जन व्यक्ति अपनी उपयोगिता कार्य से ही बखानते है, कण्ठ से नहीं।"

17. भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः? (17/70)

भावार्थ- हे बुद्धिमानों! शम क्या है? (कुछ नहीं), प्रिया की प्राप्ति के निमित्त परिश्रम करो, क्योंकि "जलकर राख हुए शरीर का पुनः आगमन कहाँ होता है? (अर्थात् नहीं होता है)।

18. गरौ गिरः पल्लवनार्थलाघवे मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता (9/8)

भावार्थ- नल, दमयन्ती से कहते हैं कि "विशेष प्रयोजन से शून्य कुल व नाम के विषय में बताना मेरी जीभ द्वारा उदासीनता होगी "क्योंकि विस्तार और संकोच दोनों वाणी के विष रूप हैं और थोड़ा किन्तु सारपूर्ण कथन वचनों का पाण्डित्य है।"

19. मुखं विमुच्य श्वसितस्य धारया वृथैव नासापथधावनश्रमः (9/44)

भावार्थ- नल, दमयन्ती से कहते हैं कि हाय! तुमने सब देवों के नायक (देवेन्द्र) को छोड़कर मनुष्य नल का आदर किया है जो पूर्णतः भ्रम है, "क्योंकि निःश्वास धारा द्वारा मुँह को छोड़कर नाक के मार्ग से आना-जाना व्यर्थ ही है।"

20. विवेकधाराशतधौतमन्तः सतां न कामः कलुषीकरोति (8/54)

भावार्थ- दमयन्ती की वीणा-वाणी द्वारा प्रशंसित मन वाला नल धैर्य से काम की अवज्ञा करते हुए कहता है, "विवेक जल की धाराओं से शतवार धोकर उजले किये गये सज्जनों के अन्तःकरण को काम दूषित (काला, विकृत) नहीं करता।"

21. सतां महत्संमुखधावि पौरुषम् । (12/8)

भावार्थ- सगर पुत्रों द्वारा समुद्र खोदे जाने का वर्णन पुराण प्रसिद्ध है यह उनके पुरुषार्थ का ही फल था। क्योंकि "सज्जनों का पुरुषार्थ बड़ों के सम्मुख दौड़ते हुए आता है।"

22. साधने हि नियमोऽन्यजनानां योगिनां तु तपसाऽखिलसिद्धिः (5/3)

भावार्थ- नारद ने बिना किसी वाहन के ही आकाश यात्रा कर डाली, क्योंकि "साधन तो सामान्य जनों को आवश्यक हैं, योगियों की तो तप से ही सब सिद्धि हो जाती है।"

23. स्तवे रवेरप्सु कृताप्लपवैः कृते न मुद्धती जातु भवेत्कुमुद्वती। (9/148)

भावार्थ- यदि वेद देवों के गुणों के गायक हैं तो इससे दमयन्ती का क्या प्रयोजन है? "क्योंकि जल मे स्नान किये व्यक्तियों द्वारा सूर्य की स्तुति से कुमुदिनी कभी प्रसन्न नहीं होती है।"

24. ह्रदे गभीरे हृदि चावगाढे शंसन्ति कार्यावतरं हि सन्तः (3/53)

भावार्थ- हंस नल के बारे में थोड़ा बताकर दमयन्ती के मनोभाव को जानने की इच्छा से चुप हो गया, "क्योंकि सज्जन गहरे सरोवर के आलोडित होने और गूढ़ हृदय का ज्ञान होने पर कार्यावतर करते हैं।"

25. फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मेनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः (1/133)

भावार्थ- हंस, राजा नल से कहता है, कि "इस प्रकार मुनि के समान मेरी (हंस) भी जीविका कमलों के फल और कन्द मूल ही है" और मेरे द्वारा कोई अपराध भी नहीं किया गया है। अतः मुझे मारने (दण्डित) से पृथ्वी भी लज्जित क्यों नहीं हो रही है।

26. मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी (1/135)

भावार्थ- हंस अपनी कारुणिक दशा का वर्णन करते हुए नल से कहता है- "मुझ इकलौते पुत्र तथा वृद्धावस्था से पीड़ित मेरी माता है, नवप्रसूता तथा पतिव्रता मेरी पत्नी है।" उन दोनों का आलम्ब मैं ही हूँ। हे विधाता! उनको पीड़ित करते हुए तुमको करुणा रोकती नहीं है?

27. अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छयच्छाय लवोऽपि पल्लवे। 1/20

भावार्थ- इसमें कवि ने नल के यौवन के आगमन से शारीरिक सौन्दर्य में हो रही अभिवृद्धि का वर्णन किया है - "नल के चरणों ने कमलों के प्रति घृणा (या दया) धारण की, नवकिसलयों में उनके हाथ की शोभा का छाया मात्र भी कहाँ था! अर्थात् नहीं था।"

28. कथाप्रसङ्गेषु मिथस्सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते । (1/35)

भावार्थ- इसमें दमयन्ती के श्रवणानुराग का वर्णन "कभी भी वार्तालाप करते समय, नल नामक तृण के विषय में भी किसी के द्वारा नल शब्द सुन लेने मात्र से दमयन्ती, राजा नल के विषय में चर्चा हो रही है ऐसा समझ कर उनकी बात ध्यान से सुनने लगती थी।"

29. मृगयाऽघाय न भूभृतां ध्नताम् 2/10

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के शिकार से सम्बन्धित है- "पृथ्वीपालकों की मृगया पापनिमित्तिका नहीं होती।"

30. मुग्धेषु कः सत्यमृषाविवेकः 8/18

भावार्थ- काम के वशीभूत दमयन्ती, नल के प्रति शालीनता के कारण चुप नहीं रह सकी क्योंकि "मूढ़ हुए व्यक्तियों में सत्यासत्य का विवेक कहाँ?" अर्थात् नहीं होता है।

31. गुरूपदेशं प्रतिमेव तीक्ष्णा प्रतीक्षते जातु न कालमार्तिः 3/91

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है सोच-विचार कर कार्य करना विलंब सहन करना है, अतः शीघ्रता करो, "शिष्य की

कुशाग्र तुल्य, तीव्र, प्रजा के समान गुरु के उपदेश की प्रतीक्षा नहीं करती है।'' वैसे भी पीड़ा विलम्ब की प्रतीक्षा नहीं करती।

32. जनः किलाचारमुचं विगायति 9/13

भावार्थ- नल, स्वनामोच्चारण न करने का कारण बताते हैं कि सज्जन अपना नाम नहीं लेते, महापुरुषों के आचार व्यवहार की परम्परा है। इसलिए वह नाम कहने को उत्साहित नहीं हो पा रहा है, ''क्योंकि लोक, निश्चय ही आचार व्यवहार छोड़ देने वाले की निन्दा करता है।''

33. तरुणीस्तन एव दीप्यते मणिहारावलिरामणीयकम् (2/44)

भावार्थ- हंस, नल से कह रहा है कि हे वीर! दमयन्ती की शृंगार चेष्टा केवल तुझसे ही सुशोभित होगी, क्योंकि मणिमाल की रमणीयता तरुणी के कुचों पर ही दिखती है (शोभित होती है।)''

34. तं धिगस्तु कलयन्नपि वाञ्छामर्थिवागवसरं सहते यः। 5/83

भावार्थ- नल विचार कर रहें हैं कि (देवों का) अभीष्ट कैसे जाना जाय कि वे क्या चाहते हैं? बिना माँगे ही शीघ्र दान देना श्रेष्ठ है, ''जो दाता याचक की इच्छा को समझता हुआ भी याचकों को कहने का अवसर देता है उसे धिक्कार है।''

35. द्विषन्मुखेऽपि स्वदते स्तुतिर्या, तन्मिष्टता नेष्टमुखे त्वमेया। 8/51

भावार्थ- प्रिया दमयन्ती की प्रिय वाणी का पान कर नल पूर्णतः मग्न हो गये क्योंकि ''जो प्रशंसावचन शत्रु के मुख में भी स्वाद देते हैं, वे प्रिय मुख से कहे जायें तो उनकी मिठास क्या असीमित न होगी?'' होगी ही।

36. न मोघसंकल्पधराः किलामराः। 9/145

भावार्थ- दमयन्ती - नल ने मुख से चन्द्र को और शोभा से काम को जीत लिया है किस कारण ये दोनों मेरे वध के लिए प्रण किये बैठे हैं यदि नल की प्रिया होने के कारण है तो मैं जीत गई क्योंकि ''देवता प्रण (संकल्प) धारण निश्चय ही निष्फल नहीं करते हैं।''

37. नामापि जागर्ति हि यत्र शत्रोस्तेजस्विनस्तं कतमे सहन्ते। 8/74

भावार्थ- चंद्र पर कोप करता हुआ मानो आहुति में दिये गये सोम रस का आचमन किया करता है, ''क्योंकि जिसमें शत्रु का नाम भी प्रकट होता है, उसे कौन तेजस्वी जन सहन करते हैं?'' अर्थात् कोई नहीं।

38पलालजालैः पिहितः स्वयं हि प्रकाशमासादयतीक्षुडिम्भः। (8/2)

भावार्थ- देवताओं के कथन कितने समय तक नल को अन्तर्धान कर सकते हैं, ''क्योंकि तिनको से ढका ईख का अंकुर अपने आप ही प्रादुर्भूत हो जाता है।''

39. पिपासुता शान्तिमुपैति वारिणा, न जातु दुग्धान् मधुनोऽधि कादपि । 9/5

भावार्थ- दमयन्ती, नल कहती है कि- कर्णामृतरूपी तुम्हारी वाणी तो सुन ली किन्तु आप के नाम के विषय में सुनने की आकांक्षा शिथिल नहीं हुई। क्योंकि ''प्यास जल से शान्त होती है, अधिक दूध अथवा मधु से नहीं।''

40. बिम्बानुबिम्बो हि विहाय धातुर्न जातु दृष्टातिसरूपसृष्टिः (8/46)

नल को अपने सम्मुख देखकर दमयन्ती नल का प्रतिबिम्ब समझ रही है इसी भाव का वर्णन है -

संसार रूप सागर में प्रतीत होता है कि वीरसेन पुत्र नल प्रतिबिम्ब रूप में विद्यमान हैं, ''क्योंकि विधाता की अतीत समान रूप वाली सृष्टि बिम्ब-प्रतिबिम्ब को छोड़कर कहीं नहीं देखी गयी।''

41. विजृम्भितं यस्य किल ध्वनेरिदं विदग्धनारीवदनं तदाकरः (9/50)

भावार्थ- दमयन्ती से नल कहते हैं कि-

दमयन्ती!तूने देवताओं में से एक को निषेध रूप में स्वीकारा ही है, तेरी ही वाणी में वक्रता है, ''क्योंकि यह जिस ध्वनि (व्यंजनावृत्ति) का प्रसिद्ध विलास है, उसका उद्भव स्थान विदुषी नारी का मुख ही है।''

42. विधेरपि स्वारसिकः प्रयासः परस्परं योग्यसमागमाय (3/48)

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है- रात्रि से चन्द्र, उमा से शिव व लक्ष्मी से विष्णु के समान ही संयोग अच्छा होता है, कारण कि ''विधाता भी परमोपयुक्त प्रयत्न परस्पर योग्य सम्मिलन के लिए ही करता है।''

43. शंसति द्विनयनी दृढनिद्रां द्राङ्निमेषमिषघूर्णनपूर्णा (5/126)

भावार्थ- इसमें दोनों नयनों के झपकने से मृत्यु की ओर संकेत का एवं जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन किया गया है - नल सोच रहे हैं कि ''झटपट पलक झँपाने के मिस तन्द्रा से पूर्ण दोनों नेत्र मृत्यु का कथन करते हैं।''

44. संदर्भ्यते दर्भगुणेन मल्लीमाला न मृद्वी भृशकर्कशेन (3/49)

दमयन्ती के लिए योग्य वर नल जैसे समस्त पुरुषोचित गुण वाले के अतिरिक्त कोई नहीं है। इसी भाव का वर्णन है-

दमयन्ती जैसी स्त्रीगुण सागर की प्रवाह रूपा, को नल के अतिरिक्त परुष से संयुक्त करना उचित नहीं होगा, ''क्योंकि कोमल मल्लिका पुष्पमाला को अत्यन्त कर्कश कुश तन्तु से गुँथना उचित (योग्य) नहीं होता है।''

45. सुरेषु विघ्नैकपरेषु को नरः करस्थमप्यर्थमवाप्तुमीश्वरः (9/83)

भावार्थ- नल, दमयन्ती का हित समझकर उसे समझाते हुए कहते हैं कि -

हे दमयन्ती! ''देवों के एकान्तत! विघ्नकारी हो जाने पर हाथ में आयी वस्तु को भी कौन मनुष्य प्राप्त करने में समर्थ है?'' अर्थात् कोई नहीं।

46. स्वतः एव सतां परार्थता ग्रहणानां हि यथा यथार्थता 2/61

भावार्थ- हंस, राजा से कहता है कि- हे राजा मैं जो आपको प्रवर्तित कर रहा हूँ, वह क्या पिष्ट-प्रेषण नहीं है? अर्थात् है "क्योंकि जैसे ज्ञान स्वतः प्रमाण होते हैं, वैसे ही सज्जनों की परोपकारशीलता भी स्वतः प्रमाण होती है।"

स्वतः सतां ह्रीः परतोऽपि गुर्वी 6/22

भावार्थ- कवि ने नल को स्वयं अनौचित्य पर लजाने का वर्णन किया है-

लज्जाहीन सुन्दरियों को कटाक्षों से देखते हुए नल अनुराग सहित पुरुष की तरह लज्जित हो गये, क्योंकि "सज्जनों को अन्य जनों की अपेक्षा अपने से ही लज्जा अधिक होती है।"

48.स्वभावभक्तिप्रवणं प्रतीश्वराः कया न वाचा मदमुद्गरन्ति 9/26

भावार्थ- दमयन्ती कहती है कि- "समर्थ जन अपने भाव और भक्ति में लीन भक्त के प्रति किस वाणी से प्रसन्नता नहीं व्यक्त करते हैं?" (अर्थात् प्रत्येक वाणी से व्यक्त करते हैं।)

नैषधीयचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'नैषधीयचरितम्' किस श्रेणी की रचना है? - **महाकाव्य**
- 'नैषधीयचरितम्' कथा का आधार है - **महाभारत**
- 'नैषधीयचरितम्' में नायक कौन है? - **नलः**
- 'नैषधीयचरितम्' में कितने सर्ग स्वीकृत किये गये हैं? - **22**
- 'नैषधीयचरितम्' में मुख्य रस कौन-सा है? - **शृङ्गाररसः**
- किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए 'औषधि' कहा जाता है? - **नैषधीयचरितम्**
- 'निषध'-देशेन सम्बन्धितस्य पात्रस्य नामास्ति - **नलः**
- 'विद्वदौषधम्' किं काव्यं निगदितम्? - **नैषधीयचरितम्**
- 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' इति कथनमस्ति - **हंसस्य**
- किस काव्य में एक पात्र के पाँच रूप हैं? -**नैषधीयचरितम् में**
- हंस का विलाप वर्णन है - **नैषधीयचरितम्**
- "चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं, न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्" कः सः? - **नलः**
- "अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छय-च्छायलवोऽपि पल्लवे।" अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्यं वर्णितम्? - **नलस्य**
- 'कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।' अत्र 'नल' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः - **तृणम्**
- नैषधीयचरिते काः नलस्य दन्तैः उपमिताः? - **विद्याः**
- "निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।"
- इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता? - **नलस्य**
- नल और दमयन्ती की कथा कहाँ चित्रित है? -**नैषधीयचरितम्**
- 'श्रीहर्ष' द्वारा रचित 'नैषधीयचरित' में किस रीति की प्रधानता है? - **वैदर्भी रीति**
- 'शृङ्गारामृतशीतगुः' विशेषण किस काव्य के लिए प्रसिद्ध है? - **नैषधीयचरितम्**
- मल्लिनाथेन कस्य ग्रन्थस्य टीका कृता? - **नैषधीयचरितस्य**
- नैषधीयचरिते कस्यालङ्कारस्य वैशिष्ट्यम्? - **श्लेषस्य**
- "त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्" इयमुक्तिः - **नैषधीयचरितात्**
- 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।' कं प्रति कस्येयमुक्तिः? - **नलं प्रति हंसस्य**
- नलस्य स्मितेन कस्य श्रियः जिताः? - **विधोः**
- 'क्वचिद् बुधैरप्यपथेन गम्यते' सूक्ति का स्रोत है? - **नैषधीयचरितम्**
- 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः' नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति - **हंसस्य**
- नैषधीयचरितस्य नायिका का? - **दमयन्ती**
- हंसः कस्य दूतः? - **नलस्य**
- नलदमयन्ती कथाचित्रणं कस्मिन् महाकाव्ये प्राप्यते? - **नैषधीयचरिते**
- 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि' इत्यत्र अर्थालङ्कार अस्ति - **व्यतिरेकः**
- 'अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः' इति वाक्यं कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते? - **नैषधीयचरिते**
- नैषधीयचरितमहाकाव्यस्य नायिका .... अस्ति? - **स्वकीया**
- 'धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान् मम हेमजन्मनः' इति वाक्यं कः कं वदति? - **हंसो नलं वदति**
- 'नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना' – पंक्तिरियं कस्मात् काव्यात् उद्धृताऽस्ति? - **नैषधमहाकाव्यात्**
- 'भवेदमीभिः कमलोदयः कियान्' इत्यत्र 'अमीभिः' इत्यनेन सर्वनाम्ना परामृश्यन्ते - **हंसपक्षाः**
- 'गतिस्तयोरेष जनः' इत्यत्र हंसः कयोः गतिः? - **मातृवरटयोः**
- 'मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता'-कस्य कवेः काव्यमिदम्? - **श्रीहर्षस्य**
- 'अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी।' इति कस्य वर्णनम्? - **नलस्य**
- 'नलोपाख्यानाधारितं काव्यं किम्? - **नैषधीयचरितम्**

4.15 राजतरङ्गिणी

महाकवि कल्हण का परिचय

- **कवि का नाम-** कल्हण
- **वास्तविक नाम-** कल्याण
- **पिता का नाम-** महामात्य चम्पक प्रभु या चण्पक।
- कल्हण के पिता, कश्मीर-नरेश हर्ष के महामात्य या राजमन्त्री थे। समाज में उनको उच्चस्थान प्राप्त था।
- **समय-** जन्म 1098 ई० के लगभग।
- **जन्मस्थान-** कश्मीर का परिहासपुर
- **वंश/जाति-** यद्यपि कल्हण नें अपनी जाति कहीं नहीं लिखा है, फिर भी 'जोनराज' के अनुसार कुलीन ब्राह्मण होने

का अनुमान किया जा सकता है।

- **उपासक-** राजतरङ्गिणी के अनुसार यद्यपि कल्हण का शिव भक्त होना प्रमाणित होता है तथापि उनमें अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता एवं सहानुभूति थी।
- **कृति-** 'राजतरङ्गिणी' एकमात्र
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्

अन्य विशेषताएं

- कल्हण ने वेद, रामायण, महाभारत, पुराण, काव्य, ज्योतिष, अर्थ-शास्त्र आदि का गहन अध्ययन एवं भारतवर्ष का पर्याप्त भ्रमण किया था।
- उनका भौगोलिक ज्ञान एवं सामुद्रिक ज्ञान भी अत्यन्त प्रौढ़ था।
- कल्हण का देश-प्रेम और कवित्व दोनों उच्चकोटि के हैं, राजतरङ्गिणी लिखकर उन्होंने दोनों ही क्षेत्रों को एक महान् अवदान दिया है।
- **आश्रयदाता-** अलकदत्त (राजाश्रय छोड़ने के बाद)
- अलकदत्त की ही प्रेरणा से कल्हण ने राजतरङ्गिणी लिखा।
- **रीति-** वैदर्भी रीति।
- **शैली-** प्रायः महाभारत जैसी।

राजतरङ्गिणी का परिचय

- **लेखक-** कल्हण
- **काव्यविधा-** कल्हण नें स्वयं इसे 'कथा' एवं 'संदर्भ' कहकर उल्लिखित करते हैं।

इयं नृपाणामुल्लासे ह्रासे वा देशकालयोः।
भैषज्यभूतसंवादिकथा युक्तोपयुज्यते॥ (राज01/21)
संक्रान्तप्राक्तनानन्त व्यवहारः सुचेतसः।
कस्येदृशो न सन्दर्भो यदि वा हृदयङ्गमः॥ (राज01/22)

- **विभाजन-** 8 तरङ्गों में।
- **श्लोक संख्या-** 7826 (सात हजार आठ सौ छब्बीस)

तरङ्ग	श्लोक संख्या
प्रथम	373
द्वितीय	171
तृतीय	530
चतुर्थ	720
पञ्चम	483
षष्ठ	368
सप्तम	1732
अष्टम	3449 (सर्वाधिक श्लोक)

कुल श्लोक-7826

- **उपजीव्य-**'नीलमतपुराण' एवं ग्यारह अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ।

दृग्गोचरं पूर्वसूरिग्रन्था राजकथाश्रया।
मम त्वेकादशगता मतं नीलमुनेरपि॥ (राज01/14)

- इसके अतिरिक्त भी कवि ने राजा के अभिलेख, प्रशस्ति-पत्र एवं वंशावलियों के देखे जाने का भी उल्लेख किया है।
- **प्रधान रस/अङ्ग रस/मुख्य रस-** शान्त रस
- **गौण रस/अङ्ग रस-** शृङ्गार, वीर तथा हास्य रस
- **छन्द-** मुख्य रूप से अनुष्टुप् का आश्रय लिया गया है। किन्तु बीच-बीच में बड़े छन्दों जैसे-वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और हरिणी का भी प्रयोग है।
- **अलङ्कार-** सहज रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त आदि अर्थालङ्कार तथा अनुप्रास आदि शब्दालङ्कार का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है।
- **रीति-** मुख्यतः वैदर्भी रीति किन्तु कहीं-कहीं पर पाञ्चाली और गौडी रीति का भी प्रयोग है।
- राजतरङ्गिणी में वैदर्भी रीति के लिए अनुष्टुप् छन्द तथा गौडी तथा पाञ्चाली रीति के लिए बड़े छन्दों का प्रयोग है।
- **गुण-** प्रसाद के साथ ओज और माधुर्य।

राजतरङ्गिणी नाम की सार्थकता

- राजतरङ्गिणी का हिन्दी अर्थ है - 'राजाओं की नदी।
- 'राज्ञाम् तरङ्गिणी' इति राजतरङ्गिणी- **षष्ठी तत्पुरुष समास।**
- इसमें प्रारम्भ से लेकर अर्थात् महाभारत काल से लेकर 1150 ई० तक के समस्त कश्मीरी राजाओं का रोचक वर्णन होने के कारण इसका नाम राजतरङ्गिणी रखा गया है।
- हजारों वर्षों के ऐतिहासिक राजाओं के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में राजतरङ्गिणी नाम अत्यन्त समीचीन है।

राजतरङ्गिणी का मङ्गलाचरण

भूषाभोगिफणारत्नरोचिः सिचयचारवे।
नमः प्रलीनमुक्ताय हरकल्पमहीरुहे॥ (1/1)

भावार्थ- अलङ्कार स्वरूप सर्पों के फणामण्डल में विद्यमान रत्नों की दीप्ति से देदीप्यमान एवं मुक्तजनों द्वारा आधारित शिव रूपी कल्पतरु को नमस्कार है।

भालं वह्निशिखाङ्कितं दधदधिश्रोत्रं वहन्संभृतं,
क्रीडत् कुण्डलिजृम्भितं जलधिजच्छायाच्छकण्ठच्छविः।
वक्षो विभ्रदहीन कञ्चुकचितं बद्धाङ्गनार्धस्य वो
भागः पुङ्गवलक्ष्मणोस्तु यशसे वामोऽथ वा दक्षिणः॥ (1/2)

भावार्थ- तृतीय नेत्र में स्थित अग्नि की लपटों तथा केसर के तिलक से सुशोभित ललाटयुक्त एवं केलि करते हुए सर्पों के चपल मुख तथा झूलते हुए कुण्डलों से शोभायमान कानों वाला, समुद्र से उत्पन्न अथवा शङ्ख की दीप्ति से निर्मल कण्ठ की शोभा से सम्पन्न, वृष के चिह्न से चिह्नित, उत्तम कञ्चुकी से आवृत्त वक्षःस्थल एवं आधी देह से नर और आधी से नारी का वेष धारण किये हुए शिवजी का दाहिना अथवा वामभाग आप लोगों का कल्याण करे।

- राजतरङ्गिणी में दो श्लोकों के माध्यम से भगवान् शिव की वन्दना की गयी है।
- प्रथम श्लोक में नमस्कारात्मक तथा दूसरे श्लोक में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- प्रथम श्लोक में अनुष्टुप् छन्द तथा रूपक अलङ्कार का प्रयोग हुआ है।

- द्वितीय में शार्दूलविक्रीडित छन्द और अनुप्रास अलङ्कार प्रयुक्त हुआ है।
- मङ्गलाचरण की ही पद्धति को आगे बढ़ाते हुए राजतरङ्गिणीकार महाकवि कल्हण ने सुकवि जनों की वंदना भी की है।

राजतरङ्गिणी का अन्तिम श्लोक

गोदावरी सरिदिवोत्तुमुलैस्तरङ्गैः
वक्त्रैः स्फुटं सपदि सप्तभिरा पतन्ती।
श्रीकान्ति राजविपुलाभिजनाब्धिमध्यं
विश्रान्तये विशति राजतरङ्गिणीयम्। (8/3449)

भावार्थ- जिस प्रकार गोदावरी नदी सातमुखों से निकल कर तथा अपनी ऊँची-ऊँची तरङ्गों को उछालकर बहती हुई समुद्र में जाकर विश्राम करती है, उसी प्रकार राजाओं की नदी यह राजतरङ्गिणी अपने पहले वाले सात तरङ्गों के साथ बहती हुई उच्चकुलोत्पन्न श्रीकान्तिराज रूपी समुद्र में विश्राम करने के लिए प्रविष्ट हो रही है।

- यह अन्तिम श्लोक प्रकारान्तर से राजा जयसिंह के विषय में है।
- वसन्ततिलका छन्द एवं उपमा तथा रूपक अलङ्कारों का प्रयोग है।

राजतरङ्गिणी का तरङ्गवार संक्षिप्त कथानक

प्रथम तरङ्ग- राजतरङ्गिणी के प्रथम तरङ्ग में गोनन्द प्रथम से लेकर युधिष्ठिर तक 75 राजाओं का विवरण है। इन राजाओं ने 1014 वर्ष 9 दिन तक कश्मीर पर राज्य किया।

- इन राजाओं में गोनन्द तृतीय के पहले तक 52 राजा+गोनन्द तृतीय से युधिष्ठिर तक 23 राजा- 52+23=75
- प्रथम तरङ्ग में गोनन्द तृतीय से पूर्व केवल 19 राजाओं के नामों का वर्णन है। शेष 33 राजाओं के नाम अप्राप्त हैं।

द्वितीय तरङ्ग- पूरे राजतरङ्गिणी में द्वितीय तरङ्ग सबसे छोटा है इसमें सिर्फ 171 श्लोक हैं। इस तरङ्ग में कश्मीर के 192 वर्षों के कुल छः राजाओं के कार्यकाल का वर्णन किया गया है।

तृतीय तरङ्ग- इस तरङ्ग में गोनन्दवंश के अन्तिम राजा बालादित्य तक दश राजाओं के 536 वर्षों के राज्यकाल का वर्णन है।

चतुर्थ तरङ्ग- इसमें 260 वर्षों तक राज्य करने वाले 17 राजाओं का इतिहास निरूपित है।

पञ्चम तरङ्ग- अवन्ति वर्मा के राज्यारोहण के साथ उत्पथवंश के सूत्रपात्र का वर्णन तथा कल्यपालवंशज संकट वर्मा, सुगन्धा देवी और शङ्करवर्धन के राज्यकाल का निरूपण है। इस तरङ्ग में 83 वर्ष 4 माह के शासन काल का वर्णन है।

षष्ठ तरङ्ग- इसमें 10 राजाओं के 936 ई० से 1003 ई० तक अर्थात् 64 वर्ष, 8 माह, 15 दिन तक के कश्मीरी शासकों का विवरण दिया गया है।

सप्तम तरङ्ग- इस तरङ्ग में कश्मीर के छः राजाओं के 98 वर्ष (सन् 1003 से 1101 ई०) तक के समय का चित्रण है। ये छः राजा उदयराज के वंशज हैं।

अष्टम तरङ्ग- यह तरङ्ग, राजतरङ्गिणी का सबसे बड़ा भाग है। इस तरङ्ग में सातवाहन वंश के उच्चल, सुस्सल, भिक्षाचर और जयसिंह आदि राजाओं की जीवनगाथा तथा कृत्यों का प्रत्यक्षीकरण कराया गया है।

कुछ महत्वपूर्ण तत्थ्य

- राजतरङ्गिणी एक ऐसी रचना है, जिसे संस्कृत के महाकाव्यों का 'मुकुटमणि' कहा जा सकता है।
- राजतरङ्गिणी के समस्त राजा कश्मीरी हैं और स्वयं कवि भी कश्मीर के ही निवासी हैं।
- राजतरङ्गिणी में वर्णित समस्त राजाओं में प्रथम राजा गोनन्द प्रथम तथा अंतिम राजा जयसिंह हैं।
- राजतरङ्गिणी के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध भाग अधिक प्रामाणिक है।
- एक ही ग्रन्थ में इतने सारे राजाओं को ऐतिहासिक वर्णन प्राप्त होने के कारण 'कल्हण' विदेशों में भी आदरणीय हैं।
- महाभारतकाल से लेकर सन् 1150 ई० तक के कश्मीरी नरेशों का इतिवृत्त तथा चरित्राङ्कन हुआ है।
- राजतरङ्गिणी के प्रारम्भिक छः तरङ्ग छोटे हैं तथा अन्तिम दो बड़े हैं, जिनमें आठवाँ तरङ्ग सर्वाधिक बड़ा है।
- आरम्भ से लेकर 812 ई० तक के राजाओं का वर्णन, बिना तिथि, किन्तु 813-814 ई० से तिथि क्रम का स्पष्ट उल्लेख कल्हण ने किया है, जिनमें आठवाँ तरङ्ग तो कवि की स्वयं आँखो देखी और अनुभूत घटनाओं का प्रामाणिक लेखा-जोखा है।
- राजा हर्ष के उत्थान और पतन का विशद विवरण भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।
- कल्हण ने हर्ष का रोमाञ्चक इतिहास 1400 पद्यों में लिखा है, यह अंश उनके समय का न केवल कच्चा-चिट्ठा, बल्कि एक विराट् महाकाव्य भी है।
- कल्हण ने राजतरङ्गिणी की रचना 1149 ई० में प्रारम्भ करके इसके अगले वर्ष सन् 1150 में पूर्ण की। इसके लिखने के समय कश्मीर में जयसिंह का शासन था।
- राजतरङ्गिणी में लगभग 2500 वर्षों का कश्मीरी इतिहास है।
- इसमें 400 घटनाएं तिथिक्रम से युक्त हैं।
- कल्हण ने किसी राजा का वर्णन पक्षपातपूर्ण नहीं किया है बल्कि राजाओं के गुणों के साथ दुर्गुणों का वर्णन भी न्यायाधीश की भाँति, समान रूप से किया है।

राजतरङ्गिणी परम्परा

- इस राजतरङ्गिणी की परम्परा को 'जोनराज' ने आगे बढ़ाया जिसमें जयसिंह के पश्चात् के राजाओं का वर्णन है।
- जोनराज ने अपने समय के राजा जैनुल-आब्दीन (1419 से 1470 ई०) तक के इतिवृत्त को बनाए रखा।
- इनकी राजतरङ्गिणी को **'जोनराजकृत-राजतरङ्गिणी'** या **'द्वितीयराजतरङ्गिणी'** कहा जाता है।
- इसके बाद जोनराज के शिष्य 'श्रीवर' ने इसको क्रमिक रूप से चलाया। जोनराज की मृत्यु 1459ई. में ही हो गयी।
- इसमें श्रीवर ने जैनुल-आब्दीन (1459) से 1486 तक का वर्णन किया है। यह **'तृतीय-राजतरङ्गिणी'** है।
- इसके आगे इस परम्परा को **'शुक'** नामक कवि ने बढ़ाया और सन् 1596ई० तक का चित्रण किया। यह राजतरङ्गिणी का **चौथा प्रवाह** है।
- राजतरङ्गिणी परम्परा के सभी कवि कश्मीरी ही हैं तथा 'शुक' कवि के पश्चात् यह परम्परा अवरुद्ध हो गयी।

राजतरङ्गिणी- बिन्दुवार अध्ययन

- कल्हण की 'राजतरङ्गिणी' को किसने आगे बढ़ाया?
  - **जोनराज एवं श्रीवर**

- कल्हण की पुस्तक का क्या नाम है? - **राजतरङ्गिणी**
- कल्हण द्वारा रचित 'राजतरङ्गिणी' निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है– - **कश्मीर के इतिहास से**
- 'राजतरङ्गिणी' किस कवि की रचना है? - **कल्हणः**
- 'कल्हण' की 'राजतरङ्गिणी' की रचना किस शताब्दी में हुई थी?- **12वीं शताब्दी ई0**
- 'द्वितीयराजतरङ्गिणी' के लेखक हैं - **जोनराज**

4.16 नीतिशतकम्

महाकवि भर्तृहरि का परिचय

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)
- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 10 (मङ्गलाचरण सहित 11पद्धतियाँ)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–"**पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्।**"
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण **(दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये)** में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।
- विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।
- अज्ञानी को प्रसन्न किया जा सकता है, विद्वान् को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, परन्तु अल्पज्ञानी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
- घड़ियाल के मुख से मणि निकाली जा सकती है, समुद्र पार किया जा सकता है, सर्प को पुष्प सदृश सिर पे धारण किया जा सकता है परन्तु दुराग्रही मूर्ख को नहीं समझाया जा सकता।
- बालू से तेल, मृगतृष्णा से जल, खरगोश के सिर पर सींग प्राप्त हो सकती है, परन्तु दुराग्रही मूर्ख को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र 'मौन' को ही आभूषण बनाया है।
- पंडितों के सम्पर्क में आने पर अल्पज्ञ का दुराभिमान दूर हो जाता है।
- मनुष्य की घृणास्पद हड्डी को चबाता हुआ कुत्ता सामने खड़े देवराज से हड्डी छीने जाने का संदेह करता है।
- गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक को, शिव के सिर से हिमालय को, हिमालय से पृथ्वी को और पृथ्वी से समुद्र को प्राप्त हुई। इस प्रकार विवेकभ्रष्ट व्यक्ति का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।
- अग्नि जल से, सूर्यताप छाते से, हाथी अंकुश से, बैल व गधे दण्ड से नियन्त्रित किये जा सकते हैं। मूर्खता की कोई औषधि (उपाय) नहीं है।
- साहित्य, सङ्गीत एवं कला से विहीन व्यक्ति साक्षात् पशु के समान है।
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी के भार स्वरूप हैं और मनुष्य रूप में पशु हैं।
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा वनचरों के

साथ वन में रहना श्रेष्ठ है।
- सत्कवियों के अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है।
- विद्यारूपी धन वाले विद्वान् की तुलना कभी राजा के साथ नहीं हो सकती।
- ब्रह्मा हंस के कमलवन में निवास के सुख को नष्ट कर सकता है, परन्तु उसके नीर-क्षीर विवेक को नष्ट नहीं कर सकता।
- 'वाणी' (विद्या) रूपी आभूषण कभी नष्ट नहीं होता और यही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।
- विद्या ही परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है। यह गुरुओं की भी 'गुरु' है।
- राजागण विद्या की पूजा करते हैं धन की नहीं।
- क्षमा के होने पर कवच की, क्रोध के रहते शत्रु की, बन्धुजनों के रहते अग्नि की, अच्छे मित्र के रहते औषधि की, विद्या के रहते धन की, लज्जा के रहते आभूषण की तथा कवित्व रहने पर राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- बुद्धि की जड़ता को सत्संगति हरती है।
- सत्सङ्गति कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है।
- सत्सङ्गति मनुष्य का सब प्रकार से हित करती है।
- तेजहीन होने पर भी आत्मसम्मानी सिंह सूखी घास नहीं खाता।
- कुत्ता अपने स्वामी के सामने भोजन के लिए दीनता प्रकट करता है परन्तु गजराज सैकड़ों अनुनय पर खाता है।
- उसका जन्म धन्य है जिसके जन्म से वंश का अभ्युदय हो।
- आयु निश्चय ही तेजस्विता का हेतु नहीं है।
- 'धन' के समक्ष सभी गुण तिनके के समान हो जाते हैं।
- धनवान् ही सभी गुणों वाला माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही शोभा पाते हैं।
- धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं – (i) दान (ii) भोग, और (iii) नाश। जो न दान देता है ओर न ही उपभोग करता है उसके धन का नाश होता है।
- वेश्या की भाँति 'राजनीति' नाना रूपों वाली है।
- राजा को पृथ्वी रूपी गाय को दुहने के लिए प्रजारूपी बछड़े का पालन करना चाहिए। तभी पृथ्वी कल्पतरु की भाँति फलती है।
- दुर्जन व्यक्ति 'विद्या' से युक्त होने पर भी भयंकर होता है।
- 'अपकीर्ति' के रहते मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती।
- सेवा धर्म परम कठिन है और यह योगियों के लिए भी दुर्बोध है।
- सज्जनों की मैत्री दिन के उत्तरार्द्ध की तरह और दुर्जनों की पूर्वार्द्ध की तरह होती है।
- शिकारी मृग का, मछुआरा मछली का, दुर्जन सत्पुरुषों के अकारण शत्रु होते हैं।
- विपत्ति में धैर्य, समृद्धि में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, सभा में वाक्पटुता तथा कीर्ति और वेदशास्त्र में रुचि आदि गुण महापुरुषों में स्वाभाविक होते हैं।
- सज्जनों के लिए तलवार की धार पर चलने जैसे कठिन सेवा व्रत स्वाभाविक होते हैं।
- अच्छे आचरण वाला पुत्र, पति का हित चाहने वाली पत्नी, विपत्ति तथा सुख में समान व्यवहार करने वाला मित्र पुण्यवानों को प्राप्त होते हैं।
- सच्चा मित्र दूसरे मित्र को पाप कर्म से दूर करता है हितकारी कार्यों में लगाता है तथा छिपाने योग्य बातों को छिपाता है।
- मनुष्य की तीन कोटियाँ हैं – नीच, मध्यम तथा उत्तम।
- नीच विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम आरम्भ करते हैं परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम व्यक्ति विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं।
- मनस्वी कार्यार्थी सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।
- 'धैर्यवान् पुरुष' न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।
- धैर्यशाली पुरुष इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है।
- सभी आभूषणों का कारण शील (सदाचार) है और यही सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।
- भाग्य ही एकमात्र आश्रय है, पौरुष को धिक्कार है।
- 'भाग्य' ही सबसे बलवान है।
- अत्यंत शीघ्रता में किये गये कार्यों का परिणाम मृत्युपर्यन्त शूल की भाँति हृदय को जलाने वाला होता है।
- पहले की गई तपस्या से संचित भाग्य ही निश्चित ही यथोचित समय पर फल देते हैं। रूप, कुल, शील, विद्या, सेवा आदि नहीं।

नीतिशतकम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

1. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (1.7)
2. विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः। (1.10)
3. मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (1.11)
4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः (1.12)
5. वाग्भूषणं भूषणम् (1.19)
6. विद्याविहीनः पशुः (1.20)
7. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (1.22)
8. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति (1.27)
9. न खलु वयस्तेजसो हेतुः (1.38)
10. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (1.41)
11. वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा – (वसन्ततिलका) (38)
12. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (1.58)
13. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् (1.71)
14. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः (1.81)
15. मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (शिखरिणी) (1.82)
16. शीलं परं भूषणम् (1.83)
17. न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (वसन्ततिलका) (1.84)
18. विधिरहो बलवानिति मे मतिः (1.92)
19. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति (1.3)
20. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् (4)

21. यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
    तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः। (8)
22. न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (9)
23. धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
24. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्। (22)
25. तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते (29)
26. नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः। (वसन्ततिलका) (37)
27. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः। (शार्दूलविक्रीडित)
28. मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः (अनुष्टुप्) (42)
29. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (उपजाति) (41)
30. सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् (शिखरिणी) (57)
31. विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन। (उपजाति)
32. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे (शार्दूलविक्रीडित)
33. निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः। (मालिनी) (70)
34. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः। (शार्दूलविक्रीडित) 84)
35. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। (शार्दूलविक्रीडित)
36. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः। (वसन्ततिलका) (97)
37. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अनुष्टुप्)

नीतिशतकम्

मङ्गलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥ 1

अन्वय - दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये, स्वानुभूत्येकमानाय शान्ताय तेजसे नमः।।

शब्द	**अर्थ**
दिक्	प्राच्यादि दिशायें
काल	भूत, वर्तमान व भविष्य काल
आदि	इत्यादि
अनवच्छिन्न	मापा नहीं जा सकता ऐसे
अनन्त	अन्तरहित
चिन्मात्रमूर्तये	चैतन्यरूप विग्रह वाले
स्वानुभूत्येकमानाय	अपने अनुभव मात्र से ज्ञात होने वाले को
शान्ताय	कल्याणकारक को
तेजसे	ज्योति स्वरूप वाले को
नमः	नमस्कार

अनुवाद - दिशा और काल आदि द्वारा अपरिमेय, अनन्त तथा ज्ञानमय स्वरूप वाले, केवल निजी अनुभव द्वारा जानने योग्य, एवं ज्योतिः स्वरूप ब्रह्म को नमस्कार है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि-

- दिक्कालादि - दिक्काल + आदि (दीर्घ सन्धि)
- अनवच्छिन्नानन्त - अनवच्छिन्न + अनन्त (दीर्घ सन्धि)
- दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त - दिक्कालादि + अनवच्छिन्नानन्त (यण् सन्धि)
- चिन्मात्र - चित् + मात्र (अनुनासिकसन्धि)
- स्वानुभूतिः - स्व + अनुभूतिः (दीर्घसन्धि)
- अनुभूत्येकमानाय - अनुभूति + एकमानाय (यण्सन्धि)

समास -

- **दिक्कालाद्यनवच्छिन्न -** दिशश्च कालाश्च इति दिक्कालाः (द्वन्द्व समास)
- दिक्कालौ आदी येषां ते, दिक्कालादयः (बहुव्रीहिः)
- दिक्कालादिभिः अनवच्छिन्नं, दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)
- स्वानुभूत्येकमानाय - स्वस्य अनुभूतिः, (षष्ठी तत्पुरुष) स्वानुभूतिः एव एकं मानं यस्य तत् (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

- मूर्तिः - मूर्च्छ + क्तिन्
- अनुभूतिः - अनु + भू + क्तिन्
- मानाय - मान् + ल्युट्
- शान्ताय - शम् + क्त
- चिन्मात्रम् - चिद् + मात्रच्
- अलङ्कार - इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

कारक -

- तेजसे नमः - 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च' सूत्र से चतुर्थी हुई।
- छन्द - इसमें अनुष्टुप् छन्द है।

छन्द का लक्षण -

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुः पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अनुष्टुप् के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इसमें षष्ठ अक्षर सदा गुरु होता है और पञ्चम अक्षर सदा लघु। द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम अक्षर लघु होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु होता है। अन्य अक्षर लघु या गुरु हो सकते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

- इस श्लोक में किस प्रकार का मंगलाचरण है? - **नमस्कारात्मक**
- मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति की गयी है? - **(ज्योतिः स्वरूप) ब्रह्म की**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **अनुष्टुप्**
- 'चिन्मात्रम्' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है? - **मात्रच् प्रत्यय**
- 'स्वानुभूत्येकमानाय' में समास बताइये?
  (एकं मानम् एकमानम्) **कर्मधारय** अथवा
  (स्वानुभूतिः एकमानम् मुख्यप्रमाणं यस्य तत्) **बहुव्रीहि समास**

श्लोक -2

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।

अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥2

अन्वय - बोद्धारः मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः।
अन्ये च अबोधोपहताः, सुभाषितम् अङ्गे जीर्णम्।

शब्द	**अर्थ**
बोद्धारः =	समझने वाले, शिक्षित लोग
मत्सरग्रस्ताः =	ईर्ष्या से जकड़े हुए (द्वेष से भरे)
प्रभवः	स्वामी या समर्थ लोग
स्यमदूषिताः	गर्व से विकृत (घमण्ड से चूर)
अन्ये	दूसरे लोग
च	और
अबोधोपहताः	अज्ञान से नष्ट
सुभाषितम्	सुन्दर वचन
अङ्गे	कहने वाले के मुख में ही
जीर्णम्	जीर्ण हो रहा है

अनुवाद - अज्ञानी मनुष्य आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ पण्डितगण द्वेष से ग्रस्त हैं और नृपवर्ग गर्व से चूर हैं। दूसरे लोग तो अज्ञान के मारे हुए हैं। अतः बेचारा सुभाषित मेरे शरीर के भीतर ही बूढ़ा हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

- अबोधोपहताः - अबोध + उपहताः (गुणसन्धि)
  चान्ये - च + अन्ये (दीर्घ सन्धि)

समास -

- मत्सरग्रस्ताः - मत्सरेण ग्रस्ता (तृतीया तत्पुरुष)
- स्मयदूषिताः - स्मयेन दूषिताः (तृतीया तत्पुरुष)
- अबोधः - न बोधः अबोधः (नञ् तत्पुरुष)
- अबोधोपहताः - अबोधेन उपहताः (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- बोद्धारः - बुध + तृच्
- ग्रस्ताः - ग्रस् + क्त
- दूषिताः - दूष् + णिच् + क्त
- उपहताः - उप + हन् + क्त
- जीर्णः - जॄ + क्त
- सुभाषितम् - सु + भाष् + क्त

छन्द - इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

- पण्डित जन या विद्वान् लोग किससे ग्रस्त हैं? - **द्वेष से**
- राजा लोग (नृपवर्ग) किसके ग्रसित हैं?- **अहङ्कार (गर्व से)**
- 'मत्सरग्रस्ताः' में कौन-सा समास है? मत्सरेण ग्रस्ताः (तृतीया तत्पुरुष समास)
- 'बोद्धारः' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये?- **बुध+तृच्**
- 'प्रभवः' शब्द का क्या अर्थ है? - **स्वामी या समर्थ लोग**
- 'अबोधोपहताश्चान्ये' इसमें 'अन्ये' शब्द किसके लिए आया है? - **सामान्य जनों के लिए (जो अज्ञानी है)**
- 'सुभाषितम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु+भाष्+क्त**
- 'उपहता' शब्द में कौन-सी धातु है? **उप+हन्+क्त**
- अबोधः शब्द में कौन-सा समास है?
  (न बोधः अबोधः) **नञ् तत्पुरुषसमास**

श्लोक - 3

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥3

अन्वय - अज्ञः सुखम् आराध्यः विशेषज्ञः सुखतरम् आराध्यते ज्ञानलवदुर्विदग्धं नरं ब्रह्मा अपि न रञ्जयति।

शब्द	**अर्थ**
अज्ञः -	न जानने वाला व्यक्ति (मूर्ख)
सुखम् -	आसानी से
आराध्यः -	प्रसन्न या सन्तुष्ट करने योग्य
विशेषज्ञः -	विशेष रूप से जानने वाला
सुखतरम् -	और अधिक आसानी से
आराध्यते -	सन्तुष्ट किया जा सकता है
ब्रह्मा अपि -	ब्रह्मा भी
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्-	अल्पज्ञान से गर्वित
नरम् -	मनुष्य को
न रञ्जयति-	प्रसन्न नहीं कर सकता

अनुवाद - अज्ञानी मनुष्य आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ तो और भी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन रञ्च ज्ञान के कारण गर्वित मूढजन को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि

- ब्रह्मापि - ब्रह्मा+अपि (दीर्घसन्धि)

समास

- अज्ञः - न ज्ञः अज्ञः (नञ् तत्पुरुष)
- विशेषज्ञः - विशेषं जानातीति (उपपद तत्पुरुष)
- ज्ञानलवदुर्विदग्धं - ज्ञानस्य लवः (षष्ठी तत्पुरुष)
- ज्ञानलवेन दुर्विदग्धं (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- अज्ञः - ज्ञा+क
- आराध्यः - आ+राध्+ण्यत्
- विशेषज्ञः - विशेष+ज्ञा+क
- दग्धः - दह्+क्त
- ब्रह्मा - बृंह्+मन्
- नरम् - नृ+अच्
- सुखतरम् - सुख+तरप्
- रञ्जयति - रञ्ज्+णिच्+लट् प्रथम पुरुष, एक.

अलङ्कार - इस श्लोक में रंजन का सम्बन्ध होने पर भी असम्बन्ध बताया गया है, इसलिए अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें **आर्या** छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण -

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह-बारह मात्रायें हों द्वितीय चरण में अट्ठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्रायें हों, वह आर्या छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

- किसे आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है? - **अज्ञानी को**
- अत्यन्त शीघ्र किसे प्रसन्न किया जा सकता है? - **पण्डित को (विशेषज्ञ को)**
- किस प्रकार के मनुष्यों को ब्रह्मा भी नहीं प्रसन्न कर सकते ? - **अल्प ज्ञान के कारण गर्वित मनुष्यों को**
- थोड़े से ज्ञान से अहंकारी जनों को कौन नहीं प्रसन्न कर सकता है? - **ब्रह्मा भी**
- 'ब्रह्मापि' में कौन सन्धि है? - (ब्रह्मा+अपि) **दीर्घ सन्धि**
- विशेषज्ञः में कौन समास है? - (विशेषं जानातीति) **उपपद तत्पुरुष समास**
- आराध्यः मे प्रकृति प्रत्यय बताइये? **आ+राध्+ण्यत्**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है?- **आर्या**

श्लोक - 4

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरा
त्समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारये
त्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥4

अन्वय - मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात् प्रसह्य मणिम् उद्धरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम् समुद्रम् अपि संतरेत्।कोपितम् भुजङ्गमपि शिरसि पुष्पवत् धारयेत् तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् न आराधयेत्।

शब्द	अर्थ
मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्	मगर के मुख में स्थित दाढ़ो के बीच से
मणिम्	रत्न को
प्रसह्य	बलपूर्वक
उद्धरेत्	निकाल ले
प्रचलत् ऊर्मिमालाकुलम्	चञ्चल लहरों द्वारा विक्षुब्ध
समुद्रम् अपि	समुद्र को भी
सन्तरेत्	पार कर ले
कोपितम्	क्रुद्ध
भुजङ्गम् अपि	सर्प को भी
पुष्पवत्	फूल की तरह
शिरसि	शिर पर
धारयेत्	धारण कर ले
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्	हठी मूर्ख व्यक्ति के मन को
न आराधयेत्	सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - कोई चाहे तो मगर के मुँह में हाथ डालकर उसके दाँतो के बीच से मणि को जबर्दस्ती खींचकर निकाल सकता है, लहराती तरंगो से उमड़ते समुद्र को हाथों से तैर कर पार कर सकता है, अपने सिर पर क्रोध से जलते हुए साँप को पुष्पमाला की तरह धारण कर सकता है, परन्तु जिद्दी मूर्ख के मन को कोई प्रसन्न नहीं कर सकता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

ऊर्मिमालाऽऽकुलम् - ऊर्मिमाला+आकुलम् (दीर्घसन्धि)
पुष्पवद्धारयेत् - पुष्पवत्+धारयेत् (जश्त्वसन्धि)

समास -

मकरवक्त्रम् - मकरस्य वक्त्रम् (षष्ठी तत्पुरुष)
मकरवक्त्रदंष्ट्रानाम् अन्तरं मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरं (षष्ठी तत्पु०)
प्रचलदूर्मिमालाकुलम् - प्रचलन्त्यः ताः ऊर्मयः च प्रचलदूर्मयः (कर्मधारय), प्रचलदूर्मीनां मालाः प्रचलदूर्मिमालाः (षष्ठीतत्पुरुष) ताभिः मालाभिः आकुलम् (तृतीया तत्पुरुष)
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् - प्रतिनिविष्टः च असौ मूर्खजनः प्रतिनिविष्टमूर्खजनः (कर्मधारय), प्रतिनिविष्टमूर्खजनस्य चित्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

वक्त्र - वच्+त्र
दंष्ट्रा - दंश्+ष्ट्रन्+टाप्
प्रसह्य - प्र+सह् ल्यप्
भुजङ्ग - भुज+गम्+खच्
कोपितम् - कुप्+क्त
पुष्पवत् - पुष्प+वतुप्
प्रतिनिविष्ट - प्रति+नि+विश्+क्त
आराधयेत् - आ + राध् + तिप् (विधिलिङ् प्रथम पु., एक.)

अलङ्कार - इस श्लोक में मणि निकालने आदि का असम्बन्ध होने पर भी सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण - ''जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः।'' इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

प्रत्येक चरण में जगण, सगण, जगम, सगम, यगण, एक लघुवर्ण तथा एक गुरु वर्ण हो उसे पृथ्वी कहते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

- किसके मन को प्रसन्न नहीं किया जा सकता? - **मूर्खों के मन को**
- इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
- प्रतिनिविष्ट में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नि+विश्+क्त**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **पृथ्वी**
- भुजङ्ग शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **खच् प्रत्यय**
- पुष्प के समान किसे सिर पर धारण किया जा सकता है? **क्रुद्ध साँप को**
- आराधयेत् में कौन-सा लकार है? **विधिलिङ्**

श्लोक - 5

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥5

अन्वय - यत्नतः पीडयन् सिकतासु अपि तैलम् लभेत पिपासार्दितः मृगतृष्णिकासु सलिलम् पिबेत् पर्यटन् कदाचित् शशविषाणम् अपि आसादयेत् प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् तु न आराधयेत्।

शब्द	**अर्थ**
यत्नतः	प्रयत्न या उपाय से
पीडयन्	दबाता हुआ
सिकतासु अपि	बालू के कणों में भी
तैलम्	तेल को
लभेत	पा लें
पिपासार्दितः	प्यास से सताया हुआ
मृगतृष्णिकासु	मृगमरीचिकाओं में
सलिलम्	पानी को
पिबेत्	पी लें
पर्यटन्	घूमता हुआ
कदाचित्	कभी भी
शशविषाणम्	खरगोश के सींग को
आसादयेत्	पा लें

प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्-दुराग्राही मूर्ख के चित्त को
न आराधयेत् सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - मनुष्य परिश्रम करके बालू से भी तेल निकाल सकता है। प्यास से पीड़ित होकर मृगमरीचिका में भी पानी पी सकता है, कभी इधर-उधर घूमते हुए खरगोश के सींग को भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु दुराग्रही मूर्खों के मन को प्रसन्न करने के लिए कभी भी यत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि वे कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

पिबेच्च - पिबेत्+च (व्यञ्जन सन्धि)
पिपासार्दितः - पिपासा+अर्दितः (दीर्घसन्धि)
पर्यटञ्छशविषाणम् - पर्यटन्+शशविषाणम् (व्यञ्जन)

समास

मृगतृष्णिकासु - मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
शशविषाणम् - शशस्य विषाणम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
पिपासार्दितः - पिपासया अर्दितः **(तृतीया तत्पुरुष)**

प्रत्यय -

यत्नतः - यत्न + तसिल्
पीडयन् - पीड् + णिच् + शतृ
तैलम् - तिल + अण्
पिपासा - पा + सन् + अ + टाप्
अर्दितः - अर्द् + क्त
पर्यटन् - परि + अट् + शतृ

छन्द- इस श्लोक में पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

अलङ्कार- इस श्लोक में अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न-

➢ मृगतृष्णिकासु शब्द में समास बताइये ?
  मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
  मृगाणां तृष्णा अस्याम् **(बहुव्रीहि समास)**
➢ किसके मन को प्रसन्न करना असम्भव है? **मूर्खों के मन को**
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **पृथ्वी**
➢ इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
➢ अर्दितः शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **अर्द्+क्त (प्रत्यय)**

श्लोक - 6

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
भेत्तुं वज्रमणिं शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
मूर्खान्यः प्रतिनेतुमिच्छति बलात्सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥6

अन्वय - यः मूर्खान् बलात् सुधास्यन्दिभिः सूक्तैः प्रतिनेतुम् इच्छति असौ बालमृणालतन्तुभिः व्यालं रोद्धुं सन्नह्यते मधुबिन्दुना क्षाराम्बुधेः माधुर्यं रचयितुम् ईहते।

शब्द	**अर्थ**
यः	जो
बलात्	बलपूर्वक (हठपूर्वक)
सुधास्यन्दिभिः	अमृत टपकाने वाले
सूक्तैः	सुन्दर वचनों से
प्रतिनेतुम्	बहलाने या मनोरञ्जन करने के लिए
बालमृणालतन्तुभिः	कोमल कमलनाल के सूत्रों से
व्यालम्	मतवाला हाथी
रोद्धुम्	रोकने या बाँधने के लिए
समुज्जृम्भते	अभ्यास करता है
शिरीषकुसुमप्रान्तेन	कोमल शिरीष फूल के छोर से
वज्रमणिम्	हीरे को
भेत्तुम्	काटने का
सन्नह्यते	प्रयास करता है
मधुबिन्दुना	मधु की बूंद से
क्षाराम्बुधेः	खारे समुद्र के
माधुर्यम्	मिठास को
रचयितुम्	बनाना
ईहते	चाहता है

अनुवाद - जो अपनी अमृतवर्षिणी सूक्तियों द्वारा मूर्खों को बलात् प्रसन्न करना चाहता है, वह कोमल कमल नाल के तन्तु से मदमत्त हाथी को बाँधना चाहता है, शिरीष पुष्प के किनारे से वज्रमणि हीरे को काटना चाहता है और खारे समुद्र को दो-एक बूंद मधु डालकर मीठा बनाने की चेष्टा करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

तन्तुभिरसौ - तन्तुभिः+असौ (विसर्ग सन्धि)

क्षाराम्बुधेरीहते - क्षार+अम्बुधेः (दीर्घ सन्धि) + ईहते (विसर्ग सन्धि)

समास -

सुधास्यन्दिभिः - सुधां स्यन्दन्ते तच्छीलानि सुधास्यन्दीनि तैः (तृतीया तत्पुरुष)

सूक्तैः - शोभनानि उक्तानि इति सूक्तानि (प्रादि तत्पुरुषसमास)

बालमृणालतन्तुभिः - बालं च तत् मृणालम् (कर्मधारय) तस्य तन्तवः तैः (षष्ठी तत्पुरुष)

शिरीषकुसुमप्रान्तेन - शिरीषकुसुमस्य प्रान्तः शिरीषकुसुमप्रान्तः तेन (तृतीया तत्पुरुष) शिरीषस्य कुसुमम् (षष्ठी तत्पुरुष) शिरीषं चेदं कुसुमम् (कर्मधारय समास)

मधुबिन्दुना - मधुनः बिन्दुः (षष्ठी तत्पुरुष)

क्षाराम्बुधेः - क्षारः चासौ अम्बुधिः (कर्मधारय)

प्रत्यय

सुधास्यन्दिभिः - सुधा+स्यन्द्+णिनि+भिस्

प्रतिनेतुम् - प्रति+नी+तुमुन्

रोद्धुम् - रुध्+तुमुन्

रचयितुम् - रच्+तुमुन्

माधुर्य - मधुर+ष्यञ्

कारक -

बलात् - हेतौ से पञ्चमी

छन्द - शार्दूलविक्रीडित

अलङ्कार - मालानिदर्शन

लक्षण - 'सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्'

इसके प्रत्येक चरण में 19 अक्षर होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरु वर्ण आयें उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं। (12 तथा 7 अक्षरों पर यति)

- ➢ 'प्रतिनेतुम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नी+तुमुन्**
- ➢ 'व्यालम्' शब्द का क्या अर्थ है? - **मतवाला हाथी**
- ➢ 'वज्रमणिम्' शब्द में समास बताइये? - **वज्रः मणिः (कर्मधारय समास)**
- ➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शार्दूलविक्रीडित**

श्लोक - 7

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥7

अन्वय- विधात्रा अपण्डितानां स्वायत्तम् एकान्तहितं मौनम् अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्। सर्वविदां समाजे विशेषतः विभूषणं भवति।

शब्द	**अर्थ**
विधात्रा	ब्रह्मा ने
अपण्डितानाम्	मूर्खों का
स्वायत्तम्	अपने अधीन
एकान्तहितम्	अत्यन्त हितकारी
मौनम्	मौन को
अज्ञतायाः	मूर्खता का
छादनम्	आवरण
विनिर्मितम्	बनाया है
सर्वविदाम्	सब कुछ जानने वाले
समाजे	समाज में
विशेषतः	अधिक करके
विभूषणम्	आभूषण

अनुवाद - विधाता ने मूर्खों के अपने हाथ में रहने वाले और अत्यन्त हितकारी मौन को मूर्खता को छिपाने का आवरण बनाया है, जो विद्वानों की सभा में विशेष रूप से आभूषण हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

अपण्डितानाम् - नः पण्डिताः अपण्डिताः (नञ् तत्पुरुष समास)

स्वायत्तम् - स्वस्य आयत्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)

एकान्तहितम् - एकः एव अन्तो यस्य (बहुव्रीहिसमास), एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् (सुप्सुपासमास)

सर्वविदाम् - सर्वं विदन्तीति सर्वविदः (नित्यसमास)

प्रत्यय -

विधात्रा - वि + धा +तृच्

छादनम् - छद् + णि + ल्युट्

विनिर्मितम् - वि + निर् + मा + क्त

विभूषणम् - वि + भूष् + ल्युट्

सर्वविदाम् - सर्व + विद् + क्विप्

विशेषः - वि+शिष्+घञ्

समाजे - सम्+अज्+घञ्

मौनम् - मुनि+अण्

हितम् - धा+क्त

विशेषतः - विशेष+तसिल्

छन्द - उपजाति छन्द है

सम्भावित प्रश्न -

- ➢ विद्वानों की सभा में मूर्खों के लिए किसे आभूषण सदृश कहा गया है? - **मौन को**
- ➢ विधाता शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **वि+धा+तृच्**
- ➢ छादनम् शब्द का प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **छद्+णिच्+ल्युट्**
- ➢ पण्डित् शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? **- इतच्**
- ➢ मूर्खों के लिए किसे आवरण के समान बताया गया है? **मौन को**
- ➢ एकान्तहितम् शब्द में कौन समास है? एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् -**सुप्सुपासमास**
- ➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **उपजाति**

श्लोक - 8

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवं

तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥8

अन्वय - यदा अहम् किञ्चिज्ज्ञः गज इव मदान्धः समभवम् तदा सर्वज्ञः अस्मि इति मम मनः अवलिप्तम् यदा बुधजनसकाशात् किञ्चित् किञ्चित् अवगतम् तदा मूर्खः अस्मि इति मे मदः ज्वर इव व्यपगतः।

शब्द	अर्थ
यदा	जब
अहम्	मैं
किञ्चिज्ज्ञः	थोड़ा-सा जानने वाला
गज इव	हाथी की तरह
मदान्धः	मद से अंधा
समभवम्	हो गया था
तदा	तब
सर्वज्ञः	सब कुछ जानने वाला
अस्मि	हूँ
इति	इस प्रकार
मम	मेरा
मनः	मन
अवलिप्तम्	गर्व से युक्त
बुधजनसकाशात्	विद्वानों की संगति से
किञ्चित् किञ्चित्	थोड़ा-थोड़ा
अवगतम्	सीखा
मदः	घमण्ड
ज्वर इव	ज्वर की तरह
व्यपगतः	दूर हो गया

अनुवाद - जब मैं अल्पज्ञ होकर भी मतवाले हाथी के जैसा मदान्ध हो गया तब यह समझकर कि मैं सर्वज्ञ हूँ - सब कुछ जानता हूँ, मेरा मन आकाश पर चढ़ गया। जब मैं पण्डितों की संगति से थोड़ा-थोड़ा जानने लगा तब मैं अपने को मूर्ख समझने लगा और तब मेरा गर्व ज्वर के जैसा धीरे-धीरे हटने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

मदान्धः - मद+अन्धः (दीर्घसन्धि)
सर्वज्ञोऽस्मि - सर्वज्ञः+अस्मि (विसर्गसन्धि)
ज्वर इव - ज्वरः+इव (विसर्ग सन्धि)

समास -

किञ्चिज्ज्ञः - किञ्चित् जानाति इति किञ्चिज्ज्ञः (नित्यसमास)
सर्वज्ञः - सर्व जानाति इति सर्वज्ञः (नित्यसमास)
सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः (षष्ठी तत्पुरुष)
मदान्धः - मदेन अन्धः (तृतीयातत्पुरुष)
बुधजनसकाशात् - बुध एव जनः (मयूरव्यंसकादि)
तस्य सकाशम् (षष्ठी तत्पुरुष)
बुधाः च ते जनाः बुधजनाः तेषां सकाशात् (षष्ठीतत्पुरुष)

प्रत्यय -

किञ्चिज्ज्ञः - ज्ञा+क
सर्वज्ञः - सर्व+ज्ञा+क
अवलिप्तम् - अव+लिप्+क्त
अवगतम् - अव+गम्+क्त
व्यपगतः - वि+अप्+गम्+क्त

छन्द - इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है।

लक्षण - रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।
इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते है। 6 तथा 11 अक्षरों पर यति होती है। क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होता है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ 'मदान्धः' शब्द में सन्धि एवं समास बताइये?
मद+अन्धः **(दीर्घ सन्धि)**
मदेन अन्धः **(तृतीया तत्पुरुष)**
➢ 'सर्वज्ञ' शब्द में समास बताइये?
सर्वं जानातीति सर्वज्ञः **(नित्यसमास)** अथवा
सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
➢ व्यपगतः शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **वि+अप्+गम्+क्त**
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **शिखरिणी**

श्लोक -9

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्खरास्थि निरामिषम्।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्॥9

अन्वय- श्वा कृमिकुलचितम् लालाक्लिन्नम् विगन्धि जुगुप्सितम् निरामिषम् खरास्थि निरुपमरसप्रीत्या खादन् पार्श्वस्थम् सुरपतिम् अपि विलोक्य न शङ्कते। क्षुद्रः जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् न गणयति।

शब्द	अर्थ
श्वा	कुत्ता
कृमिकुलचितम्	कीड़ों से भरी हुई
लालाक्लिन्नम्	लार से भीगी
विगन्धि	दुर्गन्ध से युक्त
जुगुप्सितम्	निन्दित
निरामिषम्	मांसरहित
खरास्थि	गदहे की हड्डी
निरुपमरसप्रीत्या	अनुपम रस के प्रेम से
खादन्	खाता हुआ
पार्श्वस्थम्	पास में खड़े हुए को
सुरपति	इन्द्र
विलोक्य	देखकर
न शङ्कते	लज्जा नहीं करता है
क्षुद्रो जन्तुः	नीचप्राणी
परिग्रहफल्गुताम्	स्वीकृत की गयी वस्तु की तुच्छता को
न गणयति	विचार नहीं करता

अनुवाद - कुत्ता कीड़ो से भरी, लार से भीगी, दुर्गन्धमय, हेय निर्मांस, गदहे की हड्डी को बड़े चाव से चबाता हुआ अपने पास खड़े हुए इन्द्र को भी देख कर नहीं लजाता, परवाह नहीं करता। नीच, अपनाई हुई वस्तु की तुच्छता की परवाह नहीं करता - स्वगृहीत वस्तु की क्षुद्रता पर ध्यान नहीं देता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

कृमिकुलचितम् - कृमीणां कुलानि (षष्ठी तत्पुरुष) तैः चितम् (तृतीया तत्पुरुष)

लालाक्लिन्नम् - लालया क्लिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)

विगन्धि - विगतः गन्धः यस्य तत् (बहुव्रीहि)

निरामिषम् - निर्गतम् आमिषं यस्मात् (बहुव्रीहि)

खरास्थि - खरस्य अस्थि (षष्ठी तत्पुरुष)

निरुपमरसप्रीत्या - निः नास्ति उपमा यस्य स निरुपमः (प्रादिबहुव्रीहि समास) निरुपमः (कर्मधारय समास) निरुपमरसे प्रीतिः (सप्तमी तत्पुरुष)

सुरपतिम् - सुराणां पतिः सुरपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)

परिग्रहफल्गुताम् - परिग्रहस्य फल्गुता (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

श्वा - श्वि+कनिन्

चितम् - चि+क्त

क्लिन्नम् - क्लिद्+क्त

जुगुप्सितम् - जु+गुप्+क्त

पार्श्वस्थम् - पार्श्व+स्था+क

विलोक्य - वि+लुकि+ल्यप्

खादन् - खाद्+शतृ

छन्द - हरिणी

लक्षण - "**नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता**" हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु होते हैं। छठे, दसवें तथा अन्त में विराम होता है।

अलङ्कार - इस श्लोक में अप्रस्तुतप्रशंसा एवम् अन्तिम चरण में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। इनके एक साथ होने से इसमें सङ्कर अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

- अपनाई गई वस्तु की तुच्छता पर कौन ध्यान नहीं देता? **नीच व्यक्ति**
- सुरपति शब्द किसके लिए आया है? - **इन्द्र के लिए**
- निरामिष शब्द का क्या अर्थ है? - **मांसरहित**
- विगन्धि शब्द में समास बताइये? विगतः गन्धः यस्य तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
- विलोक्य में कौन-सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है? वि + लुकि + ल्यप्
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? हरिणी

श्लोक - 10

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः॥10

अन्वय - इयम् गङ्गा स्वर्गात् शार्वम् शिरः पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम् उत्तुंगात् महीध्रात् अवनिम् अवनेः च अपि जलधिम् अधोऽधः स्तोकम् पदम् उपगता अथवा विवेकभ्रष्टानाम् विनिपातः शतमुखः भवति।

शब्द	**अर्थ**
इयम्	यह
गङ्गा	गङ्गा
स्वर्गात्	स्वर्ग से
शार्वम्	शिव जी के
शिरः	शिर पर
पशुपतिशिरस्तः	शिव जी के मस्तक से
क्षितिधरम्	हिमालय पर्वत पर
उत्तुङ्गात्	ऊँचे
महीध्रात्	पर्वत से
अवनिम्	पृथ्वी को
अवनेः	पृथ्वी से
जलधिम्	समुद्र को
अधोऽधः	नीचे नीचे
स्तोकम्	तुच्छ
पदम्	पद को
उपगता	पहुँचकर
अथवा	क्योंकि
विवेकभ्रष्टानाम्	भ्रष्ट विचार वालों का
शतमुखः	सैकड़ों प्रकार से
विनिपातः	पतन
भवति	होता है

अनुवाद - गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक पर गिरीं। शिव के मस्तक से हिमालय पहाड़ पर, हिमालय से पृथ्वी पर और पृथ्वी पर से गिरकर समुद्र में जा मिलीं। इस तरह यह नीचे से नीचे गिरती गई।
(वास्तव में बात यह है कि) जिनका विवेक भ्रष्ट हो गया है उनका पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

महीध्रादुत्तुङ्गात् - महीध्रात्+उत्तुङ्गात्+अवनिम् (व्यञ्जन सन्धि)

अवनेश्च - अवनेः+च (विसर्ग सन्धि)

चापि - च+अपि (दीर्घ सन्धि)

अधोऽधः - अधः+अधः (विसर्गसन्धि, पूर्वरूपसन्धि)

गङ्गेयम् - गङ्गा+इयम् (गुणसन्धि)

समास -

शार्वम् - शर्वस्य इदम् (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतिशिरस्तः - पशूनाम् पतिः पशुपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतेः शिरः पशुपतिशिरः (षष्ठी तत्पुरुष)
क्षितिधरम् - क्षितेः धरः क्षितिधरः (षष्ठी तत्पुरुष)
विवेकभ्रष्टानाम् - विवेकात् भ्रष्टाः विवेकभ्रष्टाः (पञ्चमी तत्पुरुष)
भ्रष्टः विवेकः येषां ते भ्रष्टविवेकाः वा विवेकभ्रष्टाः (बहुव्रीहि समास)
शतमुखः - शतं मुखानि यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

गङ्गा - गम्+गन्+टाप्
क्षितिधरः - धृ+अच्
जलधिः - जल+धा+कि
उपगता - उप+गम्+क्त
भ्रष्टः - भ्रंश्+क्त
विवेकः - वि+विच्+घञ्
शिरस्तः - शिरः+तसिल्
विनिपातः - वि+नि+पत्+घञ्
शार्वम् - शर्व+अण्

छन्द - शिखरिणी

अलङ्कार - इस श्लोक में पर्याय और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न -

- गङ्गा सर्वप्रथम स्वर्ग से कहाँ गिरी? **-शिव के मस्तक पर**
- समुद्र में मिलने से पहले गङ्गा कहाँ गिरी थी? **पृथ्वीपर**
- गङ्गा के अवतरित होने का सही क्रम है -
  स्वर्ग - शिव के मस्तक पर - हिमालय - पृथ्वी - समुद्र
- विवेक भ्रष्ट मनुष्यों का पतन कितने प्रकार से होता है? - **सैकड़ों प्रकार से**
- गङ्गेयम् शब्द में कौन-सी सन्धि है? - गङ्गा+इयम् **(गुणसन्धि)**
- शतमुखः में कौन-सा समास है? - शतं मुखानि यस्य सः **(बहुव्रीहि समास)**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शिखरिणी**
- 'पशुपति' शब्द किसके लिए आया है? - **शिव के लिए**

नीतिशतकम् बिन्दुवार अध्ययन

- 'नीतिशतकम्' के रचयिता हैं? - **भर्तृहरि**
- भर्तृहरि ने नीतिशतक लिखा है - **छन्दों में**
- शतकत्रय के रचयिता हैं? - **भर्तृहरि**
- भारतीय जनश्रुति महाराज भर्तृहरि को - **विक्रमसंवत् के संस्थापक महाराज विक्रमादित्य का बड़ा भाई मानती है।**
- शतकत्रय ग्रन्थ के रचनाकार ने और किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है? - **वाक्यपदीयम्**
- नीतिशतक में कितने पद्य हैं - **एक सौ ग्यारह (111)**
- नीतिशतकम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है - **मुक्तककाव्य**
- नीतिशतक में कितने प्रकार के प्राणी बताये गये हैं- **चार**
- नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है? - **मौन रहकर**
- नीतिशतककार के मतानुसार क्रोधी राजा के प्रिय होते हैं - **कोई व्यक्ति भी नहीं।**
- दुष्टों की मित्रता की तुलना की गयी है? - **छाया से**
- सभी प्रकार की विपत्तियों से रक्षा होती है - **पूर्वकृत पुण्यों के कारण**
- मैनाक किसका पुत्र है? - **हिमालय का**
- प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन .... कैः? - **नीचैः**
- विभाति कायः करुणाकुलानां .... रिक्तस्थान की पूर्ति करें? - **परोपकारेण न चन्दनेन**
- 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतकम् के अनुसार वे लोग हैं? - **मानुषराक्षसाः**
- नीतिशतकम् का विषय - **मनुष्य मात्र की नीति कुशलता का उपदेश देने वाला है**
- नीतिशतकम् की भाषा - **अति सरल, सुबोध है**
- थोड़े से ज्ञान से स्वयं को ज्ञानी मानने वाले मनुष्य को कौन नहीं समझा सकते हैं? - **ब्रह्मा**
- अपनी अज्ञता छिपाने के लिये मूढ़ जनों का एकमात्र उपाय है? - **मौनावलम्बन**
- स्वाभिमान और सम्मान के पात्र होते हैं - **विद्वज्जन**
- 'नास्त्युद्यमसमो ....' रिक्तस्थान की पूर्ति करें? - **बन्धुः**
- पर्वत के पंख काटे थे? - **इन्द्र**
- सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर रहते हैं, तो इसमें दोषी है? **राजा**
- शूरवीर महीतल पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है? - **पराक्रम से**
- नीतिशतकम् में 'पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' हैं? - **भाग्यानि**
- भर्तृहरि ने विद्याविहीन मानव को क्या कहा? - **पशु**
- राजनीति की तुलना की गयी है - **वेश्या से**
- महाराज भर्तृहरि की प्रमुख रचना है - **नीतिशतक**
- धन की कौन-सी गति नहीं होती है - **सन्तोष प्राप्ति**
- नीतिशतकम् अपनी गेयता के कारण - **गीतिकाव्य है**
- नीतिशतककार के मतानुसार सम्पत्ति काल में महापुरुषों की मनोवृत्ति होती है? - **कमल के समान कोमल**
- सबका आभूषण क्या है? - **शील**
- सबसे बड़ा साधन है? - **परहितसाधन**
- संसार में सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक कौन होता है? - **रमणी**

- निम्न विकल्पों में से किसे भर्तृहरि ने मूर्ख एवं दुराग्रही व्यक्ति को प्रसन्न करने की अपेक्षा अधिक सरल नहीं कहा है? - **नाव से नदी पार करना**
- 'यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः''। इस सूक्ति के माध्यम से किसे शिक्षा दी जा रही है? - **चातक को**
- ''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।'' इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है? - **कर्म का**
- साहित्य, संगीत एवं कला से अपरिचित व्यक्ति होता है? - **परमपशु**
- भर्तृहरि के अनुसार सर्वोत्कृष्ट आभूषण है? - **शील**
- 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।' में छन्द है- - **उपजाति**
- निम्न में कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है?- **पञ्चतन्त्रम्**
- मित्राणि तथा रिपवः जायन्ते - **व्यवहारेण**
- भर्तृहरेः गुहा अस्ति। - **पुष्करसमीपे**
- मनुष्य का कौन-सा भूषण स्थायी है? - **परिष्कृत वाणी**
- कवि ने वृक्ष, मेघ तथा सत्पुरुष को कहा है?- **परोपकारी**
- वृक्ष कब झुक जाते हैं? - **फल आने पर**
- नये जल से युक्त होने पर कौन अधिक लटक जाता है? - **मेघ (घन)**
- समृद्धि के समय कौन अभिमान रहित होता है?- **सत्पुरुष**
- विद्या किं ददाति? - **विनयम्**
- पात्रत्वाद् किं आप्नोति? - **धनम्**
- येन बालः न पाठितः सः पिता कीदृशः? - **वैरीवत्**
- अपठितः बालः सभामध्ये कथमिव शोभते? - **हंसमध्ये बकवत्**
- यः नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति अधीते सः कस्माद् पराभवं न आप्नोति? - **शक्रात्**
- के न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः? - **भोगाः**
- किं न तप्तम्, वयमेव तप्ताः - **तपः**
- का न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः - **तृष्णा**
- कः न यातः? वयमेव याताः - **कालः**
- धनात् किं प्राप्यते? - **धर्मः**
- या बालं न पाठयति सा माता कीदृशी? - **शत्रु**
- कः सुखम् आराध्यः? - **अज्ञः**
- सुखतरं कः आराध्यते? - **विशेषज्ञः**
- ज्ञानलवदुर्विदग्धं जनं कः न रञ्जयति? - **ब्रह्मा अपि**
- क्षीणेषु वित्तेषु कां जानीयात्? - **भार्याम्**
- ये धर्मं न वदन्ति, ते भवन्ति - **वृद्धाः न**
- चन्दनात् अपि अधिकः शीतलः कः वर्तते? - **चन्द्रः**
- कः नरः कुलीनः, पण्डितः, श्रुतवान्, गुणज्ञः च भवति? - **यस्य वित्तम् अस्ति**
- धीमतां कालः येन गच्छति? - **काव्यशास्त्रविनोदेन**
- मूर्खाणां समयः कथं गच्छति? - **निद्रया कलहेन च**
- लोभात् किं न भवति? - **पुण्यम्**
- के सत्पुरुषाः भवन्ति? - **ये स्वार्थं विहाय परोपकारं कुर्वन्ति**
- मानुषराक्षसाः किं कुर्वन्ति?- **स्वार्थाय परहितं नाशयन्ति**
- स्वार्थाविरोधेन परहितं कुर्वाणाः के? - **सामान्याः**
- 'ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे' अस्ति - **शार्दूलविक्रीडितच्छन्दसि**

  कः पुत्रः? - **यः सुचरितैः पितरं प्रीणयेत्**
- सा पत्नी या - **भर्तुः हितमिच्छति**
- किं नाम मित्रम्? - **सुखदुःखयोः समक्रियम्**
- 'एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते' इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्? - **वसन्ततिलका**
- ते मनुष्याः भूमौ भारः एव सन्ति। - **ये विद्याहीनाः**
- भर्तृहरिरचित-वाक्यपदीयम् सम्बद्धम् अस्ति - **व्याकरणदर्शनेन**
- फलोद्गमैः के नम्राः भवन्ति? - **तरवः**
- नवाम्बुभिः के दूरविलम्बिनः सन्ति? - **मेघाः**
- समृद्धिभिः के उद्धताः न भवन्ति? - **सत्पुरुषाः**
- स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्– इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्?- **वंशस्थवृत्ते**
- पुरुषस्य भूषणं किम्? - **वाक्**
- मनुष्यं किं सज्जीकरोति? - **वाणी**
- विद्या से हीन मनुष्य के जीवन से क्या लाभ? - **विद्याहीनस्य नरस्य कः लाभः जीवितेन**
- भर्तृहरि के नीतिशतकम् में 'तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव

- बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने से
मदो मे व्यपगतः' का तात्पर्य है **पर ज्ञानी होने का नशा उतर जाता है।**

- निम्न में से कौन सी कृति भर्तृहरि की नहीं है? - **भट्टिकाव्यम्**
- यत्र पादत्रये कथां प्रति पद्यस्य अन्तिमपादे नीतिः उच्यते तादृशं काव्यं किम्? - **नीतिशतकम्**
- 'अनुत्तम' का क्या अर्थ है?- **जिससे उत्कृष्ट कोई और न हो**
- नीतिशतकम् में राजनीति को कितने स्वरूपों को धारण करने वाली कहा गया है? - **10**
- नीतिशतकम् के अनुसार धन की कितने दशायें होती हैं?- **3**
- "सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" श्लोकांश में 'परमगहनो' का क्या अर्थ है? - **अत्यन्त कठिन**
- "ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति"-श्लोकांश में 'रञ्जयति' का तात्पर्य है। - **प्रसन्नकरना**
- "मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा" श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' शब्द का अर्थ है? - **ऊपर**
- 'कन्था' शब्द का अर्थ है - **जीर्णवस्त्र**
- "न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्" इस वाक्य में 'गणयति' का तात्पर्य है। - **विचारने से**
- "शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि" - इस श्लोकांश में 'निर्घृणता' का क्या अर्थ है। - **निर्दयता**
- 'नागेन्द्र' का अर्थ है - **श्रेष्ठ हाथी**
- 'शूली' का अर्थ है - **शिव**
- 'लुब्धक' का अर्थ है - **बहेलिया**
- "सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते" यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है - **नीतिशतकम्**
- "सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते" किसकी उक्ति है- **भर्तृहरि**
- "यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता" पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है - **नीतिशतकम्**
- "दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्" यह वचन किसने कहा है? - **भर्तृहरि ने**
- 'न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि' यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **नीतिशतक**
- "विधिरहो बलवानिति मे मतिः" यह सुभाषित किस ग्रन्थ में है - **नीतिशतकम् में**
- "मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **नीतिशतकम् से**
- "विद्याविहीनः पशुः" यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम् से**
- "प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति" श्लोकांश उद्धृत है - **नीतिशतकम् से**
- "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **वैराग्यशतक**
- "सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" कथन है - **भर्तृहरि का**
- नीतिशतकम् मे कितनी पद्धतियाँ हैं? - **10**
- "अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः" कस्य ग्रन्थस्य वर्तते - **नीतिशतकस्य**
- "विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा" यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम्**
- "मा ब्रूहि दीनं वचः" यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम्**
- "प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः" के कर्ता कौन हैं **-भर्तृहरि**
- 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' – यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **नीतिशतक**
- 'साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।' उक्ति कहाँ से उद्धृत है? - **नीतिशतक से**
- "सर्वे गुणाः .... आश्रयन्ति।" रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं निर्मापयत - **ज्ञानम्**
- 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति' वाक्यमिदं लोट्लकारे परिवर्तयत - **न्याय्यात् पथः प्रविचलन्त**
- नीतिशतके भर्तृहरेः भार्यायाः नाम किम्? - **पिङ्गल**

नीतिशतकम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है–
(A) भवभूति को (B) भर्तृमेण्ठ को
(C) भट्टि को (D) भर्तृहरि को

2. राजा भर्तृहरि की प्रेमिका (पत्नी) मानी जाती है–
(A) अञ्चला (B) पिङ्गला
(C) मङ्गला (D) चञ्चला

3. भर्तृहरि की रचना मानी जाती है–
(A) वैराग्यशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्
(C) नीतिशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों

4. 'शतकत्रय' में परिगणित हैं–
(A) शृङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम्, नीतिसारम्
(B) वैराग्यशतकम्, नीतिसारशतकम्, शृङ्गारशतकम्
(C) शृङ्गारशतकम्, नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(D) उपर्युक्त तीनों।

5. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं–
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

6. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है–
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

7. नीतिशतक की श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) लगभग 130 (B) लगभग 150
(C) लगभग 111 (D) लगभग 100 से कुछ कम

8. नीतिशतक किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

9. भर्तृहरि वस्तुतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) अलङ्कृतकाव्यशैली (D) इनमें कोई नहीं

10. ''नानाफलं फलति कल्पलतेवभूमिः'' इस काव्यांश में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

11. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ ''क्षितिधेनुम्'' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

12. ''धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च'' इस वाक्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) मदन कामदेव का (D) कवि भर्तृहरि का

13. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि किसको समझा रहा है–
(A) मेघों को (B) आकाश को
(C) चातकमित्र को (D) वसुधा को

14. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) द्रुतविलम्बितम्

15. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) शृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

16. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

17. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

18. ''लभेत सिकतासु तैलम्'' यहाँ 'सिकता' पद का अर्थ है–
(A) पत्थर (B) लोहा
(C) बालू (D) जल

19. ''व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ'' यहाँ 'व्यालम्' पद का अर्थ है–
(A) दुष्टगज (B) हिरन
(C) व्याघ्र (D) शिकारी

20. ''नहि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्'' यहाँ 'फल्गुता' पद का अर्थ है–
(A) असारता (B) तुच्छता
(C) निःसारता (D) उपर्युक्त तीनों

21. ''हुतभुक्'' पद का शब्दार्थ होगा–
(A) जल (B) अग्नि
(C) आहुति (D) हवनसामग्री

22. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' यह श्लोक प्राप्त होता है–
(A) नीतिशतकम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) दोनों में (D) किसी में नही

23. ''भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः'' इस पंक्ति का वक्ता है–
(A) भर्तृमेण्ठ (B) भट्टनारायण
(C) भवभूति (D) भर्तृहरि

24. ''नेता यस्य बृहस्पतिः'' यहाँ 'यस्य' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) इन्द्र का (B) कुबेर का
(C) रावण का (D) उपर्युक्त सभी का

25. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिचरितम् से (B) नीतिसारसंग्रह से
(C) नीतिशतकम् से (D) नीतिवचनम् से

26. ''प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति'' किसका कथन है–
(A) रावण का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

27. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

28. ''यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितम्'' यहाँ 'धात्रा' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) षष्ठी एकवचन

29. ''गर्जन्ति केचित् वृथा'' यहाँ 'गर्जन्ति' पद का कर्ता है–
(A) सिंहाः (B) अम्भोदाः
(C) गजाः (D) चातकाः

30. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यहां 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है–

(A) बृ लोट् म०पु० एक०
(B) ब्रू लट् म०प्र० एक०
(C) ब्रू लोट् म०पु० एक०
(D) ब्रूह् लोट् प्र०पु० एक०

31. 'शुचौ कैतवम्' में 'कैतवम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) कपट (B) निश्छल
(C) पवित्र (D) सज्जन

32. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस वाक्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है–
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

33. 'भूभुजाम्' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) द्वितीया एकवचन
(B) प्रथमा, एकवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन
(D) सप्तमी, एकवचन

34. ''छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) यमक (D) उत्प्रेक्षा

35. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

36. ''एका नारी सुन्दरी वा दरी वा'' यहाँ 'दरी' पद का अर्थ है–
(A) कुरूप (B) गुफा
(C) बिछौना (D) निवासस्थान

37. भर्तृहरि के गुरु माने जाते हैं–
(A) गोवर्धन (B) गोरखनाथ
(C) गयानाथ (D) गन्धर्वसेन

38. 'सङ्गतिः' में प्रत्यय है–
(A) अण् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ङीष्

39. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है-
(A) विचार पूर्वक बोलकर (B) कम बोलकर
(C) चुप रहकर (D) हँस कर हँसा कर

40. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य'' श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' का अर्थ है–
(A) आगे (B) पीछे
(C) नीचे (D) ऊपर

41. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन कैः?
(A) जनैः (B) बालैः
(C) नीचैः (D) सज्जनैः

42. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतक के अनुसार वे लोग हैं–
(A) उत्तमाः (B) मानुषराक्षसाः
(C) सामान्याः (D) सत्पुरुषाः

43. पर्वत के पंख किसने काटे?
(A) इन्द्र ने (B) विष्णु ने
(C) शिव ने (D) ब्रह्मा ने

44. ''नास्त्युद्यमसमो.....'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) मित्रम् (B) रिपुः
(C) बन्धुः (D) कर्म

45. 'विद्याविहीनः' होते हैं–
(A) गौः (B) अश्वः
(C) पशुः (D) हस्ती

46. शतकत्रय के रचयिता हैं–
(A) भट्टि (B) भर्तृहरि
(C) अमरूक (D) भवभूति

47. भर्तृहरि किस देश के राजा थे–
(A) गोरखपुर के (B) मालवदेश के
(C) महाराष्ट्र के (D) प्रयाग के

48. 'शतकत्रय' के रचनाकार ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी–
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

49. जहाँ अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, वह है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) मुक्तककाव्य

50. व्यक्ति धन प्राप्त करता है–
(A) अपने भाग्य से (B) अपने दुष्कर्मों से
(C) वरदान से (D) गुरुकृपा से

51. किसके चित्त को बदला नहीं जा सकता–
(A) सज्जनों के (B) भक्तों के
(C) मूर्ख के (D) योगी के

52. सान (कसौटी) पर तराशी गई मणि–
(A) नष्ट होती है (B) शोभा को प्राप्त होती है
(C) मलिन हो जाती है (D) कुछ नहीं होती

53. मदक्षीण हाथी–
(A) बलवान् होता है
(B) मोटा हो जाता है
(C) रङ्ग परिवर्तित हो जाता है
(D) सुशोभित होता है

54. मनस्वियों की वृत्ति किसके समान होती है?
(A) सूर्य के समान (B) देवराज इन्द्र के समान
(C) फूलों के समान (D) पृथ्वी के समान

55. धन की गतियाँ होती हैं–
(A) तीन (B) दो
(C) चार (D) असंख्य

56. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण आश्रय लेते हैं–
(A) साहस का (B) धन का
(C) सज्जन का (D) कर्म का

57. कुल का नाश हो जाता है–
(A) सुपुत्र से (B) कर्म से
(C) कुपुत्र से (D) पुत्रियों से

58. सैकड़ों प्रकार की चाटुकारिता से खाता है–
(A) कुत्ता (B) मनुष्य
(C) निर्धन (D) हाथी

59. कुत्ता भोजन देने वाले के सामने क्या करता है–
(A) पूँछ हिलाता है (B) गुर्राता है
(C) भौंकने लगता है (D) काट लेता है

60. 'कठिन असिधाराव्रत' किसको कहा गया है?
(A) धन को (B) विद्या को
(C) तलवार की धार को (D) सेवा को

61. 'नीतिशतकम्' का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

62. सदा रहने वाला आभूषण है–
(A) बाजूबन्द
(B) चन्द्रमा जैसा स्वच्छ मोतियों का हार
(C) विधिवत् स्नान
(D) सुसंस्कृता वाणीरूपी आभूषण

63. परिवर्तनशील संसार में जीवन सार्थक होता है–
(A) जो अपने लिए कमाता है
(B) जो सभी के लिए कमाता है
(C) जो अपने वंश (राष्ट्र) की उन्नति करता है
(D) जो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं करता है।

64. मनुष्य हाथी के समान मदान्ध कब हो जाता है–
(A) जब सुरापान कर लेता है।
(B) जब धनिकों के सम्पर्क में आता है।
(C) जब थोड़ा ज्ञान पा लेता है।
(D) जब कार्य में सफल हो जाता है।

65. मनुष्य का सर्वज्ञ होने का ज्वर कब उतरता है–
(A) जब कुछ विद्वानों के सम्पर्क में आता है
(B) जब उसे सभा में जाना पड़ता है
(C) जब असफलता मिलती है
(D) जब कार्य करता है

66. नीतिशतक में वर्णन है–
(A) धर्म का (B) नीति का
(C) राजा का (D) पशुओं का

67. 'चाणक्यनीति' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) कौटिल्य (चाणक्य) (D) भर्तृमेण्ठ

68. 'शतकत्रय' में सम्मिलित नहीं है–
(A) नीतिशतक (B) वैराग्यशतक
(C) अमरुकशतक (D) शृङ्गारशतक

69. किस विद्वान् के अनुसार भर्तृहरि को बौद्ध कहा जाता है–
(A) डॉ कीथ (B) मैक्समूलर
(C) ब्रील (D) ईत्सिंग

70. भर्तृहरि लेखक नहीं माने जाते हैं–
(A) नीतिशतकम् के (B) वाक्यपदीयम् के
(C) वैराग्यशतकम् के (D) काव्यालङ्कार के

71. 'वाक्यपदीयम्' और 'नीतिशतकम्' के मङ्गलाचरण की तुलना से ज्ञात होता है कि भर्तृहरि–
(A) शिव के उपासक थे
(B) वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक थे
(C) विष्णु के उपासक थे
(D) इनमें से कोई नहीं।

72. भर्तृहरि ने अपने शतकों में वर्णन नहीं किया–
(A) आचार शिक्षा का (B) सज्जन प्रशंसा का
(C) युद्ध वर्णन का (D) स्त्रियों की रमणीयता का

73. "निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः" सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिसारम् से (B) शृङ्गारशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) नीतिशतकम् से

74. "बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः" यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उदधृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

75. "अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः" पंक्ति में 'अज्ञः' पद का अर्थ है–
(A) विद्वान् (B) अज्ञानी
(C) सज्जन (D) इनमें से कोई नहीं

76. "न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्" यहाँ 'आराधयेत्' पद में लकार है–
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लृट् (D) लङ्

77. "ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति" यह कैसे व्यक्ति के लिए कहा गया है–
(A) विद्वान् के लिए (B) मानी के लिए
(C) परोपकारी के लिए (D) मूर्ख के लिए

78. प्रयत्नपूर्वक पीसता हुआ कोई व्यक्ति बालू के कणों से भी कभी तेल प्राप्त कर सकता है लेकिन–

(A) धन प्राप्त नहीं कर सकता
(B) सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता
(C) यश प्राप्त नहीं कर सकता
(D) दुराग्रही मूर्खजन के चित्त को वश में नहीं कर सकता।

79. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को पण्डित मानने वाले मनुष्य को नहीं समझा सकते–
(A) गणेश (B) ब्रह्मा
(C) विष्णु (D) महेश

80. अपनी अज्ञता को छिपाने के लिए मूढ़जनों का एकमात्र उपाय है–
(A) हास्यावलम्बन (B) क्रोधावलम्बन
(C) मौनावलम्बन (D) प्रगल्भावलम्बन

81. मेरी विद्वत्ता का मद–
(A) ज्वर की भाँति उतर गया
(B) ज्वार भाँटे की तरह उतर गया
(C) बाढ़ की भाँति उतर गया
(D) इनमें से कोई नहीं

82. विवेकभ्रष्ट व्यक्तियों का–
(A) अनेक प्रकार से पतन हो जाता है
(B) धन बढ़ जाता है
(C) मान बढ़ जाता है
(D) इनमें से कोई नहीं

83. राजा प्रशंसा प्राप्त करता है–
(A) विद्वानों को अपने राज्य से निर्वासित करके
(B) विद्वानों का सम्मान करके
(C) विद्वानों को माला पहना के
(D) विद्वानों से वार्तालाप करके

84. शत्रुओं के प्रति श्रेयस्कर है–
(A) उनका सहयोग करना
(B) उनका सम्मान करना
(C) उनके कल्याण की कामना करना
(D) वीरता प्रदर्शित करना।

85. ऐसे राजा का विश्वास नहीं करना चाहिए–
(A) जो सज्जन हो (B) जो विद्वान् हो
(C) जो क्रोधी हो (D) जो दयालु हो।

86. स्त्रीजनों के प्रति–
(A) प्रगल्भतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(B) क्रोधप्रदर्शन करना चाहिए
(C) अपमानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(D) असहिष्णुतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

87. गुरुजनों के विषय में–
(A) क्रुद्ध होना चाहिए
(B) अनादर भाव होना चाहिए
(C) क्षमाशीलता और सहिष्णुता होनी चाहिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

88. विद्याधन प्रदान करता है–
(A) सर्वत्र सम्मान समादर
(B) विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अभ्युदय
(C) अनिर्वचनीय सुख
(D) उपर्युक्त सभी तत्व

89. परोपकारियों का स्वभाव–
(A) ईर्ष्यालु होता है
(B) अति नम्र होता है
(C) परसम्पत्ति की इच्छा करते हैं
(D) स्वार्थ में लगे रहते हैं।

90. सज्जन की चारित्रिक विशेषता है–
(A) अनुदारता (B) साभिमानिता
(C) स्वाभिमानिता (D) परोपकाराभावः

91. उत्तम व्यक्ति वही है जो–
(A) स्वार्थसिद्धि के साथ-साथ परहित साधन के लिए भी उद्योगशील होते हैं।
(B) जो दूसरे के कार्य में यदा-कदा व्यवधान पैदा नही करते हैं
(C) जो अपना भला चाहते हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं।

92. ''वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेक.......'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) भूपा (B) रूपा
(C) रुपाम् (D) स्वरूपा

93. 'विरहितः' इस पद का अर्थ होगा–
(A) वीर हित (B) विरहाग्नि
(C) वीर रस (D) अभाव

94. ''यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः' इस श्लोक में छन्द है–
(A) अनुष्टुप् (B) उपजाति
(C) वंशस्थ (D) मन्दाक्रान्ता

95. नीतिशतक में विषय वर्णन के अनुसार पद्धतियाँ हैं–
(A) 12 (B) 16
(C) 18 (D) 11

96. 'शालिनी' छन्द के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–
(A) 9 (B) 17
(C) 11 (D) 12

97. ''रे रे चातक सावधानमनसा.....'' इस श्लोक का भावार्थ है–
(A) अपनी दीनता को प्रकट करना
(B) दीनता को बार बार कहना
(C) कभी कभी दीनता प्रगट करना
(D) हर किसी के सामने दीनता प्रगट न करना

98. ''एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः......ते के न जानीमहे'' नीतिशतकम् के इस श्लोक द्वारा मनुष्यों की श्रेणियाँ हैं–
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

99. 'सत्यानृता' में सन्धि है–
(A) यण् (B) अयादि
(C) दीर्घ (D) प्रकृतिभाव

100.''अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव'' में 'विहार' पद में धातु, प्रत्यय, एवं उपसर्ग है–
(A) वि + ह + ढक् (B) वि + हृ + घञ्
(C) वि + ह्य + ठक् (D) वि + हृ + अण

उत्तरमाला-नीतिशतकम्

1. (D)	2. (B)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (D)
7. (C)	8. (C)	9. (B)	10. (C)	11. (C)	12. (D)
13. (C)	14. (C)	15. (B)	16. (D)	17. (D)	18. (C)
19. (A)	20. (D)	21. (B)	22. (C)	23. (D)	24. (A)
25. (C)	26. (D)	27. (B)	28. (C)	29. (B)	30. (C)
31. (A)	32. (A)	33. (C)	34. (B)	35. (A)	36. (B)
37. (B)	38. (C)	39. (C)	40. (D)	41. (C)	42. (B)
43. (A)	44. (C)	45. (C)	46. (B)	47. (B)	48. (C)
49. (D)	50. (A)	51. (C)	52. (B)	53. (D)	54. (C)
55. (A)	56. (B)	57. (C)	58. (D)	59. (A)	60. (D)
61. (B)	62. (D)	63. (C)	64. (C)	65. (A)	66. (B)
67. (C)	68. (C)	69. (D)	70. (D)	71. (B)	72. (C)
73. (D)	74. (B)	75. (B)	76. (B)	77. (D)	78. (D)
79. (B)	80. (C)	81. (A)	82. (A)	83. (B)	84. (D)
85. (C)	86. (A)	87. (C)	88. (D)	89. (B)	90. (C)
91. (A)	92. (B)	93. (D)	94. (B)	95. (D)	96. (C)
97. (D)	98. (C)	99. (C)	100. (B)		

4.17 कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

महाकवि बाणभट्ट का परिचय

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **गुरु** - भर्वु या भर्त्सु
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें **''महानयं भुजङ्गः''** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।
- **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य

कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

➢ **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
   बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
   सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी
2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
   सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥**
   – विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास
3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
   प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव** ह।।
   – गोवर्धनाचार्य
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
   ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
   आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
   सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः॥**
   – चन्द्रदेव
5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**
6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
   रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि॥**
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी)
7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
   भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**
8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
   धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**
9. यस्याश्चोरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
   भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
   हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
   केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
   – जयदेव - प्रसन्नराघव
10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
    किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
    – धनपाल - तिलकमञ्जरी
11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
    भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**
12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
    वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
    – कविराज - राघवपाण्डवीय
13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
    प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**
14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
    हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
    – धनपाल (तिलकमञ्जरी)
15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
    शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
    – भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
    सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः**– वामनभट्टबाण**
17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
    शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**
18. सहर्षचरितारब्धादद्भुतकादम्बरी कथा।
    बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**
19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
    बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
    मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**
21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। –

अज्ञात

22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
    – पार्वतीपरिणय
23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
    अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
    – कादम्बरी कथामुख
24. "यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः" **– भोजराज**

कादम्बरी

➢ **लेखक** – बाणभट्ट
➢ **काव्यविधा** – कथा
➢ **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
➢ **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
➢ **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
➢ **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
➢ **नायिका** – कादम्बरी
➢ **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
➢ **सहनायिका** – महाश्वेता

➢ **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
➢ **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
➢ कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
➢ **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
➢ **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
➢ **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

कादम्बरी का मङ्गलाचरण

रजोजुसे जन्मनि सत्त्ववृत्तये
स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितनाशहेतवे
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥ 1 ॥

भावार्थ- प्रजाओं की सृष्टि करने में रजोगुण का सेवन करने वाले, पालन करने में सत्त्वगुण का धारण करने वाले, नाश करने में तमोगुण का स्पर्श करने वाले, सृष्टि, स्थित तथा प्रलय के कारणभूत वेदों के स्वरूप तथा तीनों गुणों (सत्त्व, रज और तम) से युक्त ब्रह्म को नमस्कार है।

☆ 'कादम्बरी' में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ प्रस्तुत पद्य में निराकार ब्रह्म की स्तुति की गयी है।
☆ अनुप्रास एवं यथासंख्या अलङ्कार का प्रयोग है।
☆ बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण के रूप में 20 पद्यों में कविवंश-वर्णन, सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा आदि का वर्णन किया है।
☆ मङ्गलाचरण रूपी बीसों पद्यों में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
☆ मङ्गलाचरण के द्वितीय पद्य में भगवान् शङ्कर के चरणधूलियों की वन्दना की गयी है।
☆ तीसरे श्लोक में बाणभट्ट ने अपने गुरु 'भर्वु' (भत्सु) को नमस्कार किया है।
☆ पाँचवे श्लोक में दुर्जनों की निन्दा है।
☆ छठे और सातवें पद्य में दुर्जन और सज्जन में अन्तर स्पष्ट किया है।
☆ आठवें तथा नौवें श्लोक में कथा-प्रशंसा है।
☆ दसवें से उन्नीसवें श्लोक तक कविवंश-वर्णन है।
☆ बीसवें श्लोक में कादम्बरी कथा की प्रशंसा है।

➢ **कादम्बरी में तीन जन्मों का नाम**

चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
1.चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
2.चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	-
3.शूद्रक	शुक	-	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

➢ कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
➢ कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
➢ 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
➢ 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
➢ कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
➢ कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
➢ 'बृहत्कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
➢ कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
➢ कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
➢ यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
➢ कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
➢ कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् शिव की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
➢ चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भत्सु)** के चरणों की वन्दना की।
➢ बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।
➢ कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी को **अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
➢ कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
➢ शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।

- यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
- यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म, 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
- मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
- शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
- उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
- तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
- चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
- पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**
- चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
- चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।
- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता' गन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा कुलूताधिपति की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

- चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मंत्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए 'तात' सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं।
- शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
- ऐश्वर्य रूपी 'तिमिर' रोग अञ्जन की शलाका से भी ठीक नहीं होता।
- दर्प (अभिमान) की दाहज्वर शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता।
- राग (अनुराग) का मल स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता।
- राज्य-सुख की निद्रा रात बीत जाने पर भी नहीं टूटती।
- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य, (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य तथा (iv) अलौकिक शक्ति 'चारों' अनर्थ की परम्पराएं हैं।
- 'युवावस्था' के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी 'बुद्धि' कलुषता को प्राप्त करती है।
- श्वेतता (स्वच्छता) को त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है।
- जिस प्रकार वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उसी प्रकार रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है।
- उपभोगमृगतृष्णा इन्द्रिय-हरिणों को नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
- विषयों में आसक्ति दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह पुरुष को नष्ट करती है।
- चन्द्रापीड जैसे व्यक्ति ही उपदेश के योग्य होते हैं।
- जिस प्रकार स्फटिक मणि में चन्द्रमा की किरणें उसी प्रकार निर्मल हृदय में उपदेश सरलता से प्रविष्ट होता है।
- जिस प्रकार थोड़ा सा पवित्र जल भी कान में पड़ने पर पीड़ा पहुँचाता है उसी प्रकार गुरु का पवित्र उपदेश भी अशिष्ट को कष्ट पहुँचाते हैं।
- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को गुरूपदेश हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं।
- प्रदोष के चन्द्रमा की तरह गुरु-वचन दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है।
- काम के बाणों से जर्जर हृदय में उपदेश जल की तरह चू जाता है।
- गुरु का उपदेश 'जलविहीन' स्नान है।
- भय से लोग प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
- अभिमानरूपी सूजन से बन्द कान में गुरूपदेश नहीं सुनाई पड़ता।
- शुकनास सर्वप्रथम लक्ष्मी के विषय में चन्द्रापीड को उपदिष्ट करता है।

शुकनासोपदेश में 'लक्ष्मी' हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण और संज्ञापद

1. इन्द्रियहरिणहारिणी 2 . खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी
3. अपरिचिता 4. अनार्या
5. अप्रत्ययबहुला 6. वसुजननी
7. तरङ्गबुद्‌बुद्‌चञ्चला 8. तमोबहुला
9. भीमसाहसैकहार्यहृदया 10. अचिरद्युतिकारिणी
11. तोयराशिसम्भवा 12. ईश्वरतामादधाना
13. अमृतसहोदरा, कटुविपाका 14. विग्रहवती, अप्रत्यक्षदर्शना
15. पुरुषोत्तमरता 16. खलजनप्रिया
17. चपला 18. व्याधगीतिः
19. परामर्शधूमलेखा 20. निवासजीर्णवलभी
21. तिमिरोद्‌गतिः, पुरःपताका 22. उत्पत्तिनिम्नगा, आपानभूमिः
23. सङ्गीतशाला, आवासदरी 24. उत्सारणवेत्रलता, अकालप्रावृड्
25. कपटनाटकस्य प्रस्तावना 26. राहुजिह्वा
27. आलेख्यगता, पुस्तमयी 28. उत्कीर्णा, श्रुता
29. दुराचारा

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के गुण/अवगुण

1. रागम् (पारिजातपल्लवेभ्यः) 2. एकान्तवक्रताम् (इन्दुशकलात्)
3. चञ्चलताम् (उच्चैःश्रवसः) 4. मोहनशक्तिम् (कालकूटात्)
5. मदम् (वारुणीमदिरायाः) 6. नैष्ठुर्यम् (कौस्तुभमणेः)
7. न परिचयं रक्षति। 8. नाभिजनमीक्षते।
9. न रूपमालोकयते। 10. न कुलक्रममनुवर्तते।
11. न शीलं पश्यति। 12. न वैदग्ध्यं गणयति।
13. न श्रुतम् आकर्णयति। 14. न धर्ममनुरुध्यते।
15. न त्यागमाद्रियते। 16. न विशेषज्ञतां विचारयति।
17. नाचारं पालयति। 18. न सत्यमनुबुध्यते।
19. न लक्षणं प्रमाणीकरोति। 20. तृष्णां संवर्धयति।
21. अशिवप्रकृतित्वमातनोति। 22. बलोपचयमाहरन्ती।

लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त उपमाएँ

1. गन्धर्वनगरलेखेव
2. आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव।
3. कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकेव।
4. विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव।
5. लतेव, गङ्गेव। 6. पातालगुहेव।
7. हिडिम्बेव। 8. प्रावृडिव।
9. दुष्टपिशाचीव। 10. अनिमित्तमिव।
11. रेणुमयीव। 12. दीपशिखेव।
13. वात्येव।

शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।
भावार्थ – युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार अत्यन्त दुर्दमनीय होता है।

- पूरे शुकनासोपदेश का वक्ता शुकनास है और श्रोता चन्द्रापीड है।

2. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।
धन-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।

3. चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः?
क्या चन्दन से उत्पन्न अग्नि जलाती नहीं?

4. तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि।
चञ्चल मन वाले तथा अजागरूक बुद्धि वाले व्यक्ति को धन मतवाला बना देता है।

5. दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका।
उपभोगरूपी मृगतृष्णिका अत्यधिक दुःखदायी अन्तवाली है।

6. प्रतिशब्द इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।
भय से मनुष्य प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।

7. इयमनार्या (लक्ष्मीः) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।
नीच स्वभाव वाली (लक्ष्मी) इसको पा लेने पर भी कष्ट से पालन होता है।

8. विह्वला हि राजप्रकृतिः।
राज-स्वभाव निश्चय ही व्याकुल करने वाला है।

9. राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।
राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष से उत्पन्न आलस्य (तन्द्रा) को देने वाली है।

10. सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः।
सरस्वती द्वारा स्वीकृत व्यक्ति को लक्ष्मी ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती।

कादम्बरी बिन्दुवार अध्ययन

- 'कादम्बरी' के लेखक कौन हैं? - **बाणभट्ट**
- कादम्बरी साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? - **कथा**
- शुकनास ने किसे उपदेश दिया - **चन्द्रापीड को**
- कादम्बरी की कथा है - **कल्पनाप्रसूत**
- कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है? - **तीन**
- 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है? - **कादम्बरी**
- 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है? - **चन्द्रापीड**
- मुख्यतः कादम्बरी की शैली है - **पाञ्चाली**
- शुकनासोपदेश किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी में पार्श्व नायिका कौन है? - **महाश्वेता**
- कादम्बरी का प्रमुख नायक है - **चन्द्रापीड**
- कादम्बरी एक सुन्दर उदाहरण है? - **गद्यकाव्य का**
- तारापीडस्य मन्त्री कः? - **शुकनासः**
- चन्द्रापीडः .... अवतारः। - **चन्द्रमसः**
- कादम्बर्यां शुकनासस्य पुत्रः कः - **वैशम्पायनः**
- कादम्बरी में नायिका कौन है? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत है - **गुणाढ्य की बृहत्कथा**

- कादम्बर्याः उत्तरार्धं कः विरचितवान्? - **भूषणभट्टः**
- कादम्बरी के प्रारम्भ में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है? - **20**
- कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गई है? - **त्रिगुणमयपरब्रह्म**
- कादम्बरी का प्रधानरस है - **शृङ्गार**
- 'खल्वनर्थपरम्परा' में 'खलु' शब्द से क्या आशय है? - **निश्चित ही**
- वैशम्पायन की प्रेमिका थी - **महाश्वेता**
- चन्द्रापीड की प्रेमिका थी - **कादम्बरी**
- शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था?- **तारापीड का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास, कादम्बरी कथा में कौन है? - **मन्त्री**
- चन्द्रापीड के पिता का नाम था - **तारापीडस्य**
- विलासवती किसकी पत्नी थी? - **तारापीड की**
- चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है? - **कादम्बरी**
- पत्रलेखा किसकी पुत्री थी? - **कुलूतेश्वर की**
- शूद्रक अवतार था - **चन्द्रापीड**
- हारीत पुत्र था - **महर्षि जाबालि का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है - **चन्द्रापीड**
- किसके गुण दोषों का वर्णन शुकनास ने किया है? - **लक्ष्मी के**
- राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिये जाते हैं - **राज्याभिषेक के अवसर पर**
- लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया? - **कौस्तुभमणि से**
- लक्ष्मी 'पातालगुहेव..........' है - **तमोबहुला**
- लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि............. गणयन्ति - **अनुग्रहं**
- 'निर्मलापि कालुष्यमुपयाति' में किसकी ओर संकेत है? - **बुद्धि**
- कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है? - **आरूढप्रतापः**
- 'लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है? - **वध्यशाला**
- 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा' है - **राजलक्ष्मी**
- "उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते" ऐसा आचरण करते हैं - **लक्ष्मी से प्रभावित राजा**
- चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है- **शुकनास**
- 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है - **सुरा**
- 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है? - **उज्जयिनी**
- कादम्बरी का शुक पक्षी पूर्व जन्म में कौन था? -**वैशम्पायन**
- शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था? - **मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या**
- 'शुकनासोपदेश' में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है? - **ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्**
- शुकनासोपदेशानुसारेण अहङ्कारस्य एकं प्रबलं कारणं वर्तते - **गर्भेश्वरत्वम्**
- लक्ष्मीमद कैसा होता है - **अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला**
- किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्ध योगी के समान सफल होता है? - **आरूढ प्रताप वाले का**
- बिना जल वाला स्नान कौन-सा है?- **गुरूपदेशरूपीस्नान**
- गुरूपदेशस्य महत्त्वमस्मिन्नुपवर्णितं विस्तरेण- **कादम्बर्याम्**
- राजप्रकृति कैसी होती है? - **विह्वला**
- 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है? - **कृ**
- राजा शूद्रक की राजधानी - **विदिशा**
- निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं? 'अतिशुद्ध-स्वभावमपि कृष्णचरितम् अकरमपि हस्तस्थित-सकल-भुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्। - **शूद्रक**
- शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है? - **कादम्बरी**
- 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है? - **विदिशा**
- 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' किसका विशेषण है? - **प्रतीहारी**
- कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध था? - **घोड़ा**
- इन्द्रायुध किसका अवतार था? - **कपिञ्जल का**
- लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है - **जलधि (समुद्र) से**
- पुण्डरीकः कस्मात् कारणात् मृतः - **विरहतापेन**
- पत्रलेखा इसकी पात्र है - **कादम्बरी की**
- अधूरी कादम्बरी का पूरण इनसे हुआ - **पुलिन्दभट्ट**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्य सखा कः? - **कपिञ्जलः**
- इस कथा का आधार पुनर्जन्म सिद्धान्त पर विश्वास है - **कादम्बरी**
- शूद्रक का वर्णन है - **कादम्बरी**

- लक्ष्मी चाञ्चल्यमस्मिन्नुपवर्णितमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- वैशम्पायनवृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः - **कादम्बर्याम्**
- "न वैदग्ध्यं गणयति" इत्यस्मिन् वाक्ये वैदग्ध्यशब्दस्य कोऽर्थः - **पाण्डित्य**
- चन्द्रापीडस्य सेविका अस्ति - **पत्रलेखा**
- 'चन्द्रापीड' पात्र कहाँ वर्णित है? - **कादम्बरी में**
- 'कादम्बरी' शब्द प्रसिद्ध है - **मदिरा**
- वेत्रवती नदी किस नगरी में स्थित है? - **विदिशा में**
- 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? - **कादम्बरी**
- राजा शूद्रक की तुलना किससे नहीं की गई है? - **वरुण से**
- 'मन्मथः' पद का अर्थ है - **कामदेव**
- अप्रतिहतशक्ति से युक्त है - **गुह (कार्तिकेय)**
- 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः'- यहाँ 'गुह' का अभिप्राय है - **कार्तिकेय**
- राजहंस को किसने विमान बनाया? - **कमलयोनि (ब्रह्मा) ने**
- किसने राजा की ओर मुख करके आर्या छन्द को पढ़ा? - **विहङ्गराज ने**
- कौन उस आर्या छन्द को सुनकर आश्चर्यचकित हो गया? - **राजा**
- समस्त मन्त्रिमण्डल में प्रधानमन्त्री है - **कुमारपालित**
- किसके वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता थी? - **शुक के**
- चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई? - **तारापीड को**
- "आसीदशेषनरपति शिरः"–यह कथन किसके लिए कहा गया है? - **शूद्रक**
- कादम्बरी कथा के अनुसार विदिशा जिस राजा की राजधानी थी, उसका नाम है - **शूद्रक**
- 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' इस वाक्य में परमात्मा की कितनी अवस्थाओं का वर्णन किया गया है? - **तीन**
- 'हर इव जितमन्मथः' अंश के आधार पर जितेन्द्रिय राजा शूद्रक है - **शिव के समान**
- कादम्बरी में वर्णित विदिशा नगरी किस नदी के किनारे स्थित है? - **वेत्रवती**
- कादम्बर्याः तिर्यक्पात्रं वैशम्पायनः कस्मिन्नाश्रमे लब्धवानाश्रयम्? - **जाबाल्याश्रमे**
- कादम्बर्याः 'शूद्रक' ऐतिहासिकः पात्रमस्ति न वा? निश्चीयताम् - **कल्पितः**
- कादम्बर्याः वास्तविकी कथा केनोक्ताऽऽसीत्? - **जाबालिना**
- कादम्बर्यां महाश्वेता कं देवमुपवीणयति स्म? - **शिवम्**
- चाण्डालकन्या प्रथमे जन्मनि का आसीत्? - **लक्ष्मी**
- चाण्डालकन्ययाऽऽनीतः शुकः क आसीत्? - **पुण्डरीकः**
- महाश्वेतावृत्तान्ते किं नाम सरो वर्णितम्? - **अच्छोदसरः**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्यानुरागः कं प्रति आसीत्? - **महाश्वेताम्**
- 'महाश्वेता' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? - **कादम्बरी**
- शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदय वाला राजा कहाँ गया? - **अपने भवन में**
- 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है? - **बृहत्कथा तथा वासवदत्ता**
- 'विन्ध्याटवी वर्णन' किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरीकथामुखम् में**
- कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है? - **विष्णु**
- महाश्वेता किसका पर्यायवाची है? - **सरस्वती**
- "स्तनयुगमश्रुस्नातम्" .... इत्यादि कादम्बरीकथा-मुखश्लोकस्य वक्ताऽस्ति- **वैशम्पायनशुकः**
- 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इत्यत्र 'कादम्बरी' पदे कोऽलङ्कारः? - **श्लेषः**
- कादम्बर्यां विन्ध्याटवीवर्णने अचेतनपदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति? - **श्लेषस्य**
- "अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः"–यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है? - **कादम्बरी शुकनासोपदेश**
- "अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्" सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**
- "गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति" इदं वाक्यमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- "सुभाषितं हारि विशत्यधो-गलान्न दुर्जनस्या- करिपोरिवामृतम्" इति केन कविनोक्तम्? - **बाणमहाकविना**
- "रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये" श्लोक जिसमें उपलब्ध है, वह ग्रन्थ है - **कादम्बरी**
- "अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते"-श्लोकांश के रचयिता हैं? - **बाणभट्टः**
- 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला'–यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है - **कथाकाव्यस्य**
- 'सर्वथा निष्फला प्रज्ञा' इति वाक्यं .... विद्यते - **कादम्बर्याम्**
- 'कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति मदनस्य सर्वदा'- वाक्यमेतद् .... वदति? - **महाश्वेता**
- महाश्वेतायाः प्रेम्णि कः स्वप्राणान् त्यक्तवान्? - **पुण्डरीकः**
- 'अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्।' - इयं पंक्तिः कां वर्णयति - **महाश्वेताम्**
- महाश्वेतायाः प्रियकरः कः - **पुण्डरीकः**

- "असज्जनात् कस्य भयं न जायते" यह वचन किस ग्रन्थ का है - **कादम्बरी**
- 'अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाश हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।' प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**
- 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है? - **शुकनासोपदेश का**
- "पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया" यह उक्ति किसके लिए है? - **लक्ष्मी के लिए**
- "रुचिरस्वरवर्णप्रदा रसभाववती जगन्मनो हरति" किस कवि की रचना के लिए कहा गया है? - **बाणभट्ट**
- "लब्धापि दुःखेन परिपाल्यते" किसका कथन है? - **तारापीड का**
- "मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव" पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं? - **कादम्बरी**
- 'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।' इति श्लोकः निबद्धः वर्तते - **कादम्बर्याम्**
- "सर्वथा न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः" कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम्? - **कादम्बरी**
- "अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्" कस्य सम्बन्धे उक्तिः? - **महाश्वेतायाः सम्बन्धे**
- "किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्" सूक्ति ग्रहण की गई है - **कादम्बरी से**
- 'नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी**
- "अन्तरिते च तस्मिन् शबरसेनापतौ .... पिबन्निवास्माकमायूंषि।" इत्यत्र रिक्तस्थानम् पूरयत - **जीर्णशबरः**
- 'स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते' इतीदं कस्य वचनम्? - **जाबालिमुनेः**
- पुण्डरीकः महाश्वेतावियोगेन तप्तः शरीरं त्यक्त्वा अपरस्मिन् जन्मनि कः बभूव? - **वैशम्पायनः**
- शुकनासोपदेशानुसारेण लक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं कस्मात् नालिङ्गति - **ईर्ष्याकारणात्**

कादम्बरी-शुकनासोपदेशः वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. बाण की गद्यशैली है–
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) लाटी (D) पाञ्चाली

2. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) कुबेर (B) चित्रभानु
(C) वत्स (D) अर्थपति

3. बाणभट्ट के पुत्र का नाम है–
(A) मुरारिभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) भूषणभट्ट (पुलिन्द) (D) नयनभट्ट

4. बाणभट्ट किस गोत्र में उत्पन्न हुए–
(A) वत्सगोत्र (B) भृगुगोत्र
(C) काश्यपगोत्र (D) गौतमगोत्र

5. बाणभट्ट का निवास स्थान है–
(A) उज्जयिनी
(B) गया बिहार
(C) अचलपुर
(D) शोणनदी के तट पर प्रीतिकूट ग्राम

6. शुकनास के अनुसार शास्त्रजलप्रक्षालित बुद्धि भी कब कालुष्य को प्राप्त होती है–
(A) वृद्धावस्थायाम् (B) यौवनारम्भे
(C) बाल्यावस्थायाम् (D) इनमें से कोई नहीं

7. तारापीड का पुत्र है–
(A) शुकनास (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

8. वैशम्पायन किसका पुत्र है–
(A) तारापीड का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) पुण्डरीक का

9. तारापीड का मन्त्री है–
(A) शुकनास (B) इन्द्रायुध
(C) अर्थपति (D) चित्रभानु

10. चन्द्रापीड को किससे प्यार है–
(A) महाश्वेता से (B) चाण्डालकन्या से
(C) कादम्बरी से (D) पत्रलेखा से

11. चन्द्रापीड की माता है–
(A) रानी विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) महाश्वेता (D) मनोरमा

12. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

13. महाश्वेता का आश्रम कहाँ स्थित है–
(A) अच्छोदसरोवर में (B) हेमकूट में
(C) मानसरोवर में (D) पम्पासरोवर में

14. कादम्बरी किसकी पुत्री है–
(A) शूद्रक की (B) श्वेतकेतु की
(C) गन्धर्वराज चित्ररथ की (D) शुकनास की

15. कादम्बरी की माता का नाम है–
(A) विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) हंसपदिका (D) मदिरा

16. कादम्बरी कथा का उत्तरार्द्धभाग किसकी रचना है–
(A) बाणभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट (D) केयूरभट्ट

17. तारापीड की राजधानी है–

(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) कश्मीर (D) मालवा

18. कादम्बरी कथा का मुख्य रस है–
(A) अद्भुतरस (B) वीररस
(C) करुणरस (D) शृङ्गाररस

19. कादम्बरी कथा का प्रधान नायक है–
(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन
(C) जाबालि (D) कपिञ्जल

20. बाणभट्टस्य मातुः नाम अस्ति–
(A) वसुमतीदेवी (B) राजदेवी
(C) महाश्वेता (D) महादेवी

21. शूद्रक पूर्वजन्म में क्या था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) कपिञ्जल

22. बाणभट्ट की कादम्बरी क्या है–
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) मुक्तक (D) महाकाव्य

23. कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है–
(A) तारापीड का (B) चन्द्रापीड का
(C) शूद्रक का (D) पुण्डरीक का

24. युवा चन्द्रापीड को सारगर्भित उपदेश किसने दिया–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) शुकनास

25. ''न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते।'' ये पंक्तियाँ कादम्बरी में किस प्रसङ्ग में आयी हैं–
(A) कादम्बरी सौन्दर्यवर्णन
(B) चाण्डालकन्या वर्णन
(C) लक्ष्मी की निन्दा
(D) महाश्वेता गुणवर्णन

26. यह सारा काव्यजगत् किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है–
(A) बाणभट्ट का (B) कालिदास का
(C) श्रीहर्ष का (D) दण्डी का

27. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है–
(A) शूद्रक का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) बाणभट्ट का

28. 'करिणः' पद का अर्थ है–
(A) गजाः (B) अश्वाः
(C) किरणम् (D) हस्ताः

29. पुरुषों के लिए समग्र मलों को धोने में समर्थ बिना जल का स्नान है–
(A) सरस्वती कृपा (B) गुरु का उपदेश
(C) बल-पौरुष (D) देव-दर्शन

30. 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः पद का अर्थ है–
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) प्रकाश

31. हारीत पुत्र था–
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

32. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(B) कादम्बरी कथामुख में
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध में

33. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरी–कथामुखात्
(B) कादम्बरी-शुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी-उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्यां नास्ति

34. चन्द्रापीड के चरित्र की विशेषता नहीं है–
(A) सहृदयप्रेमी (B) विवेकी युवक
(C) अस्पष्टवक्ता (D) पराक्रमी राजपुत्र

35. ''वाणी बाणो बभूव'' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) गोवर्द्धनाचार्यस्य (B) जयदेवस्य
(C) राजशेखरस्य (D) श्रीचन्द्रदेवस्य

36. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

37. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह किसका कथन है–
(A) मंखक का (B) श्रीचन्द्रदेव का
(C) गोवर्द्धन का (D) राजशेखर का

38. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त से
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध भाग से

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह कथन किसके लिए कहा गया है–
(A) सरस्वती के लिए (B) लक्ष्मी के लिए
(C) दुष्टों के लिए (D) राजधानी के लिए

40. 'दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी' आदि पदों का प्रयोग बाण ने किसके लिए किया है–
(A) दुष्टमहिलाओं के लिए (B) चाण्डालकन्या के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) रानी विलासवती के लिए

41. ''यथा यथा चेयं चपला दीप्यते'' यहाँ 'चपला' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) भगवती सरस्वती का (B) लक्ष्मी का
(C) अनार्या स्त्रियों का (D) विलासवती का

42. ''कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(B) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(C) तारापीड ने शुकनाम से
(D) शुकनास ने तारापीड से

43. बड़े-बूढ़ों के उपदेश को बकवास समझकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं–
(A) दुष्ट राजागण (B) सेवकगण
(C) सैनिकगण (D) चन्द्रापीड

44. ''न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, न अभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्'' इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) राजाओं का (B) सेवकों का
(C) विद्वानों का (D) देवताओं का

45. 'इषवः' पद का अर्थ है–
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

46. 'कुलीराः इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है–
(A) कुम्हार (B) कद्दू
(C) केकड़ा (D) सर्प

47. 'खद्योत' पद का अर्थ है–
(A) आकाश (B) खरगोश
(C) प्राणी (D) जुगनू

48. ''कदलिका कामकरिणः'' यहाँ 'कदलिका' पद का अर्थ है–
(A) एक पुष्प विशेष (B) सरस्वती
(C) केले का बगीचा (D) लक्ष्मी

49. ''राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है–
(A) राहुग्रस्त जीभ के लिए
(B) राहुग्रह के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए
(D) राजाओं के जिह्वा के लिए

50. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

51. भीम किस राक्षसी पर मोहित हुए थे–
(A) शूर्पणखा (B) हिडिम्बा
(C) हेरम्बा (D) हाहाडम्बिका

52. लक्ष्मी कहाँ से पैदा होती हैं
(A) विष्णु के पैरों से (B) ब्रह्मा की नाभि से
(C) क्षीरसागर से (D) शिव की जटाओं से

53. लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से क्या ग्रहण किया–
(A) कुटिलता (B) अस्थिरता
(C) सम्मोहन शक्ति (D) राग

54. लक्ष्मी 'कर्कशता' कहाँ से ग्रहण करती हैं
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैःश्रवा से (D) हालाहल से

55. पुरुषों में स्थित समस्त दोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं–
(A) गुरूपदेश (B) लक्ष्मी की प्राप्ति
(C) राज्यप्राप्ति (D) बुद्धिवैभव

56. शुकनास, अनर्थ परम्परा की कड़ी में किसे नहीं मानते हैं–
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) शक्त्यसम्पन्नता

57. ''विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पम-प्युपदेष्टव्यमस्ति'' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन शुक (D) तारापीड

58. 'निम्नगा' पद का अर्थ है–
(A) नदी (B) गङ्गोत्री
(C) सूची (D) समुद्र

59. 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' कौन है–
(A) लक्ष्मी (B) अमृत
(C) जलधि (D) चाण्डालकन्या

60. महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था–
(A) बाणभट्ट का (B) वामनभट्ट का
(C) भूषणभट्ट का (D) महिमभट्ट का

61. ''परस्परं विरुद्धचेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) शुकनास का (B) लक्ष्मी का
(C) तारापीड का (D) चाण्डालकन्या का

62. 'उपशशाम' में लकार है–
(A) लृट् (B) लुट्
(C) लिट् (D) लङ्

63. 'दातारम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) दा+तृच्+ द्वितीया, बहु. (B) दा+अम्+प्रथमा, एक.
(C) दा+तृच्+द्वितीया, एक. (D) दाञ्+घञ्+प्रथमा, बहु.

64. 'वारि' शब्द का तृतीया एक. में रूप होगा–
(A) वारेण (B) वारिणा
(C) वारिया (D) वारिसा

65. ''अवधारयन्तः'' में प्रत्यय है
(A) शानच् (B) तृच्
(C) शतृ (D) घञ्

66. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, पिशाचैरिव

ग्रस्यन्ते'' इत्यादि स्थलों में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) निदर्शना (D) उपमा

67. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया, रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

68. '''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि है–
(A) हल्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

69. 'अपरिणामोपशमः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) अपरिणामा+ओपशम् (B) अपरिणाम+उपशमः
(C) अपरिणाम+औपशम (D) अपरीयाम+उपशमः

70. 'राजप्रकृतिः' में समास है–
(A) षष्ठी तत्पु. (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

71. 'विटान् पान्ति इति' इस व्युत्पत्ति से होगा–
(A) विटपाः (B) विटकाः
(C) विटकान् (D) विटायाः

72. शुकनासोपदेश में मुख्य प्रतिपाद्य विषय है–
(A) द्यूतक्रीडा का
(B) राज्यसञ्चालन का
(C) लक्ष्मी को प्राप्त करने की विधियों का
(D) युवावस्था में लक्ष्मीजन्य मानसिक विकृतियों एवं उनसे होने वाली हानियों का

73. कादम्बरी कथा का नामकरण हुआ है–
(A) नायक के नाम पर (B) नायिका के नाम पर
(C) दासी के नाम पर (D) शुकनास के नाम पर

74. चन्द्रापीड के एक जन्म का नाम था–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) कपिञ्जल (D) शूद्रक

75. लक्ष्मी, पापी समझकर किसके पास तक नहीं जाती–
(A) विद्वानों के (B) धनहीनों के
(C) विनयशील के (D) राजाओं के

76. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

77. ''अकालप्रावृड्गुणकलहंसकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्'' इत्यादि पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

78. समुद्रमन्थन से लक्ष्मी सहित कितने रत्न निकले थे–
(A) 18 (B) 17
(C) 14 (D) 19

79. 'असिधारा' पद का अर्थ है–
(A) तलवार की धार (B) जलधारा
(C) लक्ष्मी की चञ्चलता (D) समुद्र-प्रवाह

80. सरस्वती द्वारा अपनाये गए व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण कौन नहीं अपनाती–
(A) राजागण (B) लक्ष्मी
(C) शुकनास (D) कादम्बरी

81. ''अकाला चासौ प्रावृट् इति अकालप्रावृट्'' यहाँ समास है–
(A) नञ् तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

82. विदिशा, किस नदी के किनारे स्थित थी–
(A) वेत्रवती के (B) सरयू के
(C) गङ्गा के (D) महानदी के

83. चाण्डालकन्या किसके समीप आयी–
(A) महाश्वेता के (B) कादम्बरी के
(C) पुण्डरीक के (D) शूद्रक के

84. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

85. वैशम्पायन की प्रेमिका थी–
(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) विनता

86. कादम्बरी में वर्णन नहीं है–
(A) अच्छोदसरोवर का (B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का (D) देवदारु का

87. वैशम्पायन पूर्व जन्म में था–
(A) शूद्रक (B) पुण्डरीक
(C) कुमारपालित (D) चन्द्रापीड

88. 'तुरङ्गबाण' किसकी उपाधि है–
(A) बाणभट्ट की
(B) अभिनवबाण की
(C) अम्बिकादत्तव्यास की
(D) भवभूति की

89. ''आधुनिक बाण'' के रूप में जाना जाता है–
(A) सुबन्धु को (B) बाण को
(C) अम्बिकादत्त व्यास को (D) दण्डी को

90. बाणभट्ट के भाई थे–
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

91. ''सम्पत्तिरूपी तिमिर में होने वाला अन्धापन कष्टकर होता है'' किसने कहा–
(A) चन्द्रापीड ने (B) तारापीड ने

(C) द्वारपाल ने (D) शुकनास ने

92. ''अहङ्कार से उत्पन्न उष्णता, शीतल औषधियों से भी शान्त नहीं होती'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(B) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(C) शुकनास ने तारापीड से
(D) चन्द्रापीड ने तारापीड से

93. ''त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः'' इस सूक्ति वाक्य में 'नमः' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग हुआ है–
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D)प्रथमा

94. राज्याभिषेक के समय किसकी आवश्यकता होती है–
(A) सेना की (B) विश्राम की
(C) धन की (D) उपदेश की

95. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था–
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

96. कादम्बरी विभक्त है–
(A) एक भाग में (B) तीन भागों में
(C) दो भागों में (D) चार भागों में

97. कादम्बरी की कथा का अन्त होता है–
(A) तारापीड-पत्रलेखा के मिलन से
(B) चाण्डालकन्या-शूद्रक के मिलन से
(C) वैशम्पायन-जाबालि के मिलन से
(D) चन्द्रापीड-कादम्बरी के मिलन से

98. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक (D) द्वैपायन

99. चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है–
(A) उज्जयिनी में (B) अच्छोदसरोवर में
(C) विदिशा में (D) हेमकूटपर्वत में

100. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई–
(A) वैशम्पायन को (B) शुकनास को
(C) तारापीड को (D) कादम्बरी को

उत्तरमाला

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (D)	6. (B)
7. (C)	8. (B)	9. (A)	10. (C)	11. (A)	12. (D)
13. (A)	14. (C)	15. (D)	16. (C)	17. (A)	18. (D)
19. (A)	20. (B)	21. (C)	22. (A)	23. (C)	24. (D)
25. (C)	26. (A)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (B)
31. (B)	32. (B)	33. (B)	34. (C)	35. (A)	36. (A)
37. (B)	38. (A)	39. (B)	40. (C)	41. (B)	42. (B)
43. (A)	44. (A)	45. (D)	46. (C)	47. (D)	48. (C)
49. (C)	50. (B)	51. (B)	52. (C)	53. (D)	54. (A)
55. (A)	56. (D)	57. (B)	58. (A)	59. (A)	60. (A)
61. (B)	62. (C)	63. (C)	64. (B)	65. (C)	66. (B)
67. (A)	68. (D)	69. (B)	70. (A)	71. (A)	72. (D)
73. (B)	74. (D)	75. (C)	76. (C)	77. (B)	78. (C)
79. (A)	80. (B)	81. (B)	82. (A)	83. (D)	84. (A)
85. (B)	86. (D)	87. (B)	88. (A)	89. (C)	90. (C)
91. (D)	92. (A)	93. (A)	94. (D)	95. (C)	96. (C)
97. (D)	98. (C)	99. (A)	100. (C)		

4.18 हर्षचरितम्

लेखक - बाणभट्ट
काव्यविधा- आख्यायिका
उच्छ्वास- ८ (आठ)
उच्छ्वासों का नाम

उच्छ्वास-	नाम
प्रथम	वात्स्यायनवंश वर्णन
द्वितीय	राजदर्शन
तृतीय	राजवंश-वर्णन
चतुर्थ	चक्रवर्ति-जन्मवर्णन
पञ्चम	महाराज-मरण-वर्णन
षष्ठ	राजप्रतिज्ञा-वर्णन
सप्तम	छत्रलब्धि
अष्टम	विन्ध्याद्रिनिवेशन

उपजीव्य- ऐतिहासिक घटना

रीति- पाञ्चाली
शैली- उत्कृष्ट गद्य-शैली
प्रधान/अङ्गी रस- वीररस **अङ्ग रस-** करुण, शृङ्गार

हर्षचरितम्

➢ महाराज हर्षवर्धन का जीवन-परिचय होने के कारण इस आख्यायिका का नाम 'हर्षचरित' पड़ा।
हर्षस्य चरितम् अस्मिन् इति हर्षचरिततम्- **बहुव्रीहि समास**
**''आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम्।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्॥
कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित्॥''** (सा०द०)

➢ उपर्युक्त लक्षणानुसार 'हर्षचरित' में यत्र-तत्र वक्त्र छन्द का प्रयोग किया गया है।

➢ कथावस्तु के आधार पर इस आख्यायिका के दो खण्ड है-
1. महाकवि बाणभट्ट का जीवन परिचय (1-2 उच्छ्वासों में)

2. महाराज हर्ष का जीवन चरित (3-8 उच्छ्वासों में)

- हर्षचरित 8 उच्छ्वासों में विभक्त आख्यायिका है।

हर्षचरित का मङ्गलाचरण

नमस्तुङ्गशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे।
त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तम्भाय शम्भवे॥

भावार्थ- त्रिभुवन रूपी नगर के निर्माण- आरम्भ के मूलस्तम्भ, उन्नत मस्तक पर चन्द्र के चँवर की शोभा है, उन भगवान् शङ्कर को नमस्कार है।

- इस माङ्गलिक पद्य में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- यह नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है।
- इसमें अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
- हर्षचरित के मङ्गलाचरण के रूप में 21 श्लोकों का प्रयोग किया गया है।
- मङ्गलाचरण से प्रारम्भ करके प्रारम्भिक 21 इक्कीस श्लोकों में देव स्तुति, पूर्ववर्त्ती कवियों का स्मरण, सज्जन प्रशंसा एवं दुर्जनों की निन्दा है।
- द्वितीय श्लोक में **पार्वती** की स्तुति है।
- तृतीय में महाकवि **व्यास** का स्मरण।
- श्लोक 4,5,6 में कुकवि निन्दा।
- सातवें,आठवें श्लोक में 'काव्य के देश के आधार पर रूप भेद।'
- नवें श्लोक में व्यास की वाणी तथा महाभारत की प्रशंसा।
- दशवें श्लोक में आख्यायिकाकारों की वन्दना।
- ग्यारहवें में '**सुबन्धु** एवं उनकी रचना '**वासवदत्ता**' की प्रशंसा।
- बारहवें में कवि '**हरिश्चन्द्र**' की प्रशंसा।
- तेरहवें में कवि '**सातवाहन**' की प्रशंसा।
- चौदहवें में '**प्रवरसेन**' एवं उनकी कृति '**सेतुबन्ध**' की प्रशंसा।
- पन्द्रहवें में महाकवि '**भास**' की प्रशंसा।
- सोलहवें में '**महाकवि कालिदास**' की प्रशंसा।
- सत्रहवें में '**गुणाढ्य की बृहत्कथा**' की प्रशंसा।
- अठारहवें में कवि '**आढ्यराज**' की प्रशंसा।
- उन्नीसवें तथा बीसवें में 'आख्यायिका लेखन की इच्छा'
- इक्कीसवें में 'महाराज हर्ष के विजय की कामना।'

हर्षचरित के कथावस्तु का सारांश

भाग-1

प्रथम उच्छ्वास

- इस भाग में प्रथम एवं द्वितीय उच्छ्वास की कथा है। जिसमें महाकवि बाणभट्ट के 'वात्स्यायन' वंश का वर्णन है।
- कथानक का प्रारम्भ ब्रह्मलोक में बैठे ब्रह्मा जी से होती है, जो इन्द्रादि देवताओं की उपस्थिति में शाश्वत ब्रह्म के विषय में चर्चा कर रहे थे।
- ब्रह्मा जी की सेवा में मनु, दक्ष, चाक्षुष आदि प्रजापति तथा सप्तर्षि आदि महर्षि संलग्न थे।
- अन्य विद्वानों से किसी मत पर दुर्वासा से मन्दपाल नामक दूसरे मुनि से झगड़ा हो जाता है।
- दुर्वासा, 'मुनि अत्रि' के पुत्र तथा तारापति (चन्द्रमा) के भाई हैं जो क्रोध के कारण सामगान को स्वरभङ्ग कर देते हैं।

''मुनिरत्रेस्तनयस्तारापतेर्भ्राता नाम्ना दुर्वासा द्वितीयेन मन्दपालनाम्ना मुनिना सह कलहायमानः सामगायन्क्रोधान्धो विस्वरम् अकरोत्।''

- ब्रह्मा जी के पास चँवर डोलाती सरस्वती, दुर्वासा के स्वरहीन पाठ को सुनकर हँस पड़ती है।
- सरस्वती के हँसने पर दुर्वासा उन्हें मर्त्यलोक में जाने का शाप दे देते हैं-

''दुर्विनीते! व्यपनयामि ते विद्याजनितामुन्नतिमिमाम्, अधस्ताद् गच्छ मर्त्यलोकम्।''

- सावित्री भी ब्रह्मा जी के पास में सदेह (शरीर सहित) बैठी हैं और दुर्वासा को अपमानित करती हैं।
- तत्पश्चात् ब्रह्मा जी अभिशप्त सरस्वती के साथ सावित्री को भी मर्त्यलोक भेजने का निर्णय लेते हैं।

''वत्से सरस्वती! विषादं मा गाः एषा त्वामनुयास्यति त्वया।''

- सरस्वती ने ब्रह्मा जी की तीन बार प्रदक्षिणा करके सावित्री के साथ मर्त्यलोक के लिए प्रस्थान किया।
- ब्रह्मलोक से आते समय सरस्वती, 'हिरण्यवाह' नामक महानद (अब सोन नदी) की रमणीयता से इसी स्थान पर रहने की इच्छा व्यक्त करती हैं तथा सावित्री भी इसी का समर्थन करती हैं।
- इसी स्थान पर सरस्वती ने बालू का शिवलिङ्ग बनाकर शिव की अष्टमूर्तियों का ध्यान किया और कई दिन बिताए।
- एक दिन घोड़े पर सवार एक 18 वर्ष के नवयुवक और साथ में कुछ लोगों को आते हुए उन दोंनो ने देखा।
- परिचय करने पर पता चला कि वह युवक, महर्षि च्यवन और सुकन्या के पुत्र 'दधीचि' हैं।
- प्रथम दर्शन में ही सरस्वती और दधीचि एक दूसरे पर आसक्त हो जाते हैं।
- सोननदी के पार च्यवन आश्रम में रहते हुए दधीचि काम से पीड़ित होकर क्षीण हो जाते हैं।
- मालती नामक दूती इस बात की सूचना लेकर सरस्वती के पास आती है और सरस्वती भी प्रणय की स्वीकृति दे देती हैं।
- सरस्वती, दधीचि से बताती है कि ''वह दुर्वासा द्वारा शापित होकर मर्त्यलोक में आयी हैं।''
- एक वर्ष तक साथ रहते हुए सरस्वती गर्भिणी होती हैं।
- पुत्र जन्म के पश्चात् ब्रह्मा जी के प्रभाव से शाप का अन्त होता है और सरस्वती, सावित्री के साथ ब्रह्मलोक चली जाती हैं।
- सरस्वती के वियोग में दधीचि अपने पुत्र को भाई की पत्नी

को सौपकर वन में चले गये।

- भाई की पत्नी 'अक्षमाला' ने अपने और दधीचि के पुत्र को समान रूप से पाला-पोसा तथा एक का नाम 'सारस्वत' तथा दूसरे का नाम 'वत्स' रखा।
- बड़े होने पर अपने हमवयस्क भाई और मित्र 'वत्स' का विवाह कराकर तथा उसी प्रदेश में प्रीति होने के कारण 'प्रीतिकूट' नामक निवास बनाकर सारस्वत भी वन चले गये।
- इसी वंश परम्परा में कुबेर तथा कुबेर के चार पुत्र- अच्युत, ईशान, हर और पाशुपत हुए।
- पाशुपत के एक ही पुत्र अर्थपति के भृगु, हंस, शुचि,कवि, महीदत्त, धर्म,जातवेदस्, चित्रभानु, त्र्यक्ष, अहिदत्त और विश्वरूप नामक ग्यारह पुत्र हुए।
- चित्रभानु और राजदेवी से बाण पैदा हुए, किशोरावस्था में चन्द्रसेन और मातृषेण आदि आवारा मित्रों का साथ पाकर, तथा युवावस्था में स्वच्छन्द होकर बाण खिल्ली के पात्र बन गये।
- तत्पश्चात् विद्वत्जनों के सम्पर्क से बाण विद्वान् होकर देश-देशान्तर में भ्रमण किये तथा बाद में अपने गाँव प्रीतिकूट आकर मोक्षसुख जैसा अनुभव किया।

प्रथम उच्छ्वास समाप्त

द्वितीय उच्छ्वास

- ग्रीष्म ऋतु के एक शाम को महाराज हर्ष के भाई कृष्ण के द्वारा भेजे गये भृत्य का आगमन होता है।
- चन्द्रसेन उस मेखलक नामक भृत्य को बाण के पास ले आता है।
- मेखलक द्वारा सन्देश प्राप्त होता है कि महाराज के भाई कृष्ण ने बाण को राजकुल में आने का निवेदन किया है।
- उस दिन मेखलक को विश्राम और भोजन कराने के लिए बाण ने चन्द्रसेन को आदेशित किया तथा राजकुल में जाने का इरादा पक्का किया।
- अगले दिन सुबह पूजापाठ करके श्वेत वस्त्र, श्वेत माला, श्वेत चन्दन धारण करके सभी लोगों से आज्ञा लेकर बाण प्रीतिकूट से निकल गये।
- पहले दिन बाण चण्डिका वन पार करके '**मल्लकूट**' नामक गाँव में अपने मित्र जगत्पति के घर ठहरे।
- दूसरे दिन गङ्गा नदी पार करके '**यष्टिगृहक**' नामक गाँव में रात बितायी।
- अगले दिन राप्ती नदी के किनारे **मणिपुर** नामक ग्राम के समीप छावनी में पहुँचे तत्पश्चात् राजभवन को गये।
- मेखलक के परिचय बताने पर '**परियात्र**' नामक दौवारिक बाण को अन्दर ले जाता है।
- अन्दर पहुँचकर बाण ने अनेक प्रकार के हाथी, घोड़े और ऊटों को देखा।
- हजारों राजाओं से भरे तीन ड्योढियों को पार करके चौथी में बाण ने चक्रवर्ती महाराज हर्ष को देखा।
- महाराज हर्ष ने बाण की ओर देखा और मालवराज के पुत्र से कहा-''यह तो लम्पट है।'' ''**महानयं भुजङ्गः।**''
- बाण, महाराज हर्ष से कहते हैं, देव! मैं तो गृहस्थ हूँ मेरे अन्दर कौन-सी भुजङ्गता है- ''**का मे भुजङ्गता।**''
- बाण के अपने अनेकों गुणों के बारे में बताने पर हर्ष कहते हैं, मैंने भी ऐसा ही सुना है- ''**एवमस्माभिः श्रुतम्।**''
- इस प्रकार बाण, हर्ष से प्रसन्न होकर उन्हें अत्यन्त उदार बताते हैं- ''अतिदक्षिणः खलु देवो हर्षः।''

द्वितीय उच्छ्वास समाप्त

भाग-2

तृतीय उच्छ्वास

- शरद् ऋतु के एक दिन बाण अपने गाँव प्रीतिकूट में लौट आये और अपने बन्धु-बान्धुओं से भेंट की।
- ग्रामीण तथा परिवारी जनों ने बाण का स्वागत-सत्कार किया।
- बाण के सबसे छोटे-चचरे भाई श्यामल की इच्छा पर बाण ने देव हर्ष के जीवन- चरित को कहना प्रारम्भ किया।
- 'श्रीकण्ठ' नाम का एक जनपद था। वह पुण्यशाली लोगों का निवास और पृथ्वी पर स्वर्ग के समान था।
- कुबेर की नगरी अलका के समान उस श्रीकण्ठ जनपद की राजधानी थी **स्थाणीश्वर** (थानेश्वर)।
- उस स्थाणीश्वर में '**पुष्यभूति**' नाम का एक राजा हुआ जो भगवान् शिव का अनन्य भक्त था।
- पुष्यभूति ने सुना था कि कोई '**भैरवाचार्य**' नामक दाक्षिणात्य महाशैव हैं, जो साक्षात् शिव के अवतार हैं।
- पुष्यभूति, विना देखे ही **भैरवाचार्य** के प्रति श्रद्धा करने लगे और उनके दर्शन की आकांक्षा करने लगे।
- एक दिन एक परिव्राजक, पुष्यभूति से मिलने आता है और बताता है कि 'वह भैरवाचार्य की आज्ञा से आया है।'
- वह परिव्राजक भैरवाचार्य द्वारा दिये गये 'रत्नजटित पाँच चाँदी के कमलों' को पुष्यभूति को अर्पित करता है।
- अगले दिन मिलने की बात कहकर पुष्यभूति, परिव्राजक को विदा करते हैं।
- दूसरे दिन राजा सरस्वती नदी के पास जंगल के आश्रम में भारी साधुओं के बीच **भैरवाचार्य** को देखा।
- भैरवाचार्य दूर से ही राजा को देखकर, तथा उनके पास जाकर श्रीफल का उपहार भेंट कर '**स्वस्ति**' का उच्चारण किया।
- राजा उनको प्रणाम करके, आशीर्वाद प्राप्त करके लौट आते हैं।
- अगले दिन भैरवाचार्य राजा से मिलने जाते हैं और अपने शिष्य पातालस्वामी द्वारा ब्रह्मराक्षस के हाथ से छीने गये'अट्टहास' नामक कृपाण भेंट करते हैं।
- कुछ दिन बाद राजा, कृष्णचतुर्दशी को भैरवाचार्य द्वारा दीक्षित किये गये और उनके शिष्य टीटिभ, कर्णताल और पातालस्वामी से मिले।
- राजा को लक्ष्मी द्वारा **हर्ष** नामक पुत्र की प्राप्ति का वरदान

मिलता है।

- राजा के ही प्रयास से लक्ष्मी द्वारा **भैरवाचार्य** को सिद्धि प्राप्त होती है।
- राजा, टीटिभ आदि के साथ लौट आते हैं।

* तृतीय उच्छ्वास समाप्त *

चतुर्थ उच्छ्वास

- पुष्यभूति के वंश में 'प्रभाकरवर्धन' नामक राजाधिराज हुआ जिसका दूसरा नाम 'प्रतापशील' था, जो सूर्यभक्त था।
- उस राजा की 'यशोवती' नाम की पटरानी थी।
- स्वप्न के बाद रानी गर्भवती होती हैं और राज्यवर्धन का जन्म होता है। समय के साथ राज्यवर्धन बड़े हुए।
- तत्पश्चात् जेठ महीने के कृष्ण पक्ष की कृत्तिका नक्षत्र में द्वादशी तिथि को **हर्ष** पैदा हुए।
- पूरे राज्य में उत्सव मनाया जाने लगा और धीरे-धीरे समय बीतने पर हर्ष भी बढ़ने लगे।
- जब हर्ष अपने पैरों पर चलने लगे, तब उनकी माता यशोवती ने एक पुत्री **'राज्यश्री'** को जन्म दिया।
- रानी यशोवती के भाई का आठ वर्षीय पुत्र भण्डि भी दोनों राजकुमारों के अनुचर के रूप में रहने लगा।
- राजा प्रभाकरवर्धन ने मालवराज के पुत्र कुमारगुप्त और माधवगुप्त को अनुचर हर्ष के रूप में नियुक्त करते हैं।
- इधर 'राज्यश्री' भी यौवन को प्राप्त हो गयी और राजा को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी।
- इसके बाद पत्नी और दोनों पुत्रों से सलाह कर मौखरि-वंशीय क्षत्रिय कुल में उत्पन्न 'अवन्तिवर्मा' के पुत्र 'ग्रहवर्मा' के साथ विवाह सुनिश्चित हुआ।
- ज्योतिषियों ने लग्न निकाला और सारी तैयारियों के बाद विवाह सम्पन्न हुआ तथा दस दिनों तक रुकने के बाद ग्रहवर्मा अपनी वधू राज्यश्री के साथ अपने निवास स्थान पर चला गया।

* चतुर्थ उच्छ्वास समाप्त *

पञ्चम उच्छ्वास

- किसी समय राजा प्रभाकरवर्धन अपने पुत्र राज्यवर्धन के साथ हूणों से युद्ध करने के लिए उत्तरापथ की ओर गये।
- एक रात हर्ष को किसी अनिष्ट का स्वप्न आता है, कुरंगक नामक लेखहारक (पत्रों का आदान-प्रदान करने वाला) महाराज के बीमारी की सूचना लेकर आता है।
- आनन-फानन में हर्ष उनके पास जाने के लिए उद्यत हुए और रास्ते में बहुत ही अपशकुन दिखायी दिया।
- अगले दिन दोपहर स्कन्धावार पहुँचकर हर्ष ने काफी सन्नाटा देखा। हर जगह शोक ही बिखरा था।
- हर जगह उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी यज्ञ, पूजन, पाठ, जप आदि किया जा रहा था। वैद्यकुमार सुषेण भी अप्रसन्न थे।
- राजा का दाह ज्वर बढ़ता ही जा रहा था। इसी बीच हर्ष को देखकर पिता जी ने उसे अपने पास बुलाकर आलिङ्गन किया और शोक न करने का आग्रह किया।
- आयुर्वेद के श्रेष्ठ वैद्य कुमार **'रसायन'** भी राजा के' दाह को कम करने में असमर्थ हो गये।
- यशोवती की प्रतीहारी हर्ष, को सूचना देती है कि महाराज के जीते जी देवी यशोवती आत्मदाह करने जा रही हैं।
- हर्ष के अनुनय-विनय के बाद भी माता ने हर्ष को आलिङ्गन करके अग्नि में प्रवेश किया।
- माँ की मृत्यु के पश्चात् हर्ष पिता के पास गये। शोकातुर हर्ष को देखकर राजा दुःखी हुए और राज्यविषयक कुछ उपदेश देकर हमेशा के लिए आँखे मूँद लिए।
- राजपुरोहितों की उपस्थिति में हर्ष द्वारा सरस्वती नदी के किनारे महाराज का अंतिम संस्कार किया गया।
- इस प्रकार दुःखी हर्ष, बड़े भाई के दर्शन की उत्कण्ठा से उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

* पञ्चम उच्छ्वास समाप्त *

षष्ठ उच्छ्वास

- महाराज की मृत्यु के पश्चात् उनकी समस्त वस्तुएं ब्राह्मणों को दान दे दी गयीं।
- राज्यवर्धन के आने पर देव हर्ष अपने शोक को रोक न सके और वे शोक आँखों से निकल पड़े।
- पिता की मृत्यु के शोक से राज्यवर्धन ने तलवार छोड़कर संन्यास अपनाने का निर्णय लिया।
- इस निर्णय से हर्ष अत्यन्त दुःखी हुए, इसी बीच राज्यश्री का सेवक आता है।
- उस संवादक नामक परिचारक से पता चलता है कि 'मालवराज ने ग्रहवर्मा की हत्या कर दी, तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया।'
- जीजा की मृत्यु, बहन का बंदी बनना, इसको अपने राज्य पर आक्रमण की आशङ्का से राज्यवर्धन, भण्डि सहित दस हजार घोड़ों की सेना के साथ मालवराज से युद्ध के लिए निकल पड़े।
- दुःखद घटनाओं के साथ जी रहे हर्ष को कुन्तल नामक घुड़सवार आकर बताता है कि राज्यवर्धन, मालव राज्य को जीत लिये लेकिन गौडाधिपति द्वारा छल से मारे गये।
- देव हर्ष ने अपने प्रधानसेनापति 'सिंहनाद', और गजसेनापति स्कन्दगुप्त से विचार-विमर्श करके युद्ध प्रयाण के लिए तैयारियाँ शुरु कर दी।

* षष्ठ उच्छ्वास समाप्त *

सप्तम उच्छवास

- ज्योतिषियों को बुलाकर हर्ष ने सेना के प्रयाण का मुहूर्त निकलवाया।
- युद्ध सम्बन्धी सारी तैयारियाँ पूरी हुईं, सामान हाथियों, बैलगाड़ियों पर लाये गये और अनेक राजाओं से राजद्वार भरा हुआ था।
- वीर सम्राट् ने राजसमूह को योग्यतानुसार विभक्त किया और सैनिक प्रयाण की आज्ञा दिया।

- कटक से जाने के बाद रास्ते में महाराज **प्राग्ज्योतिषेश्वर** का दूत हंसवेग, हर्ष को प्रणाम करके उन्हें 'आभोग' नामक छत्र प्रदान करता है।
- हंसवेग बताता है कि उसके महाराज ने पूँछा है कि, 'क्या आप उनका सहयोग स्वीकार करेंगे?'' हर्ष के सकारात्मक उत्तर देने पर हंसवेग चला जाता है।
- मालव सेना को जीतने गया भण्डि भी आकर हर्ष से मिलता है और बताता है कि 'गुप्त' नामक व्यक्ति ने कुशस्थल (कान्यकुब्ज) पर अधिकार कर लिया तब देवी राज्यश्री बन्धन से छूटकर अपने परिवार के साथ विन्ध्याचल के जंगल में चली गयीं।
- भण्डि के निवेदन पर हर्ष दूसरे दिन राज्यवर्धन द्वारा जीते गये सेना, हाथी, घोड़ों को देखने जाते हैं और कुछ लोगों को बहन राज्यश्री को खोजने के लिए विन्ध्याटवी भेजते हैं।
- हर्ष अपनी सेना के साथ उसी वनग्राम में दो दिन बिताते हैं।

* सप्तम उच्छ्वास समाप्त *

अष्टम उच्छ्वास

- दूसरे दिन हर्ष वन ग्राम से निकलकर विन्ध्याटवी में गये तभी **शरभकेतु** नाम के जंगली प्रदेशों के राजा का पुत्र **व्याघ्रकेतु** एक शबर युवक के साथ हर्ष से मिलने आया
- उस युवक को कुछ दूर पर रोककर ही व्याघ्रकेतु ने बताया कि वह युवक '**भूकम्प**' नाम के शबर सेनापति का भांजा '**निर्घात**' है जो विन्ध्याटवी के पत्ते-पत्ते की खबर रखता है।
- उसी द्वारा बताए गये मार्ग से हर्ष, ग्रहवर्मा के मित्र एक बौद्ध भिक्षु के पास राज्यश्री का पता लगाने के लिए जाते हैं।
- वहीं बौद्ध आश्रम में किसी अन्य भिक्षु द्वारा बताया जाता है कि 'कोई सुन्दर स्त्री विपत्ति में आत्मदाह करने के लिए तैयार है, कृपया उसकी रक्षा करें।
- अपने शिष्यों के साथ बौद्ध (दिवाकरमित्र) आगे-आगे चले, उनके पीछे हर्ष भी अपने सामन्तों के साथ गये।
- वहाँ पहुँच कर हर्ष ने मूर्च्छित-सी एवं अग्नि-प्रवेश के लिए तैयार राज्यश्री को देखा और दौड़कर उसके ललाट को अपने हाथों पर टिका लिया।
- उस रात राज्यश्री को लेकर हर्ष बौद्ध आश्रम में चले गये और रात्रि व्यतीत किया।
- दिवाकरमित्र '**एकावली**' नाम की एक अक्षमाला हर्ष की भुजाओं में बाँध दिया।
- हर्ष ने दिवाकरमित्र से निवेदन किया कि वह राज्यश्री को गौडाधिपति की हत्या तक अपने आश्रय में ही रखें।
- निर्घात को इनाम देकर विदा करने के बाद हर्ष, आचार्य और राज्यश्री सहित कटक लौट आये।

* अष्टम उच्छ्वास समाप्त *

हर्षचरित की उच्छ्वासवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम उच्छ्वास

- ब्रह्मा जी की गोष्ठी में विवाद।
- दुर्वासा का सरस्वती को शाप देना।
- ब्रह्मलोक से सरस्वती और सावित्री का प्रस्थान।
- दधीचि वर्णन।
- सारस्वत का जन्म।

द्वितीय उच्छ्वास

- भ्राता कृष्ण के दूत मेखलक का आगमन तथा कृष्ण का संदेश बाण को देना।
- बाण का राजद्वार गमन।
- प्रतीहार परियात्र वर्णन।
- बाण का हर्ष से भेंट।

तृतीय उच्छ्वास

- बाण का अपने गाँव प्रीतिकूट लौटना।
- बाण के भाइयों की हर्षचरित सुनाने की प्रार्थना।
- पुष्यभूति वर्णन।
- भैरवाचार्य का वर्णन।
- पुष्यभूति का श्रीकण्ठ नाग से युद्ध।
- प्रसन्न लक्ष्मी का पुष्यभूति को वर देना।

चतुर्थ उच्छ्वास

- प्रभाकरवर्धन तथा राज्यवर्धन का वर्णन।
- हर्ष का जन्म।
- राज्यश्री का जन्म एवं विवाह।

पञ्चम उच्छ्वास

- युद्ध के लिए राज्यवर्धन का प्रयाण।
- कुरंगक का आगमन।
- यशोवती का आत्मदाह वर्णन।
- प्रभाकरवर्धन की मृत्यु।

षष्ठ उच्छ्वास

- राज्यवर्धन का लौटना।
- ग्रहवर्मा की मृत्यु एवं राज्यश्री को कारावास।
- राज्यवर्धन का युद्ध हेतु प्रयाण एवं मृत्यु।
- हर्ष की दिग्विजय प्रतिज्ञा।

सप्तम उच्छ्वास

- युद्ध हेतु सैनिकों का प्रयाण।
- हंसवेग तथा छत्रवर्णन।
- भण्डि का आगमन।
- विन्ध्याटवी वर्णन।

अष्टम उच्छ्वास

- हर्ष का विन्ध्याटवी प्रवेश।
- बौद्धभिक्षु दिवाकरमित्र वर्णन।
- हर्ष का राज्यश्री से मिलन।

प्रमुख पात्रों का परिचय

सरस्वती और सावित्री

- सरस्वती वाणी की अधिष्ठात्री देवी एवं ब्रह्माजी की कुमारी

कन्या थीं सावित्री, सरस्वती की सखी थीं।

- दुर्वासा के शाप के पश्चात् सरस्वती के साथ सावित्री भी मर्त्यलोक पर आती हैं।
- सरस्वती का दधीचि से प्रेम हो जाता है।
- सरस्वती मुग्धा और सावित्री प्रगल्भा थीं।
- सरस्वती, दधीचि के प्रति अनुराग की बात छिपाये रहती हैं और मालती के जाने पर सावित्री से बताती हैं।
- इस प्रकार सरस्वती एक सहिष्णु, लज्जाशील तथा सावित्री एक सवेदनशील नारी हैं।

बाण

- हर्षचरित के रचयिता बाण भी इस आख्यायिका के मुख्य पात्र हैं।
- बाण ने इस आख्यायिका में स्वयं को 'उत्तम पुरुष' से नहीं बल्कि 'अन्य पुरुष' के माध्यम से कहा है।
- साधारण व्यक्ति की तरह बाण ने खुद के गुणों के साथ दोषों का भी वर्णन किया है।
- 14 वर्ष की आयु में ही माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् बाण मारे-मारे फिरने लगे।
- घुमक्कड़ होने के साथ-साथ अपने भाई-बन्धुओं से मिलकर रहे।
- अपने गुरु 'भर्वुशर्मा' से विद्वता को प्राप्त करके यश रूपी शरीर से अमर हो गये।

राज्यवर्धन

- एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेहशील भाई और वीर योद्धा के रूप में राज्यवर्धन का वर्णन है।
- पिता की आज्ञानुसार वे हूणों से युद्ध के लिए चले जाते हैं।
- माता-पिता की मृत्यु पश्चात् राज्यवर्धन अपने घर आते हैं और संन्यासी होने की इच्छा व्यक्त करते हैं।
- अपने जीजा की मृत्यु के पश्चात् गौडाधिपति द्वारा छल से मार दिये जाते हैं।
- हर्ष के प्रति उनका हृदय सर्वथा अकलुषित था।

हर्षवर्धन

- हर्ष एक चक्रवर्ती सम्राट् थे। उनके अन्दर सद्गुणों का भण्डार छिपा था। हर्ष को **आख्यायिका का नायक** भी कह सकते हैं।
- हर्ष जन्म से ही एक महापुरुष थे, किसी ज्योतिषी ब्राह्मण ने जन्म के पूर्व ही भविष्य वाणी की थी।
- हर्ष का अपने पिता के प्रति अनन्य भक्ति थी। इसीलिए पिता के बीमार पड़ने पर वे कुछ खाते नहीं हैं।
- भाई राज्यवर्धन एवं बहन राज्यश्री के प्रति भी उनका उच्च आदर्श था।
- अपने ममेरे भाई भण्डि के प्रति भी उनका सहोदर जैसे प्रेम था।
- भाई और जीजा की मृत्यु के बाद वे शत्रु विनाश की प्रतिज्ञा लेते हैं।
- इस प्रकार हर्ष का व्यक्तित्व निर्भीक, साहसी, कर्त्तव्य परायण एवं स्नेहमय मिलता है।

राज्यश्री

- राज्यश्री प्रभाकरवर्धन की पुत्री, तथा हर्षवर्धन की बहन थी। उसका विवाह ग्रहवर्मा से हुआ था।
- ग्रहवर्मा की मृत्यु के पश्चात् उसे बंदी बना लिया जाता है।
- बंदीगृह से छूटने पर वही सुन्दरी विन्ध्याटवी में जाकर आत्मदाह का प्रयत्न करती है।
- वह हर्ष और दिवाकरमित्र द्वारा बचाई जाती है बाद में कषाय वस्त्र धारण करने की इच्छा व्यक्त करती है।
- इस प्रकार राज्यश्री भारतीय नारी के अनुकूल आचरण करती है।

प्रमुख सूक्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥ (1/16)

भावार्थ- "नई निकली हुई मञ्जरियों के समान मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में उत्तरमात्र से ही किसे आनन्द नहीं आता।"

2. सहजलज्जाधनस्य प्रमदाजनस्य प्रथमाभिभाषणमशालीनता।

भावार्थ- सावित्री, विकुक्षि नामक भृत्य से कहती है, "सहज लज्जाशील नारियों का पहले ही बोल बैठना बड़ी ही धृष्टता है।"

3. परोपकारः सतां व्यसनम्। (2/2)

भावार्थ- दूसरे का उपकार करना सज्जनों का एक स्वाभाविक व्यसन होता है।

4. सलिलानि इव गतानुगतिकानि लोलानि खलु भवन्त्यविवेकिनां मनांसि।

भावार्थ- "मन्दबुद्धियों के चित्त जल की तरह अस्थिर और दूसरों के कहे पर चलते हैं।"

5. न कुतूहलि कस्य मनश्चरितम् च महात्मनां श्रोतुम्। (3/2)

भावार्थ- "महात्माओं के चरित सुनने के लिए भला किसके मन में कुतूहल पैदा नहीं होता।"

6. प्रतनुगुणग्राह्याणि कुसुमानीव हि भवन्ति सतां मनांसि।

भावार्थ-"जैसे महीन सूत से फूल बँध जाते हैं उसी प्रकार सज्जनों के मन थोड़े गुणों से भी गृहीत हो जाते हैं।"

7. भवादृशा एव भाजनं भूतेः।

भावार्थ- "आप जैसे लोग ही ऐश्वर्य के भाजन होते हैं।"

8. लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेह-मया बन्धनपाशाः।

भावार्थ- "सचमुच संसार में स्नेह के बंधनपाश लोहे से भी बढ़कर सख्त होते हैं।"

9. महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य पश्चाद्राजबीजिता।

भावार्थ- ''महासत्त्वता ही संसार का पहला आलम्बन है, फिर राजपुत्रता।''

10. सज्जनमाधुर्याणामभृतदास्यो दश दिशः।

भावार्थ- ''सभी दिशाएं सज्जनों के मधुर स्वभाव के कारण ही अवैतनिक दासी बन जाती हैं।''

11. सेवाभीरवो हि सन्तः।

भावार्थ- ''सज्जन लोग अपनी सेवा से डरते हैं।''

12. अलोहः खलु संयमनपाशः सौजन्यमभिजातानाम्।

भावार्थ- ''सचमुच कुलीन पुरुषों का सौजन्य बिना लोहे के बना हुआ बाँधने वाला पाश है।''

13. एकोऽपि प्रतिसंख्यानक्षण आधारीभवति धृतेः।

भावार्थ- ''विवेक का एक क्षण भी धृति के लिए बड़ा सहारा होता है।''

14. अर्थिजने च किमिव नातिसृजन्ति महान्तः।

भावार्थ- ''बड़े लोग प्रार्थी के लिए क्या नहीं दे डालते।''

15. भव्या न द्विरुच्चारयन्ति वाचम्।

भावार्थ- ''भाग्यशाली लोग उसी बात को दुबारा नहीं करते।''

तत्थ्यात्मक ज्ञान

- हर्षचरित एक शुद्ध आख्यायिका है।
- हर्षचरित बाण की सर्वप्रथम रचना है।
- हर्षचरित का वक्ता स्वयं कवि है।
- यह विशुद्ध साहित्यक शैली में निबद्ध एक रोचक वर्णनात्मक प्रबन्धकाव्य है।
- ऐतिहासिक काव्य लिखने की परम्परा, उपलब्ध ग्रन्थों में 'हर्षचरित' से ही माना जाता है।

हर्षचरितम् बिन्दुवार अध्ययन

- हर्षचरित का रचयिता कौन हैं? - **बाणभट्टः**
- बाणभट्ट कृत हर्षचरित है - **आख्यायिका**
- आख्यायिका है - **हर्षचरितम्**
- सत्यं किमस्ति - **हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते**
- 'हर्षचरितं' कीदृशं काव्यम्? - **गद्यम्**
- सम्राट्हर्षवर्धनस्य पितुः नाम किम् - **प्रभाकरवर्धनः**
- बाणभट्ट की आत्मकथा जिस रचना में है, वह है - **हर्षचरितम्**
- 'हर्षचरितम्' में उच्छ्वास हैं - **8**
- राज्यश्रीः पात्र .... है? - **हर्षचरितम्**
- महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य इति...... अकथयत्? - **प्रभाकरवर्धनः हर्षवर्धनम्**
- हर्षचरिते रसायनः कः ? - **वैद्यकुमारकः**
- कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम्? - **वार्ताप्रदानम्**
- रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः कुत्र गतः - **धवलगृहे**
- एकदा प्रत्युषसि हर्षः स्वप्ने अग्निना दह्यमानं कमपश्यत् - **केसरिणम्**
- ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।'' कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः? - **हर्षचरिते**
- 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी'–हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति - **हर्षवर्धनस्य**
- हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे 'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा'-इत्युक्तिर्भवति- **यशोमत्याः**
- हर्षचरितस्य तृतीये उच्छ्वासे उल्लिखितः आचार्यः अस्ति - **भैरवाचार्यः**
- वज्रायुधस्य वर्णनमस्ति - **हर्षचरिते**
- श्रीहर्षस्य सहोदरी राजश्रीः कं अपरिणयत् - **ग्रहवर्मा**

4.19 दशकुमारचरितम्

महाकवि दण्डी के दशकुमारचरितम् का परिचय

लेखक - दण्डी
समय - सप्तम शती का प्रारम्भिक काल
पिता - मनोरथ/वीरदत्त
माता - गौरी
पितामह - भारवि (अवन्तिसुन्दरी कथानुसार)
जन्मस्थल - अवन्तिसुन्दरी के अनुसार दण्डी के पूर्वज गुजरात राज्य के 'आनन्दपुर' के रहने वाले थे। बाद में एलिचपुर आकर रहने लगे। इसके बाद स्वयं काञ्ची में आकर बसे।

- संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है।
- एक प्रशस्ति में वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही दिया गया।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाभवत्।
कवी दूती ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

कृतित्व - दण्डी के नामतः निम्न ग्रन्थ प्रचलित ग्रन्थ है-
1. दशकुमारचरितम् 2. काव्यादर्श 3. अवन्तिसुन्दरीकथा 4. छन्दोविचिति 5. कलापरिच्छेद 6. द्विसन्धानकाव्य

- दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध आभाणक है।

दशकुमारचरितम्
विधा - कथा/आख्यायिका
(यद्यपि दशकुमारचरित में गद्य के दोनों लक्षण प्राप्त होते हैं किन्तु स्वयं दण्डी इसे कथा मानते हैं)
विभाजन - वर्तमान ग्रन्थ 3 भागों में उपलब्ध है।
(i) पूर्वपीठिका - पाँच उच्छ्वास

(ii) मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् - आठ उच्छ्वास
(iii) उत्तरपीठिका
उपजीव्य - मौलिक कल्पना, गुणाढ्य कृत बृहत्कथा।
प्रधानरस- अद्भुत रस
रीति - वैदर्भी
गुण - प्रसाद
मुख्य अलङ्कार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

- दण्डी सुकुमार मार्ग के कवि हैं।
- दण्डी के बारे में कहा गया है- **'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।'**

नायक - राजवाहन
नायिका - अवन्तिसुन्दरी
प्रतिनायक - मानसार
अन्य पात्र - राजहंस (राजा), वसुमती (रानी), धर्मपाल, पद्मोद्भव, सितवर्मा, उपहारवर्मा, अपहारवर्मा, सुमन्त्र, सुमित्र, कामपाल, सुश्रुत, रत्नोद्भव, सुमति, सत्यवर्मा, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, अर्थपाल, विश्रुत, पुष्पोद्भव, प्रमति, सोमदत्त
प्रमुख टीकाएं -
(i) भूषण टीका - शिवरामपण्डित
(ii) पदचन्द्रिका - कविन्द्राचार्य
(iii) लघुदीपिका - भानुचन्द्र

नोट- ये टीकाएं केवल मध्यभाग की हैं पूर्वपीठिका और उत्तरपीठिका की नहीं।

- मध्य भाग के सप्तम उच्छ्वास में ओष्ठ्य वर्णों का बिल्कुल प्रयोग नहीं है।

दशकुमारों का विवरण

राजहंस — 1.राजवाहन

प्रहारवर्मा — 2.अपहारवर्मा 3.उपहारवर्मा

धर्मपाल — सुमन्त्र, सुमित्र, कामपाल
4.मित्रगुप्त 5.मन्त्रगुप्त 6.अर्थपाल

पद्मोद्भव — सुश्रुत, रत्नोद्भव

सितवर्मा — सुमति, सत्यवर्मा

7.विश्रुत 8.पुष्पोद्भव 9.प्रमति 10सोमदत्त

राजकुमारों के नाम - 1. राजवाहन 2. उपहारवर्मा 3. अपहार वर्मा 4. मित्रगुप्त 5. मन्त्रगुप्त 6. अर्थपाल 7. विश्रुत 8. पुष्पोद्भव 9. प्रमति 10. सोमदत्त

उच्छ्वास विवरण

पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	वर्णन
प्रथम	पुष्पपुरी, राजहंस, वसुमती आदि का वर्णन।
द्वितीय	कुमारों की दिग्विजय यात्रा का वर्णन।
तृतीय	सोमदत्त का चारित्रिक वर्णन।
चतुर्थ	पुष्पोद्भव का चारित्रिक वर्णन।
पञ्चम	राजवाहन का चारित्रिक वर्णन प्रारम्भ (अवन्तिसुन्दरी से विवाह)

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् (8 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	नाम (वर्णन)
प्रथम	राजवाहन-चरित
द्वितीय	अपहारवर्मा-चरित
तृतीय	उपहारवर्मा-चरित
चतुर्थ	अर्थपाल-चरित
पञ्चम	प्रमति-चरित
षष्ठ	मित्रगुप्त-चरित
सप्तम	मन्त्रगुप्त-चरित
अष्ठम	विश्रुत-चरित

उत्तरपीठिका - 4-5 पृष्ठात्मक

- उत्तर भाग में विश्रुत चरित की समाप्ति और ग्रन्थ की समाप्ति।

दशकुमारचरितम् की कथावस्तु का सारांश

- मगधदेश की राजधानी पुष्पपुरी पर राजहंस का शासन था। उसके 3 मन्त्री थे - धर्मपाल, पद्मोद्भव और सितवर्मा।
- धर्मपाल के तीन पुत्र हुए - 1. सुमन्त्र 2. सुमित्र 3. कामपाल। इनमें कामपाल यायावर (अवारा) था, अतः घर छोड़कर चला गया।
- पद्मोद्भव के दो पुत्र हुए - सुश्रुत और रत्नोद्भव। और सितवर्मा के भी दो पुत्र ही सुमति और सत्यवर्मा हुए।
- सत्यवर्मा संसार की असारता से खिन्न होकर तीर्थयात्रा पर निकल गया।
- राजहंस सर्वथा सुखी होने पर भी सन्तानहीनता के कारण बहुत चिन्तित थे।
- मालवनरेश मानसार ने मगध पर आक्रमण किया जहाँ वह बन्दी बना लिया गया।
- राजहंस ने मानसार का राज्य उसे लौटा दिया।
- मानसार अपनी पराजय स्वीकार न कर सका और शिव की आराधना से एक मारक गदा प्राप्त कर पुनः राजहंस पर आक्रमण कर दिया।
- मानसार से पराजित होकर राजहंस मन्त्रियों तथा रानियों सहित वन चले गये।
- राजहंस को वामदेव ऋषि के आशीर्वाद से एक पुत्र की प्राप्ति हुयी।
- राजा राजहंस तथा वसुमती ने पुत्र का नाम राजवाहन रखा।
- लगभग इसी समय चारों मन्त्रियों के भी एक-एक पुत्र हुए।

तथा उनके नाम मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, विश्रुत और प्रमति रखे गये।

- तभी कामपाल के पुत्र अर्थपाल, रत्नोद्भव के पुत्र पुष्पोद्भव, और सत्यवर्मा के पुत्र सोमदत्त भी वापस राजा के पास वन पहुँच गये।
- इसी समय राजहंस को ज्ञात हुआ कि उनका मित्र मिथिला नरेश प्रहारवर्मा शबरसेनाओं द्वारा मारा गया। प्रहारवर्मा के दो पुत्र उपहारवर्मा और अपहारवर्मा थे। इनका भी पालन-पोषण राजा राजहंस ने किया।
- ये 10 कुमार बड़े होकर दिग्विजय के लिए निकले और अपने अभियान के समय एक दूसरे से अलग हो गए।
- क्रमशः वे इस कथा के नायक राजवाहन से मिलते गये और अपनी अद्भुत कथाएँ सुनाते गये।

मङ्गलाचरण

ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनम्भोरुहो नालदण्डः क्षोणोनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः।

भावार्थ- भगवान् त्रिविक्रम (वामन) का वह चरण दण्ड - जो ब्रह्माण्ड रूपी छाते के दण्ड के समान है, ब्रह्मा के उत्पत्ति स्थान कमल के नाल दण्ड के समान है, पृथ्वीरूपी नौका के कूपदण्ड के समान है, आकाश गङ्गारूपी पताका के ध्वजदण्ड के समान है, ग्रह-नक्षत्र मण्डलरूप रथचक्रों की धुरी के समान है, तीनों लोकों के जीतने के चिह्न स्वरूप स्तम्भ (खूँटा) के समान है, अथवा जो राक्षसों के लिए यम दण्ड स्वरूप है - आपका कल्याण करें।

- यह आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है।
- मङ्गलाचरण में भगवान् विष्णु की आराधना हुयी है।
- भगवान् विष्णु के द्वारा वामन अवतार में तीन पग पृथ्वी की याचना का वर्णन है।
- अन्त में भगवान् ने प्रसन्न होकर बलि को सुतल लोक में सानन्द निवास करने का स्थान दिया।

पूर्वपीठिका

- पूर्वपीठिका पाँच उच्छ्वासों में विभक्त है-

प्रथम उच्छ्वास

- माङ्गलिक पद्य के बाद राजहंस का सामान्य परिचय है।
- राजहंस, मगध की राजधानी **पुष्पपुरी** में निवास करते थे।
- उनकी पत्नी का नाम **वसुमती** तथा पुत्र का नाम **राजवाहन** था।

द्वितीय उच्छ्वास

- ऋषि वामदेव की इच्छा से राजहंस अपने पुत्र राजवाहन को उसके मित्रों के साथ दिग्विजय के लिए भेजते हैं।
- विन्ध्याटवी में पहुँचकर राजवाहन अपने मित्रों का साथ छोड़कर किसी मातङ्ग की सहायता के लिए चले गये।
- राजवाहन की सहायता से मातङ्ग को असुरराज की कन्या कालिन्दी तथा पाताललोक की प्राप्ति हुई।
- कालिन्दी द्वारा एक मणि उपहारस्वरूप प्राप्त करके राजवाहन पाताल से पृथ्वी पर आये तथा बहुत ढूँढने पर उनकी मुलाकात सर्वप्रथम सोमदत्त से हुई।

तृतीय उच्छ्वास

- इसमें सोमदत्त अपना वृत्तान्त राजवाहन से बताता है कि- राजा वीरकेतु की पुत्री वामलोचना थी जो अत्यन्त सुन्दर थी।
  उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर लाटदेश के राजा मत्तपाल ने वीरकेतु पर आक्रमण करके वामलोचना को प्राप्त कर लेता है।
- सोमदत्त की सहायता से मत्तपाल मारा जाता है तथा वीरकेतु , वामलोचना का विवाह सोमदत्त से कर देते हैं।
- इसके बाद पुष्पोद्भव का आगमन होता है।

चतुर्थ उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में पुष्पोद्भव अपना वृत्तान्त राजकुमार राजवाहन से सुनाता है कि- पुष्पोद्भव किसी वैश्य के साथ उज्जयिनी जाता है।
  वहाँ बालचन्द्रिका नामक युवती मालव पर शासन कर रहे दारुवर्मा के कुकर्मों के बारे में बताती है।
- बालचन्द्रिका के साथ मिलकर पुष्पोद्भव, दारुवर्मा को मार देता है तथा किसी सिद्ध के आदेश से बालचन्द्रिका और पुष्पोद्भव का विवाह होता है। यह सुनकर राजवाहन प्रसन्न होता है और पुष्पोद्भव के साथ अवन्तिपुरी चला जाता है।

पञ्चम उच्छ्वास

- वहाँ राजवाहन मालवदेश की कन्या अवन्तिसुन्दरी को देखता है। राजवाहन, अवन्तिसुन्दरी को अपने पूर्वजन्म की पत्नी 'यज्ञवती' बताता है।
- अवन्तिसुन्दरी भी पूर्वजन्म की बात याद करके राजवाहन को अपने पूर्वजन्म के पति 'शाम्ब' रूप में पहचानती है।
- इन्द्रजाल विद्येश्वर के सहयोग से दोनों का विवाह हो जाता है।
- पूर्वपीठिका यहीं पर समाप्त हो जाती है।

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम्

- इसमें आठ उच्छ्वास हैं-

प्रथम उच्छ्वास

- इसमें राजवाहन, अवन्तिसुन्दरी को 14 भुवनों का वृत्तान्त सुनाता है।
- मार्कण्डेय ऋषि द्वारा दिये गये सुरतमञ्जरी के शाप का भी वर्णन है।
- अपहारवर्मा द्वारा चण्डवर्मा मारा जाता है।

द्वितीय उच्छ्वास

- इसमें अपहारवर्मा का वृत्तान्त वर्णित है।
- अङ्गदेश के चम्पा शहर में निवास कर रहे मरीचि नामक ऋषि एक काममञ्जरी नामक वेश्या पर आसक्त हो जाते हैं।
- तपस्या को छोड़कर ऋषि गृहस्थ बन जाते हैं। तत्पश्चात् वैराग्य धारण कर लेते हैं।
- अपहारवर्मा की मित्रता धनमित्र से होती है।
- काममञ्जरी की छोटी बहन रागमञ्जरी से अपहारवर्मा का

विवाह हो जाता है।

तृतीय उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में उपहारवर्मा का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह मिथिला जाता है जहाँ के राजा प्रहारवर्मा थे।
- उपहारवर्मा पुष्करिका के सहयोग से विकटवर्मा को मार देता है जिसने नगरवासियों को परेशान कर रखा था।
- पुष्करिका द्वारा सुन्दरता का वर्णन करने पर कलिन्दवर्मा की पुत्री कल्पसुन्दरी से उपहारवर्मा का विवाह हो जाता है।

चतुर्थ उच्छ्वास

- इसमें अर्थपाल की जीवनकथा का वर्णन है।
- अर्थपाल काशीनगरी को जाता है तथा सिंहघोष से अपने माता-पिता की रक्षा करके सिंहघोष को जेल में डलवा देता है।
- पूर्णभद्र के सहयोग से चण्डघोष की पुत्री मणिकर्णिका से अर्थपाल का विवाह हो जाता है।
- चण्डघोष, सिंहघोष का जीजा था।

पञ्चम उच्छ्वास

- इसमें प्रमति का वृत्तान्त है जो राजवाहन को खोजते हुए विन्ध्याचल के समीप चला जाता है।
- वहाँ से भगवान् शिव के उत्सव में शामिल होने के लिए प्रमति श्रावस्ती चला गया।
- श्रावस्ती के राजा धर्मवर्मन् थे उनकी पुत्री का नाम नवमालिका था।
- राजकुमारी की सहेली के सहयोग से प्रमति अन्तःपुर जाता है, जहाँ राजा, उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं।
- राजा अपनी पुत्री नवमालिका का विवाह प्रमति से कर देते हैं तथा सम्पूर्ण राज्य भी प्रमति को सौंप देते हैं।

षष्ठ उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में मित्रगुप्त का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह राजवाहन को ढूँढ़ने सुह्य-प्रदेश के दामलिप्तनगर में जाता है।
- वहाँ के राजा तुङ्गधन्वा थे जिनका पुत्र भीमधन्वा तथा पुत्री कन्दुकावती थी।
- कन्दुकावती से मित्रगुप्त का प्रेम-प्रसङ्ग सुनकर भीमधन्वा मित्रगुप्त को समुद्र में फेंकवा देता है लेकिन वह बच जाता है।
- मित्रगुप्त ने कन्दुकावती को एक राक्षस से बचाता है और उसे उसके पिता तुङ्गधन्वा को समर्पित कर देता है।
- राजा तुङ्गधन्वा प्रसन्न होकर मित्रगुप्त और कन्दुकावती का विवाह कर देते हैं।

सप्तम उच्छ्वास

- इसमें मन्त्रगुप्त का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह राजकुमार राजवाहन को खोजने कलिङ्ग देश में जाता है।
- वहाँ के राजा कर्दन थे उनकी कन्या का नाम कनकलेखा था।
- मन्त्रगुप्त, कनकलेखा को एक सिद्ध तथा राक्षस से बचाता है और उसे लेकर अन्तःपुर जाता है।
- राजा कर्दन प्रसन्न होकर स्त्रियों, बेटी और नागरिकों के साथ उत्सव मनाने समुद्र तट के जंगल में जाते हैं, जहाँ जयसिंह कनकलेखा का अपहरण कर लेता है।
- मन्त्रगुप्त पुनः कनकलेखा को बचाता है और प्रसन्न होकर राजा, कनकलेखा का विवाह मन्त्रगुप्त से कर देते हैं।

अष्टम उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में विश्रुत का चरित वर्णित है।
- विश्रुत राजवाहन को खोजने अश्मक देश जाता है वहाँ के राजा वसन्तभानु थे।
- विश्रुत ने वसन्तभानु की सहायता की और प्रचण्डवर्मा मारा जाता है।
- मित्रवर्मा की पुत्री मञ्जुवादिनी से विश्रुत का विवाह हो जाता है।

उत्तरपीठिका

- इसमें विश्रुतचरित का उत्तरार्ध भाग तथा ग्रन्थ का उपसंहार वर्णित है-
- विवाह के पश्चात् विश्रुत को प्रचण्डवर्मा का राज्य मिल जाता है।
- अपनी पत्नी मञ्जुवादिनी को वहीं छोड़कर विश्रुत, राजवाहन की खोज में निकलता है जहाँ अङ्ग नरेश सिंहवर्मा के आमन्त्रण पर जाते समय राजवाहन से मुलाकात होती है।
- इसके बाद वहाँ उपस्थित अपहारवर्मा, उपहारवर्मा, अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त,मन्त्रगुप्त और विश्रुत तथा पाटलिपुत्र के युवराज सोमदत्त पत्नी के साथ राजवाहन के साथ मिलकर रहने लगे।
- तत्पश्चात् राजा राजहंस के आज्ञापत्र को लिये हुए पुष्पपुर के राजकर्मचारियों का आगमन होता है।
- पत्र के माध्यम से 'सबके कल्याण' और अपने-अपने राज्य पर शासन करने का आदेश प्राप्त होता है।
- राजा स्वयं वानप्रस्थ-आश्रम में जाने की इच्छा करते हैं।
- इस प्रकार राजवाहन आदि सभी राजकुमार राजहंस की आज्ञा से समस्त पृथ्वी मण्डल का न्यायपूर्वक पालन करने लगे।

दशकुमारचरितम् समाप्त

प्रमुख सूक्तियाँ

1. **'मूढोऽसि! नान्यत्या पिष्ठतममात्मत्यागात्।**
   आत्मानमात्मनानवसाद्यैवोद्धरन्ति सन्तः। (पेज-45)

भावार्थ- अपहारवर्मा कहता है कि- वत्स, अज्ञानी हो। आत्महत्या से बढ़कर अतिशय-पाप पूर्ण कार्य दूसरा नहीं है। सज्जन अपना नाश न करके अपने उद्योग से अपना उद्धार करते हैं।

2. **धनार्जनस्य बहवः, नैकोऽपिच्छिन्नकण्ठप्रतिसंधानपूर्वस्य प्राणलभस्य।** (पेज-45)

भावार्थ- अपहारवर्मा कहता है कि-धन कमाने के उपाय बहुत है; कटे गले को जोड़कर प्राण प्राप्त करने के उपाय एक भी नही है।

3. मृत्युहस्तवर्तिनः किं ममामुष्या वैरानुबन्धेन
भावार्थ- मौत के हाथ पड़े हुये मुझे उसके साथ वैर लेने से क्या लाभ (पेज-49)

4. बुद्धिमत्प्रयुक्तं नाभ्युपैति शोभाम् इति।
भावार्थ- राजवाहन कहता है कि- बुद्धिमान् के द्वारा किया गया कौन उपाय निश्चय ही शोभित नहीं होता। (पेज-111)

5. गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति।
भावार्थ- मित्रगुप्त कहता है कि-पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं। (पेज-196)

6. 'दुष्करसाधनं प्रज्ञा' इति।
भावार्थ- मित्रगुप्त कहता है कि-जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है। (पेज-209)

7. श्रुत्वा चित्रेयं दैवगतिः। अवसरेषु पुष्कलः पुष्पकारः
भावार्थ- राजवाहन कहता है कि-यह सुनकर 'यह भाग्य-गति विचित्र है। मौकों पर खूब पुरुषार्थ दिखाया'। (पेज-212)

8. 'चित्तज्ञाननानुवर्तिनोऽनर्थ्या अपि प्रियाः स्युः। दक्षिणा अपि तद्भावबहिष्कृता द्वेष्या भवेयुः'।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि- मनोभाव का अनुसरण करने वाले अवाञ्छनीय व्यक्ति भी प्रिय हो सकते हैं और उस चित्र के भाव से दूर रहने वाले द्वेष पात्र हो सकते हैं। (पेज-253)

9. न चान्यदस्ति पापिष्ठं तत्र दौर्बल्यात्।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि- दुर्बलता से बढ़कर परम पापी दूसरी वस्तु नहीं। (पेज-284)

10. अर्थमूला हि दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि-राजनीति और श्रेष्ठ कार्यों के आरम्भ के मूल में धन ही है। (पेज-284)

11. दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि-ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नही है।' (पेज-286)

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- ऋषि वामदेव तथा राजहंस का संवाद द्वितीय उच्छ्वास में होता है।
- राजवाहन 8 राजकुमारों के साथ दिग्विजय यात्रा पर निकलतें हैं।
- राजवाहन को सर्वप्रथम सोमदत्त अपना वृत्तान्त सुनाते हैं।
- सोमदत्त को मणि कुदेश मे प्राप्त होती है।
- कुदेश के स्वामी का नाम वीरकेतु था।
- मत्तकाल का वध सोमदत्त ने किया था।
- सोमदत्त का विवाह वामलोचना से हुआ।
- पुष्पोद्भव के पिता का नाम रत्नोद्भव तथा माता का नाम सुवृत्ता था।
- पुष्पोद्भव वैश्यपुत्र चन्द्रपाल के साथ उज्जयिनी गया था।
- मालवनरेश का नाम मानसार था।
- मानसार का पुत्र दर्पसार था।
- दर्पसार ने अपना राज्य चण्डवर्मा तथा दारुवर्मा को सौंप दिया था।
- राजकुमार राजवाहन पुष्पोद्भव के साथ अवन्तिकापुरी गये।
- वसन्त ऋतु का वर्णन पञ्चम उच्छ्वास में है।
- मालवनरेश की पुत्री अवन्तिसुन्दरी थी।
- अवन्तिसुन्दरी राजवाहन की पूर्वजन्म की पत्नी यज्ञवती थी।
- राजवाहन का नाम पूर्वजन्म मे शाम्ब था।
- पूर्वपीठिका की समाप्ति राजवाहन तथा अवन्तिसुन्दरी के विवाह से होता है।
- राजकुमार द्वारा 14 भुवनों का वर्णन मूलग्रन्थ के प्रथम उच्छ्वास में है।
- चण्डवर्मा द्वारा राजवाहन तथा पुष्पोद्भव का हरण किया जाता है।
- राजवाहन पर बँधी चाँदी की जंजीर एक अप्सरा के रूप में बदल जाती है।
- अप्सरा का नाम सुरतमञ्जरी था।
- सुरतमञ्जरी नामक अप्सरा को मार्कण्डेय ऋषि से शाप प्राप्त था।
- अवन्तिसुन्दरी के भाई का नाम दर्पसार था।
- अपहारवर्मा के द्वारा चण्डवर्मा मारा जाता है।
- मरीचि नामक महर्षि चम्पा नगरी में रहते थे।
- महर्षि मरीचि काममञ्जरी पर आसक्त हो गये थे।
- जैन साधु का नाम वसुपालित था।
- वसुपालित को विरूपक भी कहा जाता था।
- वसुपालित का सम्पूर्ण धन सुन्दरक तथा काममञ्जरी ने ले लिया था।
- मिथिला के राजा प्रहारवर्मा तथा राजहंस परम मित्र थे।
- कलिन्दवर्मा की पुत्री कल्पसुन्दरी थी।
- विकटवर्मा का नाश उपहारवर्मा द्वारा हुआ।
- पूर्णभद्र काशी ग्रामाध्यक्ष का बेटा था।
- पूर्णभद्र काशी नरेश चण्डसिंह के प्रधानमंत्री कामपाल द्वारा पकड़ा गया।
- कुसुमपुर के राजा का नाम रिपुञ्जय था रिपुञ्जय का मन्त्री धर्मपाल था।
- धर्मपाल का पुत्र सुमित्र था।
- सुमित्र का सौतेला भाई कामपाल था।
- मणिभद्र की कन्या तारावली जिसने कामपाल को बचाया था।
- कामपाल प्रथम जन्म में शौनक, द्वितीय मे शूद्रक तथा तृतीय में कामपाल था।
- चण्डसिंह की पुत्री कांतिमती थी।
- कामपाल ने कांतिमती से विवाह किया।
- चण्डघोष की मृत्यु क्षयरोग से हुयी।
- चण्डघोष की मृत्यु के बाद सिंहघोष राजगद्दी पर बैठा जिसने कामपाल को कैद करवा दिया।
- अर्थपाल का विवाह चण्डघोष की पुत्री मणिकर्णिका से हुआ।

- प्रमति का सम्पूर्ण वर्णन पञ्चम उच्छ्वास में है।
- प्रमति का विवाह नवमालिका से हुआ था।
- मित्रगुप्त का विवाह कन्दुकावती से हुआ।
- धूमिनी, गोमिनी, निम्बवती और नितम्बवती का वर्णन छठें उच्छ्वास में है।
- यक्ष वर्णन छठवें उच्छ्वास में है।
- कलिंग देश की पुत्री कनकलेखा थी।
- कनकलेखा का विवाह मन्त्रगुप्त से हुआ।
- विश्रुत वर्णन आठवें उच्छ्वास में प्राप्त होता है।
- विदर्भ राज्य का राजा पुण्यवर्मा।
- पुण्यवर्मा की मृत्यु के पश्चात् अनन्तवर्मा राजा बना।
- पुण्यवर्मा वृद्ध मंत्री वसुरक्षित थे।
- अनन्तवर्मा का धूर्त सेवक विहारभद्र था।
- विहारभद्र ने राजविद्या के विषय में बताया।
- राजविद्याएं 4 होती हैं। 1. त्रयी 2. वार्त्ता 3. आन्वीक्षिकी 4. दण्ड।
- अश्मक नरेश का नाम वसन्तभानु था।
- अनन्तवर्मा की पत्नी वसुन्धरा थी
- अनन्तवर्मा और वसुन्धरा के पुत्र का नाम - भास्करवर्मा तथा पुत्री का नाम मञ्जुवादिनी था।
- विश्रुत द्वारा प्रचण्डवर्मा का वध हुआ।
- विश्रुत का विवाह मञ्जुवादिनी से हुआ।
- विश्रुत द्वारा भास्करवर्मा को विदर्भ का राजा बनाया गया।

दशकुमारचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- दण्डिना रचितं गद्यकाव्यं किम्? - **दशकुमारचरितम्**
- 'बृहत्कथा' आधारित ग्रन्थ है - **दशकुमारचरितम्**
- दशकुमारचरितं केन प्रणीतम् - **दण्डिना**
- दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायकः भवति - **मानसारः**
- 'दशकुमारचरितम्' में उच्छ्वासों की संख्या है - **आठ**
- दशकुमारचरिते कियती संख्याऽस्ति राजकुमाराणाम्- **दस**
- कुत्र पदलालित्यं प्रसिद्धम्? - **दशकुमारचरिते**
- किस प्राचीन गद्यकाव्य में लोक जीवन का सर्वाधिक चित्रण है? - **दशकुमारचरितम्**
- दशकुमारचरितस्य नायकः कः? - **राजवाहनः**
- विश्रुतस्य वृत्तान्तं कुत्र वर्णितम् - **दशकुमारचरिते**
- पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृप आसीत् दशकुमारचरिते - **विदर्भदेशस्य**
- दशकुमारचरितानुसारं राजहंसस्य राजधानी आसीत्? - **पुष्पपुरीनगर्याम्**
- 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है - **दशकुमारचरितम् में**
- दशकुमारचरिते पूर्वपीठिकायां निबद्धानामुच्छ्वासानां संख्या वर्तते - **05**
- दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति? - **राजवाहनचरिते**
- दशकुमारचरिते मगधनरेशस्य पुत्रः कः? - **राजवाहनः**
- 'दशकुमारचरितम्' की कथावस्तु का विचार कहाँ से लिया गया है - **बृहत्कथा**
- दशकुमारचरिते अथ सोऽप्याचचक्षे – "देव, मयापि परिभ्रमता कोऽपि कुमारः .... दृष्टः" – इत्यादिषु कस्य परिभ्रमणमुल्लिखितम्? - **विश्रुतस्य**
- ओष्ठ्यवर्णानामभावोऽस्ति दशकुमारचरितस्य उच्छ्वासे - **सप्तमे**
- दशकुमारचरितम् में दण्डी ने कौन-सी रीति का प्रयोग किया है? - **वैदर्भी रीति**
- विश्रुतः कया सह विवाहमकरोत् - **मञ्जुवादिन्या**
- प्रचण्डवर्माणं कः हतवान् - **विश्रुतः**
- दशकुमारचरितम् इति कः वाङ्मयप्रकारः?- **आख्यायिका**
- दुर्भिक्ष का वर्णन किस काव्य में है?- **दशकुमारचरितम्**

4.20 प्रबोधचन्द्रोदयम्

कृष्ण मिश्र का परिचय

- **नाम-** कृष्ण मिश्र
- **जाति-** ब्राह्मण
- **निवास स्थान-** बिहार
- **समय-** 1050 ई॰ के आस-पास या 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।
- जेजाकमुक्ति के चन्देल राजा कीर्तिवर्मा के शासनकाल में कृष्ण मिश्र का जन्म हुआ था। गोपाल सम्भवतः कीर्तिवर्मा के सेनापति थे। जिनका उल्लेख 'प्रबोधचन्द्रोदय' के प्रस्तावना में आया है। 1065 ई॰ में कीर्तिवर्मा पुनः राजा बने थे।
- **प्रिय छन्द-** शार्दूलविक्रीडित और वसन्ततिलका।
- **उपासक-** वेदान्ती होने के कारण कृष्ण मिश्र ब्रह्म की उपासना करते थे।
- **कृति-** प्रबोधचन्दोदय एक मात्र।

प्रबोधचन्द्रोदय का परिचय

लेखक- कृष्ण मिश्र
काव्यविधा- नाटक
उपविधा- प्रतीकात्मक नाटक/ दार्शनिक नाटक/ रूपकात्मक नाटक
विभाजन- 6 अङ्कों में
श्लोक संख्या- 191

अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	31
द्वितीय	38
तृतीय	26
चतुर्थ (विवेक-उद्योग)	30
पञ्चम (वैराग्य-प्रादुर्भाव)	33
षष्ठ (जीवन्मुक्ति)	33
कुल श्लोक-	**191**

उपजीव्य- अद्वैत- वेदान्तदर्शन
प्रधान रस/अङ्गी रस- शान्त रस
अन्य रस- हास्य रस
गुण- प्रसाद एवं माधुर्य
रीति- वैदर्भी
छन्द- 'प्रबोधचन्द्रोदय' में कुल 15 प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है, जिनमें शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, हरिणी जैसे बड़े छन्द एवं अनुष्टुप्, उपजाति, पुष्पिताग्रा, आर्या तथा प्रहर्षिणी जैसे छोटे छन्द हैं।

- सर्वाधित प्रयुक्त छन्दों में क्रमशः शार्दूलविक्रीडित (55) अनुष्टुप् (35) तथा वसन्ततिलका (28) मुख्य हैं।

नायक- विवेक
नायिका- मति
प्रतिनायक- महामोह

प्रबोधचन्द्रोदय का मङ्गलाचरण

मध्याह्नार्कमरीचिकास्विव पयः पूरो यदज्ञानतः
खं वायुर्ज्वलनो जलं क्षितिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति।
तत्त्वत्वं विदुषां निमीलति पुनः स्रग्भोगिभोगोपमं
सान्द्रानन्दमुपास्महे तदमलं स्वात्मावबोधं महः॥ (1/1)

भावार्थ- मध्याह्न सूर्य की मरीचिका में जलराशि की तरह जिसके अज्ञान से आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी इस क्रम से त्रैलोक्य प्रकट होता है और जिसके ज्ञान से माला सर्प की तरह लीन हो जाता है, उस आनन्द स्वरूप तथा स्वप्रकाशरूप उस ब्रह्म की हम उपासना करते हैं।

अन्तर्नाडीनियमितमरुल्लङ्घितब्रह्मरन्ध्रं
स्वान्ते शान्तिप्रणयिनि समुन्मीलदानन्दसान्द्रम्।
प्रत्यक् ज्योतिर्जयति यमिनः स्पष्टलालाटनेत्र
व्याजव्यक्तीकृतमिव जगद्व्यापि चन्द्रार्धमौलेः॥(1/2)

भावार्थ- सुषुम्ना नाड़ी में प्राण को अवरुद्ध करके ब्रह्मरन्ध्र से प्रवेशित करने के लिए शान्तियुक्त हृदय में आनन्द रूप से प्रकटित होने वाला तपोनिष्ठ महादेव की तृतीय दृष्टि के रूप में प्रकटीभूत महादेव की प्रत्यक् ज्योति की जय हो।

- कृष्णमिश्र ने दो पद्यों के माध्यम से मङ्गलाचरण किया है।
- उपर्युक्त दोंनो श्लोकों में **नमस्क्रियात्मक मङ्गलाचरण** का प्रयोग है।
- नाटक होने के कारण **अष्टपदा नान्दी** का प्रयोग है।
- प्रथम श्लोक में 'ब्रह्म' तथा द्वितीय श्लोक में 'शिव के प्रत्यक् ज्योति' की स्तुति है।
- प्रथम पद्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द एवं उपमा अलङ्कार का प्रयोग हुआ है।
- द्वितीय श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द एवं रूपक अलङ्कार प्रयुक्त है।

प्रबोधचन्द्रोदय का भरतवाक्य

पर्जन्योऽस्मिञ् जगति महतीं वृष्टिमिष्टां विधत्तां
राजानः क्ष्मां गलितविविधोपप्लवाः पालयन्तु।
हत्वोन्मेषोपहततमसस्त्वत्प्रसादान्महान्तः
संसाराब्धिं विषयममताताङ्कपङ्कं तरन्तु॥ (6/33)

भावार्थ- मेघ इस धरा पर यथेच्छ वृष्टि किया करें, अनेक प्रकार के उपद्रवों से रहित होकर राजागण पृथ्वी का पालन करें तुम्हारे प्रसाद से महान् जन तत्क्षण अज्ञान को दूरकर विषय रूप ममता पङ्कपूर्ण संसार सागर को पार कर जाएं।

- इस भरतवाक्य में संसार के कल्याण की कामना की गयी है।
- भरतवाक्य में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है।

'प्रबोधचन्द्रोदय' नाम की सार्थकता

- **'प्रबोधचन्द्रस्य उदयः यस्मिन् अस्ति इति प्रबोधचन्द्रोदयः** (बहुव्रीहि समास)। इस प्रकार ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'प्रबोधचन्द्रोदयम् प्रयोग सिद्ध हुआ।
- 'प्रबोधचन्द्रोदयम्' में बहुव्रीहि समास है।
- नाटक में पुरुष और उनकी पत्नी उपनिषद् का पुत्र है-

प्रबोधचन्द्र।

- प्रबोधचन्द्र का जन्म इस नाटक का मुख्य बिन्दु है इसीलिए इस नाटक का शीर्षक 'प्रबोधचन्द्रोदय' ही हुआ।
- इस प्रकार यह नाटक के लिए उपयुक्त शीर्षक है।

प्रबोधचन्द्रोदय का संक्षिप्त कथानक

प्रथम अङ्क

- नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार बताता है कि यह नाटक श्रीमान् गोपाल की आज्ञा से मञ्चन किया जा रहा है, ''क्योकि राजा कीर्तिवर्मा की दिग्विजय यात्रा के प्रसङ्ग से 'ब्रह्मानन्द' सुख से विमुख होकर हमने (गोपाल) नाना प्रकार के विषय रसों से दूषित दिन बिताए हैं, अब निश्चिन्त होकर हम शान्तरस के नाटक से अपने को आनन्दित करना चाहते हैं इसलिए श्रीकृष्णमिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय' नाम के नाटक को कीर्तिवर्मा के सामने अभिनीत करें।''
- मन की दो पत्नियाँ हैं- 'प्रवृत्ति और 'निवृत्ति'। 'प्रवृत्ति' के पुत्र का नाम 'मोह' तथा 'निवृत्ति' के पुत्र का नाम विवेक है।
- दोंनो आपस में विरोधी हैं, विवेक के पक्ष में शान्ति, श्रद्धा आदि तथा मोह के पक्ष में काम, लोभ, तृष्णा, क्रोध, हिंसा आदि हैं।
- 'रति, विवेक से डरती है तो काम उसे न डरने के लिए उत्साहित करता है।
- यम, नियम आदि विवेक के मंत्री हैं। चित्त विकार उनका शत्रु है।
- 'रति' के पूँछने पर 'काम' बताता है कि वह और 'विवेक'एक ही पिता के पुत्र हैं किन्तु विषय का लोभ ही हमेशा से सहोदरों में विरोध कराता आया है।
- 'काम' आगे बताता है कि उसके कुल में 'विद्या' नाम की राक्षसी जन्म ग्रहण करने वाली है।
- 'रति' डर जाती है और 'काम' से लिपट जाती है फिर 'काम' कहता है ''धीरज रखो मेरे रहते 'विद्या' की उत्पत्ति कैसे होगी''
- 'विवेक' अपनी पत्नी 'मति' से कहता है कि 'काम' ने संसार को बंधन में डाल रखा है और हम शुद्धि बुद्धि वाले को यह अभागा 'पापी' बता रहा है।
- 'मति' प्रश्न करती है कि मनुष्य तो आनन्दस्वरूप है फिर काम ने बंधन में कैसे डाला?
- विवेक बताता है कि एक चतुर आदमी भी स्त्रियों के द्वारा प्रताड़ित होकर बंधन में पड़ जाता है।
- मति के इससे मुक्ति के विषय में पूँछने पर विवेक बताता है कि उपनिषद् के साथ हमारा सम्बन्ध होने से प्रबोध की उत्पत्ति होगी तभी यह बन्धन छूट सकता है।

➢ प्रथम अङ्क समाप्त ➢

द्वितीय अङ्क

- विवेक के 'प्रबोधोदय' प्रतिज्ञा को सुनकर महाराज 'मोह' दम्भ से कहते हैं कि हमारे वंश के क्षय का समय आ गया है अतः आप लोग प्रतीकार करें, पृथ्वी पर सबसे बड़ा मुक्तिस्थल 'काशी' है वहाँ जाकर निःश्रेयश को विघ्नित करें।
- अहङ्कार, वेदान्तियों की भर्त्सना करते हुए दम्भ के आश्रम में जाता है तो दम्भ उसे पितामह के रूप में पहचानकर प्रणाम करता है।
- अहङ्कार दम्भ से कहता है- मैंने तुम्हे द्वापर के अन्त में देखा था अब तुम बड़े हो गये हो और अपनी वृद्धता के कारण तुम्हें नहीं पहचान सका।
- मोह के बारे में पूँछने पर दम्भ बताता है कि महाराज मोह इन्द्रलोक से आकर काशी को अपनी राजधानी बनाना चाहते हैं। क्योंकि वे विवेक के मार्ग को अवरुद्ध करना चाहते हैं।
- मोह के साथ चार्वाक मत भी आया और अपने मत का प्रचार किया। चार्वाक के सिद्धान्त से मोह प्रसन्न हुआ।
- चार्वाक मोह से कहता है कि- विष्णुभक्ति नाम की एक योगिनी है, यद्यपि कलि ने उसका प्रचार रोक दिया है,तथापि उसका बड़ा प्रभाव है। वह जहाँ रहती है, उस वंश की ओर ताकना भी हमारे लिए कठिन हो जाता है। आगे भी कहता है।
- 'पुरी' से आये 'मद-मान' के पत्र से पता चलता है कि शान्ति अपनी माता श्रद्धा के साथ विवेक को उपनिषद् से मिलाने के लिए रातदिन उपनिषद् को समझाती है अतः आप प्रतीकार करें।
- इस पर मोह ने कहा- शान्ति की क्या बात है, जब काम उसके विपक्ष में है।
- महामोह ने 'शान्ति' को वशीकृत करने के लिए उसकी माता 'श्रद्धा' को 'मिथ्यादृष्टि' से ग्रसित करवा देता है।

➢ द्वितीय अङ्क समाप्त ➢

तृतीय अङ्क

- मिथ्यादृष्टि से ग्रसित होकर श्रद्धा, शान्ति द्वारा वन, पर्वत, नदी तट आदि पर खोजी जाती है। करुणा नामक सखी के कहने पर शान्ति पाखण्डालयों में भी खोजती है।
- वहाँ पर जैन और बौद्ध साधुओं के बीच को तामसी श्रद्धा दिखाई पड़ती है।
- उसके बाद 'शान्ति', सोमसिद्धान्ती भिक्षुओं को मदिरापान कराती हुई कापालिकी वेशधारिणी राजसी श्रद्धा को देखती है।
- शान्ति सोचती है कि राजसी श्रद्धा उसकी माँ नहीं हो सकती, तब 'करुणा बताती कि 'श्रद्धा' 'विष्णुभक्ति के पास है।

➢ तृतीय अङ्क समाप्त ➢

चतुर्थ अङ्क

- श्रद्धा और मैत्री का प्रवेश होता है। मैत्री ने श्रद्धा से कहा कि तुम्हें महाभैरवी के चंगुल से विष्णुभक्ति ने बचाया है इसलिए तुम्हें देखने चली आयी।
- विवेक, मोह से युद्ध करने के लिए 'वस्तुविचार' को बुलाता है। 'वस्तुविचार' तैयार हो जाता है।
- 'क्षमा' ने कहा कि मेरे द्वारा क्रोध के जीतने पर हिंसा, मद, मात्सर्य आदि स्वयं हार मान लेंगे।
- लोभ को जीतने वाले सन्तोष के सलाह पर राजा (विवेक) ने

सेना को वाराणसी भेजने का आदेश दिया।

➢ चतुर्थ अङ्क समाप्त ➢

पञ्चम अङ्क

➢ विवेक की सेना द्वारा जब मोह पक्ष का संहार हो जाता है तब श्रद्धा इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि आत्मीयों का विरोध कुलसंहारक होता है।
➢ विष्णुभक्ति, श्रद्धा को मुनिजन के हृदय में रहने का वरदान देती है।
➢ विष्णुभक्ति के श्रद्धा से युद्ध के बारे में पूँछने पर श्रद्धा बताती है कि आदि केशव मन्दिर से चलकर दोनों सेनाएं आमने सामने हुईं।
➢ विवेक ने 'न्यायदर्शन' को दूत रूप में मोह के पास भेजा।
➢ दूत ने मोह से कहा कि आप देवस्थल छोड़ दें नहीं तो समूल नष्ट कर दिये जायेंगे।
➢ मोह क्रोधित होकर युद्ध के लिए उद्यत हुआ और हारकर कहीं छिप गया।
➢ अपनी पत्नी प्रवृत्ति और अनेक पुत्रों की मृत्यु से 'मन' जर्जरित हो गया और वैराग्य की ओर झुककर निवृत्ति को पत्नी के पद पर नियुक्त किया।

➢ पञ्चम अङ्क समाप्त ➢

षष्ठ अङ्क

➢ शान्ति और श्रद्धा के दिन आराम से बीतने लगे। श्रद्धा द्वारा ज्ञात होता है कि मोह ने दुष्टता का त्याग नहीं किया है, उसने पुरुष को फुसलाने के लिए 'मधुमती' को नियुक्त किया है।
➢ 'मधुमती' ने पुरुष को अपने माया में फँसाया तथा 'तर्क' ने पुरुष को मायाजाल से सचेत किया।
➢ उपनिषद्, विवेक से मिलती हैं। पुरुष से उपनिषद् अपनी बीती बातें बताती हैं।
➢ पुरुष के पूँछने पर उपनिषद् बताती है कि वह इतने दिन मठ चत्वर, पुराने देवागारों में बितायी क्योंकि यज्ञविद्या, मीमांसा और तर्कविद्याओं ने उसे आश्रय नहीं दिया।
➢ उपनिषद् ने आज्ञा का स्वरूप बताया और इसी समय निदिध्यासन प्रकट हुआ।
➢ निदिध्यासन, पुरुष के समक्ष ही उपनिषद् से निवेदन किया कि आपके गर्भ से 'विद्या' और 'प्रबोध' नामक दो सन्ताने होंगी। उनमें 'विद्या' को सङ्कर्ष विद्या द्वारा मन में संक्रान्त करा दें और प्रबोधचन्द्र को पुरुष के हाथों सौंपकर विवेक के साथ विष्णुभक्ति के पास चली जायें।
➢ प्रबोध के जन्म से सबका अज्ञानान्धकार दूर हो गया। पुरुष को विष्णुभक्ति के प्रसाद से मुक्ति मिली। भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त

प्रबोधचन्द्रोदय के प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ

विवेक

➢ विवेक, प्रबोधचन्द्रोदय नाटक का नायक एवं राजा है।
➢ विवेक के पत्नी का नाम मति है। नाटक की सभी घटनाएं इन्हीं पात्रों के आस-पास घूमती हैं।
➢ विवेक काशी नगरी को दम्भ, अहङ्कार, मोह, लोभ आदि शत्रुओं से मुक्त कराना चाहता है।
➢ यम, नियम इत्यादि विवेक के मन्त्री हैं। 'वस्तुविचार' विवेक का प्रमुख पात्र है।
➢ विवेक, वस्तुविचार को आगे करके 'मोह' से युद्ध करता है, जिसमें मोह पराजित होता है।
➢ विवेक और उपनिषद् से ही प्रबोधचन्द्र का जन्म होता है।
➢ अन्त में विवेक विष्णुभक्ति के पास चला जाता है।

मति

➢ मति इस नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र, नायिका तथा विवेक की पत्नी है।
➢ वह अनेक विषयों पर विवेक से प्रश्न पूँछा करती है और विवेक उसे हर जानकारी देते हैं।
➢ 'विवेक और उपनिषद् के संबन्ध से ही प्रबोधजन्म होगा यह सुनकर मति को न तो क्रोध आया और न ही विचलित हुई।
➢ इस प्रकार मति कर्त्तव्यपरायणा, पतिव्रता स्त्री है।

मोह

➢ मोह इस नाटक का प्रतिनायक तथा प्रमुख पात्र है।
➢ मोह का पक्ष संख्या में ज्यादा है, किन्तु विवेक के साथ युद्ध में हार जाता है।
➢ चार्वाक, मोह पक्ष से विवेक के साथ युद्ध करके मारा जाता है और मोह कहीं छिप जाता है।
➢ मोह ने इन्द्रलोक को छोड़कर काशी में रहने का निर्णय लिया जिसका विवेक ने विरोध किया।
➢ अपने भाइयों की मृत्यु के बाद भी मोह ने अपना कुटिल चाल नहीं त्यागा और मधुमती को अपने कार्यों में नियुक्त किया।
➢ सब प्रकार से प्रयास करने पर भी मोह को कहीं सफलता नहीं मिलती है।
➢ अपने हठी स्वभाव के कारण मोह, विवेक से पीछे नहीं हटता और अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है।

अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

➢ विवेक तथा मोह के पक्षकारों का वर्णन।
➢ विवेक- मति का वार्तालाप तथा प्रबोधचन्द्र के जन्म की उद्घोषणा।

द्वितीय अङ्क

➢ दम्भ आश्रम का वर्णन।
➢ मोह का इन्द्रलोक त्याग एवं काशी वास।

तृतीय अङ्क

➢ श्रद्धा का मिथ्यादृष्टि से ग्रस्त होना।
➢ शान्ति द्वारा श्रद्धा को ढूढ़ना।

चतुर्थ अङ्क

➢ राजा का सन्तोष से युद्ध सम्बंधी सलाह।
➢ राजा के आदेश पर सैनिकों का वाराणसी प्रस्थान।

पञ्चम अङ्क

➢ मोहपक्ष का संहार।

- मोह के पिता 'मन' का विलाप।

षष्ठ अङ्क

- प्रबोधचन्द्र का जन्म।
- विवेक का विष्णुभक्ति के पास जाना।

प्रबोधचन्द्रोदय का पात्र-परिचय

पुरुष - पात्र

1. **सूत्रधार**-प्रधान नट एवं मञ्च का प्रबन्धक।
2. **विवेक**-प्रधान नायक (राजा)
3. **वस्तुविचार**-विवेक का नौकर
4. **सन्तोष**- सत्य का सहचर
5. **पुरुष**-उपनिषद् का पति
6. **प्रबोधचन्द्र**-उपनिषद् का पुत्र
7. **वैराग्य, निदिध्यासन, संकल्प**-मन से उत्पन्न
8. **पारिपार्श्वक, पुरुष, सारथि, प्रतीहारी**- अन्य जन
9. **मोह**- प्रतिनायक
10. **चार्वाक**-मोह का मित्र
11. **काम, कोध,लोभ, दम्भ, अहङ्कार**-मोह के अमात्य
12. **मन**- संकल्प रूप
13. **वटु, शिष्य, दौवारिक**-अन्य लोग
14. **दिगम्बर भिक्षु, कापालिक**-बौद्ध, जैनमत के प्रचारक

स्त्री-पात्र

1. **नटी**-सूत्रधार की पत्नी
2. **मति**-विवेक की पत्नी
3. **श्रद्धा**- शान्ति की माता
4. **शान्ति**- विवेक की बहन
5. **करुणा**-शान्ति की सखी
6. **मैत्री**- श्रद्धा की सखी
7. **उपनिषद्**- वेदान्त विद्या, प्रबोध की माँ
8. **सरस्वती**-विष्णुभक्ति की सखी
9. **क्षमा**- विवेक की दासी
10. **मिथ्यादृष्टि**- मोह की पत्नी
11. **विभ्रमावती**- मोह की सखी
12. **रति**- काम की पत्नी
13. **हिंसा**- क्रोध की पत्नी
14. **तृष्णा**-लोभ की पत्नी

प्रबोधचन्द्रोदय की सूक्तियाँ

1. **स्मरणमपि कामिनीनामलमिह मनसो विकाराय।** (1/16)

भावार्थ- काम, रति से कहता है कि ''स्त्रियों का स्मरण भी मन को विकृत करने में पर्याप्त होता है।''

2. **नूनमन्धकारलेखया सहस्त्ररश्मेस्तिरस्कारो यथा तथा मायया स्फुरन्महाप्रकाशसागरस्य देवस्याप्यभिभवः।**

भावार्थ- मति, विवेक से कहती है कि-आर्यपुत्र, जिस प्रकार सूर्य का अभिनव अन्धकार द्वारा होता है उसी प्रकार माया द्वारा ब्रह्म का अभिनव हुआ।

3. **एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां,**
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति॥ (1/27)

भावार्थ- राजा, मति से कहता है, ''मोहित करती हैं, मदयुक्त बनाती हैं, धिक्कारती हैं, खुश करती हैं, तकलीफ देती हैं, ''हृदय में प्रवेश करके स्त्रियाँ पुरुषों का क्या नहीं कर देती हैं।''

4. **यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।**
विद्या तपश्च तीर्थं च स तीर्थफलमश्नुते॥ (2/14)

भावार्थ- दम्भ अहङ्कार से कहता है, शास्त्रकारों ने कहा है- ''जिस व्यक्ति के हाथ पैर तथा मन संयत है और विद्या तथा तप भी ठिकाने है वही व्यक्ति तीर्थफल प्राप्त करता है।''

5. **उद्वेजयति सूक्ष्मोऽपि चरणं कण्टकाङ्कुरः।** (2/27)

भावार्थ- चार्वाक कहता है- ''छोटा-सा भी कण्टक चरण को उद्विग्न कर देता है।''

6. **न खलु भावानुबन्धः प्रेमाकालेनापि विघटते।**

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में मिथ्यादृष्टि, मोह से कहती है, ''भावनुबन्धी प्रेम पर समय की आँच नहीं लगती है।

7. **अहो साधुरयं सौगतधर्मो यत्र सौख्यं मोक्षश्च।**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में बौद्धभिक्षु कहता है, ''अहा! धन्य है यह सौगतधर्म जिसमें सुख तथा मोक्ष दोंनो है।

8. **अहिंसा परमोधर्मोऽस्ति।**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में क्षपणक भयवश कहता है, ''महानुभाव, अहिंसा परम धर्म है।''

9. **सा विष्णुभक्ति सहिता, वसति हृदये महात्मनाम्।** (3/24)

भावार्थ- करुणा से क्षपणक श्रद्धा के बारे में कहता है, ''वह विष्णु भक्ति के साथ महात्माओं के हृदय में वास करती है।''

10. **सहन्ते संतापं तदपि धनिनां द्वारि कृपणाः।** (4/19)

भावार्थ- सन्तोष कहता है, '' फिर भी कृपणजन धनिकों के दरवाजे पर सन्ताप सहा करते हैं।''

11. **कुलस्त्रीणां नैसर्गिकं शीलं यद्विपन्मग्नस्य स्वामिनः समयप्रतीक्षणमिति।**

भावार्थ- छठे अङ्क में शान्ति कहती है, ''स्त्रियों का यही तो स्वाभाविक चरित्र होता है कि वे विपत्ति में फंसे स्वामी के सुसमय की प्रतीक्षा करती हैं।''

12. **नान्योऽस्ति पन्था भवमुक्ति हेतुः।** (6/17)

भावार्थ- राजा कहता है, ''संसार से मुक्ति का कोई उपाय नहीं है।शिवाय ब्रह्मज्ञान के।''

तत्थ्यात्मक ज्ञान

- प्रतीकात्मक नाटक के प्रवर्तक कृष्ण मिश्र हैं।
- प्रबोधचन्द्रोदय एक सुखान्त नाटक है।
- सैद्धान्तिक दृष्टि से यह नाटक अद्वैत वेदान्त एवं विष्णुभक्ति का समन्वयात्मक रूप उपस्थित करता है।
- लेखक ने अमूर्तभावों को मानवों का रूप देने पूर्ण सफलता पाई है।
- इसे छायानाटक तथा भावनाटक की भी संज्ञा दी जाती हैं

- इस नाटक के प्रथम एवं चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक तथा षष्ठ अङ्क में प्रवेशक का प्रयोग है।
- यद्यपि रङ्गमञ्च की दृष्टि से यह नाटक उपयुक्त नहीं है फिर भी लेखक का उद्देश्य स्पष्ट है।

❑❑

कौटिल्य अर्थशास्त्र

- **लेखक - कौटिल्य**
- **जन्म** - अनुमानतः 375 ईसा पूर्व
  पिता का नाम - चणक
  आवास - पाटलिपुत्र
  अन्य नाम - कौटिल्य, विष्णुगुप्त
  अध्ययन - तक्षशिला
  व्यवसाय - चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री
  रचनाएं - अर्थशास्त्र, चाणक्यनीति

अर्थशास्त्र ग्रन्थ परिचय

- **लेखक -** कौटिल्य
  रचनाकाल - लगभग 300 ई॰ पू॰
  विभाजन - अधिकरण, प्रकरण और अध्याय में
- अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 150 अध्याय हैं।
  श्लोक - बीच में प्रयुक्त श्लोकों की संख्या 340 है।
  शैली - गद्य शैली
- यद्यपि अर्थशास्त्र गद्य में लिखा गया है किन्तु वर्णों की संख्या से यदि छन्द बनायें तो लगभग **छः हजार अनुष्टुप् छन्द** बनेंगे।

अर्थशास्त्र के 15 अधिकरणों के नाम

अधिकरण	नाम	प्रकरण	अध्याय
प्रथम अधिकरण	विनयाधिकारिक	16	21
द्वितीय अधिकरण	अध्यक्ष-प्रचार	39	36
तृतीय अधिकरण	धर्मस्थीय	20	20
चतुर्थ अधिकरण	कण्टक-शोधन	13	13
पञ्चम अधिकरण	योग-वृत्त	7	6
षष्ठ अधिकरण	मण्डल-योनि	2	2
सप्तम अधिकरण	षाड्गुण्य	29	18
अष्टम अधिकरण	व्यसनाधिकारिक	8	5
नवम अधिकरण	अभियास्यत्कर्म	12	7
दशम अधिकरण	साङ्ग्रामिक	13	6
एकादश अधिकरण	वृत्तसंघ	2	1
द्वादश अधिकरण	आबलीयस	9	5
त्रयोदश अधिकरण	दुर्गलम्भोपाय	6	5
चतुर्दश अधिकरण	औपनिषदिक	3	4
पञ्चदश अधिकरण	तन्त्रयुक्ति	1	1

ग्रन्थ की विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय-

- प्रथम अधिकरण का नाम है- **'विनयाधिकारिक'**
- प्रथम अधिकरण में कुल 21 अध्याय हैं।
- प्रथम अधिकरण में राजा के अनुशासन, शास्त्र-शिक्षा, मन्त्रियों तथा पुरोहित के गुण, उनके प्रलोभन, गुप्तचर, सभा, राजदूत, राजकुमार, अन्तःपुर तथा राजा की सुरक्षा का विधान है।
- द्वितीय अधिकरण का नाम **'अध्यक्षप्रचार'** है।
- अध्यक्ष प्रचार में कुल 36 अध्याय हैं।
- यह सबसे बड़ा अधिकरण है।
- इस अधिकरण में विभिन्न शासन-विभागों के अध्यक्षों के कर्तव्य आदि का वर्णन करते हुए ग्राम-रचना, गोचर भूमि, वन, दुर्ग आदि सन्निधाता के कर्तव्य, कर-ग्रहण, राज्य कोष, रत्न परीक्षा, मुद्राध्यक्ष इत्यादि का वर्णन है।
- तृतीय अधिकरण का नाम **'धर्मस्थीय'** है।
- इस अधिकरण में कुल 20 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में न्यायशासन, विधिनियम, विवाह-प्रकार, दम्पती के कर्तव्य, स्त्रीधन, पुत्रों के 12 भेद, दाय विभाग तथा व्यवहार के विषय में विवेचन किया गया है।
- चतुर्थ अधिकरण का नाम **'कण्टन-शोधन'** है।
- इस अधिकरण में 13 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में शिल्पियों तथा व्यापारियों की विपत्तियों से रक्षा, भ्रष्टाचारियों का दमन, विभिन्न अपराधों के लिए दण्ड की व्यवस्था आदि का निरूपण है।
- पाँचवाँ अधिकरण **'योग-वृत्त'** के नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 6 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में उपांशुवध, राज्यकोष वृद्धि, कर्मचारियों का भरण-पोषण, राज्यसंकट का प्रतीकार आदि वर्णित है।
- छठें अधिकरण का नाम है, **'मण्डलयोनि'**।
- इस अधिकरण में 2 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में मण्डल की रचना, राज्य की सात प्रकृतियों अन्तर्राष्ट्र सम्बन्ध तथा तीन शक्तियों का वर्णन है।
- राज्य की सात प्रकृतियाँ हैं - 1. राजा 2. अमात्य 3. राष्ट्र 4. दुर्ग 5. कोश 6. बल 7. सुहृत्
- तीन शक्तियाँ - 1. उत्साह 2. मन्त्र 3. प्रभुशक्ति।
- सातवें अधिकरण को **'षाड्गुण्य'** के नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 18 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में सन्धि, विग्रह, आसन, यान (आक्रमण) संश्रय और द्वैधीभाव के रूप में राजनीति के षड्गुणों का विचार किया गया है।
- इसमें सेना की कमी तथा आदेशातिक्रमण जैसे विषयों का भी निरूपण है।
- आँठवा अधिकरण **'व्यसनाधिकारिक'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 5 अध्याय हैं।
- इस 5 अध्यायों में राजा पर मृगया, द्यूत, स्त्री सेवन आदि दोषों के कारण आयी विपत्तियों का एवं राष्ट्र पर आये अन्य

संकटों का वर्णन है।
- नौवाँ अधिकरण **'अभियास्यत्कर्म'** है।
- इस अधिकरण में 7 अध्याय हैं।
- नौवें अधिकरण के अध्यायों में युद्ध विषयक सम्पूर्ण वृत्तान्त है।
- इसमें अर्थ-अनर्थ तथा संशय सम्बन्धी आपत्तियाँ और उनके प्रतीकार के उपायों से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ हैं।
- दसवें अधिकरण को **'साङ्ग्रामिक'** कहा जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 6 अध्याय हैं।
- इन अध्यायों में छावनी का निर्माण, आक्रमण के समय सेना की रक्षा, कूट-युद्ध में सेनाओं के कार्य, प्रकृतिव्यूह, विकृतिव्यूह और प्रतिव्यूह की रचना इत्यादि का वर्णन है।
- ग्यारहवाँ अधिकरण का नाम **'वृत्तसंघ'** है।
- इस अधिकरण में मात्र 1 अध्याय है।
- इसमें विभिन्न व्यवसायों के संघों को वश में रखने, सामादि नीतियों के प्रयोग, संघ तोड़ने तथा उपांशुवध का वर्णन है
- बारहवाँ अधिकरण **'आबलीयस'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में 5 अध्याय हैं।
- इसमें दुर्बल राजा के द्वारा शक्ति बढ़ाने के उपायों का वर्णन है।
- शक्तिशाली शत्रु के राज्य में दूत भेजना, गुप्तचरों का प्रयोग, सम्पत्तिनाश कराना, आपूर्ति का अवरोध इत्यादि दुर्बल राजा करते हैं।
- तेरहवाँ अधिकरण **'दुर्गलम्भोपाय'** है।
- इस अधिकरण में 5 अध्याय हैं।
- इसमें शत्रु के दुर्ग को अधिकृत करने के विविध उपायों का एवं विजित राज्य में शान्ति-स्थापना का वर्णन है।
- चौदहवाँ अधिकरण **'औपनिषदिक'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में 4 अध्याय हैं।
- इन अध्यायों में हत्या, अन्धीकरण, अपने को अदृश्य बनाना, अन्धकार में देखना, शत्रुवध के लिए मन्त्रौषधि का प्रयोग इन प्रयोगों के प्रतीकार इत्यादि रहस्यपूर्ण विषयों का वर्णन है।
- पन्द्रहवें अधिकरण का नाम **'तन्त्रयुक्ति'** है।
- इसमें एक अध्याय है।
- इसमें ग्रन्थ की विषयवस्तु तथा अर्थ-निर्णय के लिए सहायक युक्तियों का प्रतिपादन है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

प्रथम अधिकरण, प्रथम प्रकरण-द्वितीय अध्याय

विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षकीस्थापना

1. आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

अर्थ- आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति - ये चार विद्यायें हैं।

2. त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः। त्रयीविशेषो ह्यान्वीक्षकीति।

अर्थ-मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्त्ता और दण्डनीति इन तीन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।

3. वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः। संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।

अर्थ- आचार्य **बृहस्पति** के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्यायें मानते हैं वार्त्ता और दण्डनीति। उनके मतानुसार त्रयी तो लोकयात्राविद् लोगों की आजीविका का साधन मात्र है

4. दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः। तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति।

अर्थ- शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, और उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।

5. चतस्त्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्मार्थौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्।

अर्थ- आचार्य कौटिल्य उक्त चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान में बताते हैं

6. साङ्ख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी। धर्माधर्मौ त्रय्यामर्थानर्थौ वार्तायां नयापनयौ दण्डनीत्याम्। बलाबले चैतासां हेतुभिरन्वीक्षमाणान्वीक्षकी लोकस्योपकरोति, व्यसनेऽभ्युदये च बुद्धिमवस्थापयति; प्रज्ञावाक्यक्रियावैशारद्यं च करोति।

अर्थ- सांख्य, योग और लोकायत (नास्तिक दर्शन), ये आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत हैं। त्रयी में धर्म-अधर्म का, वार्त्ता में अर्थ-अनर्थ का और दण्डनीति में सुशासन-दुःशासन का ज्ञान प्रतिपादित है)

त्रयी आदि विद्याओं की प्रधानता अप्रधानता (बलाबल), को भिन्न-भिन्न युक्तियों से, निर्धारित करती हुई आन्वीक्षकी विद्या लोक का उपकार करती है, सुख-दुःख से बुद्धि को स्थिर रखती है; और सोचने, विचारने, बोलने तथा कार्य करने में सक्षम बनाती है।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।।

अर्थ- यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय अर्थ मानी गई है

प्रथम अधिकरण-सप्तम प्रकरण-ग्यारहवाँ अध्याय

गूढपुरुषोत्पत्तिः

- **उपधाभिः शुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत्।**
  धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करें।
- **कापटिकोदास्थितगृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनान् सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च।**
  अर्थ- कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद और भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।
- **परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः।**
  अर्थ- दूसरों के रहस्यों को जानने वाला, बड़ा, प्रगल्भ (दबंग) और विद्यार्थी की वेश-भूषा में रहने वाला गुप्तचर

'**कापटिक**' कहलाता है।

- **तमर्थमानाभ्यामुत्साह्यमन्त्री ब्रूयात्- राजानं मां च प्रमाणं कृत्वा यस्य यदकुशलं पश्यति तत्तदानीमेव प्रत्यादिशेति।**
  अर्थ- इस गुप्तचर को धन, मान और सत्कार से सन्तुष्ट कर मन्त्री उससे कहे 'जिस-किसी की भी तुम हानि होते देखो, राजा को और मुझे प्रमाण मान कर तत्काल ही तुम मुझे सूचित कर दो।
- **प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त उदास्थितः।**
  अर्थ- बुद्धिमान्, सदाचारी, संन्यासी के वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम '**उदास्थित**' है।
- **स वार्ताकर्मप्रदिष्टायां भूमौ प्रभूतहिरण्यान्तेवासी कर्म कारयेत्।**
  अर्थ- वह अपने साथ बहुत से विद्यार्थी और बहुत सा धन लेकर, वहाँ जाकर विद्यार्थियों द्वारा कार्य करवाये, जहाँ कृषि, पशुपालन एवं व्यापार के लिए भूमि नियुक्त है।
- **कर्मफलाच्च सर्वप्रव्रजितानां ग्रासाच्छादनावसथान्-प्रतिविदध्यात्।**
  अर्थ- उस कार्य को करने से जो लाभ हो, उससे वह सब संन्यासियों के भोजन, वस्त्र एवं निवास का प्रबन्ध करें
- **वृत्तिकामांश्चोपजयेत् - एतोनैववेषेण राजार्थश्चरितव्यो भक्तवेतनकाले चोपस्थातव्यमिति।**
  अर्थ- जो भी इस प्रकार की आजीविका की इच्छा करें, उन्हें सब तरह से अपने वश में कर ले और उनसे कहे, तुम्हें इसी वेष में राजा का कार्य करना है। जब तुम्हारे वेतन तथा भत्ते का समय आये, यहाँ उपस्थित हो जाना।
- **सर्वप्रव्रजिताश्च स्वं स्वं वर्गमुपजपेयुः।**
  अर्थ- दूसरे संन्यासी भी अपने-अपने सम्प्रदाय के संन्यासियों को इसी प्रकार समझा-बुझा दें।
- **कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः।**
  अर्थ- बुद्धिमान्, पवित्र हृदय और गरीब किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर को 'गृहपतिक' कहते हैं।
- **स कृषि कर्मप्रदिष्टायां भूमाविति समानं पूर्वेण।**
  अर्थ- वह कृषिकार्य के लिए नियुक्त भूमि में जाकर 'उदास्थित' गुप्तचर के ही समान कार्य करें।
- **वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो वैदेहकव्यञ्जनः।**
  अर्थ- बुद्धिमान्, पवित्र हृदय, गरीब, व्यापारी के वेष में रहने वाला गुप्तचर '**वैदेहक**' है।
- **स वणिक्कर्मप्रदिष्टायां भूमाविति समानं पूर्वेण।**
  अर्थ- वह व्यापारकार्य के लिए नियुक्त भूमि में जाकर '**उदास्थित**' गुप्तचर की भाँति कार्य करे।
- **मुण्डो जटिलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः।**
  अर्थ- जीविका के लिए सिर मुँड़ाये या जटा धारण किये हुए, राजा का कार्य करने वाला गुप्तचर ही '**तापस**' है।
- **स नगराभ्याशेप्रभूतमुण्डजटिलान्तेवासी शाकं यवसमुष्टि वा मासद्विमासान्तरं प्रकाशमश्नीयात्, गूढमिष्टमाहारम्।**
  अर्थ- वह कहीं नगर के समीप ही बहुत से मुंड या जटिल विद्यार्थियों को लेकर रहे और महीने दो महीने तक लोगों के सामने हरा शाक या मुट्ठीभर अनाज खाता रहे, वैसे छिपे तौर पर अपनी इच्छानुसार सुस्वादु भोजन करता रहे।
- **वैदेहकान्तेवासिनश्चैनं समिद्धयोगैरर्चयेयुः।**
  अर्थ- वैदेहक तथा उसके अनुचर तापस गुप्तचर की पूजा-अर्चना करें।
- **शिष्याश्चास्यावेदयेयुः- असौ सिद्धः सामेधिक इति। समेधाशास्तिभिश्चाभिगतानामङ्गविद्यया शिष्य-संज्ञाभिश्च कर्माण्यभिजनेऽवसितान्यादिशेदल्पलाभ-मग्निदाहं चोरभयं दूष्यवधं तुष्टिदानं विदेशप्रवृत्ति ज्ञानम् इदमद्यश्वोवा भविष्यतीदं वा राजा करिष्यतीति।**

अर्थ- शिष्यमंडली घूम-घूम कर यह प्रचार करे कि यह तपस्वी पूर्ण सिद्ध, भविष्य वक्ता और लौकिक शक्तियों से संपन्न है। अपना भविष्य-फल जानने की इच्छा से आये हुए लोगों की पारिवारिक पहचान, उनके शारीरिक चिह्नों के माध्यम से तथा अपने शिष्यों के संकेतों के अनुसार बतावे। ऐसा भी बतावे कि इन-इन कार्यों में थोड़ा लाभ का योग है। इसके अतिरिक्त वह, आग लगने, चोरी हो जाने, दुष्ट लोगों के वध स्वरूप इनाम देने, देश-विदेश के फल, यह कार्य आज होगा या कल, या इस कार्य को राजा करेगा, आदि बातें भी उसको बतावे।

- **तदस्य गूढाः सत्रिणश्च संवादयेयुः।**
  अर्थ- इस प्रश्नोत्तर प्रसंग में '**तापस**' गुप्तचर की दूसरे सत्री आदि गुप्तचर सहायता करें।
- **सत्वप्रज्ञावाक्यशक्तिसम्पन्नानां राजभाव्यमनुव्याहरेन्मन्त्रिसंयोगं च।**
  अर्थ- प्रश्नकर्ताओं में यदि धीर, बुद्धिमान्, चतुर लोग हों तो उनसे वह, राजा की ओर से, धन प्राप्त होने की बात कहे; मन्त्री के साथ भी उनकी मुलाकात का संयोग बताये।
- **मन्त्री चैषां वृत्तिकर्मभ्यां वियतेत।**
  अर्थ- जब मन्त्री से इन लोगों की मुलाकात हो तो उचित यह होगा कि ऐसे लोगों को मंत्री धन तथा आजीविका आदि देकर, गुप्तचर की भविष्यवाणी को सच्ची सिद्ध कर दे।
- **ये च कारणादभिक्रुद्धास्तानर्थमानाभ्यां शमयेत्, अकारणक्रुद्धान् तूष्णींदण्डेन राजद्विष्टकारिणश्च।**
  अर्थ- जो लोग किसी कारण वश क्रुद्ध हो गए हों उन्हें धन एवं सम्मान देकर संतुष्ट किया जाय। जो बिना कारण ही क्रुद्ध हों तथा राजा से द्वेष रखते हों, उनका चुपचाप वध करवा डाले।
- **''पूजिताश्चार्थमानाभ्यां राज्ञा राजोपजीविनाम्। जानीयुः शौचमित्येताः पञ्च संस्थाः प्रकीर्तिताः॥**
  अर्थ- इस प्रकार धन और मान से राजा द्वारा सम्मानित गुप्तचर तथा अमात्य आदि राजोपजीवी पुरुषों के सद्व्यवहारों को भली भाँति जान लें। पाँच प्रकार के गुप्तचर पुरुषों की नियुक्ति और उनके कार्यों के विवरण का यही विधान है।

नोट- ये पाँच गुप्तचर (कापटिक,उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक तापस) एक ही स्थान पर रहकर कार्य करने के कारण 'संस्था' कहलाते हैं।

- **ये चास्य सम्बन्धिनोऽवश्यभर्तव्यास्ते लक्षणमङ्गविद्यां जम्भकविद्यां मायागतमाश्रमधर्मं निमित्तमन्तर-**

चक्रमित्यधीयानाः सत्रिणः संसर्गविद्या वा।
अर्थ- जो राजा के संबंधी न हों किन्तु जिनका पालन-पोषण करना राजा के लिए आवश्यक हो, जो सामुद्रिक विद्या, ज्योतिष, व्याकरण आदि अंगो का शुभाशुभ फल बताने वाली विद्या, वशीकरण, इन्द्रजाल, धर्मशास्त्र, शकुनशास्त्र, पक्षिशास्त्र, कामशास्त्र तथा तत्संबंधी नाचने गाने की कला में निपुण हो वे **सत्री** कहलाते हैं।

- **ये जनपदे शूरास्त्यक्तात्मानो हस्तिनं व्यालं वा द्रव्यहेतोः प्रतियोधयेयुस्ते तीक्ष्णाः।**
  अर्थ- अपने देश में रहने वाले ऐसे व्यक्ति, जो द्रव्य के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न करके हाथी, बाघ और साँप से भी भिड़ जाते हैं, उन्हें **'तीक्ष्ण'** कहते हैं।
- **ये बन्धुषु निःस्नेहाः क्रूराश्चलसाश्च ते रसदाः।**
  अर्थ- अपने भाई-बन्धुओं से भी स्नेह न रखने वाले क्रूरप्रकृति और आलसी स्वभाव वाले व्यक्ति **'रसद'** (जहर देने वाला) कहलाते हैं।
- **परिव्राजिका वृत्तिकामा दरिद्रा विधवा प्रगल्भा ब्राह्मण्यन्तःपुरे कृतसत्कारा महामात्रकुलान्यधिगच्छेत्।**
  अर्थ- आजीविका की इच्छुक, दरिद्र, प्रौढ, विधवा, दबंग, ब्राह्मणी, रनिवास में सम्मानित, प्रधान अमात्यों के घर में प्रवेश पानेवाली **परिव्राजिका** (संन्यासिनी के वेश में खुफिया का काम करने वाली) नाम की गुप्तचरी कहलाती है।
- **एतया मुण्डावृषल्यो व्याख्याताः इति सञ्चाराः।**
  अर्थ- इसी प्रकार मुंडा (मुंडित बौद्ध-भिक्षुणी) और वृषली (शूद्रा) आदि नारी गुप्तचरियों को भी जान लेना चाहिए। ये सभी **'संचार'** नामक गुप्तचर हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- कौटिल्य के अनुसार अर्थ का अभिप्राय है - मनुष्यों की बस्ती अर्थात् वह प्रदेश जिसमें मनुष्य बसते हैं।
- अर्थशास्त्र उस शास्त्र को कहते है जिसमें राज्य की प्राप्ति और उसके पालन के उपायों का वर्णन हो।
- कौटिल्य ने दो प्रकार के संघराज्यों का उल्लेख किया है।
- प्रथम संघ राज्य राजा उपाधि धारण करने वाले राजशासित राज्य।
- दूसरे बिना राजा की उपाधि धारण करने वाले राजशासित राज्य।
- प्रथम संघराज्य के प्रमुख नाम - लिच्छिविक, वृजिक, मल्लक, मद्रक, कुकुर, कुरु और पाञ्चाल।
- दूसरे संघराज्य के प्रमुख नाम - कांबोज, सुराष्ट्र, क्षत्रिय और श्रेणी आदि।
- कौटिल्य के अनुसार एक चिरस्थायी एवं सर्वांगीण साम्राज्य की सुरक्षा-व्यवस्था के लिए मंत्रिपरिषद् का होना आवश्यक है।
- जातक, महावस्तु तथा अशोक के शिलालेखों में मंत्रिपरिषद् को 'परिसा' कहा गया है।
- कौटिल्य ने मन्त्रिपरिषद् के प्रमुख चार सदस्य बताये हैं,

1. मन्त्री 2. पुरोहित 3. सेनापति 4. युवराज।

- इनके अतिरिक्त पौर, जानपद आदि परिषद् के सदस्य होते थे।
- कौटिल्य के अनुसार मन्त्री और अमात्य दो अलग-अलग पद थे।
- कौटिल्य ने राज्यधिकारियों को तीन भागों में विभक्त किया हैं-
  प्रथम श्रेणी में - मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज।
  द्वितीय श्रेणी में - दौवारिक, अंतर्वंशिक, प्रशास्तृ, समाहर्ता, सन्निधाता
  तृतीय श्रेणी में - प्रदेष्टा, नायक, पौर, व्यावहारिक, कार्मातिक, सभ्य, दण्डपाल, दुर्गपाल तथा अंतपाल।
- कौटिल्य ने दूतों की तीन श्रेणियाँ बतायी है।
  1. निसृष्टार्थ 2. परिमितार्थ 3. शासनहर
- कौटिल्य ने कार्य भेद से गुप्तचरों के नौ विभाग किये है।
  1.कापटिक 2. उदास्थित 3. गृहपतिक 4. वैदहेक 5. तापस 6. सत्री 7 तीक्ष्ण 8 रसद 9 भिक्षुकी।
- अर्थ विभाग के सबसे बड़े अधिकारी को समाहर्त्ता कहा गया है।
- अर्थ विभाग के अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों की श्रेणी -
  1. सन्निधाता (भण्डारो का अधिकारी)
  2. स्थानिक (जनपद के चतुर्थांश का अधिकारी)
  3. गोप (गाँवों का अधिकारी)
  4. प्रदेष्टा (स्थानिक तथा गोप का सहायक अधिकारी)
  5. अक्षपटलाध्यक्ष (अकाउंट जनरल)
  6. कोषाध्यक्ष, अर्थकारणिक (मुख्य अकाउंटेट)
  7. कार्मिक (अर्थकारिण का अधीनस्थ कर्मचारी)
  8. गाणनिक्य (जिलों का हिसाब-किताब रखने वाले कर्मचारी)
  9. साँख्यानक (गणना करने वाले)
  10. लेखक (क्लर्क)
  11. नीवीग्राहक, गोपलफ, अपयुक्त, निधानक, निबंधक, प्रतिग्राहक, दायक और मैत्रिवैयावृत्यक आदि का नाम उल्लेखनीय है।
- अर्थशास्त्र का मंगलाचरण - **'नमः शुक्रबृहस्पतिभ्याम्'**।
- अर्थशास्त्र के मंगलाचरण में शुक्राचार्य और बृहस्पति को नमस्कार किया गया है।
- प्रथम अधिकरण में प्रमुख प्रकरण है - विद्यासमुद्देश, इन्द्रियजय तथा अमात्योत्पत्ति।
- द्वितीय अधिकरण में प्रमुख प्रकरण है - दुर्गविनिवेश।
- पञ्चम अधिकरण में दंडव्यवस्था नामक प्रकरण महत्वपूर्ण है।
- षष्ठ अधिकरण में प्रकृतियों के गुण, शांति तथा उद्योग का वर्णन है।
- 'छह गुणों का उद्देश्य' का वर्णन सातवें अधिकरण में है।
- आठवें अधिकरण का नाम है - 'व्यसनाधिकारिक'
- आठवें अधिकरण में प्रकृतियों के व्यसन का वर्णन है।
- नवम अधिकरण में आक्रमण का निरूपण किया गया है।
- दशम अधिकरण में छावनी का निर्माण, दंडव्यूह, मंडलव्यूह प्रकृतिव्यूह इत्यादि का रचना इत्यादि का वर्णन है।
- भेदक प्रयोग तथा उपांशुदंड का वर्णन एकादश अधिकरण में है।
- द्वादश अधिकरण में दूतकर्म, मंत्रयुद्ध, शस्त्र, अग्नि और रथों

का गूढ प्रयोग इत्यादि का वर्णन है।

- तेरहवें अधिकरण में उपजाप, योगवामन, शत्रु के दुर्ग को तोड़ना इत्यादि का वर्णन है।

अर्थशास्त्र के सम्भावित प्रश्न-

- अर्थशास्त्र के अनुसार चार विद्यायें कौन-कौन सी है? - **1.आन्वीक्षकी 2.त्रयी 3.वार्त्ता 4.दण्डनीति**
- मनु सम्प्रदाय कुल कितने विद्याओं को मानते है? -**तीन** (1.त्रयी 2.वार्त्ता 3.दण्डनीति)
- आचार्य बृहस्पति कितने विद्याओं को मानते है? - **दो** (1.वार्त्ता 2.दण्डनीति)
- वार्त्ता तथा दण्डनीति को विद्या कौन मानता है? **आचार्य बृहस्पति**
- केवल दण्डनीति को विद्या कौन मानता है? - **शुक्राचार्य**
- चारों विद्याओं (आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्त्ता, दण्डनीति) को कौन मानता है - **आचार्य कौटिल्य।**
- आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत कौन-कौन से दर्शन आते हैं? **सांख्य, योग तथा लोकायत**
- सभी विद्याओं का प्रदीप कौन है? **आन्वीक्षकी**
- सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय किस विद्या को माना गया है? **आन्वीक्षकी।**
- 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः---------किस ग्रन्थ से लिया गया है।?- **कौटिल्य अर्थशास्त्र**
- प्रथम अधिकरण का क्या नाम है? - **विनयाधिकारिक**
- स्थायी गुप्तचरों की संख्या कितनी होती है? **पाँच**
- स्थायी गुप्तचरों के क्या नाम हैं? **1.कापटिक 2.उदास्थित 3.गृहपतिक 4.वैदेहक 5.तापस**
- दूसरों के रहस्यों को जानने वाला, प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेष-भूषा में कौन-सा गुप्तचर रहता है? - **कापटिक**
- संन्यासी के वेष में कौन-सा गुप्तचर निवास करता है? - **उदास्थित**
- किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर का क्या नाम है?- **गृहपतिक**
- व्यापारी के वेष में कौन-सा गुप्तचर निवास करता है? - **वैदेहक**
- सिर मुँडाये या जटा धारण कर के कौन-सा गुप्तचर रहता है? **तापस**
- कामशास्त्र तथा तत्संबधी नाचने-गाने की कला में कौन गुप्तचर निपुण होता है? **सत्री**
- प्राणों की परवाह न करके हाथी,बाघ और साँप से कौन-सा गुप्तचर भिड़ जाता है? **तीक्ष्ण**
- क्रूरप्रकृति और आलसी स्वभाव वाला कौन-सा गुप्तचर होता है? **रसद**
- सत्री, तीक्ष्ण, रसद, परिव्राजिका, मुण्डा तथा वृषली किस गुप्तचर के अन्तर्गत आते है? **संचार**

अर्थशास्त्र- बिन्दुवार अध्ययन

- कौटिल्य लेखक थे? - **अर्थशास्त्र के**
- कौटिल्यस्य अपरनाम किम्? - **चाणक्यः**
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र कितने अधिकरणों में विभाजित है? - **15**
- अर्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणं वर्तते - **विनयाधिकारिकम्**
- अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते? - **अध्यक्षप्रचारः**
- अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते - **धर्मस्थीयम्**
- अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते - **कण्टकशोधनम्**
- कौटिल्य नाम्ना व्यवह्यते - **चाणक्यः**
- अर्थशास्त्रे विद्यासमुद्देशः कुत्र वर्तते?- **विनयाधिकारिके**
- दुर्गविनिवेशः कुत्र उपदिष्टः - **अध्यक्षप्रचारे**
- इन्द्रियजयः अर्थशास्त्रे कुत्र उपदिष्टः?- **विनयाधिकारिके**
- कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण आन्वीक्षकी विद्या अस्ति - **सांख्यं योगो लोकायतं च**
- कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण कीदृशो दण्डः सर्वाधिकः प्रजामुद्वेजयति? - **तीक्ष्णदण्डः**
- अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति - **मोक्षोपधा**
- कति आढको भवेद् द्रोणः - **चतुराढकाः**
- दायभाग में श्रेष्ठ भाग का अधिकारी पुत्र होता है - **ज्येष्ठ**
- पुत्रों में कौन श्रेष्ठ होता है? - **औरस**
- अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा? - **विनयाधिकारिके**
- दण्डनीतेः अपरं नाम किम्? - **कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्**
- अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा? - **मोक्षोपधा**
- मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्कुर्वीत् इति कस्य मान्यता? - **मानवानाम्**
- समयाचारिकं कुत्रोपदिष्टमर्थशास्त्रे? - **योगवृत्ते**
- कौटिल्येन यो गूढपुरुषेषु न निर्दिष्टः - **कार्मिकः**
- सन्धिकर्म कुत्रोपदिष्टम्? - **षाड्गुण्ये**
- कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में किस पहलू पर प्रकाश डाला गया है? - **राजनीतिक नीतियाँ**
- अमात्यपरीक्षायाः कतिविधः उपायः? - **चतुर्विधः**
- कौटिल्यानुसारं विद्याः सन्ति? - **चतुर्विधा**
- अर्थशास्त्रे आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति - **दण्ड**
- कौटिल्यानुसारं त्रयी के संवरणमात्रं मन्यन्ते?- **बार्हस्पत्याः**
- कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते? - **आन्वीक्षकीम्**
- कौटिल्येन विधेः चत्वारः चरणाः स्वीकृताः - **धर्मः, व्यवहारः, चरित्रं, राजशासनश्च**
- अर्थशास्त्रात् किं बलवत् - **धर्मशास्त्रम्**
- अक्षपटलाध्यक्षस्य कार्यमासीत्? - **आयव्ययविवरणस्य रक्षणम्**
- नीतिविषयकग्रन्थस्य कर्त्ता - **शुक्राचार्यः**
- कौटिल्येन सेनायाः श्रेण्यः कतिधा उल्लिखिताः - **सप्त**
- अधोलिखितेषु क्रमः कुत्र पालितः? - **सन्धिः, विग्रहः, यानं, आसनम्**
- अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत' इति मतं कस्य? - **कौणपदन्तस्य**
- अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'सहाध्यायिनोऽमात्यान्कुर्वीत' इति मतं कस्य?

-**भारद्वाजस्य**

- अमात्यानां शौचाशौचज्ञानं कथं ज्ञातव्यमिति कौटिल्यः अभिप्रैति? - **उपधाभिः**
- "त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति"–इति कस्याभिप्रायः? - **कौटिल्यस्य**
- कौटिल्यानुसारं कः मन्त्रं श्रोतुं न अर्हति - **अश्रुतशास्त्रार्थः**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे 'अर्थ' शब्दस्य कोऽर्थः? - **मनुष्यवती भूमिः**
- अर्थशास्त्रानुसारेण वार्ता शब्दस्यार्थः कः - **कृषिः, पशुपालनं, वाणिज्यम्**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता? - **आन्वीक्षकी**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति - **याजनम्**

❑❑

5. झारखण्ड प्रवक्ता प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

1. कौन-सी भाषा शतम् वर्ग की नहीं है-
(A) संस्कृत (B) फारसी
(C) जर्मन (D) रूसी

2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं का समय है-
(A) 4000 ई0पू0 से 2000 ई0पू0तक
(B) 2000 ई0पू0 से 1000 ई0पू0तक
(C) 1000 ई0 से वर्तमान समय तक
(D) 500 ई0पू0 से 1000 ई0तक

3. निम्नलिखित में से कौन-सी पालि की विषेशता नहीं है-
(A) ऋ,ऌ,ऐ,औ का लुप्त होना
(B) तीनों वचनों का प्रयोग
(C) हलन्त शब्दों का अभाव
(D) लेट् लकार का प्रयोग

4. वररुचि ने प्राकृत के कितने प्रकारों को स्वीकार किया है-
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 7

5. रणन-सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक हैं-
(A) मैक्समूलर (B) प्लेटो
(C) न्वारे (D) हेस

6. भाषा-उत्पत्ति विषयक किस सिद्धान्त को अधिकांश विद्वान् स्वीकार करते हैं-
(A) सम्पर्क-सिद्धान्त (B) प्रतीक-सिद्धान्त
(C) इङ्गित-सिद्धान्त (D) समन्वय-सिद्धान्त

7. 'नवसाहसाङ्कचरित' महाकाव्य का मुख्य रस कौन-सा है-
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) शान्त (D) करुण

8. गीतिकाव्य का उद्भव माना जाता है-
(A) कालिदास की ऋतुसंहार से
(B) ऋग्वेद की ऋचाओं से

(C) सामवेद के साम से
(D) रामायण के श्लोकों से

9. 'चौरपञ्चाशिका' किस विधा की रचना है-
(A) कथा (B) गीतिकाव्य
(C) नाटक (D) महाकाव्य

10. गद्य का प्रथम रूप कहाँ दिखलाई देता है-
(A) वासवदत्ता में (B) दशकुमारचरित में
(C) कादम्बरी में (D) यजुर्वेद में

11. सुबन्धु किस रीति के कवि हैं-
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी

12. 'बृहत्कथामञ्जरी' किसकी रचना है-
(A) सोमदेव (B) बुधस्वामी
(C) क्षेमेन्द्र (D) गुणाढ्य

13. 'रीति-सिद्धान्त' के प्रवर्तक हैं -
(A) आनन्दवर्धन (B) कुन्तक
(C) आचार्य मम्मट (D) वामन

14. ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य कौन हैं-
(A) आनन्दवर्धन (B) अभिनवगुप्त
(C) आचार्य मम्मट (D) आचार्य विश्वेश्वर

15. 'सेश्वरसांख्यदर्शन' किसे कहा जाता है-
(A) सांख्यदर्शन को (B) योगदर्शन को
(C) न्यायदर्शन को (D) वैशेषिकदर्शन को

16. निम्न में से कौन-सा आश्रम-व्यवस्था में पठित नहीं है-
(A) गृहस्थ आश्रम (B) वर्ण आश्रम
(C) ब्रह्मचर्य आश्रम (D) संन्यास आश्रम

17. सुमेलित कीजिए-
क. भट्टलोल्लट 1. अनुमितिवाद
ख. अभिनवगुप्त 2. उत्पत्तिवाद
ग. भट्टनायक 3. अभिव्यक्तिवाद
घ. शङ्कुक 4. भुक्तिवाद

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	1	4	3	2
(C)	2	3	1	4
(D)	4	1	2	3

18. सुमेलित कीजिए-
क. कुन्तक 1. अलङ्कार-सम्प्रदाय
ख. भरत 2. औचित्य-सम्प्रदाय
ग. आनन्दवर्धन 3. ध्वनि-सिद्धान्त
घ. क्षेमेन्द्र 4. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय
ङ. भामह 5. रस-सम्प्रदाय

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	1	2	3	4	5
(B)	4	5	3	2	1
(C)	2	1	4	5	3
(D)	5	4	1	3	2

19. चतुर्वर्णों में किसकी गिनती नहीं होती है-
(A) ब्राह्मण (B) वैश्य
(C) पुरुषार्थ (D) शूद्र

20. हिन्दू धर्म में कितने संस्कारों को स्वीकृत किया गया है-
(A) 18 (B) 4
(C) 8 (D) 16

21. वेदान्त दर्शन को और किस नाम से जाना जाता है-
(A) पूर्वमीमांसा (B) कर्ममीमांसा
(C) धर्ममीमांसा (D) उत्तरमीमांसा

22. सुमेलित कीजिए-
क. बौद्धदर्शन 1. स्याद्वाद
ख. चार्वाकदर्शन 2. सत्कार्यवाद
ग. सांख्यदर्शन 3. अनात्मवाद
घ. जैनदर्शन 4. भौतिकवाद

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	2	4
(B)	4	2	3	1
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	4	3

23. न्यायदर्शन के प्रवर्तक हैं-
(A) गौतम (B) शङ्कर
(C) कपिल (D) कणाद

24. 'उपनिषद्' वेदों का कौन-सा भाग है-
(A) कर्मकाण्ड (B) ज्ञानकाण्ड
(C) अभिचार (D) ज्योतिष

25. 'सह वीर्यं करवावहै' शान्तिपाठ का अंश किस उपनिषद् से उद्धृत है-
(A) ईशावास्योपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) मुण्डकोपनिषद्

26. सुमेलित कीजिए-
दर्शन - तत्त्व/पदार्थ
क. सांख्य 1. 26
ख. योग 2. 16
ग. वेदान्त 3. 7
घ. न्याय 4. 25
ङ. वैशेषिक 5. 17

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	4	1	5	2	3
(B)	1	3	4	5	2
(C)	4	5	2	3	1